Future Point

बृहत् उपाय संहिता

संपादक

अरुण कुमार बंसल

संकलन

यशकरन शर्मा

प्रकाशक

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.)

X-35, ओखला फेस–2, नयी दिल्ली–110020

Phone (फोन): (011) 40541000, 40541020 Fax (फैक्स): (011) 40541001, 40541021

Email (इमेल)– mail@aifas.com, mail@futurepointindia.com

Web (वेब)– www.aifas.com, www.futurepointindia.com

सर्वाधिकार ©
अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ

प्रथम संस्करण 2010

संघ के पाठ्यक्रम के लिए विशेष रुप से प्रकाशित

प्रकाशक :

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.)
X-35, ओखला फेस–2, नयी दिल्ली–110020
Phone (फोन): (011) 40541000, 40541020 Fax (फैक्स): (011) 40541001, 40541021
Email (इमेल)– mail@aifas.com, mail@futurepointindia.com
Web (वेब)– www.aifas.com, www.futurepointindia.com

Future Point

Future Point

सरस्वती वंदना

"या कुन्देन्दु तुषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणा वरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।।
या ब्रह्माऽच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवै सदा वन्दिता।
सा माम् पातु सरस्वति भगवति निःशेषजाड्यापहा।।"

संपादन

अरुण कुमार बंसल

आज की इस भागमभाग की दुनिया में बढ़ते उपभोक्तावाद के कारण प्रायः हर व्यक्ति परेशानियों से ग्रस्त है। वह इन परेशानियों और समस्याओं का समाधान तो चाहता है परंतु समाधान क्या और कैसे हो इसकी जानकारी के अभाव में उसे इनसे मुक्ति नहीं मिल पाती। ऐसे में प्रस्तुत पुस्तक ज्योतिषीय एवं आध्यात्मिक उपायों में विश्वास रखने वालों के लिए बेहद उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

पुस्तक के प्रारंभ में ज्योतिषीय उपाय कैसे और कितने समय में काम करते हैं आदि बातों को बारीकी से समझाया गया है। उसके बाद विविध रत्नों की जानकारी देकर अलग–अलग समस्याओं के निदान में उनकी भूमिका का विस्तार से वर्णन किया गया है।

समस्याओं से मुक्ति में रत्नों की भूमिका अहम होती है। रत्नों का वजन और आकार कैसा हो, किस रत्न के साथ कौन सा रत्न पहनना चाहिए, रत्न धारण की विधि आदि की महत्वपूर्ण जानकारी प्रमुखता से दी गई है। रुद्राक्ष एवं रुद्राक्ष कवच धारण करने से सुख, समृद्धि एवं आरोग्य वृद्धि सहित जीवन में होने वाले कई आश्चर्यजनक परिवर्तनों का भी पुस्तक में विस्तार से वर्णन किया गया है।

विभिन्न प्रकार के यंत्र, मालाएं, स्फटिक, पारद सामग्री, शंख, पिरामिड, सिक्के, लॉकेट, फेंगशुई सामग्री आदि भी समस्याओं से मुक्ति दिलाने में सहायक होते हैं। इनके चमत्कारी प्रभावों का विशद वर्णन पुस्तक में किया गया है।

लाल किताब की उपयोगिता को एक अध्याय में विस्तार से बतलाते हुए लेखक ने इन उपायों को सर्वसुलभ बताया है। पुस्तक के अंत में मंत्र शक्ति की प्रभावोत्पादकता को प्रतिपादित करते हुए अलग–अलग देवताओं से संबंधित कष्टों को दूर करने वाले अनेक प्रभावी मंत्र दिए गए हैं। इस तरह एक पुस्तक में अनेक उपाय मौजूद हैं।

कुल मिलाकर पुस्तक में इतने प्रकार के विविध उपाय दिए गए हैं कि यह अपने नाम के अनुरूप ज्योतिषीय उपायों का विश्वकोश बन गई है। पुस्तक की लोकप्रियता और हिंदी भाषियों की असुविधा तथा मांग को देखकर इसे हिंदी में प्रकाशित किया गया है। सहज–सरल शब्दावली एवं प्रवाहात्मक शैली में लिखी गई यह पुस्तक आम पाठकों के लिए भी बोधगम्य बन पड़ी है।

अरुण कुमार बंसल

Future Point

संकलन

यशकरन शर्मा

श्री यशकरन शर्मा ज्योतिष तथा अन्य परा विज्ञानों के प्रबल अनुरागी हैं। उन्होंने ज्योतिषीय उपायों और तंत्र का गंभीर अध्ययन और इन गूढ़ विषयों की जटिलताओं की गहराई तक पहुंचने का प्रयास किया है। ज्योतिष का यह गुप्त और गूढ़ ज्ञान उन्होंने कुछ महान ज्योतिषाचार्यों, योगियों, संतों और आचार्यों द्वारा निर्धारित और उद्घाटित सिद्धांत से ग्रहण किया है। ज्ञान के इस सागर में उनकी पैठ गहरी रही है। ज्योतिष के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियां अप्रतिम हैं। श्री शर्मा के युवा मन में ही इन विषयों और शास्त्रों के प्रति एक अनुराग देखा गया। आगे शिमला से अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि लेने के बाद उन्होंने अपना जीवन ज्योतिष के उपायों की गंभीर खोज के प्रति समर्पित कर दिया। आधुनिक और विज्ञानसम्मत सूझ से युक्त पारंपरिक ज्ञान की आभा उनके व्यक्तित्व में साफ झलकती है। उनका संबंध हिमाचल प्रदेश की आध्यात्मिक नगरी शिमला के एक ज्ञानी और सत्यनिष्ठ ब्राह्मण परिवार से है। प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने अपने सारे विचारों और व्याख्याओं को प्रामाणिक ढंग से संपुटित किया है, जो परा विज्ञानों तथा ज्योतिष के प्रेमियों के लिए निश्चय ही सुखकर सिद्ध होंगे। प्रस्तुत पुस्तक ज्योतिषीय उपायों के क्षेत्र में मील का पत्थर सिद्ध होगी। पुस्तक प्रेमियों के लिए यह एक सार–संग्रह है, जिसमें कष्टों, दुखों और ग्रहों के दुष्प्रभावों को कम करने, शांत करने और उनका निवारण करने के उपाय भरे पड़े हैं।

अरुण कुमार बंसल
अध्यक्ष, फ्यूचर पॉइंट
अध्यक्ष, अ.भा.ज्यो. संस्था संघ

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

विषय सूची

1. उपाय विचार 1–8
2. रत्न उपरत्न 9–56
3. रुद्राक्ष प्रकरण 57–77
4. यंत्र पूजा 78–114
5. माला 115–124
6. स्फटिक 125–132
7. पारद 133–140
8. शंख 141–151
9. पिरामिड 152–157
10. सिक्का 158–160
11. लॉकेट 161–172
12. फेंगशुई 173–181
13. पूजनीय दुर्लभ वस्तुएं 182–193
14. नवग्रहों के कुछ अन्य शास्त्रसम्मत उपाय 194–206
15. रंग चिकित्सा 207–223
16. लाल किताब 224–244
17. व्रत के नियम विधान एवं महत्व 245–276
18. मंत्र रहस्य 277–307
19. स्तोत्र संग्रह 308–340

Future Point

Future Point

WORLD'S LEADING ASTROLOGICAL WEBSITE

www.futurepointindia.com

It contains lot of facilities like-

1) Free online horoscope
2) Free daily, monthly and yearly predictions
3) Free tarot reading
4) Horoscopes of celebrities
5) Share market predictions
6) Biorythms
7) Astrology consultation with solution for your problems
8) Information about gemstones and other remedial measures
9) Various spiritual products
10) Mantras
11) Astro quiz
12) Information about all astrological softwares of Future Point
13) One exceptionally beautiful feature by the name learn astrology
14) Learn techniques of making predictions through astrology, numerology, palmistry, tarot, vedic astrology, mundane astrology, lal kitab and Chinese astrology etc
15) Learn vastu, feng shui
16) (e-cource) Online astrology cource
17) Information about all astrology, numerology, palmistry and vastu cources from AIFAS(All India Institute of Astrologers' Societies)
18) Blogs
19) Articles on astrology, numerology, palmistry, fengshui, Chinese astrology, lal kitab, vastu, tarot and current topic
20) Research oriented astrological articles and miscellaneous articles
21) Information about our magazines and AIFAS books
22) Panchang

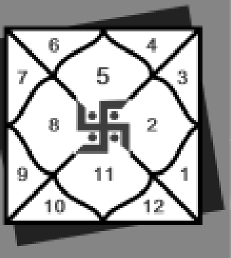

अध्याय–1

उपाय विचार

प्राचीन काल से यह एक विवाद का विषय रहा है कि उपाय कारगर होते हैं या नहीं। वह लोग जो उपाय के महत्व की वकालत करते हैं, निश्चित रूप से धार्मिक आस्था की अवधारणा के महत्व को समझते हैं। धार्मिक आस्था या फेथ हीलिंग का हर धर्म में खास जिक्र किया गया है।

1. क्या उपाय भाग्य बदल सकता है ?

भाग्य इतना बलशाली है कि भाग्य को बदल पाना कठिन है परंतु असंभव नहीं। भाग्य को बदलना जातक के हाथ में है या फिर भगवान के जो कि भाग्य का रचयिता है या फिर भगवान के अवतार या फिर वह जो भगवान के जैसा समर्थ है या जिस पर ईश्वर की विशेष कृपा हो या वह व्यक्ति जो ईश्वर जैसा सक्षम हो या वह जिसे खास शक्तियां तप करने से प्राप्त हुई हों। सिद्ध गुरु व अवतार के आशीर्वाद से भक्तियोग, ध्यानयोग, हठयोग, मंत्रयोग, कुण्डलिनी योग, ब्रह्मचर्य व सही ढंग से श्री विद्योपासना से भी भाग्य को बदला जा सकता है। एक सिद्ध गुरु या योगी अपने शिष्य को दीक्षा दे उसे साधना करने में सक्षम बनाता है। एक शिष्य सफलता तभी प्राप्त कर सकता है जब वह एकाग्रता व कुशलता से दीक्षा ले। पूर्व जन्म की साधना का भी एक महत्वपूर्ण योगदान होता है और फिर उसका भाग्य भी उसकी सहायता करता है। अतः जीवन के हर मौसम या हर पहलू पर भाग्य का एक महत्वपूर्ण योगदान रहता है चाहे वह आध्यात्मिक हो या सांसासिक। यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि व्यक्ति प्रयास एवं कर्म करने के (चाहे वह बुरे कर्म हो या अच्छे हों) लिए स्वतंत्र है। यदि व्यक्ति कड़े मानसिक अनुशासन के साथ अपनी आत्मा की आवाज को सुनता है व सच्चाई के रास्ते पर चलता हुआ अपने बुरे कर्मों पर विजय पा लेता है तो उसके भाग्य में अच्छे कर्म जुड़ते जाते हैं। व्यक्ति के पिछले जन्मों के संस्कारों के फलस्वरूप वह आस्तिक बनता है। हमारी ईश्वर में निष्ठा ही हमसे पूजा करवाती है। पूजा–अर्चना करने से हमारी विचारधारा पावन होती है तो हमारे सोचने समझने की शक्ति विकसित होती है। विकसित सोच हमारी विचारधारा को परिष्कृत करती है और हम आत्म संयम व ब्रह्मचर्य जीवन में प्रवेश करते हैं। ब्रह्मचर्य और पुरुषार्थ की शक्ति से भाग्य को बदला जा सकता है। इसलिए हमारे समाज के हर वर्ग के लोग ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने में विश्वास रखते हैं। सारे ऋषि, मुनि, साधु, संन्यासी, संत एवं पैगंबर इसके महत्व को मानते हैं। मोहनदास कर्मचंद गांधी ने भी इसकी विशेष व्याख्या की है। इसकी शक्ति से हम दूसरों का भाग्य भी बदल सकते हैं। इसकी शक्ति से परिपूर्ण व्यक्ति युग के भाग्य को भी बदल सकता है। व्यक्ति की सफलता इस बात पर निर्भर होती है कि वह ब्रह्मचर्य या तपस्या को कितने आत्म संयम से निभाता है तो यहां उनके प्रयासों को महत्व दिया जा रहा है और प्रयास ही कर्म है। अतः हम ये कह सकते हैं कि हमारे कर्म हमारे भाग्य से कम महत्पूर्ण नहीं हैं। निष्कर्ष ये निकलता है कि उपाय करना भी कर्म है। बौद्ध धर्म में 'नम म्योहो रेन्गे क्यो' का उच्चारण करने से भाग्य को बदला जा सकता है पर तात्विक तथ्य यह है कि अध्यात्म हर धर्म से ऊपर है एवं अध्यात्म व्यक्ति के भाग्य को बदलने में सहायक हो सकता है। वासना व लालच आध्यात्मिक विकास के पथ पर सबसे बड़े अवरोधक हैं। हर व्यक्ति में अपनी आध्यात्मिक उन्नति की क्षमता होती है इसलिए हमें अपने आध्यात्मिक पथ को पुनर्जागृत व प्रोत्साहित करना चाहिए।

2. उपाय कैसे प्रभाव डालते हैं ?

जब एक मरीज चिकित्सक के पास इलाज के लिए जाता है तो सबसे पहले चिकित्सक समस्या की तह तक पहुंचकर बीमारी का निदान करने हेतु दवाएं बताता है। यदि बीमारी चिरकालिक है तो चिकित्सक यह भी कह

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

सकता है कि इस बीमारी का इलाज चिकित्सा शास्त्र में नहीं है। इसी तरह यदि व्यक्ति को मृत्यु का भय हो तो उसकी कुण्डली के अनुसार उन परिस्थितियों में ज्योतिष विज्ञान के उपाय से जैसे महामृत्युंजय यज्ञ द्वारा आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना को रोका जा सकता है, परंतु यदि उस व्यक्ति के भाग्य में उतना ही जीना लिखा है तो उपाय व उपचार उसे नहीं बचा सकते और इस स्थिति में केवल ईश्वर ही उसकी रक्षा कर सकता है। उदाहरण के लिए सावित्री अपने सत्यवान को मौत के मुंह से निकाल कर लाई थी। सही कहा गया है कि–

औषधि मणि मंत्राणां ग्रह नक्षत्र तारिका। भाग्यकाले भवेत्सिद्धि अभाग्यम् निष्फलम भवेत्।।

औषधि, मंत्र और रत्न समस्याओं व उन बीमारियों को कम करता है जो अशुभ ग्रह व नक्षत्रों के कारण होते हैं। यदि समय अनुकूल है तो ये उपाय सहायक सिद्ध होते हैं। यदि समय प्रतिकूल हो तो ये उपाय काम नहीं करते।

3. विशेष उपाय

भाग्य को बदलने के लिए कई उपाय हैं जैसे– किसी विशेष समस्या का समाधान, किसी रोग का निवारण करना, किसी कमजोर ग्रह को ताकत देना, जीवन को उत्तम बनाना और आध्यात्मिक एवं संसारिक क्षेत्र में सफलता पाना। **ये उपाय, ब्रह्मा, श्रीकृष्ण, महर्षि पराशर, महर्षि जैमिनी, दत्तात्रेय, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि वेदव्यास, शिवजी, हनुमान, देवऋषि नारद, देवगुरु वृहस्पति, दैत्य गुरु शुक्राचार्य एवं कपिल आदि ऋषि, योगी, संत व पंडितजन द्वारा संस्तुत किए गए हैं।**

ग्रहों के विशेष उपाय

4. चयन प्रक्रिया

एक श्रेष्ठ व प्रतिष्ठित ज्योतिषी को सही समय पर सही उपाय सही मुहूर्त्त में बताना चाहिए। मुहूर्त्त ज्योतिष का ज्ञाता ही सही मुहूर्त्त बता सकता है। उपाय का चयन दो बातों पर निर्भर करता है –

1. उपाय करने वाले की जरूरत– एक व्यक्ति की कोई विशेष इच्छा, विशेष समस्या या रोग हो सकती है और अगर उसे कोई ऐसा उपाय मिले जिससे उसे सहायता एवं राहत मिल सके तो वह अवश्य ही प्रसन्न होगा।

2. ज्योतिषीय आवश्यकता– यदि कोई ज्योतिषी कुण्डली में ग्रहों व दशाओं में कोई त्रुटि देखता है तो उसे जातक को इसके बारे में आगाह करना चाहिए व कुछ कारगर उपाय भी बताने चाहिए।

उपायों का चयन आखिरकार जातक की सहमति से मूलभत सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। ये सिद्धांत ज्योतिषी की सहायता रत्नों, रुद्राक्ष, यंत्र, मंत्र, स्तोत्र, माला एवं रहस्यमयी वस्तुएं जैसे ताबीज, लॉकेट, फेंगशुई, पिरामिड, सिक्का, शंख, अंगूठी, धातु रंग, जड़ी–बूटी, गंगाजल ये सारे उपाय स्वच्छंद रूप से बताए जा सकते हैं मगर यदि समस्या अधिक गंभीर हो तो जातक को यज्ञ करने की सलाह दी जा सकती है। यदि कोई व्यक्ति कोई विशेष उपाय करने में असमर्थ है, तो उसे दूसरे उपाय बताए जा सकते हैं जो अधिक साध्य हैं। उपाय सामर्थ्य के अनुसार होते हैं। एक उपयुक्त उपाय अपने इष्ट देवता या देवी की पूजा करना है या उस देवी या देवता की आराधना करना जो किसी विशेष ग्रह के दोष या शुभ प्रभाव को नगण्य कर सके। उदाहरण के लिए सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मातंगी देवी, विष्णु देवता या सूर्य देवता की पूजा करनी चाहिए, चंद्र के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए भुवनेश्वरी देवी या शिवजी का पूजन किया जाए, मंगल के दोष को कम करने के लिए बगलामुखि देवी, दुर्गा देवी, हनुमानजी, कार्तिकेय या नरसिंहजी की पूजा की जानी चाहिए। राहु के दोष को कम करने के लिए छिन्नमस्ता, दुर्गा या सरस्वती देवी, गुरु के लिए तारा देवी, शनि के लिए काली, शिवजी, भैरव व श्रीकृष्ण, बुध के लिए त्रिपुरसुंदरी देवी, त्रिपुर भैरवी या विष्णु भगवान और केतू के लिए धूमावति देवी की पूजा करनी चाहिए। लग्न को बलि करने के लिए शास्त्रों में त्रिपुरभैरवी साधना का विधान वर्णित हैं। इन

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

देवी देवताओं की पूजा अर्चना भिन्न–भिन्न विधियों से की जाती है। जिनमें मंत्रोच्चारण, यज्ञ स्तोत्र व जप करना शामिल है।

महर्षि पराशर वैदिक ज्योतिष के जनक माने जाते हैं। पराशर भी एक ऋषि हैं और उपायों में उनके योगदान को एक प्रामाणिक दृष्टिकोण माना जाता है। उनके अनुसार श्रीविष्णु अलग–अलग अवतार में प्रगट हुए हैं सृष्टि को ग्रहों के अशुभ प्रभाव से बचाने के लिए पराशर ने ग्रहों को देवताओं के साथ जोड़ा। निम्नलिखित तालिका में विभिन्न ग्रहों व उनके अधिष्ठाता देवताओं के नाम दिए गए हैं। साथ ही जैमिनी मतानुसार ग्रहों के इष्ट देवताओं के नाम भी दिए गए हैं।

श्रीविष्णु अवतार व ग्रहों के देवता

ग्रह	श्री विष्णु अवतार	देवता	देवताओं पर जैमिनी मत
सूर्य	श्री राम	अग्नि	शिव
चंद्र	श्री कृष्ण	जल	गौरी
मंगल	श्री नरसिंह	स्कंद	स्कंद
बुध	श्री बुद्ध	विष्णु	विष्णु
गुरु	श्री वामन	इन्द्र	सदाशिव
शुक्र	श्री परशुराम	शचि देवी	लक्ष्मी
शनि	श्री कूर्मद	ब्रह्मा	नारायण
राहु	श्री वराह		दुर्गा
केतु	श्री मत्स्य		गणपति
लग्न	श्री कल्कि		

प्रतिकूल दशा के उपाय– महर्षि पराशर ने हर प्रकार की समस्याओं के विस्तारपूर्ण उपाय दिए हैं। नीचे दी गई सारणी में दशा व अंतर्दशा के आधार पर उनके उपाय प्रस्तुत हैं।

दशा के प्रभाव के लिए पूजा

ग्रह दशा	पूजा
सूर्य	आदित्यहृदय स्तोत्र
चंद्र	दुर्गा
मंगल	वैदिक मंत्र
बुध	विष्णु सहस्त्रनाम
गुरु	इष्ट देवता, शिव सहस्त्रनाम
शुक्र	जगदंबा या लक्ष्मी
शनि	मृत्युंजय मंत्र
राहू	दुर्गा
केतू	शिव मंत्र
यदि दूसरे या 7 वें घर के स्वामी की दशा हो	मृत्युंजय मंत्र

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

लाल किताब के अनुसार ग्रह एवं उनके अधिष्ठाता देवता

ग्रह	देवता	रंग	दान देने योग्य वस्तुएं
सूर्य	विष्णु	गेहुंआ	गेहूं, तांबा
चंद्र	शिव	दूधिया	मोती, चावल, दूध, सफेद, चांदी
मंगल	हनुमान	लाल	सौंफ, मूंगा, चीनी, मसूर दाल
बुध	दुर्गा	हरा	हरी मूंग की दाल
गुरु	ब्रह्मा	पीला	चने की दाल, हल्दी, सोना, केसर
शुक्र	लक्ष्मी	दही जैसा	ज्वार, मोती
शनि	भैरव	काला	लोहा, काला रत्न, उड़द, सरसों का तेल
राहु	सरस्वती	नीला	जौ, सिक्का, सरसों, नीलम
केतु	गणेश	काला व सफेद	केला, काला केसर, कंबल

5. ग्रहों की राशि से निर्धारित होता है कि किस तरह के उपाय प्रभावकारी होंगे।

• यदि ग्रह की राशि अग्नि तत्व है तो यज्ञ व व्रत से लाभ होगा।
• यदि ग्रह की राशि पृथ्वी तत्व है तो रत्न, यंत्र, धातु धारण करना और देव दर्शन करना चाहिए।
• यदि ग्रह की राशि वायु तत्व हो तो मंत्र जाप, कथा व पूजा लाभकारी साबित होगी।
• यदि वह जल तत्व राशी में हो, तो दान दक्षिणा व जल विसर्जन और औषधि स्नान प्रभावकारी होगा।
• यदि कुंडली में योगकारक ग्रह बलवान हो तो रत्न व यंत्र को धारण करना, पूजा करना, मंत्रों का उच्चारण करना सही उपाय है।
• यदि मारक ग्रह बलवान् है तो वस्तुओं का दान व जल विसर्जन किया जाना चाहिए या फिर इन ग्रहों को मंत्रोच्चारण व देव दर्शन के द्वारा शांत किया जा सकता है।

6. विभिन्न उपाय किस प्रकार काम करते हैं ?

ज्योतिष का ध्येय भविष्य के बारे में सही फलकथन देना होता है। पर इसकी सही उपयोगिता हमारी समस्याओं के उपायों में होती है। ज्योतिष अत्यधिक लाभदायक है क्योंकि इस ज्ञान की सहायता से हमें अपने भविष्य की अच्छी व बुरी घटनाओं के बारे में जानकारी मिलती है। किसी ने सही कहा है ''समस्या के आने की पूर्व सूचना होने से हम पूरी तरह से उसका सामना करने को सजग व सतर्क हो सकते हैं।'' यदि हम किसी संभावित प्रतिकूल घटना के बारे में समय से पहले जान लें तो हम अपने को उस घटना का सामना करने या उसे टालने के लिए तैयार कर सकते हैं व अपनी सुरक्षा जरूरी उपायों के द्वारा कर सकते हैं।

ज्योतिष ज्ञान हमें विभिन्न उपायों की जानकारी से अवगत कराता है जो कि हमें मुसीबतों व दुखों से बचाता है। ये उपाय ग्रहों को अनुकूल करते हुए शान्त जीवन व्यतीत करने में हमारी सहायता करते हैं। एक अच्छा ज्योतिषी हमारे जीवन की हर प्रकार की समस्याओं का निवारण करने में सक्षम होता है।

भारतीय ज्योतिष ने हमें उपाय बताए हैं जिनसे ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है तथा दुखों व तकलीफों से निवारण होता है। हिंदू देव परमेश्वर, शिव को आशुतोष नाम से संबोधित कर एक विशेष स्थान दिया गया है। प्रसिद्ध हिंदी

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

धार्मिक महाकाव्य रामचरित्मानस में शिव के बारे में कहा गया है कि केवल वही हमारा भाग्य बदल सकते हैं– भावी मेटि सकहिं त्रिपुरारी। शिव को प्रसन्न करने के कई उपाय हैं जैसे महारुद्राभिषेक, पूजा व अर्चना। शिव की विशेष कृपा व आशीर्वाद रुद्राक्ष धारण करने वालों पर होती है।

इसी तरह कहा गया है कि **''कलि चण्डी विनायकौ''** जिसका अर्थ है कि कलियुग में श्री गणपति व चण्डी देवि हमें तुरंत व असरदार फल प्रदान करते हैं। इसी कारण से जो लोग किसी अशुभ ग्रह के प्रभाव में है वो दुर्गासप्तशती का पाठ करते हैं। चण्डी हमें दरिद्रता, दुख, अवसाद, रोग व भय से मुक्ति दिलाती है। विशेष रूप से नवरात्रों के समय हर हिंदू परिवार चण्डी देवी की पूजा–अर्चना करता है। श्री गणपति अपने भक्तजनों की बाधाओं को दूर करके उन्हें ऋद्धि, सिद्धि व बुद्धि प्रदान करते हैं। यदि कोई व्यक्ति मृत्यु तुल्य कष्ट, मृत्यु के भय, दुर्घटना या रोग के भय से ग्रसित हैं तो ऐसी स्थिति में **महामृत्युंजय यज्ञ** बताया जाता है।

हिन्दु ज्योतिष अतुलनीय है क्योंकि इसमें उपायों का एक सुविस्तृत शोध–प्रबंध ग्रहों के दोषों को कम करता है।

उपायों की उपलब्धता विभिन्न व्यक्तियों की जरुरतों और उनके देश, समुदाय व भूमण्डल के अनुसार होती है। व्यक्ति विशेष की जरूरतों व रुचि की सुविधा के लिए पूर्ण विकसित उपाय उपलब्ध है।

जिस प्रकार चिकित्सा विज्ञान में पहले रोग का कारण और निवारण किया जाता है। सही दवाओं व इलाज के साथ, उसी प्रकार ज्योतिष में ये कार्य सही उपायों द्वारा किया जाता है। ज्योतिष या गुप्त विद्याओं द्वारा बताए गए उपाय विश्वास की शक्ति पर आधारित है। ईसाई धर्म में भी फेथ हीलिंग का विशेष उल्लेख किया गया है।

एक व्यक्ति विभिन्न प्रकार के रोगों, अवसाद, दुख व संयोगों से ग्रसित रहता है। यह व्यक्ति इन मुसीबतों से छुटकारा पाने के लिए ज्योतिषियों व दैवज्ञों द्वारा बताए गए उपायों को अपनाता है। इनकी दिलचस्पी या चिंता सिर्फ निम्नलिखित क्षेत्रों में है– धन, स्वास्थ, विद्या, जीविका, कल्याण, तंदुरूस्ती, शादी, प्रेम, बच्चे व बीमारी को दूर भगाना इत्यादि।

हिंदू ज्योतिष विशेष रूप से नौ ग्रहों पर आधारित है जिसमें दो छाया ग्रह राहु व केतु व बारह राशियां शामिल हैं। यह सिद्ध हुआ है कि ये सारे ग्रह विभिन्न राशियों में गोचर करते हुए विश्व की सारी गतिविधियों पर सूक्ष्म और वृहद स्तर पर प्रभाव डालते हैं। कुछ ग्रह शुभ कहलाते हैं और कुछ अशुभ कहलाते हैं। ये अशुभ ग्रह जब विभिन्न क्रमचय और युति में मनुष्य के लिए भिन्न प्रकार की समस्याएं अपनी दशा व गोचर के आधार पर उत्पन्न करते हैं। वह ग्रह जो अशुभ है उन्हें अनुकूल बनाने के लिए शांत किया जाता है।

प्राचीन भारतीय साहित्य व ग्रंथ में दिए गए उदाहरण व संदर्भ ये दर्शाते हैं कि विभिन्न उपाय जैसे होम, जाप, मंत्रोच्चार, स्तोत्र का उच्चारण और खास व्रत रखना आदि सही, इच्छित फल पाने के लिए प्रभावपूर्ण है। महान भारतीय राजा दशरथ को संतान सुख त्रिषियों के ऋषि वशिष्ठ के निर्देशन में आवश्यक **पुत्रेष्ठि यज्ञ** कर के प्राप्त हुआ था।

ऋषि मार्कंडेय ने मृत्यु के महातांडव का निवारण महामृत्युंजय मंत्र के जाप से किया। नेपाल के राजा अपने सच्चे एकमुखी रुद्राक्ष की वजह से राजतंत्र में रहे, जबकि जन्मपत्री में अशुभ योग थे।

इन उपायों की अचूकता बेजोड़ है और कई जगह इसका विवरण किया गया है।

जगत में हर वस्तु जैसे धरती, जल, वायु, कीड़े–मकौड़े, पतंगा, जानवर, पत्थर, स्फटिक और धातु, व रंग, खुशबू, आकार, गति, ग्रह व तारों में ऊर्जा होती है जो चमत्कार कर सकती है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

7. विभिन्न उपायों के प्रभाव का संक्षिप्त विवरण

चमत्कार आलौकिक या अस्वाभाविक नहीं बल्कि यह कुछ अलग, बहुत स्वाभाविक लेकिन प्रकृति से परे होता है। चमत्कार एक रत्न की तरह स्वाभाविक है और उतना ही सच्चा है जितने कि हम, हमारी सांसें और सूर्य जैसा शक्तिशाली। **रत्नों के चमत्कार** का अर्थ है शक्ति का विकल्प के परिवर्तन के लिए प्रयोग।

अब हम समझ सकते हैं कि रत्नों में गुप्त शक्तियां, किरणपात व ऊर्जा होती है। विभिन्न प्रकार के रत्नों में विभिन्न प्रकार की ऊर्जाएं होती है जो कि हमारे जीवन में बदलाव उत्पन्न करने में सक्षम हैं। हमारे रत्नों के कोष हमारी जिस तरह से सहायता करते हैं, उसी तरह रुद्राक्ष में विद्युत चुंबकीय गुण होते हैं जो शरीर क्रिया विज्ञान पर प्रभाव डालता है।

रुद्राक्ष कवच सबसे शक्तिशाली प्रतिकारक यंत्र होता है क्योंकि यह व्यक्ति के सकारात्मक गुणों में वृद्धि करता है और हर नकारात्मक पक्ष को मिटाता है।

यंत्र –यंत्रों में गूढ़ शक्तियां होती है और ये हमारी रक्षा एक कवच की तरह करते हैं।

मंत्र – मंत्रोच्चारण हमारे अंदर स्पंदन पैदा करता है और हमारे व्यक्तित्व व बुद्धि का विकास करता है।

इसके पश्चात् मालाओं के प्रयोग विभिन्न मंत्रोच्चारण करने के विशेष उद्देश्य को प्राप्त करते हैं। ऋषि या द्रष्टा यह भी कहते हैं कि माला के 108 मनके हमें हर तरह की सिद्धि प्राप्त कराते हैं। किसी खास समस्या के समाधान के लिए हम रत्न, रुद्राक्ष, मंत्र, यंत्र, ताबीज, अंगूठी, लॉकेट, स्फटिक, या सिक्के का प्रयोग कर सकते हैं।

स्फटिक हमारी प्रतिकूल स्पंदन से रक्षा करते हैं। यह प्रकाश और ऊर्जा का एक शक्तिशाली माध्यम है। यह परिवर्तक व विस्तारक/वर्द्धक के रूप में विभिन्न ऊर्जाओं को जैव ऊर्जाओं में परिवर्तित करके हमारे शरीर तंत्र/शारीरिक संरचना को संतुलित व कोशिकीय, भावनात्मक, मस्तिष्कीय व आध्यात्मिक स्तर पर पुनः ऊर्जावान् बनाते हैं। पारद् शिवलिंग की पूजा करके हमें शिवजी का आर्शीवाद तुरंत प्राप्त होता है क्योंकि **पारद शिवलिंग** की पूजा से हजार करोड़ शिवलिंगों की पूजा का फल प्राप्त होता है।

यह माना जाता है कि **अंगूठियों** का हमारे ऊपर रहस्यमयी प्रभाव होता है। जब रत्न हमारी उंगली को छूता है तो हमारे अंदर अनुकूल ऊर्जा का प्रवाह करता है जिसका सीधा प्रभाव हमारे मस्तिष्क पर होता है चूंकि हमारी उंगलियों की स्नायु का संबंध सीधे मस्तिष्क से होता है।

पिरामिड उपयुक्त स्थान पर स्थापित करने से, भूमि व भवन के ऊर्जा क्षेत्र को सकारात्मक (बलशाली व जैव–ऊर्जा में परिवर्तित करता है और व्यक्ति की जैव–ऊर्जा को खाली करने के बजाय संपूर्ण करता है। अतः वह व्यक्ति थकान व तनाव न महसूस करते हुए अतिरिक्त ऊर्जावान होकर रोजमर्रा की जिंदगी के दवाबों व अपेक्षाओं का डटकर सामना कर पाता है।

सकारात्मक ऊर्जा स्रोत के अंतर्गत व्यक्ति बेहतर निद्रा, व स्वस्थ एवं सतुंष्ट जीवन को प्राप्त करता है। ऐसे में व्यक्ति अधिक अच्छे से ध्यान लगा सकता है तथा उसकी तनाव, थकान व संक्रामक रोगों से मुक्ति हो जाती है।

सिक्कों को बतौर ताबीज धारण करने/रखने से सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

यंत्रो, रुद्राक्ष व रत्नों के लॉकेट गले में पहनने के लिए होते हैं। योगियों के अनुसार लॉकेट का सकारात्मक स्पंदन हृदय चक्र को सक्रिय करता है। जब हम गले में लॉकेट पहनते हैं तो ढाल बनकर हमारी काला जादू, बुरी आत्माओं व भूत प्रेत से और ग्रहों के प्रतिकूल प्रभाव से रक्षा करता है।

फेंगशुई का अर्थ है वायु व जल। प्राचीनकाल से ये दोनों जल व वायु दो बड़ी शक्तियां मानी जाती रही है। यही

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

ऊर्जा व्यक्ति के स्वास्थ, प्रगति व सौभाग्य के लिए ज़िम्मेदार होती हैं। फेंगशुई सामग्री हमारे वातारण में सकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह की बेहतरी का दावा करती है।

रंग चिकित्सा हमारे शरीर के ऊर्जा चक्रों को संतुलित करती है और उसमें वृद्धि करती है। यह हमारे शरीर के स्वतः स्वस्थ होने की क्षमता को प्रेरित करती है।

रंग चिकित्सा रंगों के प्रयोग से चक्रों के ऊर्जा केंद्रों को पुनः संतुलित करती है।

लाल किताब में कुछ विलक्षण उपायों का उल्लेख है। ये उपाय सस्ते हैं व एक आम आदमी की पहुंच में हैं।

यज्ञ :

इस समग्र सृष्टि के क्रिया कलाप **'यज्ञ'** रूपी धुरी के चारों ओर ही चल रहे हैं। ऋषियों ने **''अयं यज्ञो विश्वस्य नाभिः ''(अथर्ववेद 1, 15, 14)** कहकर यज्ञ को भुवन की इस जगत की सृष्टि का आधार बिंदु कहा है। स्वयं गीताकार योगिराज श्रीकृष्ण ने कहा है–

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्टा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्ट कामधुक।।

अर्थात्– ''प्रजापति ब्रह्मा ने कल्प के आदि में यज्ञ सहित प्रजाओं को रचकर उनसे कहा कि तुम लोग इस यज्ञ कर्म के द्वारा वृद्धि को प्राप्त होओ और यह यज्ञ तुम लोगों को इच्छित भोग प्रदान करने वाला हो।'' यज्ञ भारतीय संस्कृति के मनीषी ऋषिगणों द्वारा सारी वसुन्धरा को दी गयी ऐसी महत्वपूर्ण देन है, जिसे सर्वाधिक फलदायी एवं पर्यावरण केंद्र (इको सिस्टम) के ठीक बने रहने का आधार माना जा सकता है।

प्राणायाम :

हमारे ऋषियों ने जीवन–भर तपस्या के फल स्वरूप, संसार में वास्तविक सुख और शांति लाने के लिए योग विज्ञान का निर्माण किया था। योग साधना में प्राणायाम सर्वश्रेष्ठ है।

कहा जाता है कि आत्मा और परमात्मा के मिलन का नाम योग है। प्राणायाम सांस को लेने और छोड़ने की प्रक्रिया है। प्रायः हम शरीर के रोगों का इलाज औषधियों द्वारा करते हैं। परंतु यह देखा गया है कि रोग, मात्र इन औषधियों से नष्ट नहीं होते। योग और प्राणायाम के अभ्यास से हम इन शारीरिक रोगों से मुक्त हो सकते हैं। प्राणायाम के निरंतर अभ्यास से विचार केंद्रित होते हैं और इस से प्राप्त शक्ति मनुष्य के जीवन के लिए लाभदायक सिद्ध होती है। प्राणायाम को सर्वश्रेष्ठ तप की संज्ञा भी दी गई है तथा इसकी साधना से पापों का नाश होता है तथा ईश्वर की प्राप्ति होती हैं प्राणायाम से कुंडलनी शक्ति को भी जागृत किया जा सकता है।

अर्घ्य : मनोवांछा पूरा करने के लिए देवताओं को अर्घ्य अर्पित किया जाता है। यह प्रक्रिया सभी पूजा पद्धतियों का अभिन्न अंग है। जल ईश्वर को अत्यंत प्रिय है। इसलिए इसकी महिमा का वर्णन श्री मद्भगवद् गीता में भी मिलता है।

दान : दान पूजा का एक महत्वपूर्ण अंग है पूजा के अन्य दो मुख्य अंग हैं जप व तप।

देव दर्शन : देव दर्शन अर्थात् तीर्थ स्थल की यात्रा को सभी धर्मों में शुभ माना गया है। अलग–अलग लोगों को अलग–अलग मंदिरों में आस्था होती है। इसलिए वह लोग अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए मंदिरों की यात्रा करने में विश्वास रखते हैं।

व्रत : व्रत एक अटल निश्चय है जब तक मनुष्य कोई व्रत नहीं करता तब तक उसका मन इधर–उधर भटकता है। योग साधना के अनुसार भी यम और नियम पर बल दिया जाता है और ये दोनों ही व्रत हैं। व्रत धारी के मन

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

में यह पूर्ण निश्चय होना ही चाहिए कि यदि इससे मेरी कोई तात्कालिक हानि हो रही हो तब भी में अपना व्रत भंग नहीं करुंगा।

भारतीय हिंदू संस्कृति में व्रत व पर्वों का अधिकाधिक महत्व रहा है। वास्तव में व्रत करना व रखना भी एक तप के समान ही है, हमारे पौराणिक धर्म ग्रंथों व हिंदू शास्त्रों में व्रतों की अत्यधिक महिमा बताई गई है, इसलिए आज व्रतों को समस्या निवारण का एक अचूक उपाय माना जाता है। इन व्रतों में एकादशी, महाशिव रात्रि, नवरात्र, वट सावित्री, करवाचौथ, पूर्णिमा आदि को श्रेष्ठ माना जाता है।

औषधि स्नान : आयुर्वेद में आयुर्वैदिक जड़ी बूटियों से किए जाने वाले औषधि स्नान से स्वास्थ्य में सुधार होता है।

जल विसर्जन : फूल, दीपक या देवी देवता की मूर्तियों को ईश्वर का विशेष आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए विसर्जित किया जाता है।

8. उपाय की अवधि

अधिकतर उपायों की अवधि 40 दिन की होती है प्रत्येक प्रकार की पूजा 40 से 43 दिन में शुभ परिणाम देना शुरु कर देते हैं। इसलिए इस प्रकार के धार्मिक कृत्यों को लगातार 43 दिनों तक किए जाने की परम्परा है यदि समस्या अधिक गंभीर हो तो इन कर्म कांडों का एक सुविधा जनक अंतराल के बाद पुनरावर्तन किया जाना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि रत्न, रुद्राक्ष व अन्य अमूल्य ताबीज 43 दिन के बाद अपना शुभ परिणाम देते हैं। इन 43 दिनों के दौरान इस विशेष ताबीज, यंत्र, रुद्राक्ष या रत्न से जुड़ी पूजा व मंत्र का नियमित रूप से अनुष्ठान होते रहना चाहिए।

9. ग्रहों से संबंधित उपाय

ग्रहों की शांति के लिए व शुभ फल की प्राप्ति के लिए ग्रहों से संबंधि दान किया जाता है यज्ञ, रत्न व रुद्राक्ष धारण करके भी ग्रहों के अशुभ प्रभाव को कम कर शुभ प्रभाव प्राप्त कर सकते हैं। विशेष रूप से ग्रहों से संबंधित देवी–देवताओं की पूजा मंत्र जाप एक निश्चित संख्या में करके अनुकूल परिणाम प्राप्त होते हैं। यदि किसी जन्म पत्रिका में भाग्येश कमजोर हो तो उससे संबंधित रत्न, रुद्राक्ष, मंत्र जाप या देवी–देवता के पूजन आदि से भाग्य को प्रबल किया जा सकता है। ग्रहों की अत्यधिक शुभता प्राप्त करने के लिए भी यह उपाय किए जा सकते हैं।

10. विशेष समय के लिए उपाय

जब किसी व्यक्ति को दशा–अंतर्दशा गोचर या जन्मपत्रिका में अशुभ ग्रह शनि, मंगल, राहु से परेशानी हो रही हो या शनि की ढैय्या साढ़ेसाती का समय हो तो उस समय ग्रह की अनुकूलता के लिए उपाय के रूप में यज्ञ, मंत्र, जप, स्तोत्र, रत्न, रुद्राक्ष और व्रत करके अशुभ समय के कुप्रभाव को कम किया जा सकता है।

11. मनोवांछा पूर्ति के लिए उपाय

प्रत्येक मानव जीवन में मनोवांछित फल की प्राप्ति के लिए जैसे स्वास्थ्यलाभ, धन, ज्ञान व यश प्राप्ति आदि के लिए विशेष यज्ञ, मंत्र जप या व्रतों को करके पूर्ण किया जा सकता है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अध्याय – 2

रत्न – उपरत्न

इस अध्याय में अनेक रत्नों की परिभाषा, उत्पत्ति, गुणवत्ता, रत्नों के 84 अन्य भेद एवं उनकी पहचान आदि। साथ ही नवग्रहों के उपरत्न आदि के बारे में अधिकाधिक जानकारी और वैज्ञानिक प्रभाव प्रस्तुत किया गया है। जातक मूल्यवान रत्न के अभाव में जन्म नक्षत्र की औषधि के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार किस महीने में जन्म लेने से कौन सा रत्न धारण करें यह भी इसी खण्ड में प्रस्तुत किया गया है। ग्रहों के निर्धारित धातु के बारे में भी यथास्थान जानकारी दी गयी है। इसके अध्ययन से साधारण व्यक्ति भी रत्नों के बारे में बहुत कुछ जान सकता है।

रत्न की परिभाषा

1. रत्न उसे कहते हैं, जो प्राकृतिक रूप में अद्भुत आभा, वर्ण, शक्ति और प्रभाव से युक्त हो एवं उसमें विशेष गुण समाहित हों।
2. धरती के आंचल में (भूगर्भ में) विभिन्न भौतिक और रासायनिक तत्वों के संघटन से उत्पन्न, विशेष प्रकार की दीप्ति वाले प्रस्तर खण्डों को जो कि आकार में बहुत ही छोटे होते हैं। इन्हें रत्न की संज्ञा दी जाती है।
3. खनिज रूप में प्राप्त होने वाले चमकदार रंगीन पत्थर, जो सहज सुलभ नहीं होते, 'रत्न' कहलाते हैं।
4. वे सभी प्रस्तर खण्ड जो अपनी संरचना, वर्ण, प्रकाश और गुणवत्ता के कारण दुर्लभ हैं, उन्हें रत्न कहते हैं।

रत्न उत्पत्ति

मानव सभ्यता के प्रथम चरण में पत्थरों के सहारे ही निर्वाह होता था। भोजन और निर्वाह सुरक्षा और आक्रमण सभी विषयों में पत्थर ही प्रयोग में लाये जाते थे। उस समय मानव ज्यादा विकासशील नहीं था। मांस, पत्थर और आग जीवन यापन के यही तीन माध्यम थे। इतिहास में इस युग को प्रस्तर युग या पाषाणयुग कहा गया है। कालान्तर में वैभव विलासिता की सीमा में पहुँचते–पहुँचते मानव का रत्नों से परिचय हुआ। उसने उसकी गुणवत्ता को परखा और इस प्रकार अधिक मूल्यवान रत्नों को स्वीकार किया। रत्न प्राकृतिक और दुर्लभ होते हैं। इसलिये वे जन सामान्य की पहुँच से बाहर हैं।

रत्नों के विषय में मानव को सर्वप्रथम जानकारी कब हुई, निश्चित नहीं कहा जा सकता। परन्तु यह निश्चित है कि, यह जानकारी एक दिन में या एक व्यक्ति को नहीं हुई। रत्नों की कुल संख्या विवादग्रस्त है। 'चौरासी पाषाण' के आधार पर पत्थरों की 84 जातियाँ मानी जाती हैं। परन्तु वे सभी 'रत्न' नहीं हैं। प्रमुख रूप से कुछ ही पत्थरों को रत्न के अन्तर्गत माना जाता है। ऐसे ही कुछ दुर्लभ किंतु अपेक्षाकृत अल्पमोली पत्थर 'उपरत्न' कहलाते हैं।

रत्न दुर्लभ और मूल्यवान होते हैं, जबकि उपरत्न सरलता से प्राप्त हो जाते हैं। ज्योतिषीय और आयुर्वेदिक दृष्टि से भी दोनों में उत्तम–मध्यम का भेद है। यह मान्यता भारत की ही नहीं, समस्त भूमण्डल की है। रत्नों की एक तीसरी श्रेणी भी है–नकली रत्न, जो देखने में बहुत आकर्षक, भड़कीले किन्तु प्रभाव में नगण्य और उपयोगिता की दृष्टि से शून्य होते हैं। वस्तुतः ये पत्थर न होकर कांच या रासायनिक मिश्रणों के ठोस रूप होते हैं, जिन्हें सामान्य

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

जन थोड़ी देर के लिए पहनकर अपनी लालसा की पूर्ति कर लेते हैं, परन्तु लाभ नहीं होता।

ज्योतिष शास्त्र की भारतीय पद्धति में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र शनि, राहु तथा केतु को ही मान्यता प्राप्त है। अनुभवों में पाया गया है कि रत्न परामर्श के समय उपरोक्त नवग्रहों को आधार मान कर दिया गया परामर्श अत्यधिक प्रभावी तथा अचूक होता है। यहाँ पर हम इन्हीं नवग्रहों के आधार पर विभिन्न रत्नों तथा उपरत्नों का परिचय प्राप्त करेंगे। अनेक धारकों को संकटग्रस्त होते भी देखा सुना गया है। यद्यपि उन्होंने काफी पैसा खर्च करके रत्न पहना था, परन्तु लाभ के बदले उन्हें हानि मिली। कारण या तो रत्न निर्दोष नहीं थे, या फिर धारकों की ग्रह स्थिति से उनकी अनुकूलता नहीं थीं।

रत्न एक नजर में

ग्रह	रत्न	लाभ
सूर्य रत्न	माणिक्य, गारनेट	मान–सम्मान प्रशासनिक कार्यों में सफलता हेतु
चंद्र रत्न	मोती, मून स्टोन	मानसिक शांति, स्वास्थ्य व क्रोध नियंत्रण हेतु
मंगल रत्न	मूंगा, सफेद मूंगा	शत्रु पक्ष पर विजय, पौरूष व साहस के लिए
बुध रत्न	पन्ना पेरीडॉट	स्मरण शक्ति, वाकपटुता, आकर्षण, प्रेम संबंधों हेतु
गुरु रत्न	पुखराज सुनैला	ज्ञान प्राप्ति, विद्या, यशमान के लिए
शुक्र रत्न	हीरा जरकन ओपल	प्रेम संबंध स्वास्थ्य, आकर्षण, प्रेम, सौंदर्य आकर्षण, पूर्वाभास, अध्यात्म
शनि रत्न	नीलम फिरोजा नीली एक्वामैरीन	राजयोग, भाग्य वृद्धि आकर्षण, सुरक्षा दुस्वप्ननाशक, मानसिक शांति सुखी वैवाहिक जीवन, समस्या निदान के लिए
राहु रत्न	गोमेद	राजनीतिक सफलता, सुख–समृद्धि के लिए
केतु रत्न	लहसुनिया	व्यापारिक समस्या के निदान, आत्म विश्वास की वृद्धि व अकस्मात् धन प्राप्ति के लिए

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

84 रत्न : एक नजर में

नीचे 84 रत्नों की जानकारी दी जा रही है। इनमें बहुत से रत्न तो अब दुर्लभ भी हो गए हैं। रत्नों का बाजार में सामान्य प्रचलित मूल्य प्रति कैरेट के हिसाब से दिया गया है। इसमें रत्न की गुणवत्ता, वजन एवं चमक, आभा, कटिंग के आधार पर कीमतों में तेजी–मंदी संभव है।

हिंदी	**अंग्रेजी**	**विवरण**	**स्वामी ग्रह**
माणिक	Ruby	यह जितना अधिक लाल रंग का होता है, उतना ही कीमती होता चला जाता है। 24 कैरेट के ऊपर के माणिक को लाल कहा जाता है, जो बहुमूल्य होता है। माणिक हल्के गुलाबी रंग से गहरे लाल तथा श्याम आभायुक्त भी मिलते हैं।	सूर्य
हीरा	Diamond	हीरा जितना अधिक सफेद एवं बिना दाग के चमकीला होगा, उतना ही अधिक महंगा होगा। वैसे हीरा सफेद, पीला, गुलाबी, लाल, काला तथा कोका कोला रंग में मिलता है। हीरे का उपयोग, पहनने के अलावा, औद्योगिक क्षेत्र में भी होता है।	शुक्र
पन्ना	Emerald	पन्ना हरे तोते के रंग का, मोर की गर्दन के रंग का, हरी झांई लिये होता है। पन्ने में जाला होना अनिवार्य है।	बुध
नीलम	Sapphire	जो नीलम गहरे नीले रंग का होता है, उसे इंद्रमणि तथा हल्के नीले रंग का, बीच में सफेदी लिए, उसे जलनील कहा जाता है। नीलम में जब नीले रंग के साथ लाल रंग भी आता है, तब उसे खूनी नीलम कहा जाता है।	शनि
पुखराज	Yellow Sapphire	पुखराज पीला, सफेद, हरा, लाल एवं नीले रंग में आता है। आजकल बाजार में 'हीटेड' भी चल रहा है, जिसका पीला रंग कुछ समय में गायब हो जाता है।	गुरु
लहसुनिया	Cat's Eye	इसमें बिल्ली की आंख जैसा सूत, या एक रेखा रहती है, जो घुमाने पर इधर–उधर घूमती नजर आती है। इसका रंग पीला तथा हरापन, या स्याही का रंग लिये होता है।	केतु

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

गोमेद	Zircon	इसका रंग गोमूत्र जैसा होता है। आजकल बाजार में काले, पीले, लाल, तथा कोका कोला जैसे रंग के गोमेद मिल रहे हैं।	राहु
मोती	Pearl	मोती सफेद, गुलाबी, पीलापन लिये तथा काले रंग में मिलते हैं। आजकल बाजार में 'कल्चर्ड' मोती अधिक मात्रा में चल रहे हैं।	चंद्र
मूंगा	Coral	यह लाल, सिंदूरी तथा सफेद रंग में मिलता है।	मंगल
लालड़ी	Spinel	यह गुलाब के फूल के रंग का उपरत्न है। यह नरम, पारदर्शक, संपूर्ण कांति वाला होता है।	सूर्य
फिरोजा	Turquoise	यह फिरोजी रंग का होता है। इसका रंग आसमान जैसा दिखता है। यह फकीरी रत्न है और इसे हिंदू तथा मुसलमान अधिक पहनते हैं।	शुक्र शनि, बुध
रोमनी		यह गहरे लाल रंग का, कुछ–कुछ श्यामलता लिये होता है।	सूर्य
जबरजद्द	Peridot	यह हल्के से ले कर गहरे हरे रंग का होता है। अच्छा जबरजद्द कभी–कभी पन्ने का भान करा देता है।	बुध
उपल	Opal	यह दूधिया सफेद रंग का होता है। घुमाने पर इसमें विभिन्न रंग के तारे दिखाई देते हैं।	शुक्र
तुरमली	Tourmaline	यह विभिन्न रंगों में मिलता है। हरा, लाल, पीला, नीला, सफेद इत्यादि।	रंग के अनुसार
नरम	Spinel Ruby	यह गहरा लाल तथा श्याम रंग लिये होता है।	सूर्य
सुनेला	Citrine or Gold Topaz	इसका रंग स्वर्ण के रंग जैसा गहरा पीलापन लिये होता है। यह भार में हल्का होता है।	गुरु
कटैला	Amethyst	इसको जामुनिया भी कहते हैं, क्योंकि इसका रंग बैंगनी होता है। यह भार में हल्का होता है। कहीं–कहीं इसे बैंगनिया कहते है।	शनि
संगसितारा	Gold Stone	यह गेरुए रंग का, कुछ गहरा कत्थई रंग लिए होता है। इसको घुमाने पर अनगिनत सोने के छींटे जैसे तारे दिखाई देते हैं।	गुरु
स्फटिक	Crystal	यह बर्फ जैसा सफेद रंग का होता है। स्फटिक की माला, गणेश, श्री यंत्र, शिव लिंग एवं विभिन्न प्रकार की मूर्तियां आती हैं। यह ठंडा रत्न है।	शुक्र
चंद्रमणि	Moon Stone	यह भी बर्फ जैसे सफेद रंग से ले कर गुलाबी, नीला, पीला एवं काले रंग में मिलता है।	चंद्र
तामड़ा	Garnet	यह गहरा कत्थई रंग लिये होता है।	सूर्य

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

लूधया		यह मजीठ के समान हरे रंग का होता है। यह गुम पत्थर है और खरल के काम में आता है।	मंगल
मरियम मकनातीस	Marble Fire Stone	यह सफेद रंग का और अच्छी पॉलिश का होता है। इसे चकमक पत्थर कहते हैं। यह कुछ श्यामपन लिये सफेद रंग का होता है। लोहे पर रगड़ने से इससे आग पैदा होती है।	
सिंदूरिया नीली		यह कुछ सफेदी लिये, गुलाबी रंग का, चमकदार होता है। यह हल्के से गहरे नीले रंग का होता है और नरम होता है।	शनि
धुनेला	Smoky Quartz	यह सुंदर आभायुक्त, धुंए के रंग का होता है।	
बैरूज़	Aquamarine	बैरूज़ का रंग हल्का हरापन लिये पन्ने के रंग जैसा होता है।	बुध
मरगज	Jade	यह पन्ने जैसा हल्का हरापन लिए होता है। इसमें पानी नहीं होता।	बुध
पितौनिया	Blood Stone	मलिन पीला, नीला रंग लिए, हरे रंग का तथा लाल रंग के छींटे लिये गुम और सख्त अंग का होता है।	
बांसी	Seagreen	यह हल्के हरे रंग का होता है। इसकी पॉलिश अच्छी होती है।	
दुर्वेनज्फ		यह धानी रंग का गुम पत्थर है और फर्श बनाने के काम आता है।	
सुलेमानी	Onyx	यह काले रंग का पत्थर होता है। इस पर सफेद डोरा होता है।	
आलेमानी		यह सुलेमानी की जाति का पत्थर है। इसका रंग भूरा तथा इसमें डोरा होता है।	
जजेमानी		यह सुलेमानी की जाति का पत्थर है। इसका रंग भूरा तथा इसमें डोरा होता है।	
सावोर		यह हरे रंग का होता है एवं इसपर डोरा रहता है।	
तुरसावा	Zircon	समुद्री पानी की आभायुक्त, श्वेत, हरा, लाल रंग, हल्का विशेष कांति वाला होता है।	
अहवा		यह गुलाबी रंग का होता है एवं इस पर बड़े–बड़े छींटे होते हैं। इसकी खरल और फर्श बनती हैं। इसका अंग कठोर नहीं होता है।	

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अबरी		इसका काला एवं पीला रंग अब्रवाला होता है। यह संगमरमर जैसा है।	
लाजवर्त्त	Lapis Lazuli	यह नीले रंग का होता है एवं इस पर सफेद छींटे होते हैं।	शनि
कुदूरत		यह काले रंग का होता है एवं इस पर सफेद रंग के गहरे दाग होते हैं।	
चित्ती	Tiger Stone	काला, पीला, सफेद डोरे वाला है। इसे दरियायी लहसुनिया भी कहते हैं।	
संगसन	White Jade	इसका रंग सफेद अंगूरी होता है। यह चिकना एवं कठोर, अपारदर्शक है।	
लास	Marble	यह मारबल जाति का पत्थर है।	
मारवर	Marble	यह अनेक रंग के फर्श एवं मूर्तियां बनाने के काम आता है।	
दाना फिरंग	Kidney Stone	यह गहरे हरे रंग का होता है। इस पर गुर्दे जैसी आकृति बनी होती है।	
कसौटी	Touch Stone	यह काले रंग का पत्थर सोने की परख करने के उपयोग में आता है।	
दारचना		इस पर कत्थई रंग पर नीले और धूमिल छींटे होते हैं। इसकी खरल बनती है।	
हकीक कल बहार हालन		यह जल से निकलता है। इसका रंग हरापन लिये कुछ पीला होता है। इसकी मालाएं बहुत बनायी जाती हैं। यह गुलाबी रंग का होता है एवं जब इसको हिलाते हैं, तो इसका रंग हिलता दिखाई देता है।	
सीजरी	Mossagate Tree water	यह सफेद रंग का होता है। इस पर काले रंग के वृक्ष की आकृति होती है।	
मुबेनज्फ		यह सफेद रंग का होता है एवं इस पर बाल के समान रेखा होती है।	
कहरुवा	Amber	यह लाल पीले रंग का एवं वृक्ष का गोंद होता है। यह नरम और पारदर्शक है।	
झरना	Filter	यह मटिया पत्थर पानी देने से झर जाता है।	
संगबसरी		इसका उपयोग नेत्रों के लिए सुरमा बनाने में होता है।	

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

दांतला		इसे कांसला भी कहते हैं। यह सफेद, पानीदार, चिकना, पारदर्शक पत्थर, तुरमुली के समान रंग में मिलता है और दंत रोग में काम आता है।	
मकड़ा		यह हल्का काले रंग का होता है। इसके ऊपर मकड़ी का जाला होता है।	
संगीया गूदड़ी	Soapstone	यह सेलखड़ी से मिलताजुलता नरम पत्थर है। यह सीमेंट कांक्रीट के समान पीले रंग का पत्थर है। इससे फर्श बनती है। इसकी दड़क भारी होती है।	
कांसला		यह तुरमली जाति का, सब्ज मैलापन लिये हुए, सफेद रंग का होता है।	
सिफरी		यह सब्जी आसमानी अपारदर्शक पत्थर, दवा के काम आता है।	
हदीद		इसका रंग काला, भूरापन लिये, वजन में भारी है तथा इससे दवाएं बनती हैं।	
हवास		इसका रंग सुनहलापन लिये हरे रंग का होता है। यह दवा में काम आता है।	
सींगली		इसे मैसूरी माणिक कहते हैं। यह स्याही और सुर्खी मिश्रित माणिक की जाति का है। इसमें छह कलियों वाले सितारे दिखते हैं।	सूर्य
ढेंडी		इसका रंग काला होता है। इससे खरल तथा प्याले बनाये जाते हैं।	
हकीक	Agate	यह सभी रंगों में मिलता है। यह पहनने से ले कर माला एवं विभिन्न प्रकार की मूर्तियां बनाने के काम आता है।	रंग के अनुसार
गौरी	Agate	यह हकीक से मिलताजुलता धारी वाला है। इसके खरल बनते हैं। यह सख्त है।	
सीया		यह काला पत्थर होता है एवं मूर्ति बनाने के काम आता है।	
सीमाक		यह लाल रंग का, पीलापन लिये, छींटायुक्त होता है। इसके प्याले तथा खरल बनते हैं।	
मूसा	Black Marble	यह सफेद में मटियापन लिये होता है। इससे खरल तथा प्याले बनते हैं।	

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

पनघन अमलीया		हकीक के अनेक रंग होते हैं। इसके खिलौने बनते हैं। हल्का कालापल लिये, गुलाबी रंग का होता है। इसके खरल बनते हैं।	
डूर		इसका रंग कत्थे जैसा होता है। इससे भी खरल बनाये जाते हैं।	
तिलियर		इसका रंग काला, उसपर सफेद छींटे और खरल बनाने में उपयोग होता हैं।	
खारा		इसका रंग काला, हरापन लिये होता है। इससे भी खरल बनते हैं।	
पाए जहर		इसका रंग बांस जैसा होता है। इसे घाव पर लगाने से घाव ठीक हो जाता हैं।	
सीर खड़ी	Gypsum	इसका रंग मिट्टी के समान होता है। इससे खिलौने बनाये जाते हैं।	
जहरमोहरा	Serpentine	इसका रंग कुछ हरापन लिये सफेद है। इसके प्याले में जहर अपना असर खो देता है।	
रवाल या रात रतूवा	Cornelian Rhodonte	इसका रंग लाल एवं नीला होता है। यह नीला दवा बनाने के काम आता है। लाल रंग के पत्थर को रात में आने वाले ज्वर के समय बगल में बांधने से लाभ होता है।	
सोहन मक्खी		स्वर्ण मक्षिका कंकर के समान हल्के पीले रंग का होता है। दवा बनती है।	
हजरते ऊद		यह सफेद मिट्टी के समान है। पेशाब की बीमारी में लाभ देता है।	
सुरमा		इसका रंग काला होता है। यह नेत्रों का सुरमा बनाने के काम आता है।	
पारस अनमोल	Philosop-her's	यह दुर्लभ पत्थर है। इससे लोहे को स्पर्श करने पर वह सोना बन जाता है।	

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

नव ग्रहों के रत्न एवं उपरत्न

सूर्य :

1. **माणिक्य या माणिक** (Ruby)- यह लाल रंग का होता है। 24 रत्ती के ऊपर होने पर लाल कहलाता है। यह बहुमूल्य रत्न है रंग गुलाबी व लाल भी होता है यह सूर्य का रत्न है।
2. **रोमनी**– यह गहरे लाल रंग का कुछ श्यामलता लिये होता है। यह माणिक का उपरत्न है।
3. **लालड़ी**– गुलाब पुष्प के पंखुड़ी के रंग का गहरा रत्न होता है यह माणिक का उपरत्न है।
4. **नरम** (Spinel Ruby)- यह रत्न लाल जर्दपन तथा श्यामपन लिए होता है यह माणिक का उपरत्न है।
5. **तामड़ा** (Garnet)- गहरे रंग में लाली लिए होता है यह 'माणिक की जगह काम आता है यह माणिक का उपरत्न है।
6. **लूधया**– मजीठ के समान लाल रंग का होता है। यह भी 'माणिक' की जगह काम आता है यह माणिक का उपरत्न है।
7. **तुरसावा**– यह बहुत नरम पत्थर होता है गुलाबी रंग मे कुछ जर्द होती है यह माणिक का उपरत्न है।
8. **अहवा**– इसका रंग गुलाबी होता है उस पर बड़े–बड़े छींटे होते हैं। यह माणिक का उपरत्न है।
9. **अम्बर, कहरूवा** (Amber)- यह लाल रंग का होता है इसकी माला बनती है यह माणिक का उपरत्न है।
10. **गूदड़ी**– कई तरह की, कई रंग की होती है इसे फकीर लोग पहनते हैं। यह सूर्य का उपरत्न है।
11. **सींगली**– यह माणिक्य जाति का रत्न है। लाल रंग, कुछ श्याम आभा लिये हुए यह माणिक का उपरत्न है।
12. **सोमाक**– यह लाल रंग का पीलापन लिये होता है। इस पर गुलाबी छींटे होते हैं इसके खरलादि बनते हैं यह सूर्य का पत्थर है।
13. **अमलीया**– थोड़ा कालापन लिये गुलाबी इससे खरल बनते हैं यह सूर्य का पत्थर है।
14. **खात**– यह लाल रंग का होता है। रात में ज्वर आये तो बगल में बांधने से लाभ होता है।

चन्द्र :

1. **मोती** (Pearl)- मोती सफेद, हलका गुलाबी, क्रीम रंग तथा सतरंगी (इन्द्रधनुष) रंग के होते हैं यह चन्द्रमा का रत्न है।
2. **ओपल** (Opal)- सब रंगों में प्राप्त होता है। इस पर सब रंगों का असर पड़ता है यह नरम पत्थर है तथा मोती का उपरत्न है।
3. **मरियम**– सफेद रंग का होता है इसकी पॉलिश अच्छी होती है यह मोती का उपरत्न है।
4. **हालन**– सफेद रंग का होता है इस पर काले रंग के वृक्ष का रूप बना होता है यह मोती का उपरत्न है।
5. **सीजरी**– सफेद रंग का होता है इसमें बाल के जैसी समान रंगदार रेखा होती है यह मोती का उपरत्न है।
6. **मुबेनजफ**– यह सफेद रंग का होता है। इसमें बाल के रंगदार रेखा होती है। यह मोती का उपरत्न है।
7. **झना–मटिया**– यह पानी में राख देने से झड़ (छन) जाता है यह चन्द्रमा का पत्थर है।
8. **दालता**– पीलापन लिये पुराने शंख के समान रंग वाला होता है यह मोती का उपरत्न है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

9. **संगीया**– शंख के समान सफेद इससे घड़ी के समान लॉकेट बनते हैं यह मोती का उपरत्न है।

10. **मूसा**– सफेद मटिया रंग का इसके खरल, प्याले आदि बनते हैं यह चन्द्र का पत्थर है।

मंगल :

1. **मूंगा** (Coral)- इसका लाल या सिन्दुरी एवं अन्य कई रंगों का होता है। यह खनिज नहीं है।
2. **सिन्दुरिया**– यह गुलाबी रंग का कुछ सफेदी लिये होता है यह मूंगे की जगह काम आता है यह मूंगे का उपरत्न है।
3. **प्रवाल**– यह मूंगे के रंग के समान होता है, कुछ सफेदी युक्त खुरदरा एवं वजन में मूंगा से हल्का होता है यह अधिकांश छिद्र वाला पाया जाता है।

बुध :

1. **पन्ना** (Emerald)- यह हरा, बोतली, या हरी झांई लिये मूंग की दाल जैसे हरे रंग का होता है यह बुध का रत्न है।
2. **जबरजद्द** (Peridot)- यह तोता जैसे हलके रंग का होता हैं। इसमें सूत नहीं पड़ता। यह 'पन्ने' की जगह काम आता है यह पन्ने का उपरत्न हैं।
3. **मरगज** (Jade)- यह बिना पानी का हरे रंग का होता है यह पन्ने का उपरत्न है।
4. **पितौनिया** (Blood-Stone)- यह हरे रंग का पत्थर होता है जिस पर लाल रंग के छींटे होते है यह पन्ने का उपरत्न है।
5. **बांशी**– हल्के हरे रंग का संगसम–सा नरम होता है इसकी पॉलिश अच्छी होती है यह पन्ने का उपरत्न है।
6. **दाना फिरंग** (Kidney-Stone)- इसका रंग पिश्ते के समान हरा होता है यह पन्ने का उपरत्न है।
7. **हकीक कलबहार**– यह जल में उत्पन्न होता है इसका रंग हरा, कुछ पीलापन लिये होता है इसकी माला बनाई जाती है यह पन्ने का उपरत्न है।
8. **कामला**– रंग हरा, सफेदी लिये हुए यह पन्ने का उपरत्न है।
9. **हवास**– यह हरे रंग का कुछ सुनहरा–सा होता है दवा मे काम आता है यह पन्ने का उपरत्न है।
10. **पारा जहर**– सफेद बांस जैसा घाव पर लगाने से घाव ठीक हो जाता है विषैले घाव जल्द ठीक हो जाते हैं यह पन्ने का उपरत्न है।
11. **जहर मोहरा**– कुछ हरापन लिये हुए सफेद इसके प्याले में विष भी अपने कुप्रभाव को खो बैठता है यह पन्ने का उपरत्न है।
12. **बैरूज**– देखने में यह पन्ने की तरह होता है यह बुध का उपरत्न है।

गुरु :

1. **पीला विल्लौर** – यह पीले रंग का पत्थर है जिसे लोग भ्रमित करके पुखराज के नाम से बेचते हैं।
2. **सुनैला**– धुनेला को रत्न शास्त्री पुखराज का उपरत्न मानते हैं। यह धुएं जैसा हल्का पीला आभा वाला होता है पीले रंग का धुनैला स्काटलैण्ड में पुखराज के नाम से जाना जाता है।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

3. **टाटरी**– यह अधिक चमक वाला वजन में भारी सफेद रंग का पत्थर है इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है।
4. **लेमन टोपाज**– यह भी गोल्डन टोपाज की तरह नरम पत्थर है यह सुनहरे रंग का न होकर नीबू जैसे रंग का होता है।
5. **सुलेमानी पीला हकीक**– यह पुखराज जैसा ही काम करता है इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है।

शनि :

1. **तुरमली** (Tourmaline)- नरम पत्थर है। ये कई रंग के प्राप्त होते हैं शनि ग्रह के रत्न एवं उपरत्न है।
2. **नीलम** (Blue Sapphire)- इसका रंग नीला (मोर की गर्दन सा) होता है, ये हलके आसमानी रंग के भी होते हैं। यह शनि का मुख्य रत्न है।
3. **फिरोजा** (Turquoise)- यह आसमानी कुछ हरे रंग का मिश्रण जैसे रंग का होता है यह नीलम का उपरत्न है।
4. **कटैला** (Amethyst)- बैंगनी रंग का या नीले रंग में धुआँ मिला होता है यह 'नीलम' की जगह काम आता है यह शनि का उपरत्न है।
5. **नीली**– यह नीलम जाती का होता है परन्तु उससे नरम और कुछ जर्द लिये होता है यह नीलम का उपरत्न है।
6. **धुनेला** (Smoky Quartz)- चमकीले रंग का कुछ धुआंपन लिये हुए होता है। यह नीलम की जगह काम आता है।
7. **बैरूज** (Aquamarine)- इसका हल्का हरा या नीला समुद्र का–सा रंग होता है यह नीलम का उपरत्न है।
8. **आबरी**– यह काला रंग का पत्थर होता है यह नीलम का उपरत्न है।
9. **लाजवर्त** (Lapis Lazuli) यह नीले रंग का नरम पत्थर होता है पहले इसी को नीलम समझा जाता था यह नीलम का उपरत्न है।
10. **कुदूरत**– यह काले रंग का होता है उसके ऊपर सफेद जर्द दाग होते हैं यह नीलम का उपरत्न होता है।
11. **चित्ती**– काले रंग का होता है उसके ऊपर सोने जैसा सफेद, पीला डोरा होता है यह नीलम का उपरत्न है।
12. **कसौटी**– इस काले पत्थर को सोने की परीक्षा के लिए उपयोग में लाया जाता है यह शनि का पत्थर हैं।
13. **संगबसरी**– आंखों के लिये सूरमा बनाने के लिये उपयोग में आता है यह शनि का पत्थर है।
14. **मकड़ा**– हल्का काला, ऊपर मकड़ी का जाला यह शनि का पत्थर है।
15. **सिफरी**– रंग आसमानी हरापन लिये हुए यह शनि का उपरत्न है।
16. **ढेंडी**–चिकना काला इसके खरल और प्याले बनते हैं मूर्तियाँ एवं माला भी बनती हैं यह शनि का पत्थर हैं।
17. **सीया**– काला रंग इसकी मूर्तियां बनती हैं यह शनि का पत्थर है।
18. **नधन**– यह काले रंग का कुछ हरापन लिये होता है इसके खिलौने, मूर्तियां वगैरह बनती है यह शनि का पत्थर है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

19. **लिलियर**– काला रंग, उस पर सफेद छींटे खरल बनतें हैं यह नीलम का उपरत्न है।

20. **खारा**– काला हरापन लिये खरल बनते हैं यह नीलम का उपरत्न है।

21. **हजरते ऊद**– काला, आंख के लिए औषधी बनती है। यह शनि का पत्थर है।

22. **सुरमा**– काला पत्थर इसका पॉउडर संस्कारित करके आंखों में लगाया जाता है यह शनि का पत्थर हैं।

राहु :

1. **गोमेद** (Zircon)- जिरकन के कई रंग होते है, परन्तु जिस रत्न को हम गोमेंद कहते है वह लाल धुयें के रंग का या भूरे रंग का शहद जैसा होता है यह राहु का मुख्य रत्न है।
2. **हरीद**– काला भूरापन लिये हुए वजन भारी इससे कमान बनती है यह गोमेद का उपरत्न है।
3. **डूर**– कत्थे के रंग का इससे खरल बनते हैं यह गोमेद का उपरत्न है।
4. **तुरसावा**– रंग में कोपल चिकना, सुन्दर नारंगी रंग का एवं अन्य कई रंगों में तुरसावा पाया जाता है यह मौसम के प्रभाव से रंग बदलता है।
5. **साफी**– इसकी चमक तुरसावा से कम होती है, पर यह तुरसावा का ही रुप है वजन भी तुरसावा से हल्का होता है।
6. **तृणकान्त**– यह वानस्पतिक रत्न है प्राचीन समय के उत्पन्न वृक्ष की गोंद पृथ्वी के भीतर अधिक समय तक रहने से वह कठोर और चमकदार हो जाता है। यह वजन में हल्का होता है तथा कई रंगों में पाया जाता है।

केतु :

1. **लहसुनिया** (Cat's Eye)- इसमें बिल्ली की आंख के समान सूत पड़ता है। इसी से इसको सूत्रमणी भी कहते हैं इसका रंग पीलापन लिये या स्याही लिए हुए श्वेत भी होता है यह केतु का रत्न है।
2. **गौदन्ता** (Godanta)- गाय के दांत के समान थोड़ा जर्दपन लिये होता है। इसमें सूत भी पड़ते हैं यह केतु का उपरत्न है।
3. **स्फटिक वर्ग का लहसुनिया**– यह नरम पत्थर है, इसे एनके बोमोन काट से काटा जाता है यह हरा और भूरा रंग के मिश्रण वाला होता है जिसे लहसुनिया का उपरत्न माना जाता है।
4. **अलक्षेन्द्र**– यह चिकना, भारी एवं लोचदार बहुरंगी पत्थर है यह दिन में हरा तथा रात को बिजली के प्रकाश में लाल दिखता है। यह बहुमूल्य पत्थर है जिसका उत्पाद श्री लंका और अफ्रीका में होता है।
5. **कर्केटक**– यह अति साफ सुन्दर रत्न है जब लहसुनिया में धारियां नहीं दिखती तो उसे कर्केटक कहते हैं। पाश्चात्य जौहरी इसे चिएस्टोलाइट कहते हैं। यह पारदर्शक होता है जिसे केतु का उपरत्न माना जाता है।
6. **चन्दास**–पीले रंग का चिकना चमकदार अज कर्ण नामक वृक्ष का गोंद चन्द्रास कहलाता है इसे औषधि रत्न माना गया है। इसकी मणियां बनाकर माला में पिरोकर धारण किया जाता है।
7. **दोपोस्ता**– यह अति सुन्दर धारीदार पत्थर होता है यूरोप, अमेरिका में यह ज्यादातर दाम्पतय जीवन को सुखी बनाने के लिए उपयोग किया जाता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

रत्न रहस्य

औषधि मणि मंत्राणां–ग्रह नक्षत्र तारिका।
भाग्य काले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत्।।

औषधि, रत्न एवं मंत्र ग्रह जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही हो, तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

जन साधारण रत्नों की महिमा से अत्यधिक प्रभावित है। लेकिन अक्सर रत्न और रंगीन कांच के टुकड़ों में अंतर करना कठिन हो जाता है। रत्न अपने रंग के कारण ही प्रभाव डालते हैं, ऐसी धारणा कई लोगों के मन में आती है परंतु ऐसा नहीं है। रत्न का रंग केवल उसकी खूबसूरती के लिए होता है। रत्नों की लोकप्रियता बढ़ने का कारण यह भी रहा है कि इनसे अध्यात्म, सामाजिक जीवन की हर परेशानी का हल माना जाने लगा है– फिर चाहे वह प्रतिस्पर्धा से निपटने की बात हो या टूटे रिश्ते को जोड़ने का मामला हो। रत्नों का कट और आकार उनके सौंदर्य में इजाफा करता है। रत्नों का समकोणीय कटा होना भी आवश्यक है, यदि ऐसा नहीं हो तो वे ग्रहों से संबंधित रश्मियों को एकत्रित करने में पूर्ण सक्षम नहीं होंगे। इसलिए किसी भी रत्न को धारण करने से पहले उसके रंग, कटाव, आकार व कौन सा रत्न आपके लिए अनुकूल होगा इन जानकारियों के बाद ही रत्न धारण करें। रत्नों को धारण करने से मन में एक खास प्रकार की अनुभूति भी होती है, मानो आपने किसी खजाने को धारण कर लिया हो, और वैसे भी रत्नों पर किया निवेश व्यर्थ नहीं जाता।

रत्न एवं ग्रहों के संबंध पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण

मानव जीवन पर ग्रहों का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। ग्रहों में व्यक्ति के सृजन एवं संहार की जितनी प्रबल शक्ति होती है उतनी ही शक्ति रत्नों में ग्रहों की शक्ति घटाने तथा बढ़ाने की होती है। वैज्ञानिक भाषा में रत्नों की इस शक्ति को हम आकर्षण या विकर्षण शक्ति कहते हैं। रत्नों में अपने से संबंधित ग्रहों की रश्मियों, चुम्बकत्व शक्ति तथा वाइब्रेशन (स्पंदन) को खींचने की शक्ति के साथ–साथ उसे परावर्तित कर देने की भी शक्ति होती है। रत्न की इसी शक्ति के उपयोग के लिए इन्हें प्रयोग में लाया जाता है।

रत्न धारण करने की विधि

रत्नों में प्रकाश रश्मियों के परावर्तन की क्षमता होती है। इसलिए प्रकाश किरणों के संपर्क में आते ही वे झिलमिलाने लगते हैं। कुछ रत्नों में स्वर्ण आभा होती है और वे रात्रि के अंधेरे में प्रकाशवान होते रहते हैं। भारतीय ज्योतिष में सर्वप्रथम इनका उपयोग संबंधित ग्रह को बलवान बनाने के लिए किया जाता है। जातक की जन्मकुंडली या गोचर महादशा, अंतर्दशा, प्रत्यंतर दशा में जो ग्रह अनिष्ट कर रहा हो, उसके रत्न को दान करना प्राचीन महर्षियों ने लिखा है। साथ ही जो ग्रह निर्बल हो, उसे बलवान करने के लिए रत्नों को संबंधित ग्रह के मंत्रों से जागृत कर पहनना बताया गया है। बिना जन्मकुंडली के अध्ययन के रत्न पहनने का परामर्श देना या रत्न पहनाना लाभ के स्थान पर हानिकारक सिद्ध हो जाता है।

यदि जन्मकुंडली के अध्ययन के पश्चात रत्न धारण किया जाए तो पूर्ण लाभ प्राप्त किया जा सकता है और अशुभता से भी बचा जा सकता है, जैसे मोती रत्न को यदि मेष लग्न का जातक धारण करे, तो उसे लाभ प्राप्त होगा। कारण

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

मेष लग्न में चतुर्थ भाव का स्वामी चंद्र होता है। चतुर्थेश चंद्र लग्नेश मंगल का मित्र है। चतुर्थ भाव शुभ का भाव है, जिसके परिणामस्वरूप वह मानसिक शांति, विद्या सुख, गृह सुख, मातृ सुख आदि में लाभकारी होगा। यदि मेष लग्न का जातक मोती के साथ मूंगा धारण करे, तो लाभ में वृद्धि होगी।

रत्न को धारण करने की विधि के बारे में प्राचीन भारतीय ज्योतिष आचार्यों ने बताया है कि रत्न धारण करने से पूर्व, उस रत्न को रत्न के स्वामी के वार में, उसी की होरा में, रत्न के स्वामी के मंत्रों से जागृत करा कर, धारण करना चाहिए। रत्न धारण करते समय चंद्रमा भी उत्तम होना आवश्यक है। यदि जो रत्न धारण किया जाए, वह शुभ स्थान का स्वामी हो, तो शरीर से स्पर्श करता हुआ पहनना बताया गया है।

रत्न को धारण करने से पूर्व परीक्षा के लिए उसी रंग के सूती कपडे में बांध कर दाहिने हाथ में बांध कर फल देखें। परीक्षा के लिए रत्न के स्वामी के वार के दिन ही हाथ में बांधें और अगले, यानी आठ दिन बाद, उसी वार के पश्चात, नवें दिन उसे हाथ से खोल लें, तो रत्न द्वारा गत नौ दिनों का शुभ–अशुभ का निर्णय हो जाएगा।

रत्नों को धारण करने से पूर्व यह भी भली भांति देख लें कि रत्न दोषपूर्ण नहीं हो, अन्यथा लाभ के स्थान पर वह हानि का कारण माना गया है। यदि किसी रत्न, जैसे मोती में आड़ी रेखाएं या क्रास या जाल हो तो सौभाग्यनाशक, पुखराज में हों तो बंधुबाधव नाशक, पन्ना में हों, तो लक्ष्मीनाशक, पुखराज में हों तो संतान के लिए अनिष्टकारक, हीरे में हों तो मानसिक शांतिनाशक, नीलम में हों तो रोगवर्धक और धन हानिकारक हैं। यदि गोमेद में हों तो ये शरीर में रक्त संबंधी बीमारी पैदा करती हैं, लहसुनिया में हों तो शत्रुवर्धक, माणिक में हो तो गृहस्थ सुख का नाश, मूंगे में हों, तो सुख संपत्ति के लिए नष्टकारक हो सकता है।

इसी प्रकार मोती में धब्बे, दाग हों तो मानसिक शांति में बाधाकारक, पुखराज में हों तो धन–संपत्तिनाशक, पन्ना में हों तो स्त्री के लिए बीमारीकारक, मूंगे में हों तो पहनने वाले जातक के लिए बीमारीकारक, माणिक में हों तो स्वयं जातक को (पहनने वाले को) बीमार करते हैं। हीरे में हों तो मृत्युकारक, नीलम में हों तो हर क्षेत्र में बिन बुलाई परेशानियां, गोमेद में हों तो संपत्ति और पशु धन का नाशक, लहसुनिया में हों तो शत्रुवर्धक माने गये हैं।

जब एक से अधिक रत्न धारण करें तो रत्न के शत्रु का भी ध्यान रखा जाना चाहिए, जैसे हीरे के शत्रु रत्न माणिक और मोती हैं। मूंगे का शत्रु रत्न पन्ना है। नीलम के शत्रु रत्न माणिक, मोती, मूंगा हैं। माणिक के शत्रु रत्न हीरा एवं नीलम हैं। अतः इस बात को मद्देनजर रखते हुए रत्न को रत्न के धातु में ही पहनना चाहिए। रत्न को पंच धातु, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, कांसा की समान मात्रा की अंगूठी में भी धारण किया जा सकता है। ज्योतिष में प्रत्येक भाव से आठवां भाव उसका मारक माना गया है। इसे मद्देनजर रखते हुए ही रत्न धारण करना चाहिए।

किस प्रकार बनते हैं रत्न?

ऋग्वेद के अनुसार रत्नों की उत्पत्ति में अग्नि सहायक होती है। भूमि के गर्भ में जब विभिन्न रासायनिक तत्व आपस में मिलते हैं, तो भूमि की अग्नि से पिघलकर रत्न बनते हैं। इस रासायनिक प्रक्रिया में तत्व आपस में एकजुट होकर विशिष्ट प्रकार के चमकदार, आभायुक्त रत्न बन जाते हैं तथा इनमें कई गुणों का प्रभाव भी समायोजित हो जाता है। खनिज रत्नों में कार्बन, मैंग्नीज, सोडियम, तांबा, लोहा, फासफोरस, बेरियम, गंधक, जस्ता, कैल्सियम जैसे तत्वों का संयोग होता है। इनके कारण ही रत्नों में रंग रूप, कठोरता व आभा का अंतर होता है। अपने इन्हीं गुणों के कारण ये लोगों को आकर्षित करते हैं।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

रत्न कौन से हैं और कैसे काम करते हैं ?

सूर्य से ले कर केतु तक नव ग्रहों के लिए नौ मूल रत्न हैं– सूर्य के लिए माणिक, चंद्र का मोती, मंगल का मूंगा, बुध का पन्ना, गुरु का पुखराज, शुक्र का हीरा, शनि का नीलम, राहु का गोमेद एवं केतु का लहसुनिया। ये रत्न इन ग्रहों से आ रही किरणों को आत्मसात करने में सक्षम हैं एवं ग्रहों से आ रही किरणों के साथ अनुनाद (resonance) स्थापित कर, शरीर में किरणों के प्रवाह को बढ़ाते हैं। उपरत्न सस्ते होते हैं एवं उनका अनुनाद रत्नों के अनुनाद के नजदीक ही होता है। अनुनाद बिल्कुल सही से न होने के कारण इनका असर दस प्रतिशत से अधिक नहीं होता। अतः मूल रत्न ही धारण करने चाहिएं।

कहां पाए जाते हैं रत्न?

ज्यादातर रत्न समुद्री इलाकों व पर्वतीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं। ये अफ्रीका महाद्वीप के कांगो, घाना व ब्राजील, बर्मा, भारत, श्री लंका, अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा रूस आदि विभिन्न में पाए जाते हैं।

रत्न, उपरत्न, कृत्रिम रत्न व रंगीन कांच में क्या अंतर है?

चारों में अंतर उनकी ग्रह रश्मियों को अवशोषित करने की क्षमता पर आधारित है। रत्न सब से अधिक रश्मियां ग्रहण करते हैं। उनके बाद उपरत्न और फिर कृत्रिम रत्न। रंगीन कांच न के बराबर रश्मियां ग्रहण करता है।

क्यों पहनें रत्न?

हम जिस भौतिक युग में जी रहे हैं, वहां व्यक्ति जल्दी प्रगति की सीढ़ियां चढ़ना चाहता है। इसलिए वह रत्न, ज्योतिष एवं मंत्र का सहारा लेता है, व्यक्ति सर्व सुख तत्काल चाहता है। भाग्य परिवर्तन में रत्नों का योगदान अवश्य रहा है। आप हर सौ लोगों में अस्सी लोगों को रत्न की अंगूठी पहने देखते हैं, वे इन्हें अकारण ही नहीं पहने रहते, बल्कि उनमें उनका भाग्य और भविष्य छिपा होता है।

रत्न को कैसे परखें ?

रत्न को आंखों से देख कर ही जाना जा सकता है कि उसमें कोई दरार तो नहीं है। रत्न का पारदर्शी होना एवं उसमें चमक होना उसकी किस्म को दर्शाते हैं। उसका कटाव एक कोण में होना भी आवश्यक है। यदि कटाव ठीक नहीं होगा, तो रत्न रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम नहीं रहेगा।

क्या रत्न प्रभावशाली रहेगा ?

ग्रह कैसी राशि में स्थित है, यह निर्धारित करता है कि कौन सा उपाय फल देगा, जैसे यदि ग्रह वायु राशि में स्थित हो, तो मंत्रोच्चारण, कथा, पूजा आदि सिद्ध होंगे। ग्रह अग्नि राशि में हो, तो यज्ञ, व्रत आदि, जल राशि में दान, पानी में बहाना, औषधि स्नान आदि एवं पृथ्वी तत्व में रत्न, यंत्र, धातु धारण एवं देव दर्शन आदि। यदि जन्मपत्री में योगकारक ग्रह निर्बल हो, तो रत्न धारण, यंत्र धारण एवं मंत्र द्वारा उपचार करना चाहिए। यदि मारक ग्रह बली हो, तो उसे वस्तु बहा कर, या दान से निर्बल बनाना चाहिए, अन्यथा मंत्रोच्चारण एवं देव दर्शन द्वारा कारक में परिवर्तन करना चाहिए। ऐसे में रत्न धारण करने से ग्रह का मारक तत्व और उभरेगा। यदि योगकारक ग्रह बली हो, या मारक ग्रह निर्बल हो, तो किसी उपाय की आवश्यकता नहीं है।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

क्या रत्न हमारे लिए शुभ है ?

यह जान लेना परम आवश्यक है कि रत्न शुभ फल देगा, या दे रहा है। विशेष रूप से नीलम को परख कर ही पहनें। कई बार नग विशेष में कुछ त्रुटि होने के कारण कष्ट झेलने पड़ते हैं। नीलम में यदि कुछ लालपन हो, तो वह खूनी नीलम कहलाता है और दुर्घटना करवा सकता है। अतः रत्न को परखने के लिए उसे अपने हाथ पर बांध लें। यदि ऐसा करने से स्फूर्ति महसूस करते हैं, तो रत्न ठीक है; अन्यथा दूसरा नग देख लें। यदि दो–तीन नग परखने के बाद भी ठीक नहीं लगता, तो वह रत्न धारक को ठीक फल नहीं देगा।

क्या अच्छे रत्नों का प्रभाव अधिक होता है?

अच्छे रत्नों का प्रभाव निश्चय ही अधिक होता है क्योंकि ये रत्न रश्मियों को ज्यों की त्यों अवशोषित करने में सक्षम होते हैं। जैसे एक साफ शीशे के आरपार सब कुछ साफ–साफ दिखाई देता है और धुंधले शीशे के आरपार देखने में कठिनाई होती है।

अच्छा रत्न धारण करने में सक्षम नहीं हो तो क्या वह उपाय से वंचित रह जाएगा?

जैसे कोई गरीब व्यक्ति अपना डॉक्टरी इलाज नहीं करा पाता है वैसे ही वैदिक रत्न धारण करने में असमर्थ व्यक्ति रत्न के उपाय से वंचित रह जाता है। जिस प्रकार डॉक्टरी इलाज में भी कम मूल्य की दवाइयां होती हैं जिनका सेवन कर या फिर परहेज या संयम द्वारा स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया जा सकता है, उसी प्रकार, रत्न के अभाव में जातक अन्य उपाय जैसे दान, व्रत, मंत्र जप आदि के द्वारा कष्ट का निवारण कर सकता है।

अंगूठी और लॉकेट में रत्न धारण करने में क्या अंतर है?

मस्तिष्क के विशेष केंद्र बिंदु हमारी उंगलियों पर स्थित हैं। अतः उंगली विशेष में धारण करने से रत्न द्वारा एकत्रित रश्मियों का प्रभाव अधिक प्राप्त होता है। उतना प्रभाव रत्न को लॉकेट में पहनने से नहीं मिलता। अतः लॉकेट में लगभग दोगुने भार का रत्न पहनना चाहिए ताकि पूर्ण प्रभाव प्राप्त हो सके।

क्या दूसरे के पहने हुए रत्न को धारण करना चाहिए?

दूसरे का पहना हुआ रत्न पहनना सर्वथा वर्जित है क्योंकि उसके माध्यम से पहले जातक के ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव भी, जो उसमें अवशोषित हो चुका होता है, दूसरे जातक पर पड़ सकता है। यदि पहनना ही हो, तो नजदीकी रिश्तेदार का पहना हुआ रत्न ही धारण करें, जैसे माता–पिता, पति या पत्नी का पहना हुआ रत्न, किसी अन्य का नहीं। ऐसे रत्न को भी धारण करने से पहले उसे पूरी तरह शुद्ध करा लें।

क्या तप्त रत्न कम प्रभावशाली होते हैं?

रत्नों को गर्म करने से उसकी गुणवत्ता पर विशेष असर पड़ता है, अतः वे उतने प्रभावशाली नहीं रहते जितने कि प्राकृतिक।

क्या छोटे–छोटे कई रत्न एक रत्न के बराबर होते हैं?

यह इस तथ्य के समानांतर है कि जैसे एक कमरे में सौ मोमबत्तियां जल रही हों और दूसरे कमरे में बड़ा बल्ब

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

जला रहा हो। बड़े बल्ब की रोशनी सौ मोमबत्तियों की रोशनी से कहीं ज्यादा होगी। अतः एक बड़ा रत्न धारण करना ही उत्तम है।

रत्न धारण करने के समय का क्या महत्व है?

रत्न में ग्रह के देवता का वास माना गया है। बिना देव के रत्न कांच के टुकड़े के बराबर होता है। रत्न धारण करते समय उसमें देवता का आवाहन किया जाता है। आवाहन से देव उस रत्न में बस जाएं इसके लिए उनका वार व होरा का समय चुना जाता है। अतः रत्न को प्रभावशाली बनाने के लिए उपयुक्त समय पर धारण करने का विशेष महत्व है। धारण करते समय ग्रह बल भी पूर्ण होना आवश्यक है।

कौन से ग्रह का रत्न धारण करें?

रत्न ग्रह को बली करने के लिए पहनाया जाता है। किसी ग्रह से संबंधित पीड़ा हरने के लिए, अथवा जिस ग्रह की दशा, या अंतर्दशा चल रही हो, उस ग्रह का रत्न धारण करना चाहिए। लेकिन यह आवश्यक है कि वह ग्रह जातक की कुंडली में योगकारक हो, मारक, बाधक, नीच या अशुभ न हो। अष्टमेश यदि लग्नेश न हो, तो सर्वथा त्याज्य ही है। योगकारक ग्रह यदि निर्बल हो, तो रत्न अवश्य धारण करना चाहिए।

क्या रत्न का वजन सवाया होना आवश्यक है?

प्रायः सवाया वजन ही शुभ माना जाता है और पौना अशुभ। लेकिन यह सर्वथा आवश्यक नहीं कि वजन सवाया ही हो, क्योंकि जो वजन एक इकाई में सवाया होता है, वह दूसरी इकाई में पौना हो जाता है, जैसे पौने पांच रत्ती लगभग सवा चार कैरेट होता है। रत्ती भी कई प्रकार की होती है, जैसे कच्ची या पक्की। अतः रत्न का कुल वजन मुख्य है, न कि सवाया होना।

क्या शरीर से रत्न का स्पर्श आवश्यक है?

रत्न का शरीर से स्पर्श अति आवश्यक है; केवल हीरे को छोड़ कर, जो प्रतिबिंब से काम करता है, न कि अपवर्तन से। रत्न का कोण भी सम होना चाहिए, जो उंगली को छुए। लॉकट आदि में भी रत्न इसी प्रकार छूते हुए जड़वाने चाहिए। लेकिन उंगली रश्मियों को आत्मसात करने में अधिक सक्षम होती है। लॉकेट में कम से कम दोगुने वजन का रत्न होने पर उतना असर होगा, जितना अंगूठी में। अतः रत्न को अंगूठी में पहनना ही श्रेष्ठ है।

किस धातु में रत्न जड़वाएं?

स्वर्ण रत्न के लिए उत्तम धातु है। सभी नौ ग्रहों के लिए स्वर्ण का उपयोग शुभ है। हीरे के लिए प्लेटिनम अत्युत्तम है। नीलम तथा गोमेद के लिए पंच धातु मिश्रित चौदह कैरेट का सोना उत्तम है। मोती के लिए चांदी इस्तेमाल की जा सकती है। मूंगे के लिए तांबे की अपेक्षा तांबा मिश्रित स्वर्ण अत्युत्तम है। माणिक्य, पन्ना, पुखराज तथा लहसुनिया बाइस कैरेट सोने में पहनें।

रत्न किस उंगली एवं हाथ में पहनें?

रत्न पुरुष को दाएं एवं स्त्री को बाएं हाथ में धारण करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति बाएं हाथ से काम करता है,

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

या कोई स्त्री पुरुष की भांति काम–काज करती है, तो भी स्त्री को बाएं एवं पुरुष को दाएं हाथ में ही रत्न धारण करना चाहिए। छोटी उंगली में हीरा एवं पन्ना, अनामिका में माणिक्य, मोती, मूंगा तथा लहसुनिया, बीच की उंगली में नीलम तथा गोमेद एवं तर्जनी में पुखराज पहनना उत्तम है। हीरा अनामिका एवं बीच की उंगली में पहना जा सकता है। पन्ना अनामिका में तथा लहसुनिया छोटी उंगली में भी पहने जा सकते हैं।

रत्न कब तथा कैसे धारण करें?

रत्न को धारण करने के लिए आवश्यक है कि पहली बार उसे पहनते समय मुहूर्त शुभ हो एवं चंद्र बली हो; समय, वार एवं नक्षत्र रत्न के अनुकूल हों। ऐसे समय में रत्न को, गंगा जल एवं पंचामृत से धो कर, धूप, दीप दिखा कर, ग्रह के मंत्रोच्चारण सहित, धारण करना चाहिए। इस प्रकार रत्न के शुभ फल में अभिवृद्धि होती है एवं अशुभ फल में न्यूनता आती है। माणिक्य रविवार, मोती सोमवार, मूंगा मंगलवार, पन्ना तथा लहसुनिया बुधवार, पुखराज गुरुवार, हीरा शुक्रवार, नीलम और गोमेद शनिवार को धारण करने चाहिए। नीलम सूर्यास्त से पहले, गोमेद सूर्यास्त के बाद और अन्य सभी रत्न प्रातः धारण करना श्रेष्ठ होता है।

रत्न शकुन

यदि रत्न खो जाए, या चोरी हो जाए, तो समझें कि ग्रह के दोष खत्म हुए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए, तो समझें कि ग्रह बहुत प्रभावशाली है– उसकी शांति करवाएं। यदि रत्न का रंग फीका पड़े, तो ग्रह का असर शांत हुआ समझें।

कितने वजन का रत्न पहनें ?

नग का वजन शरीर के वजन एवं ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह अति क्षीण है, तो अधिक वजन का नग पहनना चाहिए। महिलाओं को तीन रत्ती से पांच रत्ती तक एवं पुरुषों को पांच रत्ती से आठ रत्ती तक के नग पहनने चाहिएं। हीरा एक अपवाद है। यह कम वजन एवं कई टुकड़ों में भी हो सकता है।

रत्न कितने वजन का होना चाहिए?

जिस रत्न को धारण करने की सलाह दी जाती है, वह कितने वजन का हो? ज्योतिष की अनेक पुस्तकों को छानने के बाद भी ऐसी कोई ठोस विधि हाथ नहीं लगी, जो सर्वमान्य हो। फिर भी जो ज्ञात है, उसे इस प्रकार देखा जा सकता है :

जातक के भार के अनुसार

आम तौर पर रत्न का वजन कम से कम 3 रत्ती तो होना ही चाहिए। फिर भी सामान्यतः जातक के भारानुसार पहनाने पर अधिकांश विद्वानों की सहमति है ; अर्थात 10 किलो पर 1 रत्ती; 'यानी जातक 60 किलो का है, तो 6 रत्ती का रत्न पहनना चाहिए।

जातक की उम्र के अनुसार

बच्चों को कम वजन के रत्न बतलाये जाते हैं। पुरुषों के वयस्क होने पर अधिक वजन के रत्न बतलाए जाते है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

रत्न कब तक पहनें ?

कोई भी रत्न तीन साल तक ही पूर्णतया फल देने में सक्षम है। केवल हीरा पूर्ण काल तक पूरे फल देता है। अतः आवश्यक है कि तीन वर्ष बाद रत्न बदल लें, या उस रत्न को उतार कर रख दें एवं कुछ साल बाद दोबारा पहनें, या रत्न किसी और को दे दें। यदि वांछित कार्य हो गया हो, या दशा बदल गयी हो, तो भी रत्न उतार देना चाहिए।

किस रत्न के साथ क्या न पहनें ?

माणिक, मोती, मूंगा, पुखराज के साथ नीलम तथा गोमेद नहीं पहनना चाहिए। हीरा, पन्ना और लहसुनिया के साथ अन्य कोई भी रत्न धारण करने में दोष नहीं है। लेकिन हीरे के साथ माणिक्य, मोती एवं पुखराज को परख कर ही पहनना चाहिए।

रत्न कैसे उतारें ?

आम तौर पर लोग रत्न को उतारने के लिए समय आदि पर ध्यान नहीं देते हैं। ऐसा नहीं करना चाहिए। रत्न को उसके वार के दिन ही उतार कर रखना चाहिए। उतार कर उसे, गंगा जल में धो कर, सुरक्षित स्थान पर रखें एवं उसके बाद उस ग्रह की वस्तुओं का दान करें।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

माणिक्य

भगवान सूर्य को ग्रहराज कहा जाता है, इन्हीं के प्रताप से मानव जीवन का विकास होता है, कुण्डली में सूर्य की क्षीण स्थिति को शक्तिपूर्ण बनाने के लिए सूर्यरत्न माणिक्य धारण के लिए परामर्श दिया जाता है। माणिक्य एक अत्यधिक मूल्यवान तथा शोभायुक्त रत्न है। माणिक्य को स्थान भेद के अनुसार अनेक नामों से पुकारा जाता है। संस्कृत में इसे पद्मराग, वसुरत्न, लोहित, माणिक्य, शोणरत्न, रविरत्न शोणोपल आदि विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। हिन्दी में चुन्नी, माणिक, बंगला में माणिक्य, मराठी में माणिक, तेलगू में माणिक्य, फारसी में याकूत, अरबी में लाल बदख्शाँ तथा अंग्रेजी में रुबी नाम से पुकारा जाता है।

बर्मा का माणिक्य अपना विशिष्ट स्थान रखता है। विभिन्न स्थानों से प्राप्त माणिक्य के रंगों में भी अंतर होता है। बर्मा से प्राप्त माणिक्य का रंग श्याम के माणिक्य से कम गहरा होता है। श्री लंका से प्राप्त माणिक्य के रंगों में कुछ पीलापन होता है। सबसे उत्तम जाति के माणिक्य उत्तरी बर्मा के मोगोल नामक स्थान से प्राप्त होते है। स्याम माणिक्य बैंकॉक के निकट चांटबन नामक स्थान में पाये जाते हैं। यहां ये रेतीली मिट्टी में प्राप्त होते हैं।

बर्मा के माणिक्य की खदानें सबसे पुरानी मानी जाती हैं। संसार के सबसे उत्तम और बड़े माणिक्य यहीं से प्राप्त होते हैं। बर्मा के माणिक्य की कीमत अधिक होती है। पाश्चात्य देशों में भी प्राचीन काल से माणिक्य बहुत उपयोगी रत्न माना जाता है। ऐसा विश्वास है कि माणिक्य विष को दूर कर देता है, प्लेग से रक्षा करता है; दुख से मुक्ति प्रदान करता है, मन में बुरे विचारों को आने से रोकता है तथा धारण करने वाले पर विपत्ति आने वाली हो, तो उसका रंग बदल जाता है।

माणिक्य पहन कर सूर्य उपासना करने से सूर्य की पूजा का फल दुगना हो जाता है। सूर्य प्रभावित रोगों में सिर पीड़ा, ज्वर, नेत्र विकार, पित्त विकार, मूर्च्छा, चक्कर आना, दाह (जलन) हृदय रोग, अतिसार, अग्नि शस्त्र एवं विष जन्य विकार, पशु एवं शत्रुभय, दस्यु पीड़ा, राजा, धर्म, देवता, ब्राह्मण, सर्प, शिव आदि की अप्रतिष्ठा से चित्त विकार एवं इनसे भय आदि होते हैं; मानहानि, पिता और पुत्र में विचार नहीं मिलते।

हृदय और रत्न : सूर्य व्यय का प्रतिनिधि है। रत्नों में वह माणिक्य का प्रतिनिधि है। इसलिए व्यक्ति को सूर्य को बल देने के लिए माणिक्य धारण करना बताते हैं। हृदय के सभी प्रकार के कष्टों, अथवा रोगों में सोने की अंगूठी में माणिक्य पहनना लाभदायक माना गया है। माणिक्य की पिष्टी और भस्म दोनों औषधि के रूप में उपयोग में आते हैं। माणिक्य रक्तवर्धक, वायुनाशक और उदर रोगों में लाभकारी है। माणिक्य के भस्म के सेवन से आयु में वृद्धि होती है। इसमें वात, पि्त्त, कफ को शांत करने की शक्ति है। यह क्षय रोग, दर्द, उदर शूल, चक्षु रोग, कोष्ठबद्धता आदि दूर करता है। इसका भस्म शरीर में उत्पन्न उष्णता और जलन को दूर करता है।

भाव प्रकाश एवं रस रत्न समुच्चय के अनुसार माणिक्य कषाय और मधुर रस प्रधान द्रव्य है। यह शीतलतादायक है और नेत्र ज्योति को बढ़ाने वाला है तथा अग्नि, दीपक, कफ, वायु तथा पित्त का शमन करता है।

माणिक्य के प्राप्ति स्थान

- दक्षिण भारत से प्राप्त होने वाला माणिक्य अपारदर्शक होता है। इसका रंग गुलाबी श्याम आभा लिए हुये होता है। दक्षिण भारत से प्राप्त होने वाला यह माणिक्य उच्चकोटि का नहीं कहा जा सकता।
- काबुल मे भी माणिक्य मिलता है। यहां का माणिक्य पानीदार होता है यह कुछ पारदर्शक होता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

- सर्वोत्तम माणिक्य वर्मा की खानों से प्राप्त होता है। बर्मा का माणिक्य कमल पुष्प के रंग का होता है लेकिन कभी–कभी गहरे लाल रंग का भी प्राप्त होता है।
- श्याम राष्ट्र में भी माणिक्य की खानें हैं। लेकिन इस माणिक्य की बर्मा के माणिक्य से तुलना नहीं की जा सकती। यहां का माणिक्य कालापन लिये हुए होता है।
- अफ्रीका में भी माणिक्य की उपलब्धि होती है। लेकिन यहाँ का माणिक्य भी उच्चकोटि का नहीं होता। यहां का माणिक्य रक्त–पीत वर्ण का होते हुए श्याम आभा युक्त होता है।
- श्रीलंका में भी माणिक्य प्राप्त होता है, लेकिन यह माणिक्य बर्मा के माणिक्य की अपेक्षा कम उत्तम होता है।

तत्व एवं संरचना

माणिक्य एक कठोर खनिज पत्थर है। माणिक्य अलुमिनियम, ऑक्सीजन, क्रोमियम तथा लौह तत्वों के मिश्रण से प्रकृति द्वारा निर्मित एक मणिभ संरचना है।

माणिक्य की पहचान

- माणिक्य को हाथ में लेकर देखें। माणिक्य हाथ में लेने पर सोने की तरह भारी प्रतीत होता है।
- श्रेष्ठ माणिक्य में गुलाबी आभा अवश्य होती है।
- रत्न पारखी तो माणिक्य को आंखों से देखकर ही उसकी शुद्धता एवं स्तर की घोषणा कर देते हैं।
- माणिक्य से किसी पत्थर पर लकीर बनाई जाय तो लकीर बन जायेगी लेकिन माणिक्य नहीं घिसेगा।

माणिक्य के दोष

माणिक्य धारण करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि माणिक्य पूर्णरूपेण दोषरहित है। प्रायः माणिक्य दोषरहित नहीं मिलते हैं। पूर्ण दोषमुक्त माणिक्य अमूल्य होता है। इसका मूल्य कुछ भी हो सकता है। माणिक्य में मुख्यतया निम्न दोष पाये जाते हैं।

- जिस माणिक्य में काले अथवा सफेद धब्बे हों वह माणिक्य श्रेष्ठ नहीं होता।
- आड़ी तिरछी रेखाओं से युक्त माणिक्य भी धारण–योग्य नहीं होता।
- माणिक्य यदि पारदर्शी नहीं है तो वह श्रेष्ठ फल नहीं प्रदान करता।
- आब और चमक रहित माणिक्य रत्न नहीं धारण करना चाहिए।
- जिस माणिक्य में एक समान रंग न हो, देखने में कहीं हल्का, कहीं गहरा रंग दिखाई दे, ऐसा माणिक्य धारण करने योग्य नहीं होता।

मोती रत्न

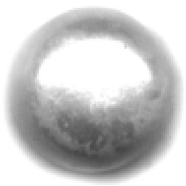

मोती को भाषाभेद के अनुसार अनेक नामों से सम्बोधित किया जाता है। यथा, संस्कृत में मुक्ता, मौक्तिक, शुक्तिज, इन्द्र–रत्न, हिंदी पंजाबी में मोती, अँग्रेजी में पर्ल तथा उर्दू फारसी में मुखारीद कहा जाता है।

मोती को चंद्र रत्न माना गया है। विभिन्न भाषाओं में इसके विभिन्न नाम मिलते हैं यथा–

मोती, मुक्ता, शशि रत्न तथा अंग्रेजी में इसे पर्ल कहते हैं। यह मुख्यतया सफेद रंग का ही होता है किंतु हल्का पीलापन लिये तथा हल्का गुलाबीपन लिये मोती भी मिलते हैं। मोती खनिज रत्न न होकर जैविक रत्न होता है। मूंगे की भांति ही मोती का निर्माण भी समुद्र के गर्भ में घोंघों के द्वारा किया जाता है।

मोती का जन्म : समुद्र में एक विशेष प्रकार का कीट होता है। जिसे घोंघा कहते हैं। यह घोंघे नामक जीव सीप के अंदर रहता है। वस्तुतः सीप एक प्रकार से घोंघे का घर होता है। मोती के विषय में कहा जाता है कि स्वाति नक्षत्र में टपकने वाली बूंद जब घोंघे के खुले हुए मुंह में पड़ती है तब मोती का जन्म होता है।

मोती के जन्म के विषय में वैज्ञानिक धारणा यह है कि जब कोई विजातीय कण घोंघे के भीतर प्रविष्ट हो जाता है तब वह उस पर अपने शरीर से निकलने वाले मुक्ता पदार्थ का आवरण चढ़ाना शुरू कर देता है और इस प्रकार कुछ समय पश्चात् यह मोती का रूप धारण कर लेता है।

मोती के प्राप्ति स्थान

मोती एक प्राणिज रत्न है, यह एक विशिष्ट समुद्री सीप से प्राप्त होता है। सभी समुद्री सीपों में मोती उत्पन्न करने की क्षमता नहीं होती है। प्राणिज रत्न, वह भी जलीय प्राणी से प्राप्त होने के कारण यह कुछ विशेष समुद्री तटों, खाड़ियों से प्राप्त किया जाता है।

- लंका में मनार की खाड़ी तथा गुजरात के कठियावाड़ के समुद्री तट पर भी मोती प्राप्त किये जाते हैं, लेकिन वह उत्तम कोटि के नहीं होते।
- फारस की खाड़ी में उत्पन्न होने वाले मोती को ही ''बसरे का मोती'' कहा जाता है। यह सर्वोत्तम प्रकार का मोती होता है।
- बहरीन, बसरा के आस–पास के क्षेत्र, कौसिर तथा जिद्दा का मोती भी अपनी आब के कारण श्रेष्ठ होता है और अब उपलब्ध भी कम होता है।
- आस्ट्रेलियाई समुद्री किनारों पर भी मोती प्राप्त होते हैं, लेकिन उच्च कोटि के नहीं होते।
- अब तो मानव मस्तिष्क की करामात से भारत के समुद्री तटों पर सीप के पेट में कण रखकर व्यापारिक उत्पादन किया जा रहा है। इसे 'कल्चर मोती' कहते हैं। अब प्राकृतिक के बजाय यह मोती ही अधिकांश रूप से बाजारों में उपलब्ध है।
- वर्तमान समय में सबसे अधिक मोती चीन तथा जापान में उत्पन्न होते हैं। चीन तथा जापान में मोती को विशेष प्रकार से उत्पन्न किया जाता है।

तत्व एवं संरचना

यह प्राणिज्य रत्न, रत्न–विज्ञान की कसौटी पर एक पत्थर है। सीप, शंख, कौड़ी आदि की तरह यह भी कैल्शियम कार्बोनेट से निर्मित एक प्राकृतिक रचना है।

मोती की पहचान

- असली मोती प्रायः पूर्णरूपेण गोल नहीं मिलते। कहीं न कहीं सूक्ष्म चक्री होना आवश्यक है।
- असली मोती हाथ में लेने पर भारी नहीं प्रतीत होता है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

- असली मोती दाँत से टूट जाता है, नकली मोती नहीं।
- असली मोती देखने मात्र से आँखों को शीतलता का आभास होता है।
- असली मोती की ऊपरी परत कठोर नहीं होती उसे आसानी से खुरचा जा सकता है।
- असली मोती को वस्त्र पर रगड़ने से मोती चमक कम होने के बजाय अत्यधिक होती है।

Future Point

विशेषता एवं धारण करने से लाभ

मोती की प्रमुख विशेषता है कि यह हमें सर्वथा अपने प्राकृतिक रूप में ही प्राप्त होता है। गोल, अण्डाकार अथवा टेढ़ा–मेढ़ा जैसा भी घोंघे के पेट में बनता है, अपने उसी रूप में यह उपलब्ध होता है। अन्य रत्नों की भांति इसकी कटिंग तथा पॉलिस आदि नहीं की जाती और न ही इसे आकार दिया जाता है। अधिक से अधिक माला में पिरोए जाने के लिए इनमें छिद्र ही किये जाते हैं। मोती शीतवीर्य होता है। अतः इसके धारण करने से क्रोध शांत रहता है तथा मानसिक तनाव भी दूर होता है।

मोती के दोष

- किसी भी प्रकार की दरार अथवा खण्ड होने से मोती दोषपूर्ण होता है और इसे धारण करना श्रेष्ठ नहीं होता।
- लम्बा, टेढ़ा अथवा चपटा मोती भी धारण करने योग्य नहीं होता। गोल मोती श्रेष्ठ होता है और अच्छा लाभ करता है।
- मोती की सतह पर किसी भी प्रकार की धारियां, अथवा चिन्ह हों तो मोती धारण करने योग्य नहीं होता है।
- मोती को आजकल प्रायः लोग माला में पिरोकर भी पहनते हैं परन्तु मोती में छेद करने से मोती की तत्व संरचना नष्ट हो जाती है और वह धारक को अनुकूल फल नहीं प्रदान करता है।

मूंगा रत्न

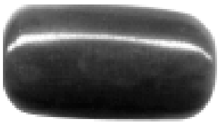

भाषा भेद के अनुसार मूंगे को संस्कृत में प्रवाल, विद्रुम, लतामणि, अंगारकमणि, रक्तांग हिन्दी में मूंगा, उर्दू एवं फारसी में मिरजान और आंग्ल भाषा में कोरल कहा जाता है।

मूंगा मंगल ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। इसे विभिन्न नामों से पुकारा जाता है यथा– मूंगा, भौम–रत्न, प्रवाल, मिरजान, पोला तथा अंग्रेजी में इसे कोरल कहते हैं। मूंगा मुख्यतः लाल रंग का होता है। इसके अतिरिक्त मूंगा सिंदूरी, गेरुआ, सफेद तथा काले रंग का भी होता है। मूंगा एक जैविक रत्न होता है।

मूंगा के प्राप्ति स्थान

मूंगा समुद्र के गर्भ में लगभग छः–सात सौ फीट नीचे गहरी चट्टानों पर विशेष प्रकार के कीड़े, जिन्हें आईसिस नोबाइल्स कहा जाता है, इनके द्वारा स्वयं के लिए बनाया गया घर होता है। उनके इन्हीं घरों को मूंगे की बेल अथवा मूंगे का पौधा भी कहा जाता है। बिना पत्तों का केवल शाखाओं से युक्त यह पौधा लगभग एक या दो फुट ऊंचा और एक इंच मोटाई का होता है। कभी–कभी इसकी ऊंचाई इससे अधिक भी हो जाती है। परिपक्व हो जाने पर इसे समुद्र से निकालकर मशीनों से इसकी कटिंग आदि करके मनचाहे आकारों का बनाया जाता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

मूंगे के विषय में कुछ लोगों की धारणा है कि मूंगे का पेड़ होता है किंतु वास्तविकता यह है कि मूंगे का पेड़ नहीं होता और न ही यह वनस्पति है। बल्कि इसकी आकृति पौधे जैसी होने के कारण ही इसे पौधा कहा जाता है। वास्तव में यह जैविक रत्न होता है।

मूंगा समुद्र में जितनी गहराई पर प्राप्त होता है, इसका रंग उतना ही हल्का होता है। इसकी अपेक्षा कम गहराई पर प्राप्त मूंगे का रंग गहरा होता है। अपनी रासायनिक संरचना के रूप में मूंगा कैल्शियम कार्बोनेट का रूप होता है। मूंगा भूमध्य सागर के तटवर्ती देश अल्जीरिया, सिगली के कोरल सागर, ईरान की खाड़ी, हिंद महासागर, इटली तथा जापान में प्राप्त होता है। इटली से प्राप्त मूंगे को इटैलियन मूंगा कहा जाता है। यह गहरे लाल सुर्ख रंग का होता है तथा सर्वोत्तम मूंगा जापान का होता है।

सामान्यतः मूंगा नारंगी रंग का पाया जाता है। लाल, गुलाबी, सफेद, काले तथा धूम्र रंग के मूंगे भी प्राप्त होते हैं। सर्वश्रेष्ठ मूंगे नारंगी अथवा लाल रंग के ही होते हैं।

तत्व एवं संरचना

मूंगा, कैल्शियम, मैग्नीशियम कार्बोनेट, लौह तथा कुछ अन्य जैविक पदार्थों का संगठन है। मोती की भाँति ही यह भी खनिज नहीं है।

मूंगे की पहचान

असली मूंगे की पहचान निम्नलिखित हैं–

- असली मूंगा यदि रक्त में रखा जाये तो मूंगे के चारों ओर रक्त शीघ्र ही जमने लगता है।
- प्लास्टिक के मूंगे भी बनने लगे हैं। किसी गरम तार का स्पर्श कराने से सत्यता सामने आ सकती है।
- असली मूंगा हल्का, चिकना और स्पर्श करने पर हड्डी के समान आभास देने वाला होता है।
- असली मूंगे का किनारा यदि रेती से रेता जाये तो काँच या रेत की तरह कड़कड़ाहट की आवाज नहीं होती। बल्कि लकड़ी की तरह की आवाज मालूम पड़ती है।
- असली मूंगे पर किसी माचिस की तिल्ली से पानी की बूंद रखने से बूंद यथावत् बनी रहती है, फैलती नहीं है।
- असली मूंगे पर हाइड्रोक्लोरिक एसिड डालने से उसकी सतह पर झाग उठने लगते हैं किंतु काले मूंगे पर इसका कोई प्रभाव नहीं होता।
- असली मूंगा आग में डालने से जल जाता है। और उसमें से बाल जलने के समान गंध आती है।

विशेषता एवं धारण करने से लाभ

मूंगे की प्रमुख विशेषता इसका चित्ताकर्षक सुंदर रंग व आकार ही होता है। यद्यपि मूंगा अधिक मूल्यवान रत्न नहीं होता किंतु इसके इसी सुंदर व आकर्षक रंग के कारण इसे नवरत्नों में शामिल किया गया है।

मूंगा धारण करने से मंगल ग्रह जनित समस्त दोष शांत हो जाते हैं। मूंगा धारण करने से रक्त साफ होता है और रक्त की वृद्धि होती है। हृदय रोगों में भी मूंगा धारण करने से लाभ होता है। मूंगा धारण करने से व्यक्ति को नजर दोष (नजर लगाना) तथा भूत–प्रेतादि का भय नहीं रहता। इसीलिए प्रायः छोटे बच्चों के गले में मूंगे के दाने डाले

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

जाते हैं।

तान्त्रिक प्रयोगों में मूंगे का अपना विशेष स्थान है। मूंगे के अतिरिक्त किसी अन्य रत्नीय पत्थर का उपयोग तांत्रिक प्रयोगों में कम होता है। तंत्र में प्रयोग की जाने वाली मूर्तियाँ यदि मूंगे की बनायी जायें तो श्रेष्ठ होता है। विशेष रूप से गणेश–सिद्धि तथा लक्ष्मी–साधना के लिए प्रयोग की जाने वाली मूर्तियां तो मूंगे की ही सर्वश्रेष्ठ होती हैं।

मूंगे के दोष

- चिटका अथवा खड्ड युक्त मूंगा धारण करना स्वास्थ्य तथा सामाजिक परिस्थितियों के लिए शुभ नहीं होता। ऐसा मूंगा नहीं धारण करना चाहिए।
- चमक रहित मूंगा भी धारण करना श्रेष्ठ नहीं होता।
- जो मूंगा 'दोरंगा' हो वह धारण करने योग्य नहीं होता।
- काली आभा युक्त मूंगा भी धारण करना निषेध है।
- जिस मूंगे में चूने के समान धब्बे दिखाई दें वह मूंगा भी धारण करने योग्य नहीं होता।
- टेढ़ा–मेढ़ा मूंगा भी नहीं धारण करना चाहिए।

पन्ना रत्न

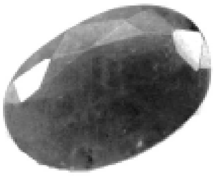

पन्ना बुध ग्रह का प्रतिनिधि रत्न माना जाता है इसे विभिन्न नामों से पुकारा जाता है– संस्कृत में इसे मर्कत, गरुडांकित, अस्मगर्भ, गोरुण, गरलारि तथा बुधरत्न नामों से, हिन्दी में पन्ना, मराठी में पांचू, बंगला में पाना गुजराती में पीलू, फारसी में जमुर्रद तथा अंग्रेजी में इसे एमराल्ड कहते हैं। पन्ना हरे तथा तोते की पंख के रंग का पत्थर पाया जाता है, इसी को पन्ना कहते हैं। पन्ना अति प्राचीन, बहुप्रचलित तथा मूल्यवान रत्न होता है। मूल्यवान रत्नों की श्रेणी में इसका तीसरा स्थान है।

पन्ना के प्राप्ति स्थान

- सर्वश्रेष्ठ पन्ना उत्पादन का श्रेय भारत को ही है। अजमेर के करीबी क्षेत्रों में पन्ने की खानें हैं, जहां से विश्व का सर्वश्रेष्ठ पन्ना निकाला जाता है। भारत में ही भीलवाड़ा, छतरपुर, उदयपुर क्षेत्रों में भी पन्ने की कुछ छोटी–छोटी खानें हैं।
- मेडागास्कर द्वीप, साइबेरिया, ब्राजील, कोलम्बिया, पाकिस्तान, अमरीका तथा अफ्रीका में भी पन्ने की खानें हैं, जहाँ से पन्ना निकाला जाता है।

तत्व एवं संरचना

पन्ना ग्रेनाइट तथा पैग्मेटाइट चट्टानों के अतिरिक्त दरारों और परतदार चट्टानों के ढेरों में जन्म लेता है। रासायनिक संगठन के रूप में इसमें पोटैशियम, सोडियम, लीथियम, शीशियम आदि क्षारीय तत्व सम्मिलित रहते हैं। भारत में पन्ना अजमेर, उदयपुर, भीलवाड़ा तथा छतरपुर में प्राप्त होता है। विदेशों में यह पाकिस्तान, अफ्रीका, अमेरिका, ब्राजील, कोलम्बिया, मेडागास्कर द्वीप तथा साइबेरिया में प्राप्त होता है। आजकल सर्वोकृष्ट पन्नों के लिए कोलम्बिया की खानें प्रसिद्ध हैं। दूसरे दर्जे के पन्ना रूस तथा ब्राजील से प्राप्त होते हैं। पन्ना प्रायः पारदर्शी और

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अपारदर्शी दोनों ही रूपों में पाया जाता है। पारदर्शी पन्ने में प्रायः हल्का–सा जाला अथवा रेशा अवश्य पाया जाता है। प्रायः सर्वथा निर्दोष पन्ना कम ही उपलब्ध होता है अगर मिलता भी है तो उसका मूल्य इतना अधिक होता है कि इसे खरीदना आम आदमी के बस का नहीं होता है।

पन्ना एक अत्यन्त आकर्षक, मन को मोहने वाला खनिज पत्थर है। बैरूंज जाति का यह खनिज पत्थर एल्यूमिनियम, बालू, बेरोलियम, तथा ऑक्सीजन का संगठन है। बैरूंज भी एक पृथक पत्थर है, लेकिन रूप रंग में पन्ने से बहुत समानता रखता है। श्रेष्ठ पन्ना गहरे, मोहक रंग का होता है। पन्ने हल्के रंग तथा काई के रंग के भी प्राप्त होते हैं। पन्ने में रासायनिक दृष्टिकोण से लीथियम, सोडियम, पोटैशियम जैसे क्षारीय तत्व भी होते हैं।

पन्ना अत्यन्त कोमल एवं भंगुर रत्न है। मुद्रिका आदि में जड़वाते समय अत्यन्त सर्तकता बरतना आवश्यक होता है। जरा सी असावधानी से यह टूट सकता है।

पन्ने की पहचान

- पन्ना हाथ में लेने पर अपेक्षाकृत भार से कम प्रतीत हो तो पन्ना नकली समझना चाहिए।
- गरम करने से यदि पन्ने का रंग उड़ जाये तो पन्ने को रंगा हुआ समझना चाहिए।
- असली पन्ने को यदि गरम किया जाये तो वह चिटकता नहीं।
- असली पन्ना पूर्णरूपेण दोष (जाल) रहित मिल पाना प्रायः मुश्किल होता है। जाल रहित पन्ना मिलने पर विशेष जाँच परख के बाद ही खरीदना चाहिए।
- पन्ने को हाथ में लेकर देखने से यह एक विशेष चिकनाहट वाला महसूस होता है।
- पन्ना सुंदर, हरी मखमली घास की भांति प्रियदर्शी हरित वर्ण का होता है। साथ ही यह हरे और सफेद मिश्रित रंग का अपारदर्शी भी होता है।
- पन्ना पारदर्शी तथा अपारदर्शी दोनों ही रूपों में प्राप्त होता है।
- असली पन्ने को लकड़ी पर रगड़ने से इसकी चमक में वृद्धि होती है।
- असली पन्ने पर पानी की बूंद रखने से बूंद यथावत् बनी रहती है।
- इसमें भंगुरता होने के कारण यह गिरने से टूट सकता है।

विशेषता एवं धारण करने से लाभ

पन्ना नेत्र रोग नाशक व ज्वर नाशक होता है। साथ ही पन्ना सन्निपात, दमा, शोथ आदि व्याधियों को नष्ट करके शरीर में बल एवं वीर्य की वृद्धि करता है। पन्ने की प्रमुख विशेषता यह है कि पन्ना धारण करने से बुध जनित समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं। इसके धारण करने से धारक की चंचल चित्त वृत्तियां शांत व संयमित रहती हैं तथा धारक को मानसिक शांति प्राप्त होती है। इसके धारण करने से मन एकाग्र होता है। यह काम, क्रोध आदि विकारों को शांत कर धारक को असीम सुख शांत प्रदान करता है। इसीलिए ईसाई पादरी लोग प्रायः धारण किए रहते हैं।

पन्ने के दोष

- चमक रहित पन्ना सुन्न कहा जाता है। ऐसा पन्ना धारण करने योग्य नहीं होता।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

- बीच में एक सीधी रेखा रखने वाला पन्ना भी श्रेष्ठ नहीं होता। इसे धारण नहीं करना चाहिये।
- गुंथे हुए जाल से युक्त पन्ना भी लाभकारी नहीं होता। ऐसा पन्ना भी धारण करने योग्य नहीं माना जाता।
- रूखा तथा गड्ढों युक्त पन्ना भी पहनने योग्य नहीं होता।
- काले अथवा घब्बों से युक्त पन्ना भी धारण नहीं करना चाहिए।
- सफेद धब्बों से युक्त पन्ना भी श्रेष्ठ नहीं कहा जाता। ऐसा पन्ना भी धारण करने योग्य नहीं होता।
- चिटका अथवा खंडित पन्ना भी धारण करने योग्य नहीं होता।

पुखराज रत्न

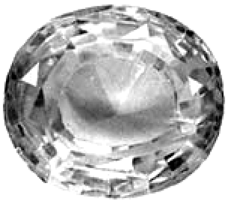

पुखराज' गुरु गुणों वाला रत्न माना गया है। पुखराज पीला, लाल तथा सफेद रंगों में भी पाया जाता है तथा इसे दिव्य गुणों वाला रत्न भी माना गया है। इसकी परख के लिए अगर कांच के गिलास में गाय का दूध भर कर इसे डाल दें, तो एक घंटे बाद पुखराज के रंग की किरण ऊपर सतह तक जाती प्रतीत होती है। इसे गुरुवार को दिन में सुवर्ण अंगूठी में, धनु, अथवा मीन लग्न में धारण करना चाहिए।

आकाश तत्वों को स्वयं में संजोये रखने वाला ग्रह गुरु–व्यक्ति की बुद्धि को प्रभावित करने में सक्रिय भूमिका निभाता है। गुरू को बृहस्पति नाम से भी पुकारा जाता है। लेखन, प्रकाशन, तंत्र–मंत्र, वेद–शास्त्र, विवेक, सदाचार, तथा सौम्य–व्यवहार आदि का कारक भी गुरू ही है।

पुखराज एक अत्यन्त आकर्षक तथा तेजस्वी रत्न है। दोष रहित खूबसूरत पुखराज देखने मात्र से आंखों को एक सुख, शांति का आभास जैसा होता है। बृहस्पति ग्रह का यह मुख्य रत्न पुखराज, स्थान तथा भाषा भेद के अनुसार संस्कृत में पुष्पराग, बल्लभ, गुरु रत्न, गुरु बल्लभ, गुजराती में पीलूराज, बंगला में पोखराज, कन्नड़ में पुष्पराग, पंजाबी में फोकज, बर्मी में आउटफिया, फारसी में याकूत, हिन्दी में पुखराज तथा अंग्रेजी में यलोसफायर नाम से पुकारा जाता है।

पुखराज प्राप्ति स्थल

- भारत में असली पुखराज प्राप्त नहीं होता। पीले नीलम अथवा पीले स्फटिक को ही पुखराज कह कर जौहरी बेच देते हैं।
- ब्राजील ही ऐसा एक मात्र स्थान है, जहां से दुनिया भर में सबसे अधिक और उत्तम कोटि का पुखराज प्राप्त होता है। ब्राजील का पुखराज प्रायः पीले कनेर पुष्प के रंग वाला अत्यधिक आबदार होता है तथा सफेद भी मिलता है।
- यूराल पर्वत श्रेणी से भी पीत तथा सफेद आभा वाले पुखराज प्राप्त किए जाते हैं।
- श्री लंका में खानों प्राप्त होने वाले पुखराज पीले, सफेद तथा अन्य मिश्रित रंगों में भी होते हैं।
- बर्मा में तवाय नामक स्थान पर पुखराज निकाले जाते हैं। यह पुखराज प्रथम श्रेणी के नहीं होते। बर्मा के पुखराज अधिकतर सफेद ही होते हैं और कभी–कभी देखने में विक्रान्त अथवा हीरक खण्ड का आभास देते हैं।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

तात्विक संरचना

पुखराज एक खनिज पत्थर है। रसायनविदों के अनुसार यह एल्यूमिनियम, फ्लोरीन तथा हाइड्रोक्सिल तत्वों से निर्मित एक सिलीकेट मात्र है। पुखराज को सिलीकेट में जल तथा कुछ अन्य अशुद्धियों के कारण ही विभिन्न रंग देखने को मिलते हैं। पुखराज का शुद्ध सिलीकेट पूर्णरूपेण स्वच्छ जल के समान पारदर्शक सफेद होता है यह सिलीकेट ही सफेद पुखराज के नाम से जाना जाता है। लेकिन गुरु'रत्न के रूप में पीला पुखराज ही मान्य है। पीले पुखराज में पीलापन फ्लुओंसिलीकेट में किसी प्रकार की अशुद्धियों के कारण ही जन्म लेता है। लेकिन यह अशुद्धि ही पुखराज को गुरु–रत्न के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

श्वेत पुखराज ज्ञानवर्धक, लाल पुखराज शक्तिवर्धक, तथा पीला पुखराज सुख और धनवर्धक माने गये हैं।

पुखराज की परख

- पुखराज एक ऐसा रत्न है, जिसे खरीदने में प्रायः धोखाधड़ी का सामना करना पड़ता है। उड़ीसा की एक नदी में पीले रंग का स्फटिक प्राप्त होता है। इस स्फटिक को पुखराज बताकर अधिकांश जौहरी ग्राहकों को बेच देते हैं। अतः पुखराज खरीदते समय विशेष जांच परख आवश्यक है।
- पुखराज हाथ में लेने पर विशेष स्वर्ण के समान भार की अनुभूति होती है।
- शुद्ध पुखराज की पहचान करने के लिए उसे गरम करें तो नकली पुखराज अपने पूर्व रंग को त्याग करके नितान्त श्वेत वर्ण का हो जाता है।
- गोमूत्र तथा दुग्ध के मिश्रण में पुखराज डाल कर रात भर रख दें। सुबह निकालने पर यदि पुखराज में रंग परिवर्तन हो या चमक कम हो जाये तो पुखराज नकली समझना चाहिए।
- असली पुखराज को यदि सूर्य की रोशनी में देखा जाये तो आने वाली किरणें सीधी न होकर वक्री होती हैं।

पुखराज के दोष

- दूधक युक्त पुखराज जीवन के लिए घातक माना गया है। ऐसा पुखराज धारण करने योग्य नहीं होता।
- आभाहीन पुखराज कभी भी धारण नहीं करना चाहिए। यह स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद होता है।
- रक्तवर्ण धब्बा युक्त पुखराज भी धारण योग्य नहीं होता।
- दो रंग वाला पुखराज धारण करने वाला व्यक्ति संतान बाधा का शिकार होता है।
- दूध जैसे रंग का पुखराज भी अशुभ माना गया है। इसे धारण नहीं करना चाहिए।

रत्न राज हीरा

हीरा को महारत्न की श्रेणी में रखा गया है। यह संसार का सर्वाधिक चमकीला और सम्मोहक रत्न है। हीरा सभी रत्नों की अपेक्षा कठोर होता है। हीरा सभी पदार्थों को खुरच सकता है परन्तु इसे कोई नहीं खुरच सकता। वाराहमिहिर ने हीरे को वज्रमणि नाम से सम्बोधित किया है। सौन्दर्य, टिकाऊपन और दुर्लभता के कारण यह अधिक कीमती माना गया है। भारतीय हीरा सर्वोत्तम माना गया है जो कि विश्व में सबसे अधिक कीमत वाला होता है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

शुक्र के शुभ प्रभाव को बढ़ाने के लिए हीरा धारण करना लाभदायक माना गया है। निम्न स्थितियों में हीरा धारण करना आवश्यक हो जाता है :

- जब शुक्र शुभ भावेश हो और अपने भाव से 6, या 8वें घर में उपस्थित हो।
- जब शुक्र कुंडली में नीच राशि में हो, वक्री हो, अस्त, हो या पाप ग्रहों के प्रभाव में हो।
- उपर्युक्त स्थिति के शुक्र की महादशा, या अंतर्दशा चल रही हो। जिन व्यक्तियों को विषैले जीव–जंतुओं के बीच में रहना पड़ता हो।
- व्यापारिक प्रतिनिधि, फिल्मी अभिनेता एवं अभिनेत्रियां, फिल्म निर्माता तथा किसी भी कला क्षेत्र से जुड़े हुए व्यक्ति तथा प्रेमी–प्रेमिका भी इसे धारण कर लाभ ले सकते हैं।
- भूत–प्रेत व्याधि से पीड़ित व्यक्ति भी हीरा धारण कर लाभ ले सकते हैं।

शुद्ध हीरे को गर्म पानी, गर्म दूध, या तेल में डालने पर यह उसे ठंडा कर देता है। शुद्ध हीरे पर किसी भी वस्तु की खरोंच का चिह्न नहीं बन सकता। दोषयुक्त हीरा कभी धारण न करें। जो हीरा धूम्र वर्ण हो, जो मुख पर लाल, या पीला हो, उसे धारण करें। हीरे पर किसी प्रकार की रेखा, बिंदु, या कटाव नहीं होना चाहिए। अंगूठी में जड़ने के लिए कम से कम एक रत्ती वजन का हीरा होना चाहिए। वैसे जितना अधिक वजन का हीरा धारण किया जाएगा, उतना अच्छा परिणाम प्राप्त होगा। हीरे के साथ माणिक्य, मोती, मूंगा और पीला पुखराज न पहनें।

एक बार धारण किये हुए हीरे का प्रभाव 7 वर्ष तक रहता है। उसके बाद उसे पुनः विधिवत दूसरी अंगूठी में धारण करना चाहिए। हीरे को चांदी, या प्लैटिनम में दाहिने हाथ की कनिष्ठिका (सबसे छोटी अंगुली) में शुक्रवार को प्रातः काल धारण किया जाना चाहिए। अंगूठी निर्माण करते समय शुक्र वृष, तुला, या मीन राशि में हो, अथवा शुक्रवार के दिन भरणी, पूर्वाषाढ़, पूर्वाफाल्गुनी में से कोई भी नक्षत्र हो, तब यह अंगूठी निर्माण कर धारण करनी चाहिए। अंगूठी निर्माण के बाद उस अंगूठी की पूजा, प्राण प्रतिष्ठा, हवन आदि क्रिया करने के पश्चात, शुक्रवार को, प्रातःकाल, पूर्व दिशा की ओर मुंह कर के, धारण करनी चाहिए। यदि ऐसा करना संभव न हो, तो शुक्र के पौराणिक मंत्र 'ऊं शुं शुक्राय नमः' की एक माला जप कर उपर्युक्त मुहूर्त में अंगूठी धारण की जा सकती है।

स्त्रियों को हीरा धारण करने का निषेध मिलता है। इस संबंध में शुक्राचार्य ने कहा है : 'न धारयेत् पुत्र कामानारी वज्रम कदाचनः।' अर्थात पुत्र की कामना रखने वाली स्त्री को हीरा नहीं पहनना चाहिए। अतः वे स्त्रियां जिनको पुत्र संतान हैं, परीक्षणोपरांत हीरा धारण कर सकती हैं। नियमानुसार धारण किया गया हीरा व्यक्ति को सुख, ऐश्वर्य, राजसम्मान, वैभव, विलासिता आदि देने में पूर्ण सक्षम होता है। लेकिन किसी योग्य दैवज्ञ से कुंडली परीक्षणोपरांत ही हीरा धारण करें। हीरा अपना शुभाशुभ परिणाम शीघ्र देता है।

हीरे का प्राप्ति स्थान

संसार में सर्वप्रथम दक्षिण भारत के गोलकुण्डा में हीरे की खान मिली थी ।आज भी भारत में कई स्थानों पर हीरे की खानें हैं। 1725 में ब्राजील में एक खान का पता चला जिसमें प्राकृतिक हीरे अधिकांश पाये गये। 1867 में दक्षिण अफ्रीका में इसका अधिक उत्पादन पाया गया। सन 1929 में डायमण्ड कार्पोरेशन लि॰ नाम से एक कम्पनी की स्थापना हुई जो कि लंदन में है। अब अधिकांश देशों के हीरे का क्रय–विक्रय इसी कम्पनी से अधिकाधिक होता है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

भारत में अनन्तपुर, बेल्लारी, बेलपल्ली, कोठपेटा, वहापा, गुरुपुर, गुंटूर, मड़गला, मुलवरम, पोलिलिट, मालपिल्लि, पेटियाल, कर्नूल, बन्नूर, धोनि, देवनूर, गजेटपिल्ली, उड़ीसा के कालाहंडी, पलमन, खिमा और बिहार में सम्बलपुर के निकट हीरे प्राप्त होते हैं। वर्तमान में सर्वाधिक उत्पादन दक्षिण अफ्रीका में है।

तत्व एवं संरचना

हीरा शुद्ध कार्बन है इसमें किसी भी अन्य तत्व की मिलावट नहीं है। इसे जलाने पर यह पूरी तरह कार्बन डाईऑक्साइड बन कर उड़ जाता है। हीरे पर अम्ल का कोई भी असर नहीं पड़ता। रंगीन हीरे को जलाने पर कुछ शेष हिस्सा बच जाता है।

हीरे की पहचान

हीरों में से कुछ स्वच्छ पारदर्शक और कुछ अपारदर्शक भी पाये जाते हैं। उच्च कोटि के हीरे चिरकाल के प्रयोग के बाद भी नहीं घिसते और न ही खराब होते हैं। अनियमित रूप से बने अनेक दोषपूर्ण हीरे होते हैं। 20 रुक्ष हीरों का तौल मिलकर एक कैरेट होने पर उसे छेद करने के फल बनाने के काम में आता है। काटने वाले कुहीर या रुक्ष हीरे सबसे अधम कोटि के माने जाते हैं। कुहीर का उपयोग कांच को काटने तथा हीरक औजारों को बनाने में किया जाता है। असली हीरे में प्रकाश प्रवेश नहीं कर पाता। पूरा–पूरा वापस आ जाता है।

हीरे का दोष

हीरे पर जल के समान विन्दु या छींटा होना हीरे को दोषी साबित करता है। कभी–2 हीरे पर काले बिन्दु पाये जाते हैं वे भी दोषी माने जाते हैं। हीरे पर श्वेत, पीला, लाल और काला बिन्दु अशुभ माना जाता है। तेलियापन, जर्दी, कम चमकवाला, खड्डायुक्त हीरा भी दोषी माना जाता है। पाण्डु रंग का, पीले रंग का, रेखाओं वाला, गड्ढ़ो वाला, आदि कई दोष हीरे में पाये जाते हैं, जिन्हें हीरे का दोष माना गया है।

नीलम रत्न

नीलम के स्वामी शनि देवता हैं। ज्योतिष शास्त्र में शनि की दशा दुर्दशा और दुख की द्योतक मानी जाती है। इसलिए शनि के कोप को शांत करने के लिए सहज उपाय नीलम धारण करना माना जाता है।

नीलम मकर एवं कुंभ राशि का प्रतिनिधि और सितंबर माह का ग्रह रत्न है। नीलम सत्य और सनातन का प्रतीक है। विवेकशीलता, सत्य तथा कुलीनता जैसे गुण इसके साथ जुड़े हुए हैं। शुभ फलदायक सिद्ध होने पर यह, धारणकर्त्ता के रोग, दोष, दुख–दारिद्रय नष्ट कर के, धन–धान्य, सुख–संपत्ति, बुद्धि, बल, यश, आयु और कुल, संतति की वृद्धि करता है। नीलम धारण करने से स्त्रियों में अनैतिकता नहीं आती। प्रेमियों के लिए यह भाग्यवान रत्न माना जाता है। यह प्रसन्नतावर्धक है, परंतु पापी व्यक्ति को विपरीत फल देता है। नीलम दिलोदिमाग को सुकून देने वाला माना गया है, जो श्वास, खांसी और पित्त की बीमारी को कम करता है।

विश्वास यह है कि नीलम को बेच देने के बावजूद वह मूल धारक की रक्षा करता है। नीलम के लिए कहा जाता है कि इसे विषैले सांप के साथ रखने पर सांप मर जाता है। कहते हैं, भूत–प्रेत से छुटकारे में भी नीलम असरकारी

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

है। यह धारणा भी है कि ईश्वर की इच्छा का संकेत नीलम से प्राप्त होता है और इससे सही भविष्यवाणी संभव है। दुष्ट और अपवित्र व्यक्ति द्वारा पहनने पर नीलम की चमक लुप्त होने की बात भी की जाती है। विष की काट के रूप में नीलम को काफी असरकारक माना गया है। रक्त प्रवाह रोकने में यह श्रेष्ठ मरहम माना जाता है।

खूनी नीलम सर्वाधिक असरकारक माना जाता है और सावधानी से धारण करने की हिदायतों के साथ दिया जाता है, क्योंकि कुछ दिन तक धारण करने पर अनिष्ट होना भी संभव है। अतः धारक को सचेत भी रहना पड़ता है।

नीलम प्राप्ति स्थल

नीलम श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड से उत्तम और प्रचुर मात्रा में प्राप्त होते हैं, परंतु कश्मीर प्रदेश से प्राप्त नीलम सबसे उत्तम होते हैं, जिन्हें 'मयूर नीलम' कहते हैं, क्योंकि इनका रंग मोर की गर्दन के रंग की तरह का होता है। यदि इनमें एक बूंद रंग भी हो, तो संपूर्ण नग रंगीन हो जाता है। कश्मीरी नीलम बिजली के प्रकाश में अपना रंग नहीं बदलता, जबकि अन्य स्थानों से प्राप्त नीलम बिजली के प्रकाश में स्याह रंग के दिखाई देते हैं।

तात्विक संरचना

नीलम कुरून्दुम समूह का ही एक भंगुर रत्न है। अल्यूमिनियम तथा आक्सीजन के योग से निर्मित यह रत्न कोबाल्ट मिश्रित होने के कारण नीले रंग का दिखाई देता है। माणिक्य भी कुरून्दुम समूह का ही रत्न है, लेकिन नीलम की कठोरता माणिक्य से अपेक्षाकृत कम होती है।

नीलम की परख

- असली नीलम धूप में रखा जाये तो नीलम से किरणों का एक फब्बारा जैसा फूटता दिखाई देता है।
- स्वच्छ जल भरे गिलास में डालने पर नीलम से विशेष चमक वाली नीली किरणें निकल कर आंखों में चुभती सी प्रतीत होती हैं।
- असली नीलम में रंगो की पट्टियां वक्री न होकर सीधी दिखाई देती है।
- नीलम हाथ में लेकर देखिये, अपेक्षाकृत हल्का प्रतीत होने वाला नीलम ही असली समझना चाहिए।
- असली नीलम स्पर्श करने से विशेष चिकनाहट का आभास देता है।
- हाथ में लेने पर असली नीलम कठोरता की अनुभूति नहीं देता। असली नीलम मुलायमियत की प्रतीति कराता है।
- एक परीक्षा यह भी है, असली नीलम के पास कोई भी तिनका लाने पर वह नीलम की ओर आकर्षित होकर चिपक जाता है।

नीलम के दोष

दोषयुक्त नीलम अनुकूल फल प्रदान करने के बजाय घातक परिणाम देता है। ज्योतिषीय दृष्टिकोण से निम्न दोषों वाला नीलम धारण योग्य नहीं होता।

सुन्न– जो नीलम चमक रहित अथवा क्षीण चमक वाला होता है, ऐसे नीलम को सुन्न नीलम कहा जाता है। सुन्न संज्ञक ऐसा नीलम धारण करने योग्य नहीं होता। कहा जाता है, कि ऐसा नीलम धारण करना प्रियजनों के लिए घातक होता है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

दोरंगा– श्रेष्ठ नीलम वह होता है जो पूर्णरूपेण एक रंग का हो। रंग विभिन्नता वाला नीलम भी दोषपूर्ण माना गया है। इसे भी नहीं पहनना चाहिए। ऐसा नीलम दाम्पत्य सुख में बाधा कारक माना गया है।

क्रास– नीलम में किसी भी प्रकार क्रास जैसा चिन्ह नीलम को धारण योग्य नहीं रखता। ऐसे क्रास–दोष युक्त नीलम को धारण करने वाला व्यक्ति, कंगाल हो जाता है।

खड्ड– यदि किसी नीलम में गड्ढा दिखाई दे तो ऐसे नीलम को भी दोषयुक्त समझना चाहिए। ऐसा खड्ड–दोषयुक्त नीलम शत्रु वुद्धि करके शरीर को कष्ट देने वाला बताया गया है।

रक्त विन्दु– नीलम में लाल रंग के धब्बे दिखाई दें तो ऐसा नीलम भी धारण योग्य नहीं होता। ऐसा नीलम धारण करने वाले लोग पुत्र–सुख से वंचित होते हैं, और स्वयं भी अस्वस्थ रहते हैं।

जालक– किसी नीलम में जाल जैसा गुंथा प्रतीत हो तो ऐसे नीलम को दोषयुक्त समझना चाहिए। इसे धारण करने वाले व्यक्ति विभिन्न रोगों से पीड़ा पाकर कष्ट भोगते हैं।

दूधक– जिस नीलम में दूध जैसे धब्बे हों, अथवा जो पूर्णतया दूधिया रंग लिये हो ऐसा नीलम दूधक–दोष से युक्त माना जाता है तथा धारण योग्य नहीं होता। कहा जाता है कि ऐसा नीलम धारण करने से लक्ष्मी का नाश होता है। और धारण करने वाला व्यक्ति दाने–दाने के लिए मोहताज हो जाता है।

गोमेद रत्न

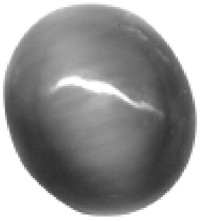

गोमेद रत्न यद्यपि कई रंगों में उपलब्ध होता है लेकिन ज्योतिषीय दृष्टिकोण से राहु रत्न गोमेद वही कहलाता है, जो गो–मूत्र के रंग वाला हो। यह अत्यधिक प्रचलित राहु रत्न स्थान तथा भाषा भेद के अनुसार अपने–अपने क्षेत्र में विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। गोमेद को देवभाषा संस्कृत में तृणवर, तपोमणि, राहुरत्न, स्वर भानु, पीतरत्न, गोमेद, रत्नगोमेदक, हिन्दी में गोमेद, गुजराती में गोमूत्रजंबु, मराठी में गोमेदमणि, उर्दू फारसी में जरकुनिया अथवा जारगुन, बंगाली में लोहितमणि, अरबी में हजारयमनि, बर्मी में गोमोक, चीनी में पीसी तथा आंग्ल भाषा में अगेट नाम से जाना जाता है।

गोमेद प्राप्ति स्थान

- श्याम और न्यूजीलैण्ड से भी गोमेद रत्न प्राप्त होता है।
- दक्षिण अफ्रीका से भी गोमेद प्राप्त होते हैं। यहाँ प्राप्त होने वाले गोमेद रत्न पीले–भूरे रंग के होते हैं। दक्षिण अफ्रीका में प्राप्त होने वाला यह गोमेद रत्न बिल्कुल अलग प्राप्त न होकर हीरे की खानों में हीरों के साथ ही प्राप्त होता है।
- न्यूसाउथ वेल्स में भी अत्यन्त आकर्षक लालरंग की आभा युक्त गोमेद प्राप्त होते हैं। यहाँ प्राप्त होने वाले गोमेद सुन्दरता की दृष्टि से श्रेष्ठ माने जाते हैं।
- भारत में भी गोमेद रत्न बहुतायत में प्राप्त होता है। भारत में गोमेद हिमालय के आसपास के पहाड़ी क्षेत्र तथा सिन्धु नदी के उद्गम क्षेत्र में प्राप्त होता है। बिहार के हजारी बाग क्षेत्र से भी गोमेद प्राप्त किया जाता है। उपरोक्त स्थलों के अतिरिक्त भारत के दक्षिणी भाग में ट्रावनकोर, कोयम्बटूर तथा विजयापट्टम भी गोमेद का उत्पत्ति स्थल है। भारत में प्राप्त होने वाला अधिकांश गोमेद गहरी काली आभा लिए कत्थई रंग का होता है। केवल कुछ स्थानों से ही कुछ अच्छा गोमूत्र के रंग वाला गोमेद प्राप्त होता है, लेकिन वह भी बर्मा तथा

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

श्रीलंका के गोमेद की तुलना में निम्न श्रेणी का ही होता है।

तत्व की संरचना

राहु रत्न गोमेद जिक्रोनियम का मणिभ मात्र है। जिक्रोनियम का मणिभ होने के कारण गोमेद को अंग्रेजी में जिरकन नाम से पुकारा जाने लगा है।

आजकल बाजार में नकली गोमेद भी बहुतायत में बिक रहा है। यह गोमेद खान से या अन्य प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त न होकर फैक्टरियों में बनाये जाते हैं। कहीं–कहीं तो काले, कत्थई या गोमूत्र के रंग वाले स्फटीक (कटिंग किये) को भी गोमेद बताकर बेचा जा रहा है। अतः अत्यधिक जांच परख के बाद ही गोमेद रत्न धारण करने के लिए खरीदना चाहिए।

गोमेद की पहचान

- असली गोमेद को 24 घण्टे तक गोमूत्र में रखा जाये तो गोमूत्र के रंग में परिवर्तन आ जाता है।
- असली गोमेद हाथ में लेने पर भारी सा महसूस होता है।

गोमेद के दोष

- यदि किसी गोमेद में किसी भी प्रकार अथवा रंग का चकत्ता जैसा दिखाई दे, ऐसा गोमेद भी धारण करने के अयोग्य होता है। ऐसा गोमेद–दुर्भावनापूर्ण एवं मृत्यु कारक माना गया है।
- कभी–कभी गोमेद में काले रंग के बिन्दु जैसे दिखाई देते हैं। ऐसा गोमेद भी धारण करना श्रेष्ठ नहीं होता। कहा जाता है, कि ऐसा गोमेद स्त्री के लिए अरिष्ट कारक होता है।
- साफ सुथरा न दिखाई देकर जो गोमेद परतदार सा दिखाई देता है, वह छाल दोषयुक्त होता है। ऐसा गोमेद धारण करने योग्य नहीं माना जाता।

लहसुनिया

लहसुनिया कई रंगों तथा कई प्रकार का प्राप्त होता है कई रंग और कई प्रकार की ही तरह स्थान तथा भाषा भेद के कारण यह रत्न विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। लहसुनिया नाम से हिन्दी भाषा में जाना जाने वाला यह मुख्य केतु रत्न संस्कृत में राष्टुक, वैदूर्य, मेधखरांकुर, वायज विडालाक्ष, अभ्ररोह, विदुराज, केतु रत्न, बाल सूर्य बंगला में सूत्र मणि, वैडूर्य मणि, गुजराती लसणियो, बर्मी में चानों, अरबी में अनलहिर, तथा अंग्रेजी में कैट्स आई (Cats eye) नाम से विख्यात है।

लहसुनिया प्राप्तिस्थल

- भारत में विन्ध्य तथा सतपुड़ा की घाटियों में प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त भारत में ही त्रिवेन्द्रम के आस–पास भी लहसुनिया का उत्पत्ति स्थल है। यहां प्राप्त होने वाला लहसुनिया सामान्य कोटि का होता है।
- बर्मा की मोगोक खान से प्राप्त होने वाले लहसुनिया को सर्वश्रेष्ठ कहा जाता है। यहां प्राप्त होने वाले लहसुनिया रत्न हल्का पीलापन लिये प्रायः निर्दोष प्राप्त होते हैं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

- श्रीलंका से प्राप्त होने वाला लहसुनिया भी श्रेष्ठ माना गया है। यहां प्राप्त होने वाले लहसुनिया रत्न सुन्दरता, आकर्षण तथा विशेष चमक के होते हैं।
- पश्चिम अफ्रीका के धाना राज्य में भी लहसुनिया रत्न प्राप्त होते हैं यहां प्राप्त होने वाला लहसुनिया भी हल्के पीले रंग का विशेष चमक तथा आभा लिए होता है। यहां प्राप्त होने वाले लहसुनिया को हेम वैदूर्य कहा जाता है।
- अमरीका, ब्राजील, यूराल में प्राप्त होने वाला लहसुनिया रत्न भी उत्तम होता है।
- लहसुनिया कई रंगों में प्राप्त होता है। लेकिन केतु रत्न के रुप में वही लहसुनिया उपयोगी होता हैं, जिसका रंग बिल्ली की आंख की तरह भूरा तथा आकर्षक चमक व कुछ हरी सी आभा लिए हो।

तात्विक संरचना

लहसुनिया रत्न तन्तुमय पत्थरों से काटकर निर्मित किये जाते हैं। लहसुनिया का एक विभेद हेम वैदूर्य वैरिलियम का ऐल्यूमिनेट होता है। सभी लहसुनिया रत्न पेग्माइट नाइस एवम् अंबरकयुक्त परतदार शिला खण्डों से प्राप्त होते हैं। पहाड़ियों से बहने वाले प्राकृतिक नालों से भी लहसुनिया प्राप्त किये जाते है।

लहसुनिया की परख

- लहसुनिया देखने में कांचकीय आभा का आभास देता है, लेकिन पीछे की ओर देखने पर पत्थर होने का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।
- असली लहसुनिया में सफेद धारियां जैसी दिखाई देती हैं, इन्हें ब्रह्मसूत्र कहा जाता है।
- असली लहसुनिया को इधर–उधर घुमाने से इसमें उपस्थित धारियां भी साथ ही साथ हिलती प्रतीत होती हैं।
- असली लहसुनिया पीतवर्णी हरी आभा युक्त बिल्ली की आंख जैसा दिखाई देता है।
- लहसुनिया अपने रंग–रूप कठोरता आदि के आधार पर चार विभिन्न प्रकारों का माना गया है।

लहसुनिया के दोष

सुन्न दोष– चमकहीन लहसुनिया सुन्नदोष से पीड़ित कहा गया है। ऐसा चमक रहित लहसुनिया धारण नहीं करना चाहिए। ज्योतिष विद्वानों का विचार है कि ऐसा लहसुनिया धन नष्ट कराने में सहायक होता है।

खड्ड दोष– किसी भी प्रकार के गड्ढे या छिद्र से युक्त अथवा चिटका, टूटा लहसुनिया भी धारण करने योग्य नहीं होता। कहा जाता है कि ऐसा खड्ड युक्त लहसुनिया धारण करने वाला व्यक्ति अपने लिए शत्रु उत्पन्न करता है, तथा उनकी ओर से भयाक्रौंत पीड़ा प्राप्त करता है।

चीरक दोष– लहसुनिया में क्रास जैसा चिन्ह भी रत्न को दोष युक्त बनाता है। ऐसा लहसुनिया भी शत्रुभय बढ़ाने वाला माना गया है।

रक्त बिन्दु दोष– लहसुनिया में यदि लाल रंग के बिन्दु जैसे दिखाई दें तो ऐसे लहसुनिया को भी दोषपूर्ण मानकर धारण नहीं करना चाहिए। कहा जाता है कि ऐसा लहसुनिया धारण करने वाला व्यक्ति कारावास का दण्ड भोगता है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

ज्वाला दोष– यदि किसी लहसुनिया रत्न में ज्वाला जैसा चिन्ह दिखाई दे ऐसा लहसुनिया भी दोषयुक्त माना गया है। ज्वाला दोष युक्त लहसुनिया को धारण करने योग्य नहीं माना जाता। विद्वान ऐसे लहसुनिया को पत्नी के लिए घातक बताते हैं।

श्रेष्ठ धारण योग्य लहसुनिया

- श्रेष्ठ लहसुनिया ही धारण करना चाहिए। श्रेष्ठ लहसुनिया बिल्ली की आंख के समान रंग वाला पीत तथा हरित आभा से युक्त होता है।
- श्रेष्ठ लहसुनिया वह है, जो विशेष चमक वाला, आकर्षक तथा बाहर निकलती किरणों से युक्त हो।
- श्रेष्ठ लहसुनिया उसे ही समझना चाहिए जो दाग, धब्बों रहित तथा ऊपर वर्णित दोषों से मुक्त हो।
- खुरदरा लहसुनिया श्रेष्ठ नहीं होता। चिकना तथा हाथ में लेने पर फिसलने वाला लहसुनिया रत्न ही श्रेष्ठ होता है।
- श्रेष्ठ लहसुनिया हाथ में लेने पर आकार से अपेक्षाकृत कम भारी प्रतीत होता है।

उपरत्न :

नीली

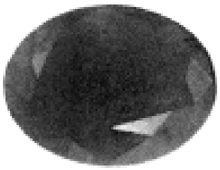

नीलम का सर्वश्रेष्ठ उपरत्न नीली है, श्रेष्ठ नीली पूर्णरूपेण पारदर्शक तथा कुछ श्याम सी आभा लिए हुये नीले रंग की होती है। दोष युक्त नीली धारण करना श्रेष्ठ नहीं होता। यह रत्न देखने से काँच का आभास होता हैं, लेकिन यदि इसे हाथ में लिया जाय तो अपेक्षाकृत अधिक भार प्रतीत होता है। इस रत्न में नीलम जैसी द्युति नहीं पायी जाती।

नीलम के अभाव में इसे धारण किया जाता है। जो अशुभ शनि के प्रभाव को कम करता है। बाहर जगत में शनि लौह व्यवसाय, मशीनरी, तैलादि, तथा चर्म उद्योग का कारक ग्रह है। शुभ शनि की विशेष स्थितियाँ ही व्यक्ति को तांत्रिक, योगी, सिद्ध, संत, दार्शनिक आदि बनाती है। अर्थ यह कि क्रूर ग्रह की संज्ञा से विख्यात ग्रह, शनि भी यदि कुंडलीगत अशुभ शनि से सुरक्षा तथा शुभ शनि के प्रभाव में वृद्धि के लिए शनि रत्न अथवा उपरत्न धारण करने का परामर्श दिया जाता है।

नीली का प्राप्ति स्थान

भारत के अनेक क्षेत्रों में भारत के अलावा श्रीलंका, बर्मा, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, अफ्रीका, रूस आदि देशों में पाया जाता है इनमें से कुछ स्थानों में उत्तम एवं कुछ स्थानों में मध्यम प्रकार की नीली प्राप्त होती है

तत्व की संरचना

यह कुरून्दुम समय का ही एक भंगुर रत्न है अल्यूमिनियम तथा आक्सीजन के योग से निर्मित यह रत्न कोबाल्ट मिश्रित होने के कारण नीले रंग का दिखाई देता है। नीली रत्न का रंग नीले एवं हरे रंग से बनता है यह कोमल, चिकना, चमकदार होता है। नीलम की अपेक्षा इसमें कम गुण पाये जाते हैं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

नीली का दोष

जो नीली चमकरहित अथवा क्षीण चमक वाला होता है। ऐसे नीली को शून्यसंज्ञक कहते हैं श्रेष्ठ नीली वह होता है जो पूरी तरह एक रंग का हो विभिन्न रंग वाला नीली दोषपूर्ण माना जाता है किसी भी प्रकार का चिन्ह अथवा धब्बा नहीं होना चाहिए ऐसे नीली धारण करने से व्यक्ति कंगाल होता है।

फिरोजा

फिरोजा को संस्कृत में पैरोज, पैरोजक, व्योमाभ, नीलकण्ठक कहते हैं। फारसी में इसे फिरोजा एवं अंग्रेजी में इसे टर्कोइज कहते हैं।

फिरोजा अपारदर्शक रत्न होते हुए भी अपने रंग की सुन्दरता के कारण प्रमुख रत्नों की श्रेणी में माना जाता है। बहुत प्राचीन समय से यह सोने–चांदी के आभूषणों में लगाया जाता है। आसमानी नीले रंग का फिरोजा अधिक उत्तम समझा जाता है। सूर्य के प्रकाश से तथा गर्म करने पर एवं पसीने के संयोग से इसका रंग खराब हो जाता है।

फिरोजा अधिकतर शिलाओं की पपड़ियों में पाया जाता है। इसकी कठोरता 5.6 से 6, तथा आपेक्षिक गुरुत्व 2.6 से 2.8, वर्तनांक 1.61–1.65 तथा दुहरार्तन 0.04 होता है। आधुनिक रसायन–शास्त्र की दृष्टि से फिरोजा अल्यूमीनियम, लोहा तथा तांबे व फास्फेट का यौगिक होता है। इसमें थोड़ी मात्रा में जल भी होता है। इसमें नीला रंग तांबे के कारण तथा हरापन लोहे के कारण होता है।

उत्तम फिरोजा धारण करने वाले को प्रेम संबंधों में सफलता मिलती है। कहते हैं फिरोजा अपना रंग बदलकर आने वाले खतरों की पूर्व सूचना देता है तथा रक्षा कवच का काम करता है। फिरोजा धारक का नेत्र, गले व मुंह के रोगों से रक्षा करता है।

दैवीय शक्ति

यह रत्न असामान्य व अद्भुद् दैवीय शक्ति का पुंज है, मुस्लिम संस्कृति में फिरोजा अत्यन्त प्रिय माना गया है। यह उपरत्न धारण करने से लेखनकला एवं प्रतिभा में वृद्धि होती है। सौंदर्य प्रसाधन से सम्बन्धित महिलाओं के लिए यह रत्न अत्यन्त गुणकारी है। यह रत्न प्रेमी'–प्रेमिकाओं के सम्बन्ध में मधुरता उत्पन्न करता है। रूस में आज भी विवाह के सम्बन्ध में फिरोजा उपरत्न की अंगूठी भेंट में दी जाती है। तुर्की इसे विजय का प्रतीक कहते हैं यह रत्न घृणा को नष्ट करके प्रेम और सद्भावना की वृद्धि करता है। यह रत्न धारक के शरीर में विष प्रवेश करने पर अपना रंग बदल देता है एवं खण्डित हो जाता है।

जर्कन

वर्ण, जाति और गुणों में तुरसावा के समान होने के कारण रत्न परीक्षक विद्वान जर्कन को ही तुरसावा बतलाते हैं।

कितने ही विद्वान जर्कन को गोमेद कहते हैं। यद्यपि दोनों के वर्ण में समानता है, किन्तु इनकी कठोरता और आपेक्षिक गुणत्व में अंतर है तथा गोमेद की जाति भी भिन्न होती है। अधिकतर पाश्चात्य रत्नशास्त्री गोमेद को गार्नेट वर्ग का खनिज मानते हैं तथा जर्कन को जर्कन वर्ग का खनिज व जिरकेनियम सिलिकेट का यौगिक मानते हैं अतः गोमेद व जर्कन भिन्न जाति के रत्न हैं।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

जर्कन सुनहरा पीला, ललाई युक्त पीला, हरा एवं आसमानी रंग का मिलता है। यह ताप उपचार द्वारा वर्णहीन बनाया जाता है। जर्कन में हीरे के समान द्युति पाई जाती है। प्रकाश किरणों का दुहरावर्तन होने के कारण वर्णहीन जर्कन हीरे के समान मालूम पड़ता है।

जर्कन के औषधि गुण

निद्रानाश, वातरोग, चर्मरोग, मूलव्याध, जलोदर, पाचनशक्ति आदि रोगों में यह रत्न अत्यन्त गुणकारी है। आयुर्वेदाचार्यो के अनुसार जर्कन के भष्म को भी अनेक बीमारियों के लिए उपयोग में लाया जाता है।

दैवीय शक्ति

जर्कन में किसी भी कार्य को निर्विरोध सम्पन्न होने के लिए दैवीय शक्ति समाहित होती है। अतः इस रत्न को धारण करने से घर में सभी प्रकार की शान्ती एवं सुलभता का निर्माण होता है। समाज में मान–सम्मान की प्रतिष्ठा प्रदान होती है तथा धारक को शक्ति प्रदान करके चुस्त–दुरुस्त रखने में सहायता प्रदान करता है। यह रत्न किसी प्रकार से भी हानि उत्पन्न नहीं करता इस रत्न को स्त्री, पुरुष, बाल, वृद्ध प्रत्येक लोग धारण कर सकते हैं। विशेषतः यह रत्न वृषभ राशि के लोगों का उपरत्न है।

हकीक (अकीक)

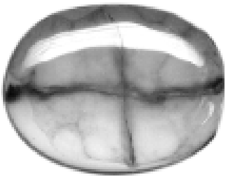

हकीक एक अल्पमोली पत्थर है जिसे उपरत्न की श्रेणी में माना जाता है। यह अपारदर्शक होता है जो कि अनेक रंगों में पाया जाता है। आजकल प्राकृतिक रत्न इतने मंहगे हैं कि हर कोई उन्हें खरीद नहीं सकता। जो लोग मंहगे रत्न खरीदने में असमर्थ हैं वे अपने ग्रहों के अनुसार या किसी भी रंग के अकीक को धारण कर सकते हैं। चांदी में धारण किया जाने वाला यह रत्न सामान्य कीमत का रत्न है। इसे साधारण जौहरी की दुकान से भी प्राप्त किया जा सकता है। इसे मुस्लिम सम्प्रदाय परम पवित्र रत्न मानता है और धारण योग्य कहता है।

प्राप्ति स्थान

- यह भारत के विन्ध्य एवं सतपुड़ा के अतिरिक्त त्रिवेन्द्रम के आस पास के क्षेत्रों में अधिक पाया जाता है।
- वर्मा में भी कुछ स्थानों पर तथा अरब देशों में भी पाया जाता है।

उपयोग से लाभ

- अकीक धारण से भूत प्रेत आदि से रक्षा तथा नजर दोष, प्रेत दोष एवं बुरी नजरों से बचाता है तथा पाचन क्रिया को भी लाभ देता है एवं अलग–अलग रंगों का अलग–अलग लाभ है।
- काले रंग का हकीक धारण करके कनकधारा का पाठ करने से लक्ष्मी लाभ होता है।
- स्नेहपूर्ण जीवन के लिए हरे रंग का हकीक धारण करना श्रेष्ठ है।
- श्वेत हकीक शुक्र दोष और मन को शान्त करता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

अंबर स्टोन

यह एक बहुत ही हल्का रत्न है। यह पीले, भूरे या शहद के रंग का होता है। इस रत्न में पृथ्वी के टुकड़ों, पत्तियों, कीड़े–मकोड़ों आदि के चित्र–से दिखाई देते हैं। यह रत्न शरीर तथा मन दोनों को स्वस्थ रखता है। इसे पहनने से व्यक्ति में उत्तेजना की भावना पर नियंत्रण होता है। कई बार व्यक्ति चाहे अनचाहे उत्तेजना में या जल्दबाजी में गलत कार्य कर बैठता है, जिससे बड़ी–बड़ी दुर्घटनाएं हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में उसका रक्तचाप बढ़ जाता है या आवश्यकता से अधिक घट जाता है। अंबर स्टोन हमारे रक्तचाप को नियंत्रित करता है तथा मानसिक उद्वेग को नियंत्रित करते हुए हमारी ऊर्जा को सही मार्ग पर लगाता है, जिससे हम पूरी मानसिक तन्मयता के साथ सफलतापूर्वक कार्य कर सकते हैं। इस रत्न को धारण करने से मन में अनिश्चितता की भावना समाप्त होती है। हमारे जीवन के उतार–चढ़ाव के कारण जो मानसिक दबाव बनता है, उसे नियंत्रित करके यह रत्न हमारे मस्तिष्क को संतुलित बनाए रखता है। यह हमारे शरीर में छिपी शक्ति को उजागर करने में सक्षम है, क्योंकि इसमें ऋणात्मक विद्युत शक्ति होती है। जिस तरह चुंबक का एक सिरा उसके दूसरे सिरे को अपनी ओर आकर्षित करता है, उसी प्रकार अंबर स्टोन व्यक्ति में धनात्मक ऊर्जा को उभारकर उसे ऊर्जावान, शक्तिशाली तथा क्रियाशील बनाता है।

उपयोग विधि

अंबर रत्न को अन्य रत्नों की भांति लॉकेट या अंगूठी में धारण किया जा सकता है। इसे शास्त्रों के अनुसार गुरु ग्रह का उपरत्न माना गया है। अतः गुरुवार को, गुरु की होरा में प्रातः काल गंगाजल और कच्चे दूध से शुद्ध करके गुरु के निम्नलिखित मंत्र के उच्चारण के साथ तर्जनी में धारण करना चाहिए।

गुरु का मंत्र – ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः।

यह रत्न सोने या चांदी की अंगूठी में धारण करना चाहिए। यदि अंगूठी धारण नहीं करना चाहें, तो लॉकेट के रूप में भी धारण कर सकते हैं। इसे हमेशा धारण करने से रक्तचाप हमेशा नियंत्रित रहता है तथा रक्तचाप की अनियमितता से होने वाली दिल की बीमारी जैसे गंभीर रोगों से भी बचा जा सकता है।

इस रत्न को धारण करने के अतिरिक्त इसे जल में, विशेषकर गुलाब जल में, डालकर उस जल का सेवन करने से इस रत्न का प्रभाव सौ गुना तक बढ़ जाता है। यदि संभव हो, तो आधे गिलास पानी में पांच अंबर रत्न को डालकर रात भर छोड़ दें और सुबह खाली पेट उस पानी को पीएं। संभव हो, तो दिन में भी उसी में से पानी लें, ऊपर वर्णित सभी रोगों से मुक्ति मिलेगी तथा आपका शरीर स्वस्थ, कांतिवान तथा ऊर्जावान बनेगा और आपका मानसिक संतुलन बना रहेगा। सभी कार्यों में आपका मन लगेगा तथा हर कार्य में अभूतपूर्व सफलता भी मिलेगी।

यह रत्न वृष राशि वालों (20 अप्रैल से 20 मई के बीच जन्मे) के लिए जीवन रत्न के रूप में व सिंह राशि वालों (23 जुलाई से 22 अगस्त के बीच जन्मे) के लिए भाग्य रत्न के रूप में भी कार्य करता है।

किडनी स्टोन (जेड)

यह गहरे हरे रंग का अपारदर्शी रत्न होता है। इसकी ऊपरी सतह पर किडनी की आकृति दिखाई देती है। यह रत्न हेपेटाइट की किस्म का रत्न है। जैसा कि नाम से ही पता चलता है, यह रत्न किडनी से संबंधित बीमारियों से मुक्ति के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इसके अतिरिक्त यह रत्न हृदय, पेट आदि की बीमारी से बचाव के लिए भी प्रयोग में लाया जाता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

गुर्दे से संबंधित बीमारी और इसके फलस्वरूप डायलिसिस पर रखे गए रोगियों के लिए या फिर जिन्हें डॉक्टर ने गुर्दा बदलवाने की सलाह दी हो उनके यह रत्न अत्यंत लाभदायक व प्रभावी होता है। यह रत्न जितना देखने में साधारण होता है, इसके लाभ उतने ही चमत्कारी होते हैं। जिनका स्वास्थ्य ऊपर वर्णित बीमारी के कारण ठीक नहीं रहता हो और जीवन दूभर हो गया हो, उन लोगों को यह रत्न अवश्य धारण करना चाहिए।

उपयोग विधि

इस रत्न को अंबर रत्न के समान अंगूठी या लॉकेट में धारण किया जा सकता है। इसे बुध ग्रह से संबंधित रत्न माना जाता है। इसे बुधवार को बुध की होरा में बुध के निम्नलिखित मंत्र से अभिमंत्रित और गंगाजल व पंचामृत से शुद्ध करके सोने या चांदी की धातु में धारण करना चाहिए।

बुध का मंत्र – ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

इस रत्न को धारण करने के साथ–साथ इसका जल ग्रहण किया जाए, तो इसका प्रभाव भी अंबर रत्न की तरह सौ गुना बढ़ जाता है। रात को कांच के एक गिलास में आधा गिलास पानी भरकर उसमें चार–पांच किडनी स्टोन डालकर छोड़ दें। सुबह खाली पेट वह पानी पी जाएं और फिर से ताजा पानी भर दें। यह क्रिया नियमित रूप से करते रहें, रत्न का प्रभाव धीरे–धीरे आपको रोगमुक्त कर देगा और आप स्वस्थ होकर आनंदमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे। यह रत्न प्रेम आकर्षण, प्रेम वृद्धि, दुर्घटना से बचाव, धन वृद्धि और धन के सदुपयोग की शक्ति को भी बढ़ाता है।

ओपल

यह हीरे का उपरत्न है। हीरे के मूलतः दो उपरत्न हैं – जरकिन (अमेरिकन डायमंड) और ओपल। जरकिन का स्वभाव गर्म होता है, जबकि ओपल का स्वभाव ठंडा। जरकिन का स्वभाव गर्म होने के कारण यह कामुकता को बढ़ाता है, जबकि ओपल हमारे सुख, समृद्धि, प्रेम, माधुर्य एवं आपसी संबंधों को सुधारता है। जब व्यक्ति युवावस्था और वृद्धावस्था के बीच अर्थात 45 वर्ष के लगभग होता है, उस समय हीरे के स्थान पर जरकिन की सलाह न देकर ओपल रत्न पहनने की सलाह दी जाती है, जो हीरे के समान ही कार्य करता है। परंतु व्यक्ति की कामशक्ति सामान्य ही रहती है। जब पति–पत्नी के बीच संबंधों में कड़वाहट या दरार आने लगे, तो ओपल रत्न धारण कर संबंधों को पुनर्जीवित करके आपसी माधुर्य को बढ़ाया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त यह रत्न मानसिक स्तर की भी वृद्धि करता है। जब व्यक्ति अपने आप को मानसिक तौर पर निराश और थका हुआ महसूस करता है, उस समय ओपल मन को पुनः ऊर्जावान करके नए जोश और उमंग के साथ जीने की ऊर्जा प्रदान करता है और मंद और बुझा हुआ मन पुनः रोमांच और उत्साह से भर उठता है। इस तरह इसे धारण करने से व्यक्ति मानसिक अवसाद की स्थिति से बच सकता है।

उपयोग विधि

यह सफेद रंग का हल्का रत्न होता है। इसकी सतह से सतरंगी प्रकाश निकलते रहते हैं। देखने से ऐसा प्रतीत होता है मानो इसकी सतह पर जगह–जगह से आग की चिंगारियां निकल रही हों। इस उपरत्न को चांदी की अंगूठी और लॉकेट में धारण किया जाता है। इसे शुक्रवार को शुक्र की होरा में शुक्र के निम्नलिखित मंत्र से अभिमंत्रित करके सीधे हाथ की अनामिका में धारण करना चाहिए। पहनने से पूर्व इसे कच्चे दूध और गंगाजल से शुद्ध अवश्य कर लेना चाहिए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

शुक्र का मंत्र – ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

जन्मकुंडली में शुक्र जल तत्व राशि में स्थित हो, तो भी शुक्र के लिए ओपल पहनने की सलाह दी जाती है। जल तत्व राशियां हैं – कर्क, वृश्चिक और मीन।

इस प्रकार ओपल रत्न धारण करके आप अपने जीवन को और अधिक सुखी, समृद्ध और मधुर बना सकते हैं। इसे यदि आप अपने प्रेमी या प्रेमिका को उपहार में अंगूठी या लॉकेट के रूप में भेंट स्वरूप देते हैं, तो आपके बीच परस्पर आकर्षण बढ़ेगा व प्रेम में वृद्धि होगी। ओपल को कड़े या चूड़ी में जड़वाकर या ब्रेसलेट में पहनने से भी समान लाभ की प्राप्ति होती है।

अलग–अलग रत्नों का भिन्न–भिन्न बीमारियों पर प्रभाव

माणिक्य :

अजीर्ण : जिस व्यक्ति ने बर्गा के माणिक्य को सोने की अंगूठी में धारण कर रखा हो, वह कुनकुने पानी में अंगूठी को 13 मिनट तक हिलाए एवं उस पानी को पी ले। यदि यह बीमारी ज्यादा पुरानी हो, तो ककड़ी के रस में माणिक्य को एक घंटे तक हिला कर पीने से पुरानी बीमारी भी दूर हो जाती है।

रक्त दोष : यदि किसी व्यक्ति के शरीर में रक्त प्रवाह न होता हो, या लकवा हो, तो सीनकोना की छाल घिस कर, उसमें बर्मा के माणिक्य का भस्म मिला कर, पानी के साथ पीने से लाभ होता है।

नपुंसकता : फॉस्फोरिक एसिड में 21 दिन तक माणिक्य लाल शीशी में रखने के बाद, उस एसिड की दस–दस बूंदें पानी में मिला कर, दिन में तीन बार पीएं।

घाव : शरीर के किसी स्थान पर चोट लग गयी हो, तो उस स्थान पर माणिक्य को स्पर्श कराने से संक्रामक रोग नहीं होता है।

मस्तिष्क की दुर्बलता : यदि किसी व्यक्ति की स्मरण शक्ति कमजोर हो गयी हो, तो माणिक्य का भस्म मलाई के साथ खाने से आश्चर्यजनक लाभ मिलता है। इसके अलावा क्षय रोग, खूनी दस्त, पीलिया आदि बीमारियों में भी माणिक्य अपना प्रभाव दिखाता है।

माणिक्य मस्तिष्क के ट्यूमर एवं कैंसर में लाभदायक है। रीढ़ के तमाम रोग, दोष एवं विकार आदि से छुटकारा दिलाने में माणिक्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहां यह याद रखना आवश्यक है कि माणिक बर्मा की खान का हो।

मोती

मोती चंद्रमा का रत्न है। इसमें 90 प्रतिशत चूना होता है। अतः कैल्शियम की कमी के कारण उत्पन्न रोगों में मोती का उपयोग लाभदायक होता है, जैसे, स्मरणशक्ति बढ़ाने के लिए अथवा मंद बुद्धि वालो को मोती का भस्म सेवन कराने से लाभ मिलता है। इसके अलावा वायु विकारों से संबंधित रोग सदा के लिए दूर हो जाते हैं। आंखों में मोती का अंजन लगाने से नेत्र रोग में आशातीत लाभ होता है।

बसरा मोती के भस्म का, अनुभवी वैद्य के परामर्श से, सेवन करने से पतन घात से संबंधित गुप्त रोग में शीघ्र लाभ होता है। चक्कर आने, क्षय रोग, खांसी में भी मोती का भस्म बहुत लाभ करता है। अत्यधिक मानसिक श्रम करने वालों के लिए यह रामबाण दवाई है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

इसके अलावा चक्कर आने पर, यौन शक्ति को बढ़ाने, खांसी दूर करने के लिए मोती के भस्म का सेवन करना चाहिए। मोती बसरा का होना चाहिए।

हीरा

हीरे के भस्म से अनेक प्रकार के रोगों का निवारण हो जाता है।

संभोग की शक्ति की कमी में हीरे के भस्म का सेवन करने से संभोग शक्ति बढ़ जाती है, या 'ब्लू डायमंड' की अंगूठी को मुंह में रख कर संभोग करने से सामान्य से अधिक देर तक आनंद उठाया जा सकता है।

मंदाग्नि रोग में यदि हीरे के भस्म को शहद के साथ चटाया जाए, तो आश्चर्यजनक लाभ मिलता है।

काम वासना में कमी होने पर महिला एवं पुरुष दोनों को हीरा धारण करना चाहिए। इससे दोनों में काम वासना बढ़ेगी एवं यदि आपस में झगड़ा होता है, तो वह समाप्त हो जाएगा।

फॉस्फोरिक एसिड में हीरे को सफेद शीशी में 7 दिन तक रख कर उस एसिड को दस बूंद पानी के साथ सेवन करने से अंधापन, हिस्टीरिया, भगंदर एवं फेफडे संबंधी रोग ठीक हो जाते हैं।

पन्ना

पन्ना उत्तम विषनाशक रत्न है। पन्ने की पिष्टी बना कर गुलाब जल के साथ सेवन करने से अम्ल तथा पित्त दूर होते हैं, शरीर में जहरीली वस्तु का नाश होता है। हृदय की दुर्बलता तथा उच्च रक्तचाप में पन्ना की पिष्टी बहुत लाभ प्रदान करती है।

पन्ने का भस्म दमा, अजीर्ण, बवासीर एवं पीलिया रोग के लिए लाभदायक है। यदि गर्भवती स्त्री पन्ने की अंगूठी कमर पर धारण कर ले, तो प्रसव के समय पीड़ा नहीं होती है। प्रायः पन्ना बौद्धिकता को एकाग्र एवं तरोताजा बनाए रखता है। इसलिए चिकित्सक शल्य क्रिया के क्षणों में हरा वस्त्र धारण करते हैं। गर्भवती औरतें अक्सर मिट्टी खाने लगती हैं। गर्भ काल में उन्हें पन्ना पहनाने से यह आदत छूट जाती है।

लहसुनिया

लहसुनिया केतु ग्रह का रत्न है। इसके अशुभ होने से जो रोग उत्पन्न होते हैं, उनके लिए इसका उपयोग किया जाता है, जैसे :

नपुंसकता : लहसुनिया का भस्म नामर्दी दूर करने के लिए चमत्कारिक रूप से कार्य करता है। किसी भी शुक्रवार के दिन इसके भस्म को गाय के घी के साथ मिला कर सेवन करने से यह बीमारी दूर हो सकती है।

गुप्त रोग : कार्मे, सुजाक, उपदंश जैसे गुप्त रोगों में दूध के साथ लहसुनिया का भस्म सेवन करने से लाभ होता है।

प्रसव पीडा : प्रसव में विलंब हो रहा हो, तकलीफ हो रही हो, तो लहसुनिया स्त्री के बालों में बांध देना चाहिए। इससे प्रसव, बिना कष्ट के, शीघ्र हो जाता है, या कटलफीश नामक मछली के तेल में लहसुनिया 10 घंटे रख कर पानी के साथ पीने से प्रसव आसानी से होता है।

नेत्र रोग : नेत्र रोगी को लहसुनिया का भस्म एवं पीपल की राख मिला कर खाने से लाभ होता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

श्वास रोग : लहसुनिया को गले में बांध देने से श्वास संबंधी रोगों में लाभ होता है। लहसुनिया कनक खेत का होना चाहिए।

नीलम

शनि के कुप्रभाव से उत्पन्न रोगों में, औषधि के रूप में, नीलम का उपयोग किया जाता है, जैसेः

वात एवं दर्द : गठिया, संधिवात, स्नायविक दर्द आदि रोगों में नीलम के भस्म को शहद के साथ खाने से लाभ होता हैं

श्वास एवं मस्तिष्क रोग : श्वास रोग, दमा, मिरगी आदि रोगों में नीलम का भस्म मलाई में खिलाने से शीघ्र ही आराम मिलता है।

पागलपन : यदि कोई जन्म से पागल नहीं है, तो नीलम के भस्म को पान के रस के साथ खाने से लाभ होता है।

नेत्र रोग : जम्मू की खदान के नीलम को गुलाब जल के साथ एक घंटे तक हिलाया जाए एवं उस जल को नेत्र में डाला जाए, तो नेत्र रोग दूर होते हैं।

याददाश्त : नीलम को जम्मू के अल्कोहल में नीले रंग की बोतल में 18 दिन रख कर उस अल्कोहल को पानी के साथ पीने से याददाश्त बढ़ती है।

मूंगा

मंगल ग्रह के कुप्रभाव से उत्पन्न रोगों में औषधि के रूप में मूंगा इस प्रकार उपयोग किया जाता हैः आयुर्वेद में मूंगे को प्रवाल के नाम से जाना जाता है। मूंगा वात, पित्त एवं कफ तीनों को समाप्त करने में सक्षम है। वीर्य को गाढ़ा करने तथा मस्तिष्क को शक्ति देने के लिए गाय के दूध के साथ मूंगा के भस्म का सेवन किया जाता है। भूख बढ़ाने एवं पाचन क्रिया के लिए मूंगे का भस्म सर्वश्रेष्ठ है।

हृदय रोग, नजर दोष, भूत–प्रेत, आंधी–तूफान, बिजली, छाया के प्रभाव को नष्ट करने के लिए मूंगे का उपयोग होता है।

मूंगे को गुलाब जल में घिस कर गर्भवती स्त्री के पेट पर लगाने से उसका गर्भ स्थिर हो जाता है। मूंगे के भस्म को शहद के साथ चटाने से शरीर पुष्ट होता है। हड्डियों की कमजोरी, स्त्री का प्रदर रोग, रक्तचाप में मूंगे के भस्म से शीघ्र लाभ होता है।

पुखराज के साथ यदि मूंगा धारण किया जाए, तो मधुमेह, शर्करा इत्यादि को नियंत्रित किया जा सकता है।

बेरों के ढेर में दो–चार मूंगा डाल कर, उन्हें चार–पांच दिन बाद खाने से शरीर को अतुल शक्ति प्राप्त होती है तथा मानव में पौरुष की अधिकता आती है।

गोमेद

राहु के कुप्रभाव से उत्पन्न रोगों में, औषधि के रूप में, गोमेद का उपयोग इस प्रकार किया जाता है :

यह दुर्गंध, गर्मी, वायु गोला, बवासीर, त्वचा रोग आदि में उपयोग होता है।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

संतान में वृद्धि तथा शत्रु भय का नाश होता है।

गोमेद का भस्म मलाई में सेवन करने से कफ, क्षय तथा पीलिया में आश्चर्यजनक लाभ होता है।

मिरगी, बवासीर, नेत्र रोग में गोमेद का भस्म रामबाण सिद्ध होता है।

चर्म रोग, कृमि, शरीर के भारहीन होने में भी गोमेद रत्न का भस्म उपयोग किया जाता है।

पुखराज

बृहस्पति के कुप्रभाव से उत्पन्न रोगों में, औषधि के रूप में, पुखराज का उपयोग किया जाता है।

यह आध्यात्मिक विचार एवं मानसिक स्थिरता प्रदान करता है।

यह भूत–प्रेत, बाधा, कष्ट, पागलपन आदि को दूर करता है।

पुखराज के भस्म और उसकी पिष्टी से वात, कफ, कुष्ठ रोग, नकसीर शीघ्र दूर हो जाते हैं। यह विष के प्रभाव को निष्क्रिय करने में सफल रहता है।

पुखराज रत्न मुंह में रखने से दांत मजबूत होते हैं एवं मुंह से सुगंध आती है।

यह यकृत रोग, दस्त, मिरगी, प्रदर के कष्ट में बहुत उपयोगी है। वीर्य को उत्पन्न एवं गाढ़ा करने में भी यह बहुत लाभदायक है।

नौ रत्नों के अलावा चौरासी उपरत्न भी होते हैं। ये भी बीमारियों में अचूक लाभ पहुंचाने वाले हैं।

माहेमरियम

यह उपरत्न है, जिसे बवासीर से परेशान व्यक्ति को अंगूठी में धारण करना चाहिए और उस अंगूठी को दिन में 7–8 बार चाटना चाहिए। इससे बवासीर के मरीज को लाभ होता है।

दानाफिटंग

यह ऐसा उपरत्न है, जिस पर दिल जैसा निशान बना होता है। गुर्दे की बीमारी वाले व्यक्ति को इसका पेंडेंट बना कर पहनना चाहिए।

कहरवा

इसका नाम कहर + रवा, यानी कहरवा है। कहरवा का अर्थ है दुःख भगाने वाला। इस रत्न को पहनने से दुःख भाग जाता है। दिल के मरीज को सोने में कहरवा पहनना चाहिए। असली कहरवा के अभाव में यशव की तख्ती भी पहन सकते हैं।

यहां सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि रत्न चिकित्सा अनुभवी व्यक्ति की सलाह से ही करें।

मांसाहारी एवं अधिक शराब, भांग, गांजा का सेवन करने वाले व्यक्ति को इस चिकित्सा से बहुत देर से लाभ होता है।

यदि कोई इसकी लंबी प्रक्रिया में नहीं जाना चाहता हो, तो एक संक्षिप्त रास्ता यह है कि जो नौ ग्रह मानव शरीर

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

के विभिन्न अंगों को प्रभावित करते हैं, जैसे :

सूर्य	सिर, पेट, नेत्र, जांघ, पीठ, रीढ़ और गर्भाशय
चंद्र	छाती, रक्त, गाल, नेत्र
मंगल	नाड़ी, रक्त, भुजा, आंत, गला
बुध	त्वचा, गुर्दा, कोहनी, गर्दन, पित्त
गुरु	धमनी, जिगर, पैर, जांघ, छाती चर्बी
शुक्र	जीभ, गुप्तांग, रज, वीर्य, नाभी
शनि	धमनी, पसली, पिंडली, टांग
राहु	गैस, नितंब, दांत, सिर का ऊपरी हिस्सा
केतु	पैर, पंजे, नाखून

इन बीमारियों से संबंधित रत्न धारण कर उन्हें दूर कर सकते हैं। रत्नों पर सूर्य की किरणें पड़ने से रत्नों के माध्यम से वे किरणें तो शरीर पर पड़ेगी, लेकिन शरीर में उस किरणों को सहन करने की कितनी ताकत है, यह अलग–अलग व्यक्तियों में अलग–अलग हो सकती है। जिस प्रकार शल्य क्रिया से पूर्व मरीज को क्लोरोफार्म सुंघाया जाता है, तो कोई व्यक्ति थोड़ा सा सूंघ कर बेहोश हो जाता है और किसी मरीज के लिए इसकी मात्रा बढ़ानी पड़ती है, इसी प्रकार किसी रत्न से मानव को तत्काल लाभ मिल जाता है और किसी को देर में। लेकिन लाभ तो अवश्य होता ही है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

रत्न और उनके मंत्र

नाम	रंग	वजन रत्ती	अंगुली	दिन	धातु	मंत्र
माणिक्य	गुलाबी	5 से 8	अनामिका	रविवार	सोना	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः
मोती	सफेद	3 से 9	कनिष्ठा	सोमवार	चांदी	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्राय नमः
मूंगा	लाल	4 से 12	अनामिका	मंगलवार	चांदी, सोना, तांबा	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः
पन्ना	हरा	3 से 7	कनिष्ठा	बुधवार	सोना	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः
पुखराज	पीला	4 से 8	तर्जनी	गुरुवार	सोना	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः
हीरा	सफेद	¼ से 1¼	अनामिका, मध्यमा	शुक्रवार	सोना	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः
नीलम	नीला	4 से 7	मध्यमा	शनिवार	पंचधातु	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः
गोमेद	भूरा	6 से 13	मध्यमा	शनिवार	अष्ट धातु	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः
लहसुनिया	मटमैला	3 से 7	अनामिका, मध्यमा	बुधवार	सोना, चांदी	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

Future Point

रत्नाभावे औषधि

रत्न के अभाव में जातक अपने जन्म नक्षत्र के अनुसार वृक्ष की जड़ को यथा विधि अभिमंत्रित करके ग्रहण में धारण करने से **औषधि** रत्नों का कार्य करती है।

जन्म नक्षत्र	वृक्ष	जन्म नक्षत्र	वृक्ष
अश्विनी	कारस्कर	स्वाती	अर्जुन
भरणी	धात्री	विशाखा	विकंकत
कृतिका	उदुम्बर	अनुराधा	बकुल
रोहिणी	जम्बू	ज्येष्ठा	सरल
मृगशिरा	खादिर	मूल	सर्प
आर्द्रा	कृष्ण	पू॰ षा	वंजुल
पुनर्वसु	वंश	उ॰ षा	पनस
पुष्य	पीपल	अभिजित	पनस
अश्लेषा	नाग	श्रवण	अर्क
मघा	रोहिणी	धनिष्ठा	समी
पू॰ फा॰	पलास	शतभिषा	कदम्ब
उ॰ फा॰	प्लक्ष	पू॰ भा॰	निम्ब
हस्त	अम्बष्ठ	उ॰ भा॰	आम्र
चित्रा	बिल्व	रेवती	मधूक

रत्न की आयु और साथ में वर्जित रत्न			
ग्रह	**रत्न**	**रत्न की आयु**	**साथ में वर्जित रत्न**
सूर्य	माणिक्य	4 साल	हीरा, नीलम, गोमेद
चंद्र	मोती	$2^{1/4}$ साल	गोमेद, लहसुनिया
मंगल	मूंगा	3 साल	हीरा, नीलम, गोमेद
बुध	पन्ना	4 साल	मोती
गुरु	पुखराज	4 साल	हीरा, नीलम
शुक्र	हीरा	7 साल	माणिक्य, मूंगा, पुखराज
शनि	नीलम	5 साल	माणिक्य, मूंगा, पुखराज
राहु	गोमेद	3 साल	माणिक्य, मोती, मूंगा
केतु	लहसुनिया	3 साल	मोती

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

Future Point

लग्नानुसार रत्न चयन

नाम	लग्न के लिए रत्न	लग्न के लिए कारक(प्रभावशाली)	लग्न के लिए उपयुक्त रत्न	लग्न के लिए अशुभ
माणिक्य	सिंह	मेष	धनु	मिथुन, कन्या, मकर, कुंभ
मोती	कर्क	मेष	वृश्चिक	वृष, सिंह, मकर, कुंभ
मूंगा	मेष, वृश्चिक	कर्क	सिंह, मीन	वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुंभ
पन्ना	मिथुन, कन्या	वृष, कुंभ	मकर, तुला	कर्क, वृश्चिक, धनु, कुंभ, मीन
पुखराज	धनु, मीन	सिंह, वृश्चिक	मेष, कर्क	वृष, कन्या, तुला, मकर, कुंभ
हीरा	वृष, तुला	मकर, मिथुन	कुंभ, कन्या	सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन
नीलम	मकर, कुंभ	मिथुन, कन्या	वृष, तुला	कर्क, वृश्चिक, धनु, मीन
लहसुनिया	–	कन्या, वृश्चिक	–	–
गोमेद	–	वृष, मीन	–	–

किस राशि में कौन सा रत्न शुभ/अशुभ

राशि	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम
मेष	कारक रत्न	शुभ	जीवन रत्न	अशुभ	सौभाग्यदायक	अशुभ	सम
वृष	सम	अशुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	जीवन रत्न	सौभाग्यदायक
मिथुन	सम	अशुभ	अशुभ	जीवन रत्न	अशुभ	शुभ	सौभाग्यदायक
कर्क	सम	जीवन रत्न	कारक रत्न	अशुभ	सौभाग्यदायक	सम	अशुभ
सिंह	जीवन रत्न	अशुभ	सौभाग्यदायक	अशुभ	शुभ	सम	अशुभ
कन्या	अशुभ	सम	अशुभ	जीवन रत्न	अशुभ	सौभाग्यदायक	शुभ
तुला	सम	शुभ	अशुभ	सौभाग्यदायक	अशुभ	जीवन रत्न	कारक रत्न
वृश्चिक	शुभ	सौभाग्यदायक	जीवन रत्न	अशुभ	शुभ	अशुभ	सम
धनु	सौभाग्यदायक	अशुभ	शुभ	अशुभ	जीवन रत्न	अशुभ	अशभ
मकर	अशुभ	अशुभ	सम	सौभाग्यदायक	अशुभ	शुभ	जीवन रत्न
कुंभ	अशुभ	अशुभ	सम	सम	अशुभ	सौभाग्यदायक	जीवन रत्न
मीन	अशुभ	शुभ	सौभाग्यदायक	अशुभ	जीवन रत्न	अशुभ	अशुभ

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

रत्न सारणी

रत्न	सौर राशि (पाश्चात्य विधि)	मूलांक/भाग्यांक के अनुरूप	रोजगार के अनुरूप	रोग के अनुरूप	धारण करने की उंगली	धारण करने का वार	धारण करने की धातु
माणिक्य उपरत्न– सूर्यकांत मणि	सिंह	1	चिकित्सा राज सेवा	हृदय रोग	अनामिका	रविवार	सोना, तांबा
मोती उपरत्न–मून स्टोन	कर्क	2	डिजाइनिंग डेरी व्यवसाय	मनोविकार	कनिष्ठिका	सोमवार	चांदी
मूंगा उपरत्न संघ मूंगी	मेष	9	सैनिक कार्य खेल	रक्त विकार	अनामिका	मंगलवार	सोना, तांबा
पन्ना उपरत्न–ऑनिक्स	मिथुन कन्या	5	लेखा कार्य वकालत	वाणी विकार	कनिष्ठिका	बुधवार	सोना
पुखराज उपरत्न–सुनैला	धनु, मीन	3	अध्यापन न्याय कार्य	लीवर विकार	तर्जनी	गुरुवार	सोना
हीरा उपरत्न जिरकन	वृष तुला	6	अभिनय, जौहरी	वीर्य विकार	अनामिका	शुक्रवार	प्लेटिनम सोना, चांदी
नीलम उपरत्न जमुनिया	मकर कुंभ	8	इंजीनियरिंग लोहा व्यवसाय	श्वास विकार	मध्यमा	शनिवार	सोना, अष्टधातु
गोमेद उपरत्न तुरसावा	–	4	राजनीति, आकस्मिक	दर्द	मध्यमा	शनिवार	सोना अष्टधातु
लहसुनिया उपरत्न–गोमेद	–	7	कठिन कार्य	चर्म रोग	अनामिका	बुधवारवार	सोना अष्टधातु

Future Point

Future Point

अध्याय–3

रुद्राक्ष प्रकरण

प्रस्तुत खण्ड में सभी प्रकार के रुद्राक्षों का वर्णन, धारणविधि, मंत्र, विनियोग, रहस्य आदि का विस्तृत विवरण है।

रुद्राक्ष की उत्पत्ति

पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार रुद्राक्ष के जन्मदाता स्वयं भगवान् शिव हैं। इसका प्रमाण लिंग पुराण, स्कन्दपुराण, शिव पुराण, अग्नि पुराण आदि ग्रन्थों में मिलता है। रुद्राक्ष का सम्बन्ध भगवान् शिव के नेत्र के अश्रुकणों से है। विश्व के सभी देशों व धर्मों के लोग इसकी उपयोगिता स्वीकारते हैं।

भारत में मुख्यतः यह बंगाल एवं असम के जंगलों में तथा हरिद्वार एवं देहरादून के पहाड़ी क्षेत्रों में तथा दक्षिण भारत के नीलगिरी, मैसूर और अन्नामलै क्षेत्र में व नेपाल देश के क्षेत्रों में रुद्राक्ष के वृक्ष अधिक पाये जाते हैं। रुद्राक्ष के वृक्ष सामान्य रूप से आम के वृक्षों की तरह होते हैं। आम के पत्तों की तरह इसके पत्ते भी होते हैं।

इसका फूल सफेद रंग का होता है इसके फल हरी आभा युक्त नीले रंग के गोल आकार में आधा इंच से एक इन्च व्यास तक के होते हैं। फल के गुठली पर प्राकृतिक रूप से कुछ धारियां होती हैं और धारियों के बीच का भाग रवेदार होता है। गुठलियों पर आड़ी धारियों से ही रुद्राक्ष के मुखों की गणना की जा सकती है।

रुद्राक्ष के रंग तथा मुख एवं उसमें बने छिद्र प्राकृतिक रूप से होते हैं। ये मुख्यतः चार रंगों में पाये जाते हैं – 1. श्वेत वर्ण 2. रक्त वर्ण 3. पीत वर्ण एवं 4. श्याम वर्ण रुद्राक्ष। रुद्राक्ष के छोटे एवं काले दानों के वृक्ष अधिकांशतः इण्डोनेशिया में पाये जाते हैं तथा नेपाल में भी इसके कुछ वृक्ष हैं। इण्डोनेशिया में विशेषतौर पर 1 मुखी, 2 मुखी और 3 मुखी पाया जाता है। ये रूद्राक्ष नेपाल में बहुत कम पाया जाता है। इसलिए 1 मुखी, 2 मुखी और 3 मुखी नेपाली दाना का मूल्य अधिक होता है।

रुद्राक्ष का महत्त्व

रुद्राक्ष की नित्य पूजा करने से धारण करने से या विविध रूपों में इसे उपयोग करने से अन्न वस्त्र एवं ऐश्वर्य की कमी नहीं होती तथा शरीर में अनेक रोगों को शमन करने में रुद्राक्ष सहायक होता है। किसी भी रंग या किसी भी क्षेत्र का रुद्राक्ष अनेक सिद्धियों एवं रोगों के उपचार के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। रुद्राक्ष–पाप वृत्ति से दूर रखता है, हिंसक कार्यो से बचाता है भूत प्रेत एवं ऊपरी बाधाओं से रक्षा तथा पाप कर्मों को नष्ट करके पुण्य का उदय करता है। रुद्राक्ष को धारण करने से बुद्धि का विकास होता है। इस लोक में सुख भोगने के बाद शिव लोक में जाने का अधिकार प्राप्त होता है। रुद्राक्ष धारी व्यक्ति की अल्पमृत्यु नहीं होती एवं रुद्राक्ष दीर्घायु को प्रदान करता है। रुद्राक्ष से भोग और मोक्ष दोनों प्राप्त होते हैं।

उपयोगिता

मुख्यतः रुद्राक्ष पन्द्रह प्रकार के पाये जाते हैं। – जिसमें प्रथम गौरीशंकर से लेकर चतुर्दशमुखी तक रुद्राक्ष हैं, इसके अनेक प्रकार से लाभ हैं। यूं– तो रुद्राक्ष को वैज्ञानिक आधार पर बिना मंत्र का उच्चारण किये भी धारण किया जा सकता है। किन्तु यदि शास्त्रीय विधि से रुद्राक्ष को अभिमन्त्रित करके धारण किया जाये तो अति उत्तम है। रुद्राक्ष को अभिमन्त्रित करने से उसमें विलक्षण शक्ति उत्पन्न हो जाती है। इसकी विधि यह है कि किसी योग्य

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

पंडित से रुद्राक्ष को अभिमन्त्रित कराया जाये और फिर उपयोग में लाया जाय प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग–अलग मंत्र ग्रन्थों में पाया जाता है।

रुद्राक्ष का आधुनिक मूल्यांकन

रुद्राक्ष अनेक रूपों में मानव जीवन के लिए उपयोगी है, इसे भस्म बनाकर उपयोग में लाया जाता है तथा जल शोधित किया जाता है, लिंग स्वरूप मान कर भी इसकी पूजा होती है। माला बनाकर गले में धारण की जा सकती है। छोटे दानों को गला, कलाई एवं कमर में भी बांध कर उपयोग में लाया जाता है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जातक के ग्रह प्रतिकूल होने पर रुद्राक्ष की माला धारण करने से ग्रहों का अनुकूल फल प्राप्त होता है। वैज्ञानिक आधार पर आज रुद्राक्ष अपनी कसौटी पर खरा उतर चुका है और लोगों को अनेक तरह से लाभ प्रदान कर रहा है। रुद्राक्ष के दाने जैसे–जैसे छोटे होते हैं वैसे उनकी कीमत बढ़ती जाती है। जो दाना रुद्राक्ष का बड़ा होता है। उसकी कीमत कम होती है। परन्तु एक मुखी एवं गौरीशंकर रुद्राक्ष का बड़े आकार में अधिक महत्व है तथा कलयुग में काला रुद्राक्ष अत्यधिक उपयोगी एवं लाभकारी माना गया है। इसकी पैदावार मुख्यतः इण्डोनेशिया में होती है।

प्रकार

1. **रुद्राक्ष** : रुद्राक्ष में प्राकृतिक मुख होता है जो देखने से पता लग जाता है।
2. **भद्राक्ष** : हिमालय या दक्षिण भारत में उपलब्ध होता है। प्राकृतिक मुख नहीं होता, बनाया जाता है।
3. **इन्द्राक्ष** : लुप्त हो चुका है इसलिए इन्द्राक्ष का नाम सुनने को नहीं मिलता है और न देखने को।

रुद्राक्ष से लाभ

अगर असली रुद्राक्ष उपयोग में लाया जा रहा है तो यह रक्त चाप, वीर्य दोष, बौद्धिक विकास, मानसिक शान्ति, पारिवारिक एकता, व्यापार में सफलता एवं गुस्से को शान्त करता है। यह ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले लोगों के लिए विशेष उपयोगी होता है। अभक्ष्य–भक्षण और परस्त्री गमन जैसे पाप को भी नष्ट करता है । शिक्षक विद्वान सभी के लिए सम्मान कीर्ति प्रदान करता है। इसमें पांचों तत्वों का समावेश है यह अग्निभय, चोरभय एवं दुर्घटनाओं से भी रक्षा करता है।

रुद्राक्षः यस्य गात्रेषु ललाटे च त्रिपुण्ड्रकम्।
स चाण्डालोऽपि सम्पूज्यः सर्ववर्णोत्तमो भवेत्।।

रुद्राक्ष जिसके शरीर पर हो और ललाट पर त्रिपुण्ड हो, वह चाण्डाल भी हो तो सब वर्णों में उत्तम एवं पूजनीय है। अभक्त हो या भक्त हो, नीच हो या नीच से भी नीच हो, जो रुद्राक्ष को धारण करता है, वह सब पातकों से छूट जाता है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

विभिन्न रुद्राक्षों के लिए ग्रह, वार देवता और मंत्र तालिका

रुद्राक्ष		वार	ग्रह	देवता	मंत्र
एक मुखी	स्वास्थ्य, सफलता, मान–सम्मान, आत्म विश्वास, अध्यात्म	रवि, सोम	सूर्य	शिव	ऊँ ह्रीं नमः
दो मुखी	वैवाहिक सुख, मानसिक शांति, सौभाग्य वृद्धि	सोमवार	चंद्र	अर्धनारीश्वर	ऊँ ह्रीं क्षौं वीं ऊँ
तीन मुखी	शत्रु शमन, रक्त संबंधी विकार दूर	सोमवार	मंगल	अग्नि	ऊँ क्लीं नमः
चार मुखी	शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि–विवेक, कामशक्ति वृद्धि	गुरु, सोम.	बुध	ब्रह्म	ऊँ ह्रीं नमः
पांच मुखी	शारिरीक, मानसिक प्रबलता व अध्यात्म	सोम.	गुरु	कालाग्नि	ऊँ ह्रीं नमः
छः मुखी	प्रेम संबंध, आकर्षण	शुक्र/सोम	शुक्र	कार्तिकेय	ऊँ ह्रीं हूं नमः
सात मुखी	शनि दोष निवारण	शनि/सोम,	शनि	अनंग	ऊँ हूं नमः
आठ मुखी	राहु ग्रह से संबंधित दोषों की शांति	बुध, सोम	राहु	गणेश	ऊँ हूं नमः
नौ मुखी	केतु ग्रह से संबंधित दोषों की शांति	गुरु/सोम.	केतु	भैरव	ऊँ ह्रीं हूं नमः
दस मुखी	कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि	बुध/सोम	–	विष्णु	ऊँ ह्रीं हूं नमः
ग्यारह मुखी	आर्थिक लाभ व समृद्धशाली जीवन	मंगल/सोम	–	शिव	ऊँ ह्रीं हूं नमः
बारह मुखी	विदेश यात्रा नेतृत्व शक्ति प्राप्ति	रवि सोम	सूर्य	आदित्य	ऊँ क्रौं क्षौं रें नमः
तेरह मुखी	सर्वजन आकर्षण व मनोकामना पूर्ति	शुक्र/सोम	शुक्र	इन्द्र	ऊँ ह्रीं नमो नमः
चौदह मुखी	आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति	शनि/सोम	शनि	हनुमान	ऊँ नमः शिवाय
पंद्रह मुखी	भाग्य वृद्धि, ज्ञान व आत्मबल वृद्धि	सोम	–	पशुपतिनाथ	ऊँ ह्रीं हूं नमः
गणेश	सफलता प्राप्ति, वाकपटुता व स्मरण शक्ति	सोम	–	गणेश	ऊँ गं गणपतये नमः
गौरीशंकर	सुखी वैवाहिक जीवन, मधुर संबंधों व आकर्षण	सोम	–	गौरीशंकर	ऊँ गौरीशंकराभ्यांनमः

रुद्राक्ष एक नजर में

1.	एक मुखी रुद्राक्ष	शासकों, प्रशासकों, राजाओं के लिए उत्तम/शक्ति, सत्ता, आत्म विश्वास व ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए
2.	दो मुखी रुद्राक्ष	वैवाहिक सुख, मानसिक शांति व संतोष
3.	तीन मुखी रुद्राक्ष	शत्रु विजय
4.	चार मुखी रुद्राक्ष	शिक्षा, एकाग्रता
5.	पांच मुखी रुद्राक्ष	ज्ञान, अध्यात्मिक उन्नति व स्वास्थ्य
6.	छह मुखी रुद्राक्ष	प्रेम, कामशक्ति, आकर्षण
7.	सात मुखी रुद्राक्ष	शनि शमन
8.	आठ मुखी रुद्राक्ष	रोग, बाधा शांति
9.	नौ मुखी रुद्राक्ष	वीरता, साहस, कर्मठता
10.	दस मुखी रुद्राक्ष	सफलता, उन्नति
11.	ग्यारह मुखी रुद्राक्ष	लाभ, आय, संपत्ति
12.	बारह मुखी रुद्राक्ष	विदेश यात्रा, दरिद्रता नाश व बाधा निवारण
13.	तेरह मुखी रुद्राक्ष	आकर्षण, सुख, प्रेम, सौंदर्य
14.	चौदह मुखी रुद्राक्ष	सत्ता, शक्ति, कीर्ति
15.	पंद्रह मुखी रुद्राक्ष	आर्थिक उन्नति, ज्ञान व शक्ति
16.	सोलह मुखी रुद्राक्ष	रोग नाश/आग, चोरी, डकैती से सुरक्षा
17.	सत्रह मुखी रुद्राक्ष	भूमि, मकान, वाहन सुख
18.	अठारह मुखी रुद्राक्ष	विपत्ति नाश/गर्भस्थ शिशु की रक्षा
19.	उन्नीस मुखी रुद्राक्ष	सत्यनिष्ठा, न्यायप्रियता के गुण/रक्त व स्नायु तंत्र रोगों में लाभकारी
20.	बीस मुखी रुद्राक्ष	भूत पिशाच से रक्षा
21.	एक्कीस मुखी रुद्राक्ष	आज्ञा चक्र को जाग्रत करने हेतु
22.	गौरीशंकर रुद्राक्ष	वैवाहिक सुख, आकर्षण, प्रसन्नता
23.	गणेश रुद्राक्ष	ऋद्धि, सिद्धि, बुद्धि की प्राप्ति
24.	गौरी गणेश रुद्राक्ष	संतान सुख
25.	रुद्राक्ष कवच	विभिन्न उद्देश्यों के लिए

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

1. एक मुखी रुद्राक्ष

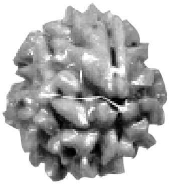

यह रुद्राक्ष साक्षात भगवान शंकर का स्वरूप है। इससे भुक्ति व मुक्ति दोनों की प्राप्ति होती है। धारक पवित्र व पापमुक्त होकर परमब्रह्म की प्राप्ति करता है। यह अत्यन्त दुर्लभ रुद्राक्ष है एवं अनेक कार्यो में सफलता प्रदान करता है।

शिव उपाच– ॐ नमः श्रृणु षण्मुख तत्त्वेन वक्त्रे वक्त्रे तथा फलम्। एकवक्त्रः शिवः साक्षाद्ब्रह्माहत्यां व्यपोहति।।

शिवजी स्वयं कार्तिकस्वामी से कह रहे हैं–हे षड़मुख ! कितने मुख वाला रुद्राक्ष किस प्रकार के फल को देने वाला है उसे ध्यान से सुनो ! एकमुखी रुद्राक्ष साक्षात् मेरा ही स्वरूप है तथा यह ब्रह्महत्या व पाप को दूर करने वाला है।

एकमुखी रुद्राक्ष सर्वसिद्धि प्रदाता रुद्राक्ष कहा गया है। यह सात्त्विक शक्ति में वृद्धि करने वाला, मोक्ष प्रदाता रुद्राक्ष है। जिसके घर में यह रुद्राक्ष होता है वहां लक्ष्मी का स्थाई वास हो जाता है तथा उसका घर धन–धान्य, वैभव, प्रतिष्ठा और दैवीय कृपा से भर जाता है। संक्षेप में यह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को देने वाला चतुवर्ग प्रदाता रुद्राक्ष है।

उपयोग से लाभ

- जो मनुष्य उच्छिष्ट अथवा अपवित्र रहते हैं अथवा बुरे कर्म करने वाले होते हैं। वे इस रुद्राक्ष को स्पर्श करने से सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं।
- इस रुद्राक्ष को कण्ठ में धारण करने वाला महत्वाकांक्षी होता है और उसके सभी कार्य सफल होते हैं।
- इसे सिर के ऊपर रखकर स्नान करने से अनेक गंगा स्नान का फल प्राप्त होता है।
- इस रुद्राक्ष को धारण करने से सभी देवता और देवियां स्वतः ही प्रसन्न हो जाते हैं तथा इच्छित फल प्रदान करते हैं।

उपयोग मंत्र– ॐ ह्रीं नमः। ॐ नमः शिवाय।

2. दो मुखी रुद्राक्ष

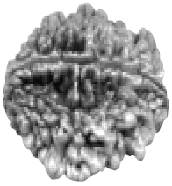

द्विमुखी रुद्राक्ष शंकर व पार्वती के रूप में माना गया है अर्थात् अर्धनारीश्वर रूप है। इसके उपयोग से धारक के सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं। कार्य तथा व्यापार में सफलता मिलती है यह मोक्ष और वैभव का दाता है।

द्विवक्त्रो देवदेवेशो गोवधं नाशयेद्ध्रुवम्।।

द्विमुखी रुद्राक्ष साक्षात् देवदेवश का स्वरूप है। यह गोवध जैसे पापों से छुड़ाने वाला है। इसको धारण करने वाले व्यक्ति की अनेक व्याधियां स्वतः ही शांत हो जाती हैं। यह रुद्राक्ष भी चतुवर्ग सिद्धि प्रदाता है।

आंवले के फल के बराबर दो मुखी रुद्राक्ष समस्त अनिष्टों का नाश करने वाला तथा श्रेष्ठ माना गया है। इस रुद्राक्ष में पूर्णरूप से अंतर्गर्भित विद्युत तरंगे होती हैं। इन्हीं से इसकी शक्ति का पता चलता है। दोमुखी रुद्राक्ष के धारण करने से शिवभक्ति बढ़ती है और अनेक रोग नष्ट होते हैं। यह रुद्राक्ष कर्क लग्न वालों के लिए विशेष उपयोगी है।

ज्योतिष में दोमुखी रुद्राक्ष चंद्रमा का प्रतिनिधित्व करता है। अतः चंद्रमा के कारण उत्पन्न रोगों से मुक्ति के लिए इसे धारण किया जाता है। इसे गुरु–शिष्य, पिता–पुत्र, पति–पत्नी, प्रेमी–प्रेमिका इत्यादि का प्रतीक मानकर इनके संबंधों की मधुरता व सुदृढ़ता हेतु धारण किया जाता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

उपयोग से लाभ

- वैदिक ऋषियों का यह मत है कि, इसको धारण करने से मन को शांति मिलती है। उसका मुख्य कारण है कि, यह शरीर की गर्मी को अपने में खींचकर गर्मी को स्वतः बाहर फेंकता है।
- मसूरिका नामक दुर्दम्य रोग का नाश करने के लिए तीन दिन तक बासी जल के अनुपात से रुद्राक्ष एवं काली मिर्च समभाग एक मासे से तीन मासे तक सेवन कराने से मसूरिका रोग समूल नष्ट हो जाता है।

उपयोग मंत्र– ॐ नमः। ॐ शिवशक्तिभ्यां नमः।

3. त्रिमुखी रुद्राक्ष

त्रिवक्त्रोग्निश्च विज्ञेयः स्त्रीहत्यां च व्यपोहति।।

त्रिमुखी रुद्राक्ष साक्षात् अग्निदेव का स्वरूप है। यह स्त्री हत्या इत्यादि पापों को दूर करने वाला है। इसके धारण से विद्याओं की प्राप्ति होती है। मंदबुद्धि बालकों के लिए इसे धारण करना नितांत आवश्यक है। निम्न–रक्तचाप एवं रक्त विकार संबंधी समस्या के निराकरण हेतु इसे पहना जा सकता है।

इसे सात्विक, राजसी और तामसी तीनों शक्तियों का अर्थात ब्रह्मा–विष्णु–महेश का स्वरूप, इच्छा, ज्ञान और क्रिया का शक्तिमय रूप तथा पृथ्वी, आकाश और पाताल क्षेत्रों से संबंधित माना गया है। ज्योतिष में यह रुद्राक्ष मंगल ग्रह द्वारा शासित है।

उपयोग से लाभ

- तीनमुखी रुद्राक्ष के कुछ दाने ताँबे के बर्तन में पानी डालकर भिगोए रखें। प्रत्येक 24 घंटे के अंतराल से यह रुद्राक्ष जल खाली पेट प्रातः पीने से विभिन्न चर्म रोगों के निदान में सहायता प्राप्त होती है।
- तीन मुखी रुद्राक्ष की माला द्वारा जप करने से यश प्राप्त होता है एवं कामनायें सिद्ध होती हैं।
- जो मनुष्य उच्छिष्ट अथवा अपवित्र रहते हैं अथवा बुरे कर्म करने वाले होते हैं। वे इस रुद्राक्ष के धारण से सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं।

उपयोग मंत्र– ॐ क्लीं नमः। ॐ अग्नये नमः।

4. चारमुखी रुद्राक्ष

यह ब्रह्मा जी का स्वरूप माना गया है यह चारों वेदों का द्योतक है। मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्रदान करने वाला है। इसे धारण करने से मानसिक रोग दूर होते हैं तथा मन में सात्विक विचार उत्पन्न होते हैं एवं धर्म में आस्था बढ़ती है।

चतुर्वक्त्रः स्वयं ब्रह्मा नरहत्यां व्यपोहति।।

यह अभीष्ट सिद्धियों को देने वाला परम गुणकारी रुद्राक्ष है। अनुकूल विद्या को प्राप्त करने में इससे सहायता मिलती है तथा सद्गुरु की प्राप्ति होती है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

यह रुद्राक्ष धनु और मीन लग्न के जातकों के लिए अत्यन्त लाभकारी माना गाया है। ज्योतिषीय दृष्टिकोण से चारमुखी रुद्राक्ष बुध ग्रह द्वारा शासित है। इसे धारण करने से जातक की बुद्धि का विकास होता है, स्नायु एवं मानसिक रोग का नाश होता है।

उपयोग से लाभ

- यह रुद्राक्ष डा॰, इंजीनियर, अध्यापक आदि को भौतिक कार्य करने में सहायता प्रदान करता है।
- इसको धारण करने से व्यर्थ की चिंता नष्ट होती है तथा यह धर्म की ओर अग्रसर करता है और सफलता देता है।
- उदर तथा गर्भाशय से रक्तचाप तथा ह्रदय रोग से सम्बन्धित अनेक बिमारियों के लिए चारमुखी रुद्राक्ष के कुछ दाने मिट्टी की हाँडी में पानी डालकर भिगोये रखें प्रत्येक 24 घंटे पश्चात यह रुद्राक्ष का जल खाली पेट प्रातःकाल पीने से अवश्य लाभ होगा।

उपयोग मंत्र– ॐ ह्रीं नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः।

5. पंचमुखी रुद्राक्ष

यह पंचमुखी रुद्राक्ष कालग्नि रुद्र का स्वरूप है इसके देवता कालाग्नि हैं इसके उपयोग से दुःख और दारिद्र नष्ट होता है। पुण्य का उदय होता है शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त होता है एवं यह पाप का नाशक है। यह पंच–ब्रह्मा का स्वरूप और पंचतत्वों का प्रतीक भी है। यह दुख दारिद्र्यनाशक, स्वास्थ्यवर्धक, आयुष्यवर्धक, सर्वकल्याणकारी, मंगलप्रदाता, पुण्यदायक एवं अभीष्ट सिद्धिप्रदायक है। ज्योतिषीय दृष्टिकोण से यह बृहस्पति ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है। जंघा व लीवर की बीमारियों से मुक्ति और बृहस्पति के कारण उत्पन्न कष्टों व अरिष्ट के निवारणार्थ इसे धारण किया जाता है।

पंचवक्त्रः स्वयं रुद्रः कालाग्निर्नाम नामतः।।

पर स्त्री गमन करने से जो पाप बनता है तथा अभक्ष्य भक्षण करने से जो पाप लगता है वह सब पंचमुखी रुद्राक्ष के धारण करने से नष्ट हो जाते हैं। इसमें कोई संशय नहीं, यह पंचतत्त्वों का प्रतीक है।

यह सर्वकल्याणकारी, मंगलप्रदाता एवं आयुष्यवर्द्धक है। महामृत्युंजय इत्यादि अनुष्ठानों में इसका ही प्रयोग होता है। यह अभीष्ट सिद्धि प्रदाता है। सर्वत्र सहज सुलभ होने के कारण इसका महत्व अत्यधिक है परंतु शास्त्रीय दृष्टि से भी इसका महत्त्व कम नहीं है।

उपयोग से लाभ

- पंचमुखी रुद्राक्ष की माला पर महामृत्युंजय का जप एवं गायत्री जप शीघ्र सिद्धि प्रदान करता है।
- पंचमुखी रुद्राक्ष की माला पर **ॐ नमः शिवाय** का नित्य एक माला जप करने से मंत्र शीघ्र सिद्ध हो जाता है तथा इस मंत्र द्वारा किसी भी कार्य पूर्ति के लिए सफलता पायी जा सकती है।
- पंचमुखी रुद्राक्ष धारण करने से अभक्ष्य–भक्षण और पर स्त्री गमन जैसे– जघन्य अपराध भी भगवान शिव द्वारा नष्ट होता है।

उपयोग मंत्र–ॐ ह्रीं नमः। ॐ नमः शिवाय।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

6. छः मुखी रुद्राक्ष

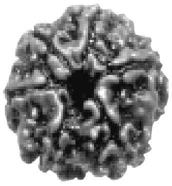

यह भगवान षडानन का स्वरूप है, इसके देवता भगवान कार्तिकेय हैं इससे धारक की सोई हुई शक्ति जाग्रत होती हैं। यह विद्या प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है तथा आत्मशक्ति संकल्प शक्ति और ज्ञान शक्ति प्रदान करता है।

यह छह प्रकार के दोषों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर) को दूर करने वाला है। ज्योतिष के अनुसार छहमुखी रुद्राक्ष शुक्र ग्रह द्वारा शासित है। दाम्पत्य जीवन की सफलता एवं परस्पर प्रेम, काम–शक्ति में वृद्धि तथा शुक्र जनित रोगों से मुक्ति हेतु इसे धारण किया जाता है। इसे धारण करने से अनेक प्रकार के चर्म रोग, हृदय रोग तथा नेत्र रोग दूर होते हैं।

षड्वक्तः कार्तिकेयस्तु धारयेद्दक्षिणे भुजे।
भ्रूणहत्यादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र सशयः।।

इस रुद्राक्ष को जो मनुष्य अपनी दक्षिण भुजा में धारण करते हैं, वे भ्रूणहत्या आदि से लेकर बड़े पापों से छूट जाते हैं। इसमें कुछ संशय नहीं है। गुप्त शत्रु एवं प्रकट शत्रु नष्ट करने हेतु इस रुद्राक्ष का बड़ा भारी महत्त्व है इसलिए कुछ विद्वान इसे 'शत्रुंजय रुद्राक्ष' भी कहते हैं। छःमुखी रुद्राक्ष वृष लग्न के जातक को अत्यधिक लाभ प्रदान करता है।

उपयोग से लाभ

- छःमुखी रुद्राक्ष की माला जप करने से विपत्ति से छुटकारा मिलता है एवं पीड़ायें नष्ट होती हैं।
- बड़े आकार का दाहिनी भुजा पर (पुरुष) धारण करने से बड़े से बड़ा अपराध का पाप नष्ट होता है।
- छःमुखी रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य की सोयी हुई शक्तियां जागृत होती हैं। स्मरण शक्ति प्रबल होती है और बुद्धि तीव्र होती है। यह रुद्राक्ष आत्मशक्ति, संकल्पशक्ति और ज्ञानशक्ति का दाता है।

उपयोग मंत्र– ॐ ह्रीं हूं नमः। ॐ षडाननाय नमः।

7. सातमुखी रुद्राक्ष

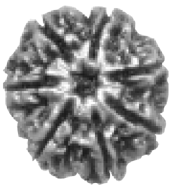

इसके देवता सप्तऋषि हैं इससे लक्ष्मी प्राप्ति होती है तथा धन–संपत्ति, कीर्ति प्राप्त होती है।

सप्तवक्त्रो महासेन अनंतो नाम नामतः।
स्वर्णस्तेयं गोवधंच कृत्वा पापशतानि च।।

सोने की चोरी की है, गोवध किए हैं अथवा अनेक प्रकार के सैकड़ों पाप किए हैं उनको यह पवित्र बना देता है। यह रुद्राक्ष पाप नाशक एवं भूमि प्रदाता है।

प्राचीन काल में ऋषियों को यह अत्यन्त प्रिय था और ऋषिगण प्रायः इसका उपयोग अत्यधिक किया करते थे। यह रुद्राक्ष वृष, कन्या, कुम्भ लग्न के जातक को अत्यन्त लाभ प्रदान करता है।

ज्योतिष के अनुसार सातमुखी रुद्राक्ष शनि द्वारा शासित है। इसे धारण करने से शनि ग्रह के दोषों का नाश होता है, जातक को आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति होती है। सातमुखी रुद्राक्ष वात रोगों एवं मृत्यु तुल्य कष्टों से छुटकारा दिलाता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

उपयोग से लाभ

- यह रुद्राक्ष धनागमन एवं व्यापार उन्नति में अत्यन्त सहायक माना गया है।
- सातमुखी रुद्राक्ष धारण करने से दाम्पत्य सुख की वृद्धि होती है तथा पौरुष को बढ़ाता है।
- सातमुखी रुद्राक्ष धारण करने से पति–पत्नी के मध्य परस्पर सहयोग एवं सम्मान तथा प्रेम की वृद्धि होती है।

उपयोग मंत्र– ॐ हूं नमः। ॐ अनन्ताय नमः।

8. आठमुखी रुद्राक्ष

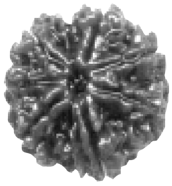

अष्टमुखी रुद्राक्ष को विनायक का रूप माना गया है इससे धारक की विघ्न बाधाएं दूर होती हैं। आठों दिशाओं में विजय प्राप्त होती है व कोर्ट कचहरी के मामलों में सफलता मिलती है।

अष्टवक्त्रो महासेन साक्षाद्देवो विनायकः।।

हे महासेन ! अष्टमुखी रुद्राक्ष साक्षात् गणेशजी का स्वरूप है तथा यह अष्टसिद्धि प्रदाता है। मानकूटादिक और परस्त्रीजन्य जो पाप हैं वे अष्टमुखी रुद्राक्ष धारण करने से नष्ट होते हैं। गणेश विषयक अनुष्ठानों में शीघ्र सफलता प्रदान करता है। यह रुद्राक्ष मीन लग्न के जातकों के लिए अत्यन्त लाभकारी माना गया है। भगवान गणेश की कृपा प्राप्ति हेतु, असाध्य रोगों के निवारण हेतु एवं राहु ग्रह के दोषों के शमन हेतु इसे धारण किया जाता है।

उपयोग से लाभ

- इस रुद्राक्ष की माला पर जप करने से गणेश की सिद्धि शीघ्र ही प्राप्त होती है तथा आठों दिशाओं में विजय पताका लहराता है।
- इस रुद्राक्ष के धारण करने से कोर्ट कचहरी के मामलों में सफलता मिलती है साथ ही दुर्घटनाओं एवं प्रबल शत्रुओं से रक्षा होती है तथा भूत, प्रेत, जिन्न, पिशाच आदि बाधाओं से रक्षा होती है
- यह रुद्राक्ष धारण करने से दुष्ट स्त्री से किये गये सहवास का पाप नष्ट होता है।

उपयोग मंत्र– ॐ हूं नमः। ॐ श्री महागणाधिपतये नमः।

9. नौमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष नवशक्ति से संपन्न है इसकी इष्ट देवी भगवती दुर्गा हैं इससे धारक को चारों धाम व समस्त तीर्थो का फल प्राप्त होता है इसे धर्मराज का स्वरूप माना गया है। इसेधारण करने से वीरता, साहस और कर्मठता में वृद्धि होती है। इसे आकस्मिक घटनाओं से बचाव तथा अशुभ केतु से संबंधित दोषों की शांति हेतु धारण किया जाता है।

नवमं भैरवंनाम कपिलवर्णं मुक्तिदं स्मृतम्।
धारणाद्वामहस्ते तु मम तुल्यो भवेन्नरः।।

नैामुखी रुद्राक्ष का भैरव नाम है, कपिलवर्ण है जो मनुष्य अपनी वाम भुजा में इसको धारण करते हैं वे भैरव तुल्य हो जाते हैं वस्तुतः 'भैरवनामक' नवमुखी रुद्राक्ष नव प्रकार की निधियों का प्रदाता है। यह सभी अभीष्ट वस्तुओं का प्रदाता है। नवदुर्गा, नवग्रह, नव–नाथों एवं नवधा भक्ति का प्रतीत है। यह सभी अभिलषित वस्तुओं का प्रदाता है। कन्या लग्न

Future Point

वाले के लिए श्रेयष्कर है।

उपयोग से लाभ

- नौमुखी रुद्राक्ष धारण करने से तांत्रिक सिद्धियां शीघ्र प्राप्त होती हैं तथा तंत्र क्षेत्र का ज्ञान बढ़ता है।
- नौमुखी रुद्राक्ष को बांयी भुजा पर धारण करने से व्यक्ति को भैरवसिद्धि प्राप्त होती है तथा वह व्यक्ति तन, मन से सदा पवित्र रहता है।
- नौमुखी रुद्राक्ष की माला पर नवरात्रि में नवार्णमंत्र का जप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है एवं मां भगवती की कृपा प्राप्त होती है।

उपयोग मंत्र– ॐ महाभैरवाय नमः। ॐ ह्रीं हूं नमः।

10. दशमुखी रुद्राक्ष

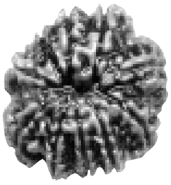

यह भगवान विष्णु का स्वरूप है इसके देवता भगवान विष्णु हैं इससे सर्व ग्रहशांत होते हैं ग्रह बाधा के कारण यदि भाग्य साथ न दे तो अवश्य धारण करें यह धारक को बेताल, पिशाच, ब्रह्म, राक्षस आदि के भय से निर्भयता प्रदान करता है।

दश वक्त्रो महासेन साक्षाद्देवो जनार्दनः।।

हे महासेन ! दशमुखी रुद्राक्ष साक्षात् जनार्दन अर्थात् विष्णु का स्वरूप है दशमुखी रुद्राक्ष के धारण करने से मनुष्य के सर्व ग्रह शांत रहते हैं और पिशाच, बेताल, ब्रह्म, राक्षस, सर्प इत्यादि का भय नहीं होता। यह रुद्राक्ष सभी प्रकार की बाधाओं का नाश कर, सुख, शांति व समृद्धि का प्रदाता है। यह रुद्राक्ष मिथुन एवं कन्या लग्न के जातकों के लिए अत्यधिक लाभकारी माना गया है।

उपयोग से लाभ

- दशमुखी रुद्राक्ष धारण करने से लौकिक एवं परलौकिक कामनायें पूर्ण होती हैं तथा सामाजिक कीर्ति एवं सम्मान प्राप्त होता है।
- दशमुखी रुद्राक्ष धारण करने से दशों इन्द्रियों से किया गया पाप नष्ट होता है तथा पुण्य का उदय होता है।
- दशमुखी रुद्राक्ष समाजसेवक, वकील, नेता, कलाकार, कवि, लेखक, कृषक आदि के लिए धारण करना लाभदायक माना गया है।

उपयोग मंत्र– ॐ नमो नारायणाय। ॐ ह्रीं हूं नमः।

11. एकादशमुखी रुद्राक्ष

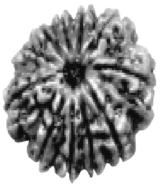

ग्यारहमुखी रुद्राक्ष साक्षात रुद्र है। यह 11 रुद्रों एवं भगवान शंकर के ग्यारहवें अवतार संकटमोचन महावीर बजरंगबली का प्रतीक है। इसे धारण करने वाले व्यक्ति को सांसारिक ऐश्वर्य और संतान सुख प्राप्त होता है और उसके सारे संकट दूर हो जाते हैं।

एकादशास्यो रुद्रा हि रुद्राश्चैकादश स्मृताः।
शिखायां धारयेन्नित्यं तस्य पुण्यफलं श्रृणु।।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

हे स्कंद ! एकादशमुखी रुद्राक्ष एकादश रुद्रों का ही स्वरूप है। इस रुद्राक्ष को साक्षात् शिव का प्रसाद समझकर जो व्यक्ति गले में धारण करके या शिखा स्थान में बांधकर रखते हैं उनको हजार अश्वमेध–यज्ञ करने का फल, सौ वाजपेय–यज्ञ करने का फल और ग्रहण में दान करने से जो फल प्राप्त होता है वह फल इस रुद्राक्ष को विधिवत पूजन कर धारण करने से होता है। यह रुद्राक्ष वृश्चिक लग्न वाले जातकों के लिए धारण करना शुभ फलकारक होता है।

उपयोग से लाभ

- ग्यारह मुखी रुद्राक्ष एकादशी में गले या सिर पर धारण करने से विष्णु भगवान प्रसन्न होते हैं और अश्वमेघ यज्ञ का फल प्रदान करते हैं।
- वन्ध्या स्त्री को विश्वास पूर्वक धारण करने पर सन्तानवती होने का सौभाग्य प्राप्त होता है।
- मस्तिष्क सम्बन्धी विकारों से पीड़ित व मस्तिष्कीय कार्य करने वाले लोगों को शक्ति प्राप्त होती है।

उपयोग मंत्र–ॐ ह्रीं ह्रूं नमः। ॐ सर्वेभ्यो रुद्रेभ्यो नमः।

12. बारहमुखी रुद्राक्ष

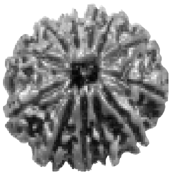

द्वादशमुखी रुद्राक्ष को कान में धारण करने से बारहों आदित्य देव प्रसन्न होते हैं। उसे शस्त्रधारी लोगों, सींग वाले जानवरों और बाघ आदि का भय नहीं होता, न ही आधि–व्याधि का भय होता है।

इसे आदित्य रुद्राक्ष के नाम से भी जाना जाता है। इसे धारण करने से बाधाओं और सूर्य के कारण उत्पन्न रोगों से बचाव होता है।

यह भगवान विष्णु का स्वरूप है इसके देवता बारह सूर्य हैं। इसके धारण करने से दोनों लोकों में सुख की प्राप्ति होकर सदा भरण पोषण होता है गो हत्या मनुष्य हत्या व रत्नों की चोरी जैसे पाप इसके उपयोग से नष्ट होते हैं।

नश्यन्ति तानि पापनि वक्त्रद्वादशधारणात्।
आदित्याश्चैव ते सर्वो द्वादशैव व्यवस्थिताः।।

द्वादशमुखी रुद्राक्ष धारण करने से सभी पाप नाश हो जाते हैं क्योंकि सूर्य आदि से लेकर संपूर्ण आदित्य द्वादशमुखी रुद्राक्ष में वास करते हैं। इस लिए उन मनुष्यों को चोर, अग्नि का भय तथा अनेक प्रकार की व्याधि नहीं होती और वे अर्थवान होते हैं यदि दरिद्र भी हों तब भी भाग्यवान हो जाते हैं इस रुद्राक्ष को दांतों की संख्या के बराबर अर्थात् (32) की माला कण्ठ में धारण करने पर गो–वध मनुष्य–हत्या एवं चोरी कार्य का पाप नष्ट हो जाता है। यह सब प्रकार की बाधाओं का कीलन करने वाला 'आदित्यरुद्राक्ष' नाम से जाना जाता है।

उपयोग से लाभ

- यह रुद्राक्ष दरिद्रता को नष्ट करता है सभी प्रकार के भयानक पशुओं से रक्षा करता है।
- इस रुद्राक्ष को दांतों की संख्या के बराबर की माला कंठ में धारण करने से गो–वध, मनुष्य एवं चोरी जैसे पाप को नष्ट करता है।
- द्वादशमुखी रुद्राक्ष धारण करने से सभी प्रकार की बाधायें नष्ट होती हैं मानसिक एवं शारीरिक पीड़ा से छुटकारा मिलता है।

उपयोग मंत्र– ॐ क्रौं क्षौं रें नमः। ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

13. तेरहमुखी रुद्राक्ष

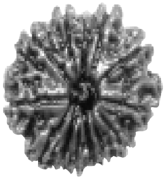

यह संपूर्ण कामनाओं एवं सिद्धियों को देने वाला है। निःसंतान वाले को संतान प्रदान करता है तथा सभी कार्यों में सफलता प्रदान करता है।

त्रयोदशास्यो रुद्राक्षो साक्षादेव पुरंदर।।

हे वत्स ! त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष साक्षात् इंद्र का स्वरूप है। जो मनुष्य त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष को धारण करते हैं उनकी संपूर्ण मनोकामना सिद्ध होती है तथा वे अतुल संपत्ति के मालिक होते हुए भाग्यवान होते हैं। इसको धारण करने वाला व्यक्ति संपूर्ण धातुओं की रसायनिक सिद्धि का ज्ञाता हो जाता है। यह रुद्राक्ष तुला लग्न वाले जातकों के लिए धारण करना शुभकारक होता है।

उपयोग से लाभ

- तेरह मुखी रुद्राक्ष धारण करने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की धातुओं एवं रसायन आदि की सिद्धि का ज्ञाता होता है।
- यह रुद्राक्ष धारण करने से विश्वदेव प्रसन्न होते हैं तथा करोड़ो महापातक नष्ट हो जाते हैं।
- तेरहमुखी रुद्राक्ष, औषधि–विज्ञान, रसायन क्षेत्र, धातु कार्य आदि से जुड़े हुये व्यापारियों को धन एवं वैभव प्रदान करता है।

उपयोग मंत्र– ॐ ह्रीं नमो नमः। ॐ इन्द्राय नमः।

14. चौदहमुखी रुद्राक्ष

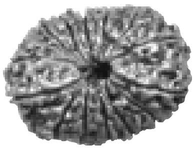

यह हनुमान जी का स्वरूप है। यह चौदह विद्या, चौदह लोक, चौदह मनु, का साक्षात् रूप है। इसे धारण करने से सभी पापों से छुटकारा मिलता है व समस्त व्याधियां शांत हो जाती है तथा आरोग्य की प्राप्ति होती है।

चतुर्दशास्यो रुद्राक्षो साक्षादेवो हनूमतः।
धारयेन्मूर्ध्नि यो नित्यं स याति परमं पदम्।।

चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष हनुमान का स्वरूप है। जो मनुष्य नित्य प्रति इसे धारण करते हैं वो परम पद को प्राप्त होते हैं। इस रुद्राक्ष के पहनने से शनि मंगल दोष की शांति होती है तथा दुष्टजनों का नाश होता है। यह 'हनुमान रुद्राक्ष' नाम से प्रसिद्ध है तथा सकल अभीष्ट सिद्धियों का दाता है। यह रुद्राक्ष मेष और मकर लग्न वाले जातकों के लिए लाभकारी होती है। जो मनुष्य पृथ्वी पर रुद्राक्ष को मंत्र सहित धारण करते हैं वे रुद्रलोक में जाकर वास करते हैं।

उपयोग से लाभ

- चौदहमुखी रुद्राक्ष धारण करके हनुमान जी की उपासना करने पर परमपद की प्राप्ति होती है व भक्ति प्राप्ति होती है।
- यह रुद्राक्ष धारण करने से शनि और मंगल की शान्ति होती है तथा दुष्ट शत्रुओं का नाश होता है।
- इस रुद्राक्ष की माला पर भगवान पुरुषोत्तम के मंत्रों का जप करने से वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है तथा सदाचार भावना उत्पन्न होती है।
- **उपयोग मंत्र– ॐ हनुमते नमः। ॐ नमः।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

15. पंद्रहमुखी रुद्राक्ष

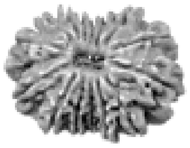

यह रुद्राक्ष भगवान पशुपतिनाथ का स्वरूप माना जाता है यह अल्प समय में ही शिव जी का सान्निध्य प्रदान करने वाला है। इसके प्रभाव से धारक सभी प्रकार के संकटों से मुक्त रहता है। हानि, दुर्घटना रोग व चिंता से मुक्त रखकर धारक की सुरक्षा, समृद्धि इसका विशेष गुण है। यह भूत–प्रेत, बुरी नजर, जादू–टोना, काला जादू इत्यादि से धारक की सदैव रक्षा करता है। यह धारक को सदैव सभी प्रकार की परिस्थितियों में सही निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है। इस रुद्राक्ष को धारण करने वाला अनंत जन्मों के पापों से मुक्त होकर अंत समय में मोक्ष को प्राप्त करता है।

यह धारक को आर्थिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर उठाकर उसे सुख, संपदा, मान–सम्मान–प्रतिष्ठा एवं शांति प्रदान करता है। यदि कोई गर्भवती स्त्री इसे धारण करे तो उसके गर्भपात का भय नहीं रहता और प्रसव–पीड़ा में कमी होती है।

16. सोलहमुखी रुद्राक्ष

सोलहमुखी रुद्राक्ष को हरि–शंकर अर्थात विष्णु और शिव का रूप माना गया है। पक्षाघात (लकवा), सूजन, कंठादि रोगों में इसे धारण करना लाभदायक होता है। इसके अतिरिक्त आग, चोरी, डकैती आदि का भय नहीं रहता है।

17. सत्रहमुखी रुद्राक्ष

सत्रहमुखी रुद्राक्ष को सीता–राम का स्वरूप कहा गया है। कई विद्वान विश्वकर्मा को इसका प्रधान देवता मानते हैं। इसे धारण करने से भूमि, मकान, वाहनादि का सुख और अनचाहे धन, समृद्धि और सफलता का लाभ प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त याददाश्त में वृद्धि होती है तथा, आलसीपन और कार्य करने के प्रति अनिच्छा दोनों दूर होते हैं।

18. अठारहमुखी रुद्राक्ष

अठारहमुखी रुद्राक्ष को भैरव का रूप माना गया है। इसे धारण करने से शरीर पर आने वाली विभिन्न विपदाओं (यथा आकस्मिक दुर्घटना आदि) का नाश होता है, व्यक्ति को अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता। यदि कोई गर्भवती स्त्री इसे धारण करे तो उसके गर्भ में पल रहे बच्चे की रक्षा होती है।

19. उन्नीसमुखी रुद्राक्ष

उन्नीसमुखी रुद्राक्ष को भगवान नारायण का स्वरूप कहा गया है। इसे धारण करने से मनुष्य सत्य एवं न्याय के पथ पर अग्रसर होता है। उसे आर्थिक सुख–संपदा का लाभ मिलता है, और रक्त व स्नायु तंत्र से संबंधित रोगों से उसकी रक्षा होती है।

20. बीसमुखी रुद्राक्ष

बीसमुखी रुद्राक्ष को जनार्दन स्वरूप कहा गया है। इसे धारण करने से भूत, पिशाच आदि का भय नहीं रहता साथ ही क्रूर ग्रहों का अशुभ प्रभाव भी नहीं पड़ता है। वह श्रद्धा एवं तंत्र विद्या के जरिए विशेष सफलता प्राप्त करता है। उसे सर्पादि विषधारी प्राणियों का भय नहीं होता है।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

21. इक्कीसमुखी रुद्राक्ष

इक्कीसमुखी रुद्राक्ष साक्षात शिव स्वरूप है। इसमें सभी देवताओं का वास माना गया है। इसे धारण करने से स्वास्थ्य आर्थिक दृष्टि से व्यक्ति सुखी रहता है। यह रुद्राक्ष व्यक्ति के भीतर आज्ञा चक्र कुंडलिनी को जाग्रत करता है।

22. गौरीशंकर रुद्राक्ष

प्राकृतिक रूप से आपस में जुड़े गौरी–शंकर रुद्राक्ष को शिव–पार्वती के समान अपार शक्ति वाला शिव–शक्ति का स्वरूप माना गया है। इसे धारण करने से शिव और शक्ति अर्थात माता पार्वती की कृपा समान रूप से प्राप्त होती है। इसे धारण करने से पति–पत्नी के आपसी प्रेम में वृद्धि होती है और उनका वैवाहिक जीवन सुखमय होता है। स्वास्थ्य अनुकूल रहता है, आयु में वृद्धि होती है तथा प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त होती है। साथ ही यह काम संबंधी समस्याओं को दूर करने में भी लाभदायक होता है।

घर, पूजा गृह अथवा तिजोरी में मंगल कामना सिद्धि के लिए रखना लाभदायक है। इसे उपयोग में लाने से परिवार में सुख–शांति की वृद्धि होती है वातावरण शुद्ध बना रहता है। गले में धारण करने से संतान सुख की प्राप्ति होती है।

गौरीशंकर रुद्राक्ष सर्वसिद्धि प्रदाता रुद्राक्ष कहा गया है। यह सात्त्विक शक्ति में वृद्धि करने वाला, मोक्ष प्रदाता रुद्राक्ष है। जिसके घर में यह रुद्राक्ष होता है वहां लक्ष्मी का स्थाई वास हो जाता है तथा उसका घर धन–धान्य, वैभव, प्रतिष्ठा और दैवीय कृपा से भर जाता है। संक्षेप में यह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को देने वाला चतुवर्ग प्रदाता रुद्राक्ष है। गौरीशंकर रुद्राक्ष सभी लग्न के जातकों के लिए शुभ माना गया है।

उपयोग से लाभ

- इसे धारण करने से गृहस्थ जीवन में पति–पत्नी के मध्य प्रेम तथा विशेष सुख शान्ति प्राप्त होती है।
- यह रुद्राक्ष धनागमन एवं व्यापार उन्नति में अत्यन्त सहायक माना गया है।
- गौरीशंकर रुद्राक्ष धारण करने से पुरुषों को स्त्री सुख प्राप्त होता है तथा परस्पर सहयोग एवं सम्मान तथा प्रेम में वृद्धि होती है।
- यह रुद्राक्ष शिवभक्ति के लिए अधिक उपयोगी माना गया है, भगवान शिव और मां शक्ति इस रुद्राक्ष में निवास करते हैं।

गौरीशंकर का मंत्र– ॐ गौरीशंकराभ्यां नमः।

23. गणेश रुद्राक्ष

जिस रुद्राक्ष पर गणेश जी की सूंड के समान अलग से एक धारी उठी हुई दिखाई दे, उसे गणेश रुद्राक्ष कहा जाता है। इसे धारण करने से व्यक्ति को ऋद्धि–सिद्धि, कार्यकुशलता, मान–प्रतिष्ठा, व्यापार में लाभ इत्यादि की प्राप्ति होती है। यह विद्यार्थी वर्ग के लिए विशेष लाभदायक है, जिसे धारण करने से विद्यार्थी की स्मरणशक्ति एवं ज्ञान में वृद्धि होती है, उसका बौद्धिक विकास होता है, और परीक्षा में अच्छे अंकों से सफलता प्राप्त होती है।

मंत्र– ॐ श्रीगणेशाय नमः।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

24. गौरी गणेश रुद्राक्ष

यह माता पार्वती और गणपति का प्रतीक है। इसे श्रेष्ठ संतान प्राप्ति की इच्छा से धारण किया जाता है। इसके धारण करने से संतान सुख की प्राप्ति होती है और संतान से प्रेम और सहानुभूति में वृद्धि होती है। इसके लिए निम्नांकित मंत्र का जप करें–

मंत्र– ॐ ह्रीं ग्रीं ह्रीं।

निर्देश

प्रत्येक रुद्राक्ष में अंतर्गर्भित विद्युत तरंगे होती हैं तथा इन अंतर्गर्भित विद्युत तरंगों शक्ति का पता उसकी धारियों की संख्या के अनुसार चलता है। अलग–अलग मुख अलग–अलग परिणाम को देने वाले होते हैं तथा उनको एक विशिष्ट नाम से भी संबोधित किया जाता है। रुद्राक्ष सामान्यतः इक्कीस मुख तक पाए जाते हैं परंतु पंद्रह से इक्कीस मुख के दाने प्रायः दुर्लभ होते हैं।

कुछ चालाक व्यक्ति दो रुद्राक्षों को काटकर सफाई से वापस जोड़कर उनके कई मुख बना देते हैं इसी प्रकार से कई लोग गौरीशंकर रुद्राक्ष भी बना डालते हैं। शास्त्रकारों ने चौदह मुख तक के रुद्राक्ष का ही वर्णन किया है। शिवपुराण एवं रुद्राक्षजाबालोपनिषद् रुद्राक्ष के फल महत्त्व एवं उपासना हेतु प्रामाणिक ग्रंथ माने जाते हैं।

सभी रुद्राक्षों की पूजन एवं धारण विधि :

यथाशक्ति अनुसार किसी की रुद्राक्ष को सोने में या चांदी में मड़वाकर या बिना मड़वाये, सोमवार अथवा बृहस्पतिवार एवं महाशिवरात्रि आदि पर्व दिनों में सोने की जंजीर (चेन) अथवा चांदी की जंजीर या केवल लाल या काले धागे में धारण कर सकते हैं।

प्रातः काल के समय रुद्राक्ष को पवित्र अवस्था में गंगाजल तथा कच्चे दूध से धोकर चंदन का लेप करके धूप एवं दीप से पूजन करके, पंचाक्षर मंत्र ॐ नमः शिवाय की एक माला जप करके पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके श्रद्धा–विश्वास पूर्वक धारण करें।

विशेष : यदि कोई साधक इन रुद्राक्षों के विशिष्ट मंत्रों का जप करना चाहे तो रुद्राक्ष धारण करने से पूर्व अपनी सुविधा अनुसार किसी भी मंत्र का जप कर सकते हैं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

25. रुद्राक्ष कवच

रुद्राक्ष की उत्पत्ति देवाधिदेव महादेव शिव के अश्रुकणों से हुई है। भगवान शंकर की अश्रु धारा का तात्पर्य संपूर्ण जीवों के प्रति उनकी विशेष करुणा से है। करुणा रूपी उन्हीं अश्रुओं से रुद्राक्ष की उत्पत्ति हुई है। श्रद्धा और विश्वासपूर्वक रुद्राक्ष धारण करने से व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। जीवन की विशिष्ट मूलभूत समस्याओं के समाधान के लिए निम्नलिखित रुद्राक्ष कवचों को बनाया गया है। व्यक्ति अपनी समस्या के अनुसार कवच को श्रद्धापूर्वक धारण करके मनोवांछित फल प्राप्त कर सकता है।

रुद्राक्ष कवच का प्रभाव

1.	ज्ञान वृद्धिकारक कवच	ज्ञान बुद्धि को देने वाला
2.	उन्नतिकारक व स्वास्थ्यदायक कवच	सुख समृद्धि कारक व उन्नतिकारक
3.	शनिशांति कारक कवच	शनि ग्रह के दुष्प्रभावों को समाप्त कर शुभ फल
4.	कालसर्प कवच	कालसर्प दोष की शांति
5.	आरोग्यदायक कवच	शारिरीक व मानसिक शांति
6.	प्रेम वृद्धि कवच	रिश्तों में सामंजस्यता, स्थिरता व एकरूपता
7.	सौभाग्य रुद्राक्ष कवच	सुख, सौभाग्य की वृद्धि
8.	विद्या प्रदायक रुद्राक्ष कवच	विद्या के क्षेत्र में विशेष उन्नति
9.	पारिवारिक सुख रुद्राक्ष कवच	पारिवारिक सुख–शांति
10	संपूर्ण वैभव कवच	वैभव और ऐश्वर्य की प्राप्ति
11.	संपूर्ण व्यापार वृद्धि कवच	व्यवसाय में विशेष लाभ
12.	बाधामुक्ति कवच	सभी बाधाओं का निराकरण
13.	संतान प्राप्ति कवच	शीघ्र ही संतान लाभ
14.	शनिदोष निवारण कवच	शनि ग्रह के अशुभ प्रभाव से मुक्ति
15.	स्वास्थ्य वर्द्धक कवच	उत्तम शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य
16.	काल सर्प दोष शांति कवच	कालसर्प दोष शांति
17.	काम शक्ति कवच	प्रेम वृद्धि व आकर्षण हेतु
18.	आत्म विश्वास में वृद्धि हेतु कवच	आत्म विश्वास में वृद्धि

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

1. ज्ञान वृद्धि कारक कवच (पन्ना रत्न + चार मुखी रुद्राक्ष)

यह कवच ज्ञान, बुद्धि को देने वाला है यह कवच बुध ग्रह के रत्न पन्ना और चार मुखी रुद्राक्ष से मिलकर बना है। पन्ना रत्न कुशाग्र बुद्धि, वाक पटुता व कार्य सिद्धि को देने वाला व चार मुखी रुद्राक्ष ब्रह्मा व सरस्वती का प्रतिनिधित्व करते हुए मानसिक शांति, ज्ञान वृद्धि, व स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। यह कवच विद्यार्थीगण के लिए अति उत्तम है इसे बुधवार के दिन धारण करें।

मंत्र : ॐ ऐं महासरस्वत्यै नमः।

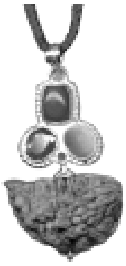

2. उन्नतिकारक व स्वास्थ्यदायक कवच (माणिक्य, मोती, मूंगा + एक मुखी रुद्राक्ष)

यह रुद्राक्ष कवच सुख समृद्धि कारक व उन्नतिकारक होता है। एकमुखी रुद्राक्ष माणिक्य रत्न के प्रभाव से व्यक्ति को यश, मान–किर्ती की प्राप्ति होती है, मोती–मूंगा के प्रभाव से स्वास्थ्य अनुकूल व जमीन, मकान, वाहन आदि भौतिक सुखों में वृद्धि होती है। इस कवच को सोमवार को उक्त मंत्र का जप कर धारण करें।

मंत्र : ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः।

3. शनि शांति कवच (नीली + सात मुखी रुद्राक्ष)

यह रुद्राक्ष कवच शनि ग्रह के दुष्प्रभावों को समाप्त कर शुभ फल प्रदान करता है। यह कवच शनि ग्रह के उपरत्न नीली व सात मुखी रुद्राख से मिल कर बना होता है, सात मुखी रुद्राक्ष सप्तऋषियों का प्रतीक माना जाता है। इस कवच के प्रभाव से शनि ग्रह की शांति होती है, व्यक्ति के भाग्य में वृद्धि होती है।

विशेषता : शनि की साढेसाती ढैय्या या शनि की दशा के कुप्रभाव को कम करने में अत्यंत लाभकारी है। इस कवच को शनिवार को धारण करें।

मंत्र : ॐ शं शनैश्चरायै नमः।

4. कालसर्प कवच (लहसुनिया + गोमेद + नीली + आठमुखी रुद्राक्ष)

यह रुद्राक्ष कवच जन्म लग्न में स्थित कालसर्प दोष की शांति हेतु उत्तम है, इसके प्रभाव से व्यक्ति को अपने संघर्ष व मेहनत के अनुकूल पूर्ण फल प्राप्त होता है। इस कवच के प्रभाव से कार्य बाधा भी समाप्त हो जाती है इस कवच को बुधवार या शनिवार को शुद्ध कर निम्न मंत्र का जप कर धारण करें।

मंत्र : ॐ नमः शिवाय।

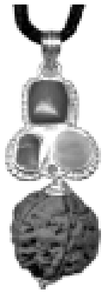

5. आरोग्यदायक कवच (मोती + सुनैला + मूंगा + 5 मुखी रुद्राक्ष)

यह कवच पांचमुखी रुद्राक्ष, मोती, मूंगा व गुरु ग्रह के उपरत्न सुनैला के संयोग से बनता है। यह कवच अनुकूल स्वास्थ्य, शारीरिक व मानसिक शांति प्रदान करता है। जिन व्यक्तियों पर मौसम परिवर्तन का प्रभाव पड़ता है। उनके लिए यह कवच अत्यधिक लाभकारी होता है। इस कवच को किसी भी सोमवार के दिन शुद्ध कर निम्न मंत्र का जप कर धारण करें।

मंत्र : ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

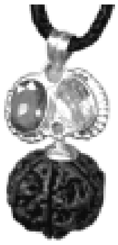

6. प्रेम वृद्धि कवच (नीली, जरकन + छः मुखी रुद्राक्ष)

इस कवच के प्रभाव से आपसी रिश्तों में सामंजस्य, स्थिरता व एकरूपता प्राप्त होती है। शुक्र ग्रह के रत्न जरकन से प्रेम वृद्धि, शनि ग्रह के रत्न नीली से स्थिरता व छः मुखी रुद्राक्ष से आपसी विचारों में समानता आती है। यह कवच पति–पत्नी के बीच आकर्षण व प्रेम उत्पन्न करता है व युवा पीढी के प्रेम संबंधों में आने वाली कठिनाईयों को दूर करता है। इस कवच को शुक्रवार के दिन धारण करें।

मंत्र : ॐ क्ली कामदेवाय नमः।

7. सौभाग्यदायक रुद्राक्ष कवच

यह सौभाग्य कवच एकमुखी (गोलदाना), दोमुखी तथा पांचमुखी रुद्राक्षों से बनाया गया है। एकमुखी रुद्राक्ष साक्षात् शिव का प्रतीक और सभी अरिष्टों का नाशक है। दोमुखी रुद्राक्ष शिव तथा शक्ति का प्रतीक है। पांचमुखी रुद्राक्ष पंचमहाभूतों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश का प्रतीक है और विशेष शांति प्रदान करता है। इन तीनों रुद्राक्षों को संयुक्त रूप से धारण करने से धारणकर्ता के जीवन में विशेष सुख, सौभाग्य की वृद्धि होती है।

धारण विधि : सोमवार प्रातः काल स्नान के बाद गंगाजल से धोकर, चंदन लगाकर और धूप–दीप से पूजन करके सोने अथवा चांदी की चेन में या लाल धागे में माला बनाएं और निम्न मंत्र का एक माला जप करके धारण करें।

मंत्र : ॐ ह्रीं नमः शिवाय।

8. विद्या प्रदायक रुद्राक्ष कवच

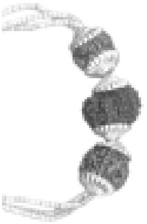

यह विद्या प्रदायक कवच चारमुखी, छःमुखी, एवं दसमुखी रुद्राक्षों से निर्मित किया गया है। चार मुखी रुद्राक्ष सृष्टिकर्ता ब्रह्मा के मुख से निकले चार वेदों का प्रतीक होने के कारण ज्ञान का प्रतीक है। छःमुखी रुद्राक्ष षडानन का प्रतीक होने के कारण विद्या प्राप्ति में आने वाली सभी बाधाओं को दूर करता है। दसमुखी रुद्राक्ष भगवान विष्णु का प्रतीक है और संसार के संपूर्ण ज्ञान–विज्ञान का कारक है। इस कवच को धारण करने से व्यक्ति विद्या के क्षेत्र में विशेष उन्नति प्राप्त करता है।

धारण विधि : बृहस्पतिवार को प्रातः काल स्नानादि के बाद कच्चे दूध तथा गंगाजल से धोकर, चंदन लगाकर और धूप, दीप से पूजन करके सोने या चांदी की चेन अथवा पीले धागे में निम्न मंत्र का एक माला जप करके धारण करें।

मंत्र : ॐ ऐं नमः शिवाय

9. पारिवारिक सुख दायक रुद्राक्ष कवच

यह पारिवारिक सुख दायक रुद्राक्ष कवच गौरी शंकर रुद्राक्ष, एक मुखी (काजूदाना) रुद्राक्ष तथा गणेश रुद्राक्ष से बनाया गया है। गौरी शंकर रुद्राक्ष अर्द्धनारीश्वर का प्रतीक है और पारिवारिक जीवन में विशेष सुख–शांति प्रदान करता है। एकमुखी रुद्राक्ष जीवन में आर्थिक संकट से मुक्ति दिलाता है जिससे पारिवारिक सुख शांति में वृद्धि होती है। गणेश रुद्राक्ष विघ्नेश्वर गणपति का प्रतीक होने के कारण पारिवारिक सुख, शांति में आने वाली सभी बाधाओं को दूर करता है। इस कवच को धारण करने से धारण कर्ता के जीवन में पारिवारिक सुख–शांति सदा बनी रहती है।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

धारण विधि : शुक्रवार को प्रातः काल स्नानादि के बाद गंगाजल तथा दही से स्नान कराकर, रोली लगाकर और धूप–दीप से पूजन करके सोने या चांदी की चेन में अथवा श्वेत या पीले धागे में निम्न मंत्र का एक माला जप करके धारण करें।

मंत्र : ॐ शिवशक्तिभ्यां नमः

10 संपूर्ण वैभव प्रदायक कवच

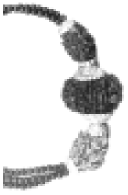

यह कवच दोमुखी, तीनमुखी और ग्यारहमुखी रुद्राक्षों से निर्मित किया गया है। दोमुखी रुद्राक्ष शिव और शक्ति का सामूहिक प्रतीक होने के कारण संपूर्ण वैभव और ऐश्वर्य का प्रदायक है। तीन मुखी रुद्राक्ष त्रिदेवों का प्रतीक है और जीवन की सभी अशुभताओं को वैभव में बदलकर ऐश्वर्यमय जीवन प्रदान करता है। ग्यारहमुखी रुद्राक्ष एकादश रुद्रों का प्रतीक होने के कारण वैभवशाली जीवन प्रदान करता है। इस कवच को धारण करने से धारणकर्ता को वैभव और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

धारण विधि : सोमवार को प्रातः काल स्नानादि क्रिया के बाद गंगाजल तथा शहद से स्नान कराकर चंदन लगाएं, धूप और दीप से पूजन करें और सोने या चांदी की चेन अथवा लाल धागे में पिरोकर निम्न मंत्र का एक माला जप करके धारण करें।

मंत्र : ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

11. संपूर्ण व्यापार वृद्धि कवच

यह व्यापार वृद्धि कवच एकमुखी रुद्राक्ष (काजूदाना) चौदह मुखी रुद्राक्ष तथा गणेश रुद्राक्ष से बनाया गया है। एकमुखी रुद्राक्ष साक्षात् परमेश्वर शिव का स्वरूप है और धारण करने वाले के लिए लाभ के द्वार खोल देता है। चौदहमुखी रुद्राक्ष पूर्णता का प्रतीक है जिससे सभी कार्य शीघ्र पूर्ण होते हैं। गणेश रुद्राक्ष शुभ और लाभ का प्रतीक है जिससे व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होता है। इस कवच को धारण करने से धारणकर्ता को व्यवसाय में विशेष लाभ मिलता है।

धारण विधि : बुधवार को प्रातः काल स्नान करके कवच को गंगा जल तथा घी से स्नान कराकर, चंदन अथवा रोली लगाकर और धूप–दीप से पूजन करके सोने या चांदी की चेन या पीले धागे में माला बनाएं और निम्न मंत्र का एक माला जप करके धारण करें।

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं ऐश्वर्य लक्ष्म्यै नमः

12. बाधामुक्ति कवच

यह बाधा मुक्ति कवच तेरहमुखी रुद्राक्ष, पांचमुखी रुद्राक्ष तथा गणेश रुद्राक्ष के संयुक्त मेल से बनाया गया है। तेरहमुखी रुद्राक्ष विश्वेश्वर का प्रतीक होने के कारण सभी बाधाओं को नष्ट करता है। पांचमुखी रुद्राक्ष महारुद्र स्वरूप है और पाप, शाप, ताप आदि अशुभ बाधाओं से रक्षा करता है। गणेश रुद्राक्ष विघ्नेश्वर का स्वरूप होने के कारण जीवन में आने वाली विघ्न–बाधाओं को दूर करता है। इस बाधामुक्ति कवच को धारण करने से धारण कर्ता के जीवन में आने वाली सभी बाधाओं का निराकरण हो जाता है।

धारण विधि : मंगलवार को प्रातः काल के समय स्नानादि के बाद गंगाजल तथा शहद से स्नान कराकर, चन्दन अथवा रोली लगाकर और धूप, दीप से पूजन करके सोने या चांदी की चेन या लाल धागे में माला बनाएं और निम्न मंत्र का एक माला जप करके धारण करें।

मंत्र : ॐ नमः शिवाय

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

13. संतान प्राप्ति कवच

यह संतान प्राप्ति कवच बारहमुखी, एकमुखी (काजूदाना), तथा गणेश रुद्राक्ष के संयुक्त मेल से बनाया गया है। बारहमुखी रुद्राक्ष द्वादश आदित्यों का प्रतीक है। सूर्य जगत की सभी आत्माओं का कारक होने के कारण संतान प्राप्ति में विशेष सहायक होता है। एकमुखी रुद्राक्ष इच्छा शक्ति का प्रतीक है। इसे धारण करने से योग्य संतान की प्राप्ति होती है। गणेश रुद्राक्ष सभी विघ्नों का निवारक है। इसे धारण करने से संतान प्राप्ति में होने वाली अनावश्यक बाधाओं का त्वरित निवारण हो जाता है। इस संतान प्राप्ति कवच को धारण करने से धारणकर्ता को शीघ्र ही संतान लाभ होता है।

धारण विधि : बृहस्पतिवार को सुबह स्नान करके गंगाजल, कच्चे दूध, दही तथा हल्दी से स्नान कराकर, चंदन लगाकर और धूप–दीप से पूजन करके सोने या चांदी की चेन अथवा पीले धागे में माला बनाएं और निम्न मंत्र का एक माला जप करके धारण करें।

मंत्र : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

14. शनिदोष निवारण कवच

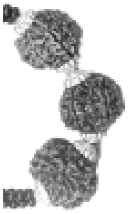

यह शनिदोष निवारण कवच सातमुखी, नौमुखी, एवं ग्यारहमुखी रुद्राक्षों के संयुक्त मेल से बनाया गया है। सातमुखी रुद्राक्ष भगवान अनंत का प्रतीक होने के कारण शनि के अशुभ प्रभाव को दूर करने में विशेष शक्तिशाली माना जाता है। नौमुखी रुद्राक्ष महा भैरव का प्रतीक है और शनि ग्रह के दोष निवारण में विशेष लाभप्रद होता है। ग्यारहमुखी रुद्राक्ष एकादश रुद्रों का प्रतीक होने के कारण शनि के अशुभ दोषों का शीघ्र निवारण करता है। इस शनि दोष निवारण कवच को धारण करने से व्यक्ति शनि ग्रह के अशुभ प्रभाव से सुरक्षित रहता है।

धारण विधि : शनिवार को सांयकाल गंगाजल से धोकर, चन्दन लगाकर और धूप – दीप से पूजन करके सोने या चांदी की चेन अथवा काले धागे में माला बनाएं तथा निम्न मंत्र का एक माला जप करके धारण करें।

मंत्र : ॐ हनुमते नमः।

15. स्वास्थ्य वर्द्धक कवच

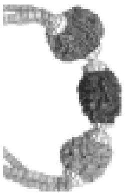

यह स्वास्थ्य वर्द्धक कवच एकमुखी रुद्राक्ष (गोलदाना) दोमुखी रुद्राक्ष तथा आठमुखी रुद्राक्ष के संयुक्त मेल से बनाया गया है। एकमुखी रुद्राक्ष महामृत्युंजय का प्रतीक होने के कारण विशेष स्वास्थ्य प्रदायक है। दोमुखी रुद्राक्ष प्रकृति एवं पुरुष का प्रतीक है जिसे धारण करने से व्यक्ति को उत्तम स्वास्थ्य और विशेष ऊर्जा की प्राप्ति होती है। आठमुखी रुद्राक्ष अष्ट सिद्धियों का प्रतीक है और शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। इस स्वास्थ्य वर्द्धक कवच को धारण करने से धारण कर्ता को उत्तम शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

धारण विधि : सोमवार को प्रातः काल स्नानादि के बाद गंगाजल तथा कच्चे दूध से स्नान कराकर, चन्दन और धूप–दीप से पूजन करके सोने या चांदी की चेन में अथवा बादामी धागे में निम्न मंत्र का एक माला जप करके धारण करें।

मंत्र : ॐ नमः शिवाय

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

16. काल सर्प दोष शांति कवच

यह काल सर्प दोष शांतिकवच आठमुखी, एकमुखी (काजूदाना) एवं पांचमुखी रुद्राक्षों के संयुक्त मेल से बनाया गया है। आठमुखी रुद्राक्ष सभी सिद्धियों का प्रतीक होने के कारण राहु–केतु के अशुभ प्रभाव को दूर करने में विशेष शक्तिशाली माना गया है। एकमुखी रुद्राक्ष विषहर भगवान शंकर का प्रतीक है और कालसर्प दोष की शांति में विशेष प्रभावी होता है। पांच मुखी रुद्राक्ष पंचमुखी हनुमान जी का प्रतीक होने के कारण कालसर्प दोष के अशुभ प्रभाव से कवच की भांति रक्षा करता है। यह कालसर्प दोष शांति कवच काल सर्प दोष से पीड़ित व्यक्तियों के लिए विशेष सुख शांति कारक है।

धारण विधि : शनिवार सायंकाल दूध, दही और गंगाजल से स्नान कराकर, चन्दन लगाकर तथा धूप–दीप से पूजन करके सोने या चांदी की चेन में या काले धागे में माला बनाएं और निम्न मंत्र की एक माला जप करके धारण करें।

मंत्र : ॐ नमः शिवाय।

17. काम शक्ति कवच

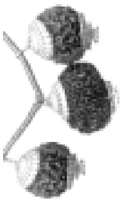

प्रेम वृद्धि व आकर्षण हेतु यह कवच 13 मुखी रुद्राक्ष और दो 6 मुखी रुद्राक्षों से मिलकर बनता है। 13 मुखी रुद्राक्ष को इन्द्र का प्रतीक माना जाता है। 13 मुखी रुद्राक्ष व 6 मुखी रुद्राक्ष पति–पत्नी के बीच आकर्षण व प्रेम वृद्धि हेतु पहना जाता है। इसके प्रभाव से यौन शक्ति प्रबल होती है व संतानोत्पत्ति में सहायक होता है। इस कवच को कोई भी धारण कर सकता है।

धारण विधि : किसी भी शुक्रवार **को इसे शुद्ध कर मंत्र जप कर धारण करें।**

मंत्र : ॐ क्ली कामदेवाय नमः।

18. आत्म विश्वास में वृद्धि हेतु कवच

यह 3 मुखी, 4 मुखी, 9 मुखी रुद्राक्षों के संयुक्त मेल से बनाया जाता है इस कवच को धारण करने से सहनशीलता, वीरता, साहस, कर्मठता में वृद्धि होती है। इस कवच को धारण करने से व्यक्ति को नौकरी/व्यवसाय में उन्नति प्राप्ति में सहायता मिलती है तथा यह मनुष्य को उन्नति पथ पर चलने की ताकत प्रदान करता है।

धारण विधि : शुक्रवार को स्नानादि के पश्चात् इसे कच्चे दूध गंगा जल से स्नान करा कर चंदन लगाकर धूप दीप से पूजन करके सोने या चांदी की चेन में अथवा लाल धागे में निम्न मंत्र का जप कर धारण करें।

मंत्र : ॐ हों जुं सः ॐ

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

अध्याय–4

यंत्र पूजा

प्रस्तुत खण्ड में यंत्रों के बारे में विस्तृत व्याख्या, यंत्रों की उत्पत्ति, उपादेयता, धारण विधि, मंत्र, मुहूर्त व लाभ आदि के बारे में जानकारी दी गयी है। इस खण्ड के अध्ययन से पाठक अनेक रहस्यों से परिचित होंगे तथा इनकी उपयोगिता को समझने में उन्हें सरलता होगी।

यंत्र की उत्पत्ति

महर्षि दत्तात्रेय को यंत्र का जनक माना जाता है, महर्षि दत्तात्रेय ने शिल्प कला और ज्यामितीय रेखांकन के द्वारा वृत्त, त्रिकोण, चाप, अर्द्धवृत्त, चतुष्कोण तथा षटकोण को आधार मानकर बीज मंत्रों द्वारा इष्ट शक्ति को रेखांकित करके अति विशिष्ट दैवीय यंत्रों का आविष्कार किया, यंत्र इष्ट शक्ति को आबद्ध करने की सर्वोच्च विधि है।

अनेक मनीषियों का योगदान

महर्षि दत्तात्रेय के बाद अन्य मनीषियों ने भी यंत्र विद्या को बढ़ावा दिया परन्तु गुरु गोरखनाथ और भगवत्पाद शंकराचार्य का समय यंत्र विद्या का स्वर्णिम काल था, जिसका वर्णन आज भी अति प्राचीन गंथों में देखा जा सकता है। जहाँ महर्षि दत्तात्रेय यंत्र विद्या के जनक थे वहीं गुरू गोरखनाथ एवं भगवद्पाद शंकराचार्य ने यंत्र विद्या की कीर्ति पताका को भारत में ही नहीं अपितु विश्व के कोने–कोने तक फहराया और यंत्र विद्या को देश विदेश में स्थापित किया।

गुरू गोरखनाथ रचित ''बीसायंत्र'' तो आज भी इतना तेजस्वी और प्रचलित है कि इसके स्थापन मात्र से ही दरिद्रता, रोग, शोक और बाधाएं चमत्कारिक ढंग से स्वयं दूर हो जाती हैं। अगर साधारण व्यक्ति भी यंत्रों का प्रतिदिन दर्शन करे तो उसकी कामनायें सिद्ध होती हैं। दैवीय यंत्रों के प्रमुख पांच अंग माने जाते हैं। 1. बिन्दु 2. त्रिकोण 3. वृत्त 4. पद्मदल व 5. चतुष्कोण। पराशक्ति के प्रथम विकास का सूचक ''त्रिकोण'' है क्योंकि आकाश (शून्य) को तीन से कम रेखाओं द्वारा घेरा ही नहीं जा सकता। इसी से इसे प्रकृति का मूल माना गया है, यंत्र में जिस त्रिकोण का शीर्ष नीचे की ओर होता है उसे ''शक्ति त्रिकोण'' कहते हैं, और जिसका शीर्ष ऊपर की ओर होता है वह ''शिव त्रिकोण'' कहलाता है।

यंत्र की महिमा

भौतिक जीवन में आनन्द, उमंग और उत्साह होना अत्यन्त आवश्यक है परन्तु चिन्ताओं से ग्रसित लोगों को हमेशा खुशियों से वंचित पाया गया है और अनेक चिन्तायें मनुष्यों को घेरती जा रही हैं। कभी स्वास्थ्य, कभी व्यापार, कभी कर्ज की चिन्ता, बिमारी की चिन्ता, संन्तान एवं विवाह की चिंता आदि ऐसी हजारों चिन्तायें हैं जिनसे छुटकारा पाने के लिए यंत्र एक सरल एवं चमत्कारिक विधि है तथा मनीषियों ने यही सरल उपाय बताया है। अगर यंत्रों को मानव जीवन के लिए उपयोग में लाया जाए तो उन्हें अवश्य ही सफलता मिलती है।

यंत्र के सहारे अनेक लोगों ने दुर्लभ कार्य को सम्पन्न किया है व ऐश्वर्य पाया है। साधारण सा दिखने वाली वस्तु अपने आप में एक असीमित शक्ति को समाहित किए रहती है जिसे साधारण व्यक्ति समझने में आज असफल है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

उठो, जागो और इसी क्षण अपने श्रेष्ठ जीवन निर्माण का संकल्प करो, यंत्रों को उपयोग में लाओ अन्यथा बाकी का जीवन भी बीते हुये जीवन की तरह चला जायेगा।

यंत्र का उपयोग

यंत्र का उपयोग जन्म से मरण तक प्रत्येक क्षण आवश्यक है, गर्भवती महिला के लिए प्रसव से सम्बन्धित परेशानियों से बचने के लिए। नवजात शिशु के लिए ऊपरी बाधाओं से बचना। बालकों के लिए प्रखर बुद्धि एवं विद्या पाने के लिए तथा शारीरिक स्वास्थ्य के लिए। युवा पीढ़ियों के लिए कार्यालय, व्यापार, समाज आदि में उन्नति हेतु तथा धन ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए, बड़े व्यापारियों के लिए व्यापार वृद्धि एवं लक्ष्मी प्राप्ति के लिए। अज्ञात् शत्रुओं से बचने के लिए, भयंकर बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए, मस्तिष्क को शान्ति पाने के लिए। महिलाओं के लिए स्वरूप एवं शारीरिक रक्षा हेतु यंत्र ही एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा किसी भी धर्म सम्प्रदाय एवं अवस्था के व्यक्ति अपने–अपने क्षेत्रों में सफलता पाने के लिए उससे सम्बन्धित यंत्रों को उपयोग करके सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

साधना के मार्ग में सर्वप्रथम यंत्रों की ही उपासना होती है। कुछ लोगों के मन में संशय भी है कि इस मार्ग में सफलतायें कम प्राप्त होती हैं। आज का मनुष्य यह चाहता है कि जैसे बिजली का बटन दबाते ही प्रकाश मिल जाता है पंखे चालू होकर तुरन्त शीतल हवा प्रदान करने लगते हैं ऐसा ही कोई आध्यात्मिक उपकरण होना चाहिये जो ज्यादा नियम, संयम और परिश्रम साध्य न हो, परन्तु–तुरन्त लाभदयी हो अतः दैवीय यंत्र साधना निश्चय ही अद्वितीय प्राचीनतम खोज है, श्रेष्ठ जीवन–यापन की कामना रखने वालों के लिये कल्प वृक्ष के समान है।

गुणवत्ता एवं परख

यंत्र विषय से सम्बन्धित आज अनेक प्रश्न चिन्ह सामने आ रहे हैं। लोगों के मन में इस विषय को लेकर अनेक प्रकार की भ्रांतियां उत्पन्न हो रही हैं बाजार में छोटी –मोटी दुकानों पर भी आज अनेक प्रकार के यंत्र बेचे जा रहे हैं जिसका निर्माण न तो अच्छी धातु में हुआ है और न ही उनपर रेखांकित यंत्र विद्या से सम्बन्धित त्रिभुज, अष्टदल, भूपुर, बीजमंत्र, बिन्दु, वृत्त आदि में शुद्धता है। एक साधारण व्यक्ति इसकी परख करने में असफल होता है और बिना सोचे समझे वह यंत्र को क्रय करता है और उपयोग में लाता है, परन्तु उसे इससे कोई लाभ नहीं प्राप्त होता। कभी–कभी तो ऐसी स्थिति में उल्टा फल प्राप्त हुआ है, और अनेक लोगों के जीवन में तरह–तरह की घटनायें भी घटित हुई हैं।

अगर यंत्र को किसी विशेष संस्था से प्राप्त किया जाये जिस संस्था ने आध्यात्मिक क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया हो और विशेष व्यक्तियों द्वारा यंत्र निर्मित किया हो तथा उसकी गुणवत्ता एवं निर्माण पर अनेक विद्वानों से सहयोग लिया हो। ऐसी ही संस्थाओं से यंत्र को प्राप्त करके उसकी उपासना की जाये तो अवश्य ही सफलता मिलती है। यंत्र की मुख्य परख उसके आकार पर निर्भर करती है आकार में शुद्धता होनी चाहिए। यंत्र खुरदरा न हो तथा धातु पर बना हुआ यंत्र का त्रिभुज एवं बीज मंत्र अन्दर की ओर खोद कर न बनाये गये हों बल्कि ऊपर की ओर उभरे हुये बीज मंत्रों के अक्षर होने चाहिए तथा प्रत्येक अक्षर स्पष्ट एवं अपने निश्चित स्थान पर होने चाहिए।

धारण तथा मंत्र

सोऽहं यंत्र का प्राण माना जाता है किसी भी यंत्र को प्रतिष्ठित एवं जागृत करने के लिए ईषान आदि चारों कोणों में इसी बीज मंत्र के द्वारा पूजा की जाती है उस यंत्र से सम्बन्धित देवता की षोडषोपचार विधि से पूजा अर्चना की जाती है दशों दिशाओं में दशदिक्पालों की पूजा होती है यंत्र साधक अपने इष्ट देव का स्मरण करके यंत्र को

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

पंचामृत एवं गंगा जल से अभिसिंचन करके धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजा करता है। उसके बाद पराभूतलिपि उपासना की जाती है।

भूतलिपि प्रयोग– विनियोग– अस्या भूतलिपेर्दक्षिणामूर्तिऋषिः गायत्रीच्छन्दः वर्णेश्वरीदेवता आत्मनोभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

भूतलिपि मंत्र– अं इं उं ऋं लुं एं ऐं ओं औं हं यं रं वं लं डं कं खं घं गं ञं चं छं झं जं णं टं ठं ढं डं नं तं थं धं दं मं पं फं भं वं शं षं सं।

इसी मंत्र को विच्छेद करके क्रमशः षडंगन्यास– वर्णन्यास आदि किया जाता है। तत्पश्चात् यह ध्यान करने का विधान है।

अक्षरस्रजं हरिणपोतमुदग्रटंकं, विद्यां करैरविरतं दधतीं त्रिनेत्राम्।
अर्धेन्दुमौलिमरुणामरविन्दरामां वर्णेश्वरीं प्रणमतस्तनभारनम्राम्।।

प्रतिष्ठा विनियोग– अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य अजेशपद्मजाऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं प्राणस्थापने विनियोगः।

प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र – आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हों ऊँ क्षं सं हं सः ह्रीं ऊँ हंसः महाप्राणा इहप्राणाः मम जीव इह स्थितः इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ऊँ क्षं सं हंसः हीं ऊँ।

आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हों ऊँ क्षं सं हं सः ह्रीं ऊँ हंसः महाप्राणा इहप्राणाः मम सर्वोन्द्रियाणीह स्थितानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ऊँ क्षं सं हंसः हीं ऊँ।

आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हों ऊँ क्षं सं हं सः ह्रीं ऊँ हंसः महाप्राणा इहप्राणाः मम वाड्मनश्चक्षुः श्रेत्रघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ऊँ क्षं सं हंसः हीं ऊँ।

इस वैदिक विधि से यंत्र की प्रतिष्ठा एवं पूजा करने के पश्चात् यंत्रों को उपयोग में लाया जाता है यंत्रों की प्रतिष्ठा दो प्रकार से होती है। 1. चलप्रतिष्ठा 2. अचल प्रतिष्ठा।– चलप्रतिष्ठा वाले यंत्रों को प्रतिष्ठित करने के बाद कहीं भी ले जाया जा सकता है। अचल प्रतिष्ठा वाले यंत्रों को प्रतिष्ठित करने के बाद एक निश्चित स्थान पर रखना होता है, इस यंत्र को अन्यत्र ले जाने के लिये शास्त्र अनुमति नहीं है।

प्राणप्रतिष्ठा करने के उपरांत यंत्र को जाग्रत रखने के लिए यंत्र के लिए निर्दिष्ट मंत्र का 108 बार या इससे अधिक यथाशक्ति नियमित रूप से प्रतिदिन संध्या वंदन, प्राणायाम व गुरु पूजा के पश्चात धूप दीप नैवेद्य, पुष्प, फल आदि समर्पित करते हुए जप करें।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

यंत्र एक नजर में

1	श्री यंत्र • संपूर्ण श्रीयंत्र • स्फटिक श्रीयंत्र • पारद श्रीयंत्र • संगसितारा श्रीयंत्र • अष्टधातु में श्रीयंत्र • सुमेरू पिरामिड श्रीयंत्र • कच्छप श्रीयंत्र • पिरामिड श्रीयंत्र • श्रीयंत्र लॉकेट • श्रीयंत्र सिक्का • श्रीयंत्र की अंगूठी	यंत्रों कां राजा। धन, यश की स्थायी प्राप्ति व सर्व मंगल हेतु।
2.	महालक्ष्मी	धन वृद्धि, सिद्धि प्राप्ति व वैभव लक्ष्मी के पूजन हेतु
3.	कमला यंत्र	संपत्ति प्राप्ति
4.	कनकधारा	स्वर्ण व संप़त्ति प्राप्ति के लिए
5.	गायत्री	ऊर्जा प्राप्ति
6.	दुर्गा बीसा	दुर्गति नाश के लिए
7.	नव दुर्गा यंत्र	शक्ति, विजय व सफलता प्राप्ति के लिए
8.	सरस्वती	विद्या, बुद्धि व सृजनात्मक शक्ति के लिए
9.	काली	विजय प्राप्ति
10.	तारा	वाकपटुता, संपत्ति के लिए
11.	भुवनेश्वरी	शक्ति प्राप्ति
12.	छिन्नमस्ता	शत्रु नाश, दुर्गति नाश व विद्या के लिए
13.	बगलामुखी	शत्रु नाश व मुकदमे में विजय के लिए
14.	त्रिपुर भैरवी	आत्म संयम व विजय के लिए
15.	धूमावती	निराशा, दुःख, दुर्घटना, रोग नाश के लिए
16.	मातंगी	वैवाहिक जीवन व संगीत के क्षेत्र में सफलता के लिए
17.	गीता यंत्र	यश प्राप्ति के लिए
18.	पंचांगुली यंत्र	भविष्य कथन की योग्यता के लिए
19.	गणेश यंत्र	सुख–समृद्धि के लिए
20.	स्वस्तिक गणेश यंत्र	भाग्योन्नति के लिए
21.	हनुमान यंत्र	शक्ति प्राप्ति के लिए
22.	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र	वाहन दुर्घटना से सुरक्षा प्राप्ति के लिए
23.	आकर्षण यंत्र	वशीकरण के लिए
24.	वशीकरण यंत्र	व्यक्ति विशेष के आकर्षण के लिए
25.	प्रेम वृद्धि यंत्र	पति पत्नी के बीच प्रेम वृद्धि के लिए
26.	सुख समृद्धि यंत्र	पारिवारिक सुख शांति के लिए
27.	संतान गोपाल यंत्र	संतान प्राप्ति के लिए

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

28.	व्यापार वृद्धि यंत्र	व्यापार की सफलता के लिए
29.	कुबेर यंत्र	धन प्राप्ति के लिए
30.	महामृत्युंजय यंत्र	रोग नाश व प्राणघातक समय की निष्क्रियता के लिए
31	महासुदर्शन	शत्रु से सुरक्षा के लिए
32	राम रक्षा	शत्रु शमन के लिए
33	कालसर्प	कालसर्प योग की शांति हेतु
34	मत्स्य	वास्तु व समस्या निवारण के लिए
35	वास्तु दोष निवारण	वास्तु दोष के निराकरण के लिए
36	दशमहाविद्या यंत्र	आध्यात्मिक ज्ञान, सुख संपत्ति व संपूर्ण आनंद के लिए
37	सूर्य	उत्तम स्वास्थ्य हेतु
38	चंद्र	ज्ञान वृद्धि हेतु
39	मंगल	शीघ्र सफलता हेतु
40	बुध	वाकपटुता, ज्ञान वृद्धि हेतु
41	गुरु	सुख सम्मान के लिए
42	शुक्र	वैवाहिक जीवन हेतु
43	शनि	आकस्मिक हानियों को रोकने के लिए
44	राहु	विदेश में सफलता प्राप्ति के लिए
45	केतु	सफलता प्राप्ति, जादू–टोना दूर करने के लिए
46	संपूर्ण व्यापार वृद्धि	व्यापार में सिथरता व सफलता के लिए
47	संपूर्ण विद्या दायक	विद्या, ज्ञान प्राप्ति के लिए
48	संपूर्ण बाधा मुक्ति	समस्या निराकरण के लिए
49	संपूर्ण रोग नाशक	उत्तम स्वास्थ्य व रोग शांति के लिए
50	संपूर्ण कालसर्प	जीवन क्षेत्र में आने वाली बाधाओं के निवारण हेतु
51	संपूर्ण वास्तु दोष निवारण	कार्य स्थल, घर, दुकान के वास्तु दोषों की शांति हेतु
52	संपूर्ण नवग्रह	सभी नौ ग्रहों की शुभता के लिए
53	संपूर्ण महालक्ष्मी	धन, वैभव, सुख, शांति के लिए
54	सर्व कार्य सिद्धि	जीवन में लक्ष्य प्राप्ति व चहुंमुखी सफलता के लिए

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

1. यंत्रराज श्रीयंत्र

सनातन धर्म संस्कृति में विभिन्न कामनाओं की पूर्ति हेतु विभिन्न यंत्रों की साधना का विधान है। इन यंत्रों का उपयोग ध्यान केंद्रित करने के लिए किया जाता है। ये यंत्र एक दूसरे से भिन्न होते हैं। इनमें श्रीयंत्र सर्वाधिक शक्तिशाली है और इसे यंत्रराज की संज्ञा दी गई है। श्रीयंत्र में सभी देवी देवताओं का वास होता है। इसे विचारशक्ति, एकाग्रता तथा ध्यान को बढ़ाने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना गया है।

श्रीयंत्र का प्रयोग ध्यान में एकाग्रता के लिए किया जाता रहा है। आधुनिक वास्तुशास्त्रियों ने माना है कि इस यंत्र के गणितसूत्र के आधार पर बनाए गए मंदिर, आवास या नगर में अत्यधिक सकारात्मक ऊर्जा होती है तथा ऐसे स्थान में रहने वाले लोगों में विचारशक्ति, ध्यान, शांति, सहानुभूति, सौहार्द व प्रेम के गुणों का उद्भव होता है।

श्रीयंत्र आद्याभगवती श्रीललितमहात्रिपुर सुंदरी का आवास है। इसकी रचना तथा आकार के बारे में आदिगुरु शंकराचार्य की दुर्लभकृति सौंदर्यलहरी में बड़े रहस्यमय ढंग से चर्चा की गई है। महालक्ष्मी को सभी देवियों में श्रेष्ठ माना जाता है और श्रीललितामहात्रिपुर सुंदरी भगवती महालक्ष्मी का श्रेष्ठतम रूप है।

श्रीयंत्र ॐ शब्द ब्रह्म की ध्वनितरंगों का साकार चित्र है। ऐसा कहा जाता है कि जब ॐ का उच्चारण किया जाता है तो आकाश में श्रीयंत्र की आकृति उत्पन्न होती है। भारत का सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिक पूजनीय यंत्र श्रीयंत्र ही है। यह समूचे ब्रह्मांड का प्रतीक है जिसे श्री चक्र भी कहा जाता है।

जन्म कुंडली में सूर्य ग्रह के पीड़ित होने पर श्रीयंत्र की पूजा का विधान शास्त्रों में वर्णित है। श्रीयंत्र शब्द की उत्पत्ति श्री और यंत्र के मेल से हुई है। श्री शब्द का अर्थ है लक्ष्मी अर्थात संपत्ति। इसलिए इसे संपत्ति प्राप्त करने का यंत्र भी कह सकते हैं।

श्रीयंत्र की अधिष्ठात्री देवी भगवती श्रीललितामहात्रिपुरसुंदरी हैं। संसार की सर्वाधिक सुंदर व श्रेष्ठतम वस्तु को ललिता कहा जाता है। ललिता शब्द का शाब्दिक अर्थ है– वह जो क्रीड़ा करती है। सृष्टि, स्थिति व विनाश को भगवती की क्रीड़ा कहा गया है। त्रिपुर शब्द का अर्थ है– तीन लोक, त्रिशक्ति, त्रिदेव, सत् चित् आनंदरूप, आत्मा–मन–शरीर इत्यादि। इसका शाब्दिक अर्थ है त्रिशक्तियों–महाकाली, महालक्ष्मी व महासरस्वती से पुरातन।

भगवती श्रीललितामहात्रिपुरसुंदरी को दशमहाविद्याओं में श्री विद्या नाम से जाना जाता है। इनके 16 अक्षरों के मंत्र को भी श्री विद्या नाम से ही पुकारा जाता है। इनके यंत्र को श्रीयंत्र कहा जाता है। तात्पर्य यह कि श्री व श्रेष्ठता की उच्चतम अभिव्यक्ति श्रीविद्या परामन्ा षोडशी भगवती राजराजेश्वरी श्रीललितामहात्रिपुरसंदरी ही श्रीयंत्र की अधिष्ठात्री शक्ति हैं। इनके बारे में कहा गया है कि कोटि–कोटि जिह्वाएं भी इनके माहात्म्य का वर्णन नहीं कर सकती हैं।

ब्रह्मपुराण में इनकी साधना के बारे में कहा गया है कि जिसने अनेक जन्मों में कठोर साधना की हो, उसी को श्री विद्या की उपासना का सौभाग्य मिलता है। इनके महत्व के बारे में कहा गया है–

यत्रास्ति भोगो नहि तत्र मोक्षो। यत्रास्तिमोक्षो नहि तत्रभोगः।।

श्री संदुरी सेवन तत्पराणाम्। भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव।।

अर्थात् जहां भोग है वहां मोक्ष नहीं है। जहां मोक्ष है वहां भोग नहीं है। परंतु भगवती त्रिपुरसुंदरी की आराधना

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

करने वाले भक्तों के लिए भोग और मोक्ष दोनों एक साथ सुलभ होते हैं जबकि ये दोनों एक दूसरे के विरोधी हैं। तंत्र शास्त्र में भगवती त्रिपुरसुंदरी का महत्व सर्वोपरि है। कहा गया है–

न गुरोः सदृशो दाता न देवः शंकरोपमः। न कोलात् परमो योगी न विद्या त्रिपुरांदरा।।

श्रीयंत्र के मंत्र : श्रीविद्या के बारे में शास्त्रों में कहा गया है कि जिसका अगला जन्म न हो तथा जो इसी जन्म में मुक्त हो या जो स्वयं शंकर हो उसी को श्रीविद्या का मंत्र दिया जा सकता है।

यह भी कहा गया है कि "शिरम् देयम् राज्यम् देयम् न देयम् षोडशाक्षरीम्" अर्थात् सिर दिया जा सकता है, राजपाट दिया जा सकता है लेकिन श्रीयंत्र का 16 अक्षरों का मंत्र किसी को नहीं दिया जा सकता।

श्रीदेव्यऽथर्वशीषम् में कहा गया है–

कामोयानिः कमला बज्रपाणिर्गुहा हसा मातीरश्वा भ्रमिंद्रः पुनर्गुहा सकला मायया च पुरुच्यैषाविश्वमातादिविद्योम्। एषा आत्म शक्तिः, एषा विश्वमोहिनी, पाशांकुशधरा एषा श्रीमहाविद्या। य एवम् वेद स शोकम् तरति।

ऊपर वर्णित श्लोक में श्री विद्या निहित है। श्रीयंत्र की उपासना में प्रयोग होने वाले मंत्र के छः प्रकार के भावार्थ, लोकार्थ, संप्रदायार्थ इत्यादि लगाए गए हैं। इससे स्पष्ट होता है कि ये मंत्र कितने महत्वपूर्ण व गोपनीय हैं।

ज्ञान के अहंकार में मदमस्त होकर बिना गुरु दीक्षा के मंत्र का जप करना विनाशकारी है। इस मंत्र की दीक्षा सुयोग्य संत या आदिगुरु शंकराचार्य द्वारा चार शांकर पीठों में स्थापित गुरुशिष्य परंपरा के अंतर्गत जगद् गुरुशंकराचार्य के आसन पर बैठे संत से ली जा सकती है। इस प्रकार से दीक्षित भक्त श्रीयंत्र की उपासना का पूर्ण फल प्राप्त कर सकता है।

जब भगवान शिव ने 64 तंत्रों से समस्त भुवन को भर दिया और उनका मन फिर भी शांत नहीं हुआ, तो उन्होंने सभी पुरुषार्थों की सिद्धि देने वाले श्रीयंत्र व इसकी उपासना की पद्धति को स्वतंत्र रूप से इस पृथ्वी पर उतारा।

मंत्रयोग के अनुसार श्रीयंत्र व इसके मंत्र के उच्चारण व निरंतर अभ्यास से कुंडलिनी शक्ति को जाग्रत किया जा सकता है। इसलिए शास्त्रों में इन मंत्रों का बड़ा ही गौरवपूर्ण वर्णन किया गया है।

श्रीयंत्र की दीक्षा न मिलने की स्थिति में इसके समक्ष श्रीसूक्त का पाठ करने से सुंदर सुरम्य देह, सरस्वती का विशाल कोष, धन का अक्षय भंडार आदि प्राप्त किए जा सकते हैं। जो लोग दीक्षा नहीं ले सके हों, वे इनके नाम का भजन करके भी इनका अनुग्रह प्राप्त कर सकते हैं।

इस श्रीयंत्र व इसकी शक्ति की कितनी भी महिमा गाई जाए, कम है। श्रेष्ठ लाभ के लिए इसे शुद्ध स्थल पर स्थापित करें। सात्विक आहार करें व नियम से पूजा करें, श्रेष्ठ लाभ होगा। धन–संपत्ति, ज्ञान, यश व सौंदर्य प्राप्ति की इच्छा से या ब्रह्म ज्ञान व आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति की इच्छा की पूर्ति के लिए श्रीयंत्र की उपासना अत्यंत श्रेयस्कर है। इसके नित्य दर्शन मात्र का अत्यंत शुभ फल लिखा है–

महाषोडशदानानानि कृत्वा यल्लभते फलम्। तत्फलं शीघ्रमाप्रोति कृत्वा 'श्रीचक्रदर्शनम्।।

सार्धात्रि कोटितीर्थेषु स्नात्वा यत्फलमश्नुते। लभते तत्फलं सकृत कृत्वा 'श्रीयंत्र' दर्शनम्।।

लक्ष्मी प्राप्ति के जब सभी उपाय निरर्थक साबित हो जायें तब श्री यंत्र के सम्मुख आदि शंकराचार्य रचित कनकधारा स्तोत्र का पाठ करें इस स्तोत्र के प्रभाव से धन लाभ होता है।

षोडशाक्षरी मंत्र : ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

महाषोडशी मंत्र : श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।।

बिना गुरु दीक्षा के इस मंत्र का जप नहीं करनी चाहिए। यह कुंडलिनी को जागृत करने हेतु बहुत ही प्रभावशाली मंत्र है। यह सुंदरता, संपत्ति और ज्ञान प्राप्ति हेतु श्रेष्ठतम है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

सम्पूर्ण श्रीयंत्र

इस यंत्र में 13 यंत्रों का समावेश है। ये सभी यंत्र हर तरह से साधक की मनोकामनाओं को पूर्ण करने में सहायता करते हैं। जमीन–जायदाद की प्राप्ति, धन और सफलता के लिए सम्पूर्ण श्रीयंत्र अति लाभकारी है। इसकी आराधना से जातक के जीवन की समस्त बाधाओं, तनाव और चिंताओं का नाश हो जाता है। जातक को प्रसिद्धि, शक्ति, अधिकार, धन, व्यावसायिक सफलता, सुख और शांति की प्राप्ति होती है। व्यापार में उन्नति एवं आमदनी में लाभ देता है। सम्पूर्ण श्री यंत्र को उत्तर, पूर्व, अथवा उत्तर–पूर्व दिशा में स्थापित करना चाहिए।

स्फटिक श्रीयंत्र

स्फटिक एक सामान्य प्राप्ति वाला रंगहीन तथा प्रायः पारदर्शक मिलने वाला अल्पमोली पत्थर है। यह पत्थर देखने में कांच जैसा प्रतीत होता है। सिलिका आक्साइड का एक रूप यह स्फटिक पत्थर स्वयं में विशेष आब तथा चमकयुक्त नहीं होता, लेकिन विशेष काट में काटने तथा पालिश करने पर इसमें चमक पैदा की जा सकती है। स्फटिक पत्थर से बनी विभिन्न देवी देवताओं की मूर्तियां एवं यंत्र बनाये जाते हैं।

जिस प्रकार से नवग्रह होते हैं। ठीक उसी प्रकार से नौग्रहों की नौ प्रकार की लक्ष्मी होती हैं 1. आद्या लक्ष्मी 2. धान्य लक्ष्मी 3. धैर्य लक्ष्मी 4. गजलक्ष्मी 5. सन्तान लक्ष्मी 6. विजय लक्ष्मी 7. विद्या लक्ष्मी 8. धन लक्ष्मी 9. धान्य लक्ष्मी आदि।

अनन्त ऐश्वर्य व लक्ष्मी प्राप्ति के लिए श्रीविद्या व श्रीयन्त्र का महत्त्व सर्वाधिक है। श्रीविद्या ही ललिता, राजराजेश्वरी, महात्रिपुरसुन्दरी, बाला, पंचदशी और षोडशी इत्यादि नामों से विख्यात है। श्रीविद्या की साधना हेतु उसके आधारभूत 'श्रीयन्त्र' को समझना प्रथमतः अनिवार्य है। इस 'श्री यन्त्र' के सम्मुख आर्तभाव से श्रद्धापूर्वक 'श्रीसूक्त' पढ़ने पर बहुतों को धन सम्पत्ति की प्राप्ति हुयी है। अनेक धर्मशास्त्रों में यह प्रमाण पाया गया है कि स्फटिक श्री यंत्र, दक्षिणावर्ती शंख, गोमती चक्र एवं तुलसी पत्र जिस घर में यह पांचों वस्तुयें एक साथ प्रतिष्ठित की जाती हैं और प्रतिदिन इनकी पूजा एवं दर्शन किया जाता है। वहां धन और ऐश्वर्य की कभी भी कमी नहीं होती है।

स्फटिक के श्रीयंत्र को समस्त प्रकार के श्रीयंत्रों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है तथा स्फटिक में निर्मित श्रीयंत्रमय शिवलिंग की महिमा तो अवर्णनीय है। स्फटिक के श्रीयंत्र की पूजा जीवन पर्यंत की जा सकती है।

पारद श्रीयंत्र

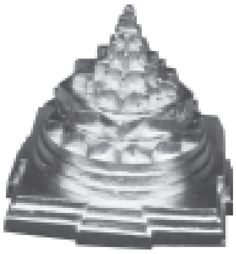

यह पूजा स्थल अथवा किसी भी स्थान पर स्थापित किया जा सकता है। श्री यंत्र को स्थापित करने से आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। इस यंत्र के प्रभाव से जीवन के अनेक अभाव दूर होते हैं। यदि नौकरी में अधिकारियों से मतभेद, मनमुटाव तथा तरक्की में विलंब हो तो ये बाधाएं दूर होती हैं।

श्री यंत्र की स्थापना विधि : शुद्धता एवं विश्वासपूर्वक शुक्रवार, सोमवार, अथवा गुरुवार

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

को सुबह उठ कर, गंगा जल युक्त जल से स्नानादि कर के, ललाट पर लाल चंदन अथवा रोली का चंदन लगा कर, यथाशक्ति लक्ष्मी का कोई भी मंत्र जप करते हुए, श्री यंत्र को केसर युक्त कच्चे दूध में धो कर पूजन स्थल, व्यवसाय स्थल, दफ्तर, घर, अथवा कहीं भी, शुद्ध स्थान पर लाल रेशमी कपड़े पर स्थापित करना चाहिए। दीपावली, दशहरा, शिवरात्रि, नवरात्रि, सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण आदि पर्वो पर श्री यंत्र की विशेष पूजा में लक्ष्मी के प्रिय मंत्रों का पाठ, श्रीसूक्त का पाठ, कनकधारा आदि का पाठ करना चाहिए। श्री यंत्र के सम्मुख प्रतिदिन सामान्य रूप से धूप, अथवा अगरबत्ती तथा घी का दीपक जलाने से लक्ष्मी की सामान्य पूजा हो जाती है। श्री यंत्र के चोरी होने, टूट जाने, पर पुनः स्थापित किया जाता है। बुध ग्रह को बली करने के लिए पारद श्री यंत्र शीघ्र ही शुभ फल प्रदान करता है तथा जातक की बौद्धिक क्षमता में वृद्धि लाता है।

• लक्ष्मी दोष, दरिद्रता, धन लाभ, धन रक्षा आदि कार्यों में लाभ पाने के लिए पारद श्री यंत्र का पूजन करें।

संगसितारा श्रीयंत्र

यह यंत्र सौदर्य, ज्ञान और धन को प्राप्त करने के लिए अत्यंत लाभकारी है। किसी कुंडली में शुक्र के बुरे प्रभाव से ग्रस्त जातक के लिए इस यंत्र के उपयोग से बुरे प्रभाव को कम किया जा सकता है। वास्तु सुधार उपकरण के रूप में यह पिरामिड काम करते हैं।

अष्टधातु में श्रीयंत्र

समुद्रमन्थन द्वारा चौदह रत्नों के साथ लक्ष्मी का भी आविर्भाव हुआ। लक्ष्मी के आनन्द, कर्दम, चिक्लीत और श्रीत– ये चार पुत्र हैं। इन्हीं चारों पुत्रों को प्रेरित करके लक्ष्मी को प्रसन्न होने के लिए कहा जाता है– हे चिक्लीत नामक लक्ष्मीपुत्र ! तुम मेरे गृह में निवास करो, जिस प्रकार लकड़ी के बिना असमर्थ पुरुष चल नहीं सकता उसी प्रकार लक्ष्मी के बिना संसार का कोई भी कार्य नहीं चल सकता।

इस यंत्र की उपासना करने से भक्ष्य, भोज्य, चोप्य, लेह्य चारों प्रकार के पदार्थ प्राप्त होते हैं। कुबेर के धन को प्रदान करने का समर्थ इन्हीं लक्ष्मी में है। अष्टधातु के श्रीयंत्र की उपासना भी श्रेयष्कर मानी गई है।

सुमेरू पिरामिड श्रीयंत्र

यह वास्तु सुधार हेतु उपयोगी यंत्र है। यह धन संपत्ती प्राप्त करने हेतु, रुपये की प्राप्ति, लोन की प्राप्ति, लॉटरी या जुआ में सफलता आदि। यह गरीबी को दूर करता है और पूर्ण रूप से सफल होता है। इसे ऑटोमोबाईल, फैक्ट्री, कार्यालय, घर आदि में इस्तेमाल कर सकते हैं।

कच्छप श्रीयंत्र

यह कछुए के सदृश देखने में लगता है। इसका निर्माण धातु या स्फटिक से होता है। इसे अपने घर में, शयन कक्ष में, पुलिस स्टेशन, कार्यालय या मंदिर में रख सकते हैं। ध्यान रहें कि कछुए का मुख सामने होना चाहिए। यह यंत्र शारीरिक शक्ति का विकास, धैर्यता, धन, आराम को प्रदान करता है तथा झगड़ा–झंझट व गलती से निजात दिलाती है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

पिरामिड श्रीयंत्र

वास्तु शास्त्र में पिरामिड और श्रीयंत्र को काफी महत्वपूर्ण माना गया है। क्योंकि श्रीयंत्र का वास्तु के साथ संबंध है। श्रीयंत्र वास्तु पर आधारित है। आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों से यह स्पष्ट हो चुका है कि भारत के कई शहरों में पूर्वकाल में भवन का निर्माण कर श्रीयंत्र अवश्य स्थापित किया जाता था। किसी भवन निर्माण में श्रीयंत्र वास्तु दोष दूर करने का संपूर्ण यंत्र है। यह यंत्र व्यक्ति को किसी भी क्षेत्र में ज्ञान, बुद्धि और सीखने की क्षमता प्रदान करती है। इसके उपयोग करने का सबसे अच्छा तरीका है उसे टेबल के सामने रखें। यह एकाग्रता और मानसिक शक्ति को बढ़ाता है। यह बुध, राहु और केतु को संतुष्ट करने के लिए और धन–संपत्ति के लिए लाभदायक है।

श्रीयंत्र लॉकेट

धन वृद्धि, धन प्राप्ति, कर्ज से सम्बन्धित धन पाने के लिए लोन इत्यादि प्राप्त होने के लिए तथा लाटरी, सट्टा व जूआ आदि में सफलता देता है तथा गरीबी का उन्मूलन करता है।

श्रीयंत्र सिक्का

परिचय : यह सिक्के ऊर्जा वृद्धि, शक्ति वृद्धि व समृद्धिदायक होते हैं। किसी शुभ मुहूर्त में इनकी स्थापना कर महालक्ष्मी मंत्र व श्री सूक्त के पाठ से व पंचमेवा, धूप, दीप आदि से इनकी पूजा करें।

उपयोग : इनके प्रभाव से व्यापार में वृद्धि व कार्य क्षेत्र में उन्नति होती है। सुख–समृद्धि, मान–सम्मान व आर्थिक स्थिति में आशातीत लाभ होता है। इसी प्रकार शारिरीक व मानसिक शक्ति को बल मिलता है।

श्रीयंत्र की अंगूठी

यह श्री यंत्र अंगूठी के रूप में होता है, जिसे सोना, चांदी, अथवा अष्ट धातु, पंच धातु आदि से निर्मित किया जाता है। यह दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में धारण किया जाता है।

यह मन की प्रसन्नता में वृद्धि करता है तथा चिंताओं को नष्ट करता है। इससे व्यापार की बाधाएं दूर होती हैं तथा अनेक प्रकार से लाभ होता है। नये–नये व्यापार शुरू करने के अवसर सम्मुख आते हैं, तथा जीवन को यह सुखमय बनाता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

2. महालक्ष्मी यंत्र

इस यंत्र को निरंतर धन वृद्धि के लिए अधिक उपयोगी माना गया है। महालक्ष्मी यंत्र अत्यन्त दुर्लभ एवं लक्ष्मी प्राप्ति के लिए रामबाण प्रयोग है तथा अपने आप में अचूक, स्वयं सिद्ध तथा ऐश्वर्य प्रदान करने में सर्वथा समर्थ है। यह स्वर्ण वर्षा करने वाला यंत्र कहा गया है। निरन्तर धनवृद्धि के लिए इस यंत्र के सामने 'कनकधारा स्तोत्र' का पाठ करना चाहिए। महालक्ष्मी यंत्र व्यापार वृद्धि, दारिद्र्य नाश करने व ऐश्वर्य प्रदान करता है। दीपावली के शुभ अवसर पर सिंह लग्न में इस यंत्र को सम्मुख रखकर धूप, दीप आदि द्वारा पूजन करने के पश्चात श्री सूक्त और कनक धारा को सम्पुटित करके सोलह पाठ, महालक्ष्मी का पूजन करने से माता लक्ष्मी वर्ष पर्यंत भक्तगणों को अनुग्रहीत करती हैं।

मधुर बोलने वाला, कर्तव्यनिष्ठ, ईश्वर भक्त, कृतज्ञ, इन्द्रियों को वश में रखने वाले, उदार, सदाचारी, धर्मज्ञ, माता–पिता की भक्ति भावना से सेवा करने वाले, पुण्यात्मा, क्षमाशील, दानशील, बुद्धिमान, दयावान और गुरु की सेवा करने वाले लोगों के घर में लक्ष्मी का स्थिर वास होता है।

अधिक सुख–समृद्धि पाने के लिए भगवती के किसी भी मंत्र को कमल गट्टे, अथवा लाल चंदन की माला पर यथाशक्ति जप करना चाहिए।

1. श्रीं ह्रीं क्लीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा लक्ष्म्यै नमः।
2. ऊं श्री महालक्ष्म्यै स्वाहा। 3. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।।

3. कमला यंत्र

महाविद्या की क्रम परंपरा में माता कमला का स्थान दसवां है। इनका आसन कमल है। इनकी कांति सोने के समान है। श्वेत वर्ण के चार गज अपनी शुंडाओं में जल भरे कलश लेकर इन्हें स्नान कराते हैं। चार भुजाओं वाली इस देवी के एक हाथ में वर, एक में अभय व एक में कमल है। शक्ति के इस विशिष्ट रूप की साधना से जीवन सुखमय होता है और दरिद्रता दूर होती है। यह दुर्गा का सर्व सौभाग्य रूप भी है। जहां कमला हैं वहां विष्णु हैं, जिस साधक के घर ये दोनों हों उसका गृहस्थ जीवन सुखमय होता है।

समृद्धि की प्रतीक, स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति, नारी, पुत्रादि के लिए इनकी साधना की जाती है। इस प्रकार दस महामाताएं गति, विस्तर, भरण, पोषण, जन्म– मरण, बंधन और मोक्ष की प्रतीक हैं। इस महाविद्या की साधना नदी तालाब या समुद्र में गिरने वाले, जल में आकंठ डूब कर की जाती है। इसकी पूजा करने से व्यक्ति साक्षात कुबेर के समान धनी और विद्यावान होता है। यश और व्यापार या प्रभुत्व संसार भर में प्रचारित हो जाता है। भगवती कमला के शिव भगवान नारायण गणेश 'सिद्ध', बटुक 'सिद्ध' तथा यक्षिणी 'धनदा' हैं। तंत्र विधानानुसार शक्ति के साथ उक्त चारों शक्तियों का पूजन तथा मंत्र जप करना चाहिए।

यह समृद्धि, शुद्धता, पवित्रता की प्रतीक है और दरिद्रता, तनाव, कर्ज व रोग का उन्मूलन करती है। कमला यंत्र को महालक्ष्मी व कनक धारा यंत्र से भी अधिक शक्तिशाली माना गया है। इस यंत्र की उपासना से शुक्र ग्रह को बल मिलता है। इस यंत्र की सिद्धि के लिए निम्नलिखित मंत्र का जप किया जाना चाहिए।

मंत्र : ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्प्रसूत्यै नमः।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

4. कनकधारा यंत्र

इस यंत्र की उपासना से ऋण और दरिद्रता से शीघ्र मुक्ति मिलती है। बेरोजगारों को नौकरी और व्यापारियों के व्यापार में उन्नति होती है। यह यंत्र अत्यंत दुर्लभ परंतु लक्ष्मी प्राप्ति के लिए रामबाण और स्तोत्र अपने आप में अचूक, स्वयंसिद्ध तथा ऐश्वर्य प्रदान करने में समर्थ है। इस यंत्र की उपासना से रंक भी धनवान हो जाता है। परंतु इसकी प्राण प्रतिष्ठा की विधि जटिल है। कथा है कि जगद्गुरु शंकराचार्य ने एक दरिद्र ब्राह्मण के घर इस स्तोत्र का पाठकर स्वर्ण वर्षा कराई थी।

इस यन्त्र का उपयोग घर, दूकान, फैक्ट्री, वर्कशॉप, धन्धे व व्यवसाय स्थल पर कर सकते हैं। दीपावली, होली या शुक्लपक्ष की द्वितीया, नवमी, सप्तमी, दशमी, पूर्णिमा, सोम, बुध, शुक्रवार रोहिणी, पुर्नवसु, हस्त, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफल्गुनी नक्षत्र प्राण–प्रतिष्ठा हेतु उत्तम हैं।

इस यंत्र के भीतर के त्रिकोण क्रमशः 1. दारिद्र्य विनाशक 2. श्रेष्ठ लक्ष्मी एवं 3. ऐश्वर्य के प्रतीत हैं त्रिकोण का मध्य विन्दु मां भगवती (भुवेनेश्वरी) का सूचक है जो अनिष्ट निवारक, प्रसन्नता एवं ऐश्वर्यदायक है। इस बिन्दु पर कमल सिंहासनारूढ़ भगवती श्री लक्ष्मी की परिकल्पना कर, अर्चना करनी चाहिए। इस यंत्र की सिद्धि के लिए निम्नलिखित मंत्र का जप किया जाना चाहिए।

मंत्र : **ॐ वं श्रीं वं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कनकधारायै नमः।**

5. गायत्री यंत्र

गायत्री यंत्र पाप को नष्ट करने और पुण्य को उदय करने की अद्भुद शक्ति का पुन्ज कहा जाता है। इस यंत्र की पूजा उपासना करने से इस लोक में सुख प्राप्त होता है एवं विष्णु लोक में स्थान प्राप्त होता है। अनेक जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं और दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होती है। इस यंत्र की अचल प्रतिष्ठा होती है।

माँ गायत्री चारों वेदों की प्राण, सार, रहस्य एवं तन (साम) हैं संगीत का यह स्वर आत्मा के उल्लास को उद्वेलित करता है। जो इस तेज को अपने में धारण करता है उसकी वंश परम्परा तेजस्वी बनती चली जाती है। उसकी पारिवारिक संतति और अनुयायियों की श्रृंखला में अनेक तेजस्वी प्रतिभाशाली उत्पन्न होते चले जाते हैं।

यंत्र का उपयोग

साधना एक ऐसा पुरुषार्थ है जिसमें सामान्य श्रम एवं मनोयोग का नियोजन भी असामान्य विभूतियों एवं शक्तियों को जन्म देता है। साधारण स्थिति में हर वस्तु तुच्छ है। यदि गायत्री यंत्र की उपासना द्वारा उसको पूर्ण बनाया जाय तो वह वस्तु उत्कृष्ट बन जाती है। अनेक मनीषियों ने संसार के कठिन से कठिन कार्य को सदा सहज रूप में कर सकने की सामर्थ्य गायत्री–साधना से ही जुटाई है। हजारों ऋषि–मुनियों, साधकों, महापुरुषों ने इस साधना को बिना सोचे–समझे, बिना प्रयोग–परीक्षण किये नहीं अपनाया है।

मंत्र : **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

6. बीसा यंत्र

तंत्र शास्त्र में बीसा यंत्र का उल्लेख मिलता है। इस यंत्र के कई स्वरूप हैं, जो धन, समृद्धि, वैभव प्राप्ति के लिए, तनाव, कष्ट, विपदाओं से बचने के लिए और रोग–व्याधियों से मुक्ति के लिए लाभदायक हैं। इन यंत्रों को शुभ मुहूर्त में शास्त्रोक्त विधि से तैयार करके और अभिमंत्रित कर सिद्ध करके यदि पूजा, अर्चना की जाए तो मनोकामनाएँ पूर्ण होती है। बीसा यंत्र को रवि–पुष्य, रवि–हस्त, गुरु–पुष्य, नवरात्रि, धनतेरस, दीपावली या सूर्य–चंद्र ग्रहण में लाभ के चौघड़िए में शास्त्रोक्त विधि से तैयार किया जाना चाहिए। शुभ मुहूर्त में अनार की डाली तोड़कर पत्थर पर घिसकर कलम तैयार करनी चाहिए। इस यंत्र को भोजपत्र पर, भोजपत्र की अनुपलब्धि में कोरे कागज पर अष्ट गंध स्याही से अंकित करना चाहिए। इस यंत्र का विधिवत पूजन कर मंत्रोच्चारण के साथ ध्यान करने पर कार्य सिद्धि तथा विपत्ति निवारण होता है।

धन संपत्ति, व्यापार में सफलता एवं निरंतर उन्नति करने के लिए बीसा यंत्र दीपावली के पूर्व आने वाले पुष्य नक्षत्र में, धनतेरस या दीपावली के दिन लाभ के चौघड़िए में घर, पूजा गृह, मंदिर, दुकान या व्यापार के स्थान पर ईशान कोण की पश्चिम मुखी दीवार पर शुद्ध घी–सिंदूर से अंकित करना चाहिए। इससे सुख–समृद्धि एवं वैभव बना रहता है। समस्या, तनाव, विपत्ति दूर करने के लिए तथा शत्रु नाश हेतु निम्नांकित बीसा यंत्रों को विधिवत तैयार करके पूजा–आराधना करनी चाहिए। साथ ही दुर्गा देवी के दुर्गा स्तोत्र का वाचन शीघ्र लाभ करता है। कहावत है– **'वो करे यंत्र बीसा, जो कर न सके जगदीशा'**

मंत्र : ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै।

7. नव दुर्गा यंत्र

दक्ष ने शंकर के प्रति अपमानजनक वचन कहे। यह सब देख कर 'सती' का मन ग्लानि और क्रोध से संतप्त हो उठा। वह अपने पति का अपमान न सह सकीं और उन्होंने अपने आपको यज्ञ में जला कर भस्म कर लिया। अगले जन्म में सती ने नव दुर्गा के रूप धारण कर के जन्म लिया, जिनके नाम हैं : 1. शैलपुत्री 2. ब्रह्मचारिणी 3. चंद्रघंटा 4. कूष्मांडा 5. स्कंदमाता 6. कात्यायनी 7 कालरात्रि 8. महागौरी 9.सिद्धिदात्री

मार्कण्डेय पुराण में नव दुर्गा के बारे में अनेक चमत्कारिक प्रयोग बताये गये हैं जिनमें से एक नव दुर्गा यंत्र है। इस यंत्र की श्रद्धा पूर्वक पूजा प्रतिष्ठा करने से मानव कल्याण एवं अनेक परेशानियों से छुटकारा मिलता है, मां भगवती के कई मूल मंत्रों को इस यंत्र में समाहित किया गया है जो इसकी विशेषता का प्रतीक है। नौ दुर्गा यंत्र को घर, दुकान, वाहन, व्यापार, संस्थान, आदि में स्थापित किया जा सकता है। इस यंत्र के प्रभाव से अनेक लाभ हैं तथा उपासना विधि अत्यन्त सरल है जिसे हर कोई करने में सफल हो सकता है और लाभ ले सकता है।

इस यंत्र को सम्मुख रखकर (प्रातःकाल) धूपदीप आदि द्वारा साधारण पूजा करके माता दुर्गा के नवार्ण मंत्र का जप से वांछित लाभ व चोर, प्रेत, शत्रु, रोग व बन्धन भय आदि से छुटकारा पाया जा सकता है।

मंत्र : ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

8. सरस्वती यंत्र

आज का युग बौद्धिक युग है। बौद्धिक विकास को लेकर चारों तरफ तरह–तरह के परीक्षण, कम्पिटीशन, परीक्षाएं एवं प्रतियोगिताएं संपन्न हो रही हैं। बुद्धि को कुशाग्र करने के लिए, मंदबुद्धि वालों की बौद्धिक क्षमता बढ़ाने के लिए एवं स्मरण–शक्ति की तीव्रता के लिए सरस्वती यंत्र एक मात्र अवलम्बन है, जिससे हम आज के इस बौद्धिक युग में सर्वाधिक सफल व्यक्ति हो सकते हैं। कहते हैं कि महाकवि कालिदास, बदराजाचार्य, वोपदेव आदि मंद बुद्धि के लोग सरस्वती उपासना के सहारे उच्च कोटि के विद्वान बने थे।

विद्या प्रदान करने की अपरिमित शक्ति मां सरस्वती में ही है, यह यंत्र मां सरस्वती के बीज मंत्रों द्वारा निर्मित होता है। आज वैज्ञानिक युग में हर किसी को ज्ञान और विद्या की आवश्यकता है। ज्ञान और विद्या विहीन व्यक्ति कभी सफल नहीं हो पाता। अतः हर क्षेत्र के लोगों को यह यंत्र अत्यन्त लाभकारी साबित हो सकता है तथा सफलता के लिए ज्ञान एवं विद्या प्रदान करता है।

इस यंत्र को श्रृद्धा पूर्वक विधि के अनुसार पूजन, दर्शन या धारण करता है वह विद्या–संपन्न, धनवान् और मधुरभाषी व सरस्वती की कृपा से ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठित होता है। शिक्षा में मन लगे, आपकी बुद्धि प्रखर हो, परीक्षा में सफलता मिले, इस उद्देश्य से सरस्वती यंत्र का पूजा उपासना या धारण करना सर्वश्रेष्ठ है।

मंत्र : ॐ ऐं महासरस्वत्यै नमः।

9. महाकाली यंत्र

महाकाली चामुंडा का साक्षात स्वरूप है, जिसने देव दानव युद्ध में देवताओं को विजय दिलवाई है। महाविनाशक महाकाली अपने साधकों को अपार शक्ति देकर सबल और सक्षम बनाती है।दशमहाविद्याओं में काली की प्राथमिकता सर्वत्र देखी जाती है, महाकाली प्रलय काल से सम्बद्ध होने से कृष्णवर्णा हैं। वे शव पर आरूढ़ इसीलिए हैं कि, शक्तिविहीन विश्व मृत ही है। शत्रुसंहारक शक्ति भायावह होती हैं, इसीलिए काली की मूर्ति भयावह है। शत्रु संहार के बाद विजयी योद्धा का अट्टहास भीषणता के लिए होता है, इसलिए महाकाली हँसती रहती हैं।

आद्यशक्ति मां महाकाली प्रत्यक्ष या परोक्ष बाधाओं को नष्ट करके शक्ति प्रदान करती है। इस अद्भुत शक्ति द्वारा मानव अनेक सफलता प्राप्त करता है और निश्चिन्त जीवन व्यतीत करता है। इस यंत्र की चल अचल दोनों तरह से प्रतिष्ठा होती है।

महाकाली की पूजा सर्वकामनाओं की पूर्ति के लिए की जाती है विशेष रूप से अत्याचारी शत्रु से रक्षा व त्राण पाने के लिए। माया के जाल से छूटकर मोक्ष प्राप्ति के लिए महाकाली की पूजा सर्वश्रेष्ठ है। संसारी जीव असुरों, दुष्टों से रक्षा के लिए मां की पूजा करते हैं। वाद–विवाद, मुकदमें में जीतने के लिए, प्रतियोगिता में प्रतिद्वन्द्वी को परास्त करने के लिए, दौड़, कुश्ती, युद्ध, मल्लयुद्ध, किसी भी प्रकार के युद्ध, शास्त्रार्थ में विजय के लिए काली की उपासना तुरन्त फल देती है।

मंत्र : ॐ क्रीं कालिकायै नमः।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

10. तारा यंत्र

तारा और काली एक ही हैं। वध करने के लिए देवी का वर्ण नील हुआ था। उनकी आकृति नीलकमल की भांति है और उनके तीन नेत्र हैं। हाथों में कैंची, कपाल, कमल, और खड्ग है। व्याघ्र चर्म विभूषित देवी के कंठ में मुंडमाला है। वह मोक्षदायिनी व तारिणी हैं, इसलिए तारा कहलाईं।

यह दूसरी महाविद्या हैं। तारा का समय भोर में आता है। सौरमंडल अग्नि तत्वमय होने के कारण हिरण्यमय कहलाता है। सूर्य को श्रुतियों में नक्षत्र बताया गया है। अतः आगम शास्त्र में उनकी शक्ति को तारा नाम दिया गया है।

यह शत्रुओं का नाश करने वाली, सौंदर्य, रूप और ऐश्वर्य की देवी तारा आर्थिक उन्नति, भोग, दान और मोक्ष प्राप्ति के लिए जानी जाती हैं। भगवती तारा के तीन रूप हैं – तारा, एकजटा और नील सरस्वती। चैत्र मास की नवमी तिथि और शुक्ल पक्ष के दिन इस यंत्र की साधना करना तंत्र साधकों के लिए सर्वसिद्धिकारक माना गया है। तारा महाविद्या के फलस्वरूप व्यक्ति इस संसार में व्यापार, रोजगार और ज्ञान–विज्ञान से परिपूर्ण विख्यात यश वाला प्राणी बन सकता है। इनके यंत्र की पूजा करना अत्यंत लाभकारी है।

मंत्र : **ॐ ह्रीं स्रीं हुं फट्।**

11. भुवनेश्वरी यंत्र

त्रिगुणात्मक शक्ति रूपी नवदुर्गा की एक और विशेषता है, जो कि उनके आध्यात्मिक स्वरूप में दस महाविद्याओं के रूप में विराजमान है। ब्रह्माजी के पुत्र दत्तात्रेय ने तंत्र शास्त्र के निगमागम ग्रंथों की रचना करते हुए महिषासुर मर्दिनी और सिद्धिदात्री देवी भगवती के अंदर समाहित उन दस महाविद्याओं का जिक्र किया है, जिनकी साधना से ऋषि मुनि और विद्वान इस संसार में चमत्कारी शक्तियों से युक्त होते हैं। मार्कण्डेय पुराण में दस महाविद्याओं का और उनके मंत्रों तथा यंत्रो का जिक्र है ।

देवी दुर्गा के आभामंडल में उपरोक्त दस महाविद्याएं दस प्रकार की शक्तियों के प्रतीक हैं। सृष्टि के क्रम में चारों युग में यह दस महाविद्याएं विराजमान रहती हैं।

दशमहाविद्याओं में से एक भुवनेश्वरी देवी भी है जो अपना एक विशेष महत्व रखती है। इस यंत्र के प्रभाव से व्यक्ति अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। शत्रु भय नहीं रहता। आदि शक्ति भुवनेश्वरी भगवान शिव के समस्त लीला विलास की सहचरी हैं। मां का स्वरूप सौम्य एवं अंग कांति अरुण हैं। भक्तों को अभय एवं सिद्धियां प्रदान करना इनका स्वाभाविक गुण है। इस यंत्र की आराधना से साधक के अंदर सूर्य के समान तेज और ऊर्जा प्रकट होने लगती है। इनकी साधना से वह संसार का सम्राट भी बन सकता है। इस यंत्र को अभिमंत्रित करने से लक्ष्मी की वर्षा होती है और संसार के सभी शक्ति स्वरूप महाबली चरण स्पर्श करने लगते हैं।

मंत्र : **ह्रीं**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

12. छिन्नमस्ता यंत्र

यह पांचवीं महाविद्या है। इनका नाम प्रचंड चंडिका भी है। इन्हें कबंध शिव की महाशक्ति माना जाता है। इनका स्वरूप ऐसे सिर कटे हुए धड़ के रूप में है जो अपने सिर को भी अपने हाथ में लिए हुए है। यह अस्थिमाला धारण करती हैं। भगवान परशुराम इन्हीं विद्या के उपासक थे। गुरु गोरखनाथ ने भी इन्हीं की उपासना की थी। प्रत्येक यज्ञ के अंत में शिरः संधान के लिए जो यज्ञ किया जाता है उसे शिरो यज्ञ कहते हैं। शिरो यज्ञ के बिना यज्ञ मस्तक विहीन रहता है। यज्ञ के इस भाग को सम्राट्याग् प्रवर्गज्ञाग या धर्मयाग कहा जाता है।

इस सारी क्रिया का वर्णन श्रुति में इस प्रकार है, ''मैं छिन्न शीर्ष हूं, परंतु अन्न के प्राप्त होने से शिरः संधान यज्ञ से स्व–स्वरूप में प्रतिष्ठित हों।'' परंतु जब यह शिरः संधान रूपी अन्नगवन बंद हो जाता है तो स्वरूप छिनमस्ता का ही रह जाता है और तब यह छिन्नमस्तारूपी शक्ति संहारक रूप धारण कर लेती हैं।

चतुर्थ संध्याकाल में मां छिन्नमस्ता की उपासना से साधक को सरस्वती सिद्ध हो जाती है। पलास और बेल पत्रों से छिन्नमस्ता यंत्र की सिद्धि की जाती है। इनसे प्राप्त सिद्धियां मिलने से लेखन और कवित्व शक्ति की वृद्धि होती है। शरीर रोग मुक्त होता है। शत्रु परास्त होते हैं। योग, ध्यान और शास्त्रार्थ में साधक को संसार में ख्याति मिलती है। इस यंत्र की पूजा से राहु जनित दोषों की भी शांति होती है।

मंत्र : **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्र वै रो चनी मे हुं हुं फट् स्वाहा।।**

13. बगलामुखी यंत्र

बगलामुखी आठवीं महाविद्या हैं। इनका वास्तविक नाम बल्गामुखी है। एक बार सतयुग में संपूर्ण सृष्टि को नष्ट कर देने की क्षमता रखने वाला भंयकर तूफान आया। प्राणियों की रक्षा के लिए भगवान विष्णु ने सौराष्ट्र देश में हरिद्रा सरोवर के बीच तपस्या की। उस दिन मंगलवार को चतुर्दशी तिथि में अर्धरात्रि के समय माता बगला प्रकट हुईं। माता ने स्तंभन क्रिया के द्वारा समस्त विश्व को स्तंभित कर दिया था जिससे विश्व की रक्षा हो सकी। इनके शिव एकवक्त्र रुद्र हैं।

कलियुग में इनकी पूजा आराधना बहुत अधिक हो रही है। इनके मंत्र के जप से शत्रु का सर्वनाश हो जाता है।

व्यक्ति रूप में शत्रुओं को नष्ट करने वाली समष्टि रूप में परमात्मा की संहार शक्ति ही बगला है। इनकी साधना शत्रु भय से मुक्ति और वाक् सिद्धि के लिए की जाती है। पीतांबरा माला पर विधि –विधान के साथ जप करें। दस महावद्याओं में बगला मुखी सबसे अधिक प्रयोग में लाई जाने वाली महाविद्या है, जिसकी साधना सप्तऋषियों ने वैदिक काल में समय समय पर की है। इसकी साधना से जहां घोर शत्रु अपने ही विनाश बुद्धि से पराजित हो जाते हैं वहां साधक का जीवन निष्कंटक तथा लोकप्रिय बन जाता है। इस यंत्र द्वारा शत्रुओं पर विजय व वांछित सफलता प्राप्त हो सकती है।

मंत्र : **ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय। जिव्हाम् कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा।।**

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

14. त्रिपुर भैरवी यंत्र

इंद्रियों पर विजय और सर्वत्र उन्नति के लिए त्रिपुरभैरवी की उपासना का विधान है। त्रिपुरभैरवी हजारों सूर्यों के समान धवल कांतिवाली हैं और मुंडमाला धारण करती हैं।

यह छठी महाविद्या हैं। इनकी उपासना से पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। यह भगवती आद्याकाली का ही रूप है। षट्कर्मों में इनकी उपासना की जाती है। यह कालरात्रि सिद्ध विद्या हैं। इनके शिव कालभैरव हैं। भगवती त्रिपुरभैरवी का संबंध नित्य प्रलय से है। ये निरंतर गतिशील और क्षय होते हुए पदार्थ को गति देती हैं। यह विनाश करने वाले रुद्र की शक्ति हैं।

इनके तीन रूप हैं – बाला, भैरवी और सुंदरी। प्रपंचसार नामक ग्रंथ में कहा गया है कि त्रिमूर्ति धारण करने, सृष्टि की स्थिति, पालन तथा लय करने, वेदत्रयी स्वरूपा होने और प्रलयकाल में त्रिलोक को लय करने की क्षमता से युक्त होने के कारण इनका नाम त्रिपुरा पड़ा।''

वाराही तंत्र में लिखा है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर ने इनकी पूजा साधना की थी इसलिए इनका नाम त्रिपुरा रखा गया।

त्रिपुर सुन्दरी के अनेक रूप हैं। मसलन, सिद्धि भैरवी, रूद्र भैरवी, कामेश्वरी आदि। जीवन में काम, सौभाग्य और शारीरिक सुख के साथ वशीकरण आरोग्य सिद्धि के लिए इस देवी की आराधना की जाती है। कमल पुष्पों से होम करने से धन सम्पदा की प्राप्ति होती है। मनोवांछित वर या कन्या से विवाह होता है। वांछित सिद्धि और मनोअभिलाषापूर्ति सहित व्यक्ति दुख से रहित और सर्वत्र पूज्य होता है।

मंत्र : **हसै हसकरी हसै।**

15. धूमावती यंत्र

धूमावती सातवीं महाविद्या हैं। यह शत्रुनाशक, शत्रु पर विजय दिलने वाली व दुःख को दूर करने वाली देवी हैं। भगवती के इस स्वरूप की साधना से शत्रु पर विजय मिलती है। इन्हें दारिद्रय की देवी भी माना गया है। अतः इन्हें अलक्ष्मी भी कहा जाता है। यह दारुण विद्या हैं। इनका कोई शिव नहीं है। धूमावती यंत्र को संकटों के निवारण व सुख–समृद्धि का अचूक उपाय माना जाता है। मां धूमावती महाशक्ति स्वयं नियंत्रिका हैं। इनका कोई स्वामी नहीं है। ऋग्वेद में रात्रिसूक्त में इन्हें 'सुतरा' कहा गया है, अर्थात् यह सुखपूर्वक तारने योग्य हैं। इन्हें अभाव और संकट को दूर करने वाली मां कहा गया है।

इस मंत्र की सिद्धि के लिए तिल मिश्रित घी से होम किया जाता है। धूमावती महाविद्या के लिए यह भी जरूरी है कि व्यक्ति सात्विक, नियम संयम, लोभ लालच से रहित और सत्य निष्ठा का पालन करने वाला हो।

इस यंत्र के फल से देवी धूमावती सूकरी के रूप में प्रत्यक्ष प्रकट होकर साधक के सभी रोग, अरिष्ट और शत्रुओं का नाश कर देती हैं। इसके बाद उस साधक की ख्याति प्रबल, महाप्रतापी तथा सिद्धि पुरूष के रूप में हो जाती है। इस यंत्र की नित्य पूजा करने से माता शीघ्र प्रसन्न होती है।

मंत्र : **धूं धूं धूमावती ठः ठः।**

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

16. मातंगी यंत्र

मातंगी नौवीं महाविद्या हैं। 'मतंग' शिव का एक नाम है और मातंगी उनकी शक्ति हैं। मातंगी देवी श्याम वर्णा हैं। इनके मस्तक पर चंद्र हैं। इनके तीन नेत्र हैं और यह रत्नजटित सिंहासन पर विराजमान हैं। इनकी साधना सुखमय गृहस्थ, पुरुषार्थ, ओजपूर्ण वाणी तथा गुणवान पति या पत्नी की प्राप्ति के लिए किया जाता है। इनकी साधना वाममार्गी साधकों में अधिक प्रचलित है, किंतु सात्विक लोग भी दक्षिणमार्गी पद्धति से इनकी साधना करते हैं।

चार भुजाएं चार वेद हैं। मां मातंगी वैदिकों की सरस्वती हैं। पलाश और मल्लिका पुष्पों से युक्त बेलपत्रों की पूजा करने से व्यक्ति के अंदर आकर्षण और स्तम्भन शक्ति का विकास होता है। ऐसा व्यक्ति जो मातंगी महाविद्या की सिद्धि प्राप्त करेगा, वह अपने क्रीड़ा कौशल से या कला संगीत से दुनिया को अपने वश में कर लेता है। वशीकरण में भी यह महाविद्या कारगर होती है।

यह यंत्र गृहस्थ जीवन में परिवारिक सदस्यों के मध्य मधुर संबंध स्थापित करने में प्रभावी है। सास–बहू, ननद–भाभी आदि कुटुंबियों के बीच परस्पर संबंध मधुर बनते हैं। व्यवहार कुशलता में वृद्धि होती है।

संगीत की साधना एवं संगीत के क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों के लिए विशेष सफलता एवं उन्नतिदायक होता है। इस यंत्र को सोमवार के दिन सुबह कच्चे दूध से अभिषेक करके घर में पूजा स्थल पर स्थापित करना चाहिए तथा यंत्र के सम्मुख नित्य दर्शन करके अपनी समस्या के अनुसार प्रार्थना करें। शीघ्र फलप्राप्ति के लिए निम्न मंत्र की एक माला जप करें।

मंत्र : ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा

17. श्री गीता यंत्र

सम्पूर्ण जगत में श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ अति लाभप्रद है। गीता पाठ करने वालों को यंत्र अवश्य ही रखना चाहिए। यंत्र के सम्मुख गीता पाठ करने से सहस्रोगुना अधिक फल मिलता है। पाठ करने में असमर्थता होने पर यंत्र के सम्मुख शुद्ध मन से तुलसी या पंचमुखी रुद्राक्ष की माला पर **ॐ नमों भगवते वासुदेवाय** का जप करना चाहिए। यंत्र की नित्य पंचोपचार पूजा आरती करके श्री कृष्ण अराधना भी की जाती है।

- गीता यंत्र पर प्रतिदिन ग्यारह की संख्या में विल्वपत्र अर्पण करने से लक्ष्मी की संतुष्टि होती है तथा लक्ष्मी लाभ होता है।
- गीता यंत्र की नित्य उपासना से मन को शान्ति और ज्ञान की प्राप्ति होती है। स्थिति प्रज्ञ होने के लिए गीता यंत्र की उपासना सर्वोत्तम है।
- गीता यंत्र की उपासना से घर के अनेक कलह एवं अशान्ति नष्ट होती है तथा घर में शान्ति का वातावरण बना रहता है।
- इस यंत्र की उपासना से भूत, प्रेत एवं पितृ दोष की शान्ति होती है।
- गीता यंत्र की उपासना से विद्या प्राप्ति होती है।
- शास्त्र ज्ञान चाहने वाले को यह यंत्र शास्त्र का लाभ दिलाता है।

मंत्र : **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

18. पंचांगुली यंत्र

ध्यान :

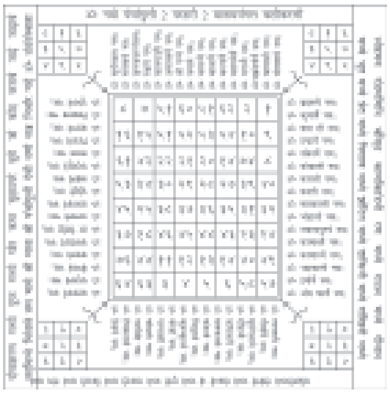

ॐ पंचांगुली महादेवी श्री सीमधर शासने। अध्ष्ठात्रि करस्यासौ शक्ति श्री त्रिदशेशितुः।।

यह यंत्र हस्तरेखा व ज्योतिष संबंधी ज्ञान की वृद्धि में सहायक होता है। इस यंत्र की पूजा करने से साधक सटीक व सफल भविष्यवाणियां करता है। इस यंत्र के प्रभाव से हाथ देखकर जन्मपत्री निर्माण में सहायता मिलती है और साधक किसी भी व्यक्ति के जीवन में भविष्य में होने वाली घटनाओं को जान सकता है।

इस यंत्र की पूजा से पहले दुर्गा पूजा अवश्य करें। इस यंत्र को कार्तिक मास हस्त नक्षत्र में स्थापित कर देवी का पूजन ध्यान करें, प्रतिदिन मंत्र का एक माला जप करें पंच मेवा से दस आहुतियां दें। यह पूजा मार्गशीर्ष मास में हस्त नक्षत्र आने तक करें।

मंत्र :

ॐ नमो पंचांगुलीं पंचांगुली परशरी परशरी मातामयंगल वशीकरणी लोहमयदंडमणिनि चौंसठ काम विहंडनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीवानमध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोंटिगमध्ये डाकिनीमध्ये शंखिनी मध्ये यक्षिणीमध्ये दोषेणीमध्ये शेकनीमध्ये गुणीमध्ये गारुड़ीमध्ये विनारीमध्ये दोषमध्ये दोषाशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोर कष्ट मुझ उपरे बुरो जो कोई करावे जड़े जड़ावे तत् चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्री माता श्री पंचांगुली देवी तणो वज्र निर्धर पड़े ॐ ठं ठं ठं स्वाहा।।

19. गणपति यंत्र

किसी भी शुभ कार्य पर जाने से पूर्व इस यंत्र के दर्शन करें। श्री गणेश सभी कामनाओं की पूर्ति तथा सभी दुखों का हरण करते हैं। इसलिए इनकी पूजा सबसे पहले की जाती है। देवों के देव भगवान् गणपति आदि महाशक्ति के रूप में जाने जाते हैं और प्रथम पूज्यनीय है। विघ्नों के विनाश के लिए ये अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। किसी भी क्षेत्र में ऋद्धि–सिद्धि हेतु श्री गणेश यंत्र सदैव लाभ देता है और कार्यो को निर्विघ्न सम्पन्न होने के लिए सहायता करता है। यह यंत्र चल एवं अचल दोनों तरह से प्रतिष्ठित किया जाता है।

गणेश विघ्न निवारण के देवता हैं सभी कार्यो में सफलता हेतु गणेश की उपासना सर्वश्रेष्ठ मानी गयी है। चारों वेदों एवं पुराणों में गणेश की श्रेष्ठता का वर्णन बार–बार आता है। विघ्नों को नष्ट करने के लिए गणेश की उपासना आवश्यक है।

इस यंत्र को गणेश चतुर्थी अथवा सोमवार, बुधवार और गुरुवार को प्रातः काल के समय गंगाजल से या शुद्ध ताजे जल से अभिषेक करके चंदन या रोली लगाकर, धूप तथा दीप से पूजन करके अपने घर के पूजा स्थल पर स्थापित करें।

किसी भी शुभ कार्य पर जाने से पूर्व गणेश यंत्र के सम्मुख खड़े होकर यंत्र को भक्ति भाव से प्रणाम करके मंगल की कामना करते हुए बैठकर निम्न मंत्र की एक माला जप करें।

मंत्र : ॐ गं गणपतये नमः।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

20. स्वास्तिक गणेश यंत्र

स्वास्तिक शब्द सू उपसर्ग अस् धातु से बना है। सू अर्थात कल्याण, मंगल और अस् अर्थात सत्ता। अतः स्वास्तिक शब्द का अर्थ है 'कल्याण हो'। हिंदू संस्कृति में स्वास्तिक चिन्ह का प्रचलन वैदिक युग से है। इसका वर्णन ऋग्वेद की ऋचा में भी मिलता है। स्वास्तिक चिन्ह हमारी पूजा पद्धति का एक अभिन्न अंग है। प्रत्येक मंगल कार्य में स्वास्तिक चिन्ह रोली द्वारा बनाने के पश्चात स्वस्तिवाचन किया जाता है। स्वास्तिक चिन्ह की चार भुजाएं शक्ति, प्रगति, प्रेरणा और सौंदर्य की प्रतीक हैं। मंगल चिन्ह की ये चारों भुजाएं मनुष्य को प्रगति के पथ की ओर जाने की प्रेरणा देती है।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धा श्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यौं अरिष्टनेमिः, स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु'।।

स्वास्तिक चिन्ह का वैज्ञानिक आधार : स्वास्तिक चिह्न का स्वरूप गणित के 'प्लस' अर्थात योग चिह्न जैसा है। विज्ञान के अनुसार इस जगत में नकारात्मक और सकारात्मक शक्तियां प्रवाहित होती हैं– जब ये शक्तियां आपस में मिलती है तब इनके मिलन बिंदु को योग चिन्ह (+) कहा जाता है।यह यंत्र देवों के देव व सर्वप्रथम पूजनीय भगवान गणेश का यंत्र है, जो अत्यंत ही प्रभावशाली व कार्य सफलता में विशेष सहयोगी है। इस यंत्र में स्वास्तिक चिन्ह के ऊपर भगवान गणेश का बारह नाम अंकित रहते हैं प्रत्येक नाम की अपनी एक विशेष महत्त्व है। इन नामों के स्मरण मात्र से सभी विघ्न दूर हो जाते हैं। इस यंत्र के पूजने से व्यक्ति को सर्व सम्मान, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता व नेतृत्व शक्ति व वाकपटुता आती है। इस यंत्र को बुधवार को स्थापित करना चाहिए।

मंत्र : **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजन मे वशमानय ठः ठः।**

21. हनुमान यंत्र

हनुमान् देवता प्रोक्तः सर्वाभीष्टफलप्रदः।

श्रीहनुमान् जी भगवान् श्रीराम के भक्त हैं। इनका जन्म वायुदेव के अंश से और माता अंजनि के गर्भ से हुआ है। श्रीहनुमान् जी बालब्रह्मचारी महान् वीर अत्यन्त बुद्धिमान्, स्वामिभक्त हैं।

हनुमान जी सकल भय, व्याधि, पीड़ा, अपशकुनों के हरणकर्ता हैं। उनकी कृपा से सभी अमंगलों का नाश व जीवन मंगलमय होता है। इस यंत्र को मंगलवार के दिन अपने घर पर स्थापित करके श्रद्धा–भक्ति पूर्वक दर्शन–पूजन करें। यंत्र के दर्शन और मंगलमय यात्रा की प्रार्थना करके घर से निकलें।

हनुमान यंत्र पौरुष को पुष्ट करता है पुरुषों की अनेक बीमारियों को नष्ट करने के लिए इसमें अद्भुत शक्ति पायी जाती है जैसे– स्वप्न दोष, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, धातु रोग, नपुंसकता आदि को नष्ट करने के लिए यह अत्यन्त लाभकारी यंत्र है। यह यंत्र मनुष्यों को विष, व्याधि, शान्ति, मोहन, मारण, विवाद, स्तम्भन, द्यूत, भूतभय, संकट, वशीकरण, युद्ध, राजद्वार, संग्राम एवं चौरादि द्वारा संकट उपस्थित होने पर निश्चित रूप से इष्टसिद्धि प्रदान करता है।

मंत्र : **ॐ हनुमते नमः।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

22. वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र

आज के व्यस्त जीवन में हर किसी को वाहन दुर्घटना होने की आशंका बनी रहती है। यह यंत्र साथ में रखने से वाहन दुर्घटना होने से रक्षा होती है तथा अपने निश्चत स्थान के लिए यात्रा तय करने में सरलता होती है एवं यात्रायें सफल होती हैं। इस यंत्र की चल प्रतिष्ठा होती है। दुर्घनानाशक इस शाबर यन्त्र का प्रयोग अमोघ है। नया वाहन खरीदते ही लोग इसे अपने वाहन (ट्रक, बस, कार, स्कूटर) के अगले हिस्से में लगाते हैं तथा उनकी यह मान्यता है कि वायुपुत्र हनुमान की कृपा से वाहन अचानक दुर्घटनाग्रस्त नहीं होते, आई विपत्ति टल जाती है तथा वाहन ठीक समय पर लक्षित स्थान पर पहुंच जाता है।

इस प्रकार से यह यन्त्र वाहन के लिए कवच का काम करता है क्योंकि इसके लगाने से वाहन अभिमन्त्रित व सुरक्षित होकर, अनुकूल लाभ देने लग जाता है यह बात पूर्णतः परीक्षित व सत्य है। यह तो सर्व विदित है कि महाभारत में वीरवर अर्जुन के रथ के अग्र भाग पर हनुमान ध्वज व ऐसा ही कोई यन्त्र रहा होगा जिसके कारण सम्पूर्ण युद्ध के दौरान अर्जुन का रथ जरा सा भी क्षतविक्षत नहीं हो पाया।

यंत्र का उपयोग

किसी भी मंगलवार के दिन हनुमान मंदिर में जाकर इस यन्त्र को मूलमन्त्र से अभिमन्त्रित करके हनुमान जी को भोग आदि लगाकर यंत्र पर लाल पुष्प एवं सिंदूर चढ़ायें तत्पश्चात् श्रेष्ठ चौघड़िये में यन्त्र को अपने वाहन पर लगावें।

मंत्र : **ॐ नमो भगवते आंजनयाय महाबलाय स्वाहा ।**

23. आकर्षण यंत्र

इस यंत्र को अपने घर में नित्य पूजा एवं दर्शन करने से आकर्षण शक्ति में वृद्धि होती है। यंत्र को लाल कपड़े में रखकर कमीज की जेब में या पर्स आदि में रखने पर जिस व्यक्ति को आकर्षित करना चाहें, यंत्र के प्रभाव से उसका आकर्षण हो जाता है। 42 दिन तक श्रद्धा, विश्वासपूर्वक ऐसा प्रयोग करने से सफलता प्राप्त होती है।

इस यंत्र को शुक्रवार के दिन रात्रि के समय गंगाजल अथवा दूध, दही से अभिषेक करके धूप, दीप से पूजन करके, घर में लाल कपड़े के ऊपर स्थापित करें। शीघ्र फलप्राप्ति के लिए निम्न मंत्र की कम से कम एक माला नित्य जप करें।

मंत्र : आकर्षय महादेवि रं मम् प्रियम् हे त्रिपुरे देवदेवेशि तुभ्यम् दश्यामि याचितम्।

नोट : मंत्र में अमुक की जगह जिसको आकर्षित करना चाहे उसके नाम का उच्चारण करें।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

24. वशीकरण यंत्र

जिस क्रिया के द्वारा स्त्री या पुरुष को वश में करके उससे कर्ता की इच्छानुसार कार्य लिया जाता है, उसे वशीकरण कहते हैं। इसकी अधिष्ठात्री देवी सरस्वती है।

अपने से विपरीत कार्य करने वाले को प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष कार्य करने के लिए प्रेरित करने की क्रिया को वशीकरण कहते हैं। यह यंत्र स्त्री, पुरुष, वृद्ध, बालक, राजा, मंत्री, सभी तरह के लोगों को आकर्षित करता है और यंत्र धारी को वांछित सफलता प्रदान करता है। अभिचार कर्म से अच्छा है कि शत्रु को वशीकृत कर लिया जावे। इससे प्रथम लाभ तो यह कि दुष्टजन में सुधार आएगा, द्वितीय यह कि कर्ता किसी दोष का शिकार भी नहीं होगा।

इस वशीकरण य़ंत्र से साधक इस जगत में सर्वप्रिय, लोकप्रिय हो जाता है वह जिस व्यक्ति से मिलता है वह उससे प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकता। वशीकरण यंत्र मुख्यतः माँ कामाख्या का ध्यान करते हुए एवं उन्हीं का मंत्र जप करते हुये यंत्र को सिद्ध किया जाता है और उपयोग में लाया जाता है।

यंत्र का उपयोग

जब पति कुमार्गगामी हो जाए और उसके सुधार के सारे बाह्य प्रयास असफल हो जाएँ तो पत्नी को ऐसे प्रयोगों के माध्यम से पराँम्बा की शरण लेनी चाहिए। इस यंत्र का प्रयोग समाज के किसी भी स्त्री, पुरुष पर किया जा सकता है जब पति–पत्नी के आपसी सामंजस्य कम हो जायें तो ऐसी स्थिति में इस यंत्र का उपयोग अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है।

मंत्र : वशीकरणाय स्वाहा।

25. प्रेमवृद्धि यंत्र

यह यंत्र पति–पत्नी के बीच प्रेम वृद्धि व आकर्षण के लिए उत्तम है। इस यंत्र की पूजा करने से प्रेम वृद्धि व आकर्षण अवश्य होता है।

प्रेमवृद्धि यंत्र को प्रेमी–प्रेमिका, पति–पत्नी आदि के मध्य एक दूसरे के प्रति विशेष प्रेमवृद्धि के लिए उपयोग में लाया जाता है। यंत्र का शुक्रवार अथवा बृहस्पतिवार के दिन रात्रि के समय कच्चे दूध में हल्दी मिलाकर अभिषेक करें तथा गुग्गुल अथवा धूप, दीप, अगरबत्ती से पूजन करके घर की दक्षिण–पूर्व दिशा अथवा पूजा स्थान पर स्थापित करें। इस यंत्र के नित्य दर्शन पूजन करने तथा निम्न मंत्र का जप करने से प्रेमवृद्धि व पति–पत्नी में सामंजस्यता होती है।

मंत्र : **क्लीं कामदेवाय नमः।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

Future Point

26. सुखसमृद्धि यंत्र

व्यापार, विदेश गमन, राजनीति, गृहस्थ जीवन, नौकरी पेशा आदि के कार्य में इस यंत्र का उपयोग करने से सुख एवं समृद्धि प्राप्त होती है। जिन लोगों में अनेक तरह की भ्रान्तियां उत्पन्न होती हैं, घर में निरन्तर क्लेश रहता हो तथा आपसी सम्बन्धों में कटुता उत्पन्न हुयी हो तो यह यंत्र उन लोगों के लिए वरदान स्वरूप साबित होता है। इस यंत्र की पूजा उपासना करने से उन्हें मानसिक शान्ति एवं सहिष्णुता में वृद्धि होती है।

जब वाहन, मकान, नौकरों से कोई न कोई तकलीफ रहती हो व्यापार, व्यवसाय में भयानक उतार चढ़ाव आते हो तथा घाटा होता हो तो ऐसी स्थिति में व्यापारिक एवं व्यवसायिक स्थिति अनुकूल होने के लिए इस यंत्र की पूजा उपासना करना उचित होगा।

यदि आपका भाग्य निर्बल है, हर संभव प्रयास करने पर भी नौकरी नहीं लगती, परीक्षा या साक्षात्कार में असफलता का मुंह देखना पड़ता है तो इस यंत्र का उपयोग लाभदायक है। अथक परिश्रम करने के बाद भी वांछित सफलता जिन्हें नहीं मिलती तथा कार्यो में असफलता मिलती है। बार–बार अपयश का सामना होता है। तो ऐसी स्थिति में यह यंत्र अत्यन्त लाभकारी है इस यंत्र की चल अचल दोनों प्रतिष्ठा होती है। इस यंत्र के सम्मुख लक्ष्मी और गणेश का सम्पुटित मंत्र जप करने से सुख समृद्धि प्राप्त होती है तथा अकारण हुये अपमान का शत्रु प्रायश्चित करता है और जीवन पर्यन्त सम्मान प्रदान करता है।

मंत्र : **ॐ मंगलमूर्तये नमः।**

27. संतान गोपाल यंत्र

मानव जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए एक अच्छे संतान की आवश्यकता होती है। परन्तु–कुछ लोग संतान विहीन होते हैं और संतान की प्राप्ति के लिए अनेक प्रयास करते हैं। ऐसी स्थिति में संतान प्राप्ति हेतु यह यंत्र अत्यन्त चमत्कारिक है। इस यंत्र की प्रतिष्ठा पूजा करने से मनोवांछित संतान की प्राप्ति होती है और वह दीर्घायु तथा गुणवान होता है।

संतान गोपाल यंत्र की साधना अत्यन्त प्रसिद्ध है जिन्हें संतान नहीं उत्पन्न होती है वे बालकृष्ण की मूर्ति के साथ संतान गोपाल यंत्र स्थापित करते हैं तथा उनके सामने संतानगोपाल स्तोत्र का पाठ करते हैं। कुछ लोग 'पुत्रोष्टि यज्ञ' करते हैं पुत्रेष्टि यज्ञ एवं संतान गोपाल यंत्र के द्वारा अवश्य ही संतान की प्राप्ति होती है।

संतान गोपाल यंत्र को गुरुपुष्य नक्षत्र में पूजन एवं प्रतिष्ठा करने के पश्चात् संतान गोपाल स्तोत्र का पाठ करने से शीघ्र ही गृह में कुलीन एवं अच्छे गुणों से युक्त संतान की उत्पत्ति होती है। माता पिता की सेवा में ऐसी संतानें हमेशा तत्पर रहती हैं। संतान गोपाल यंत्र को गोशाला में प्रतिष्ठित करके गोपालकृष्ण का मंत्र का जप श्रद्धापूर्वक करने से वंध्या को भी शीघ्र ही पुत्ररत्न उत्पन्न होता है तथा सभी गुणों से सम्पन्न होता है।

मंत्र : **ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं जीं ओं भूर्भुवः स्वः ॐ देवकीसुतगोविंद वासुदेवजगत्पते।**

देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॐ ॐ स्वः भुवः भूः जीं ह्रीं श्रीं त्वीं ओं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

28. व्यापार वृद्धि यंत्र

कोई भी व्यापार हो अगर उसमें बार–बार हानि हो रही है। चोरभय, अग्नि भय इत्यादि बार–बार परेशान करता हो अथवा किसी अन्य प्रकार से व्यापार में बाधा उत्पन्न होती हो तो यह यंत्र वहां प्रतिष्ठित करने से शीघ्र ही व्यापार वृद्धि एवं लाभ होता है।

इस यंत्र को काम्यकर्म अर्थात कामनापूर्ति के लिए स्थापित किया जाता है इस यंत्र को सम्मुख रखकर भिन्न– भिन्न कामनाओं के लिए पृथक्–पृथक् वस्तुओं से होम करने का विधान शास्त्रों में वर्णित है, उन–उन वस्तुओं से होम करने से तत्–तत् कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

व्यापार वृद्धि यंत्र को पूजा प्रतिष्ठा करने के पश्चात् व्यापार से सम्बन्धित ब्रह्मस्थल में स्थापित किया जाता है और हमेशा पूजा की जाती है ऐसा करने से रुके व्यापार में वृद्धि होती है तथा धन का आगमन होता है। व्यापार में निरन्तर घाटा होने की स्थिति में इस यंत्र को सम्मुख रखकर व्यापार वृद्धि का दस हजार ऋद्धि– सिद्धि मंत्र जपने से शीघ्र ही व्यापार में लाभ होता है। इस यंत्र की अचल प्रतिष्ठा करके व्यक्ति को अपने पास रखने से अनेक तरह से व्यापार में लाभ होता है। प्रतिकूल रहने वाले व्यक्ति भी अनुकूल हो जाते हैं और अनेक प्रकार से लाभ प्रदान करने के लिए आतुर होने लगते हैं तथा निरन्तर व्यापार में लाभ होता जाता है।

मंत्र : **ॐ गं गणपतये नमः।**

29. कुबेर यंत्र

यह यंत्र देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर जी का सिद्ध यंत्र माना जाता है। विशेष रूप से धनतेरस या दीपावली के दिन इस यंत्र को लक्ष्मी–गणेश की पूजा के उपरांत पूजन करके धनकोष या तिजोरी में स्थापित करना चाहिए। इसके प्रभाव से अक्षय धन कोष की प्राप्ति व नवीन आय के स्रोत बनते हैं। स्वर्ण लाभ, रत्न लाभ, गड़े हुए धन का लाभ एवं पैतृक सम्पत्ती का लाभ चाहने वाले लोगों के लिए कुबेर यंत्र अत्यन्त सफलता दायक है। इस यंत्र द्वारा अनेकानेक रास्ते से धन की प्राप्ति होती है एवं धन संचय होता है। इस यंत्र की अचल प्रतिष्ठा होती है।

'शिव पुराण' के अनुसार यक्षराज कुबेर अलकावती नामक नगरी के राजा थे। ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार मेरु पर्वत की चोटी मंदार पर 'चैत्ररथ' नामक एक दिव्य बगीचा है, जहाँ कुबेर आराम करते हैं। अनेक प्रकार के किन्नर–गन्धर्व व अप्सरायें यहाँ कुबेर का नित्य पूजन करती हैं। जिस जगह पर कुबेर ने तपस्या की वह स्थल नर्मदा नदी एवं कावेरी का संगम स्थल था। वह स्थल आज भी 'कौबेर तीर्थ' के नाम से पूजा जाता है।

विल्व–वृक्ष के नीचे बैठकर यंत्र को सम्मुख रखकर कुबेर मंत्र को शुद्धता पूर्वक जप करने से यंत्र सिद्ध होता है तथा यंत्र सिद्ध होने के पश्चात् इसे गल्ले, तिजोरी या सेफ में स्थापित किया जता है। इसके स्थापना के पश्चात् दरिद्रता का नाश होकर, प्रचुर धन व यश की प्राप्ति होती देखी गई है। यह अनुभूत परीक्षित प्रयोग है।

मंत्र : **ॐ कुबेराय नमः।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

30. महामृत्युंजय यंत्र

यह यंत्र मानव जीवन के लिए अभेद्य कवच है, बीमारी अवस्था में एवं दुर्घटना इत्यादि से मृत्यु के भय को यह यंत्र नष्ट करता है। डाक्टर, वैद्य से सफलता न मिलने पर यह यंत्र मनुष्य को मृत्यु से बचाता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा को नष्ट करता है। इसे चल, अचल दोनों तरह से प्रतिष्ठित किया जा सकता है।

महामृत्युंजय यंत्र को सम्मुख रखकर रुद्र सूक्त का पाठ करने से अनोखा लाभ होता है और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से रुद्रसूक्त के मंत्रों में रश्मि विज्ञान के आधार पर गूढ़ रहस्य छुपे हैं, जिसे खोजने के लिए शुद्ध वैज्ञानिक मस्तिष्क चाहिए। महामृत्युंजय यंत्र उच्चकोटि का दार्शनिक यंत्र है जिसमें जीवन–मृत्यु का रहस्य छिपा हुआ है।

महामृत्युंजय यंत्र भगवान मृत्युंजय से सम्बन्धित है जिसका शाब्दिक अर्थ स्पष्ट है कि मृत्यु पर विजय। इस देवता की आकृति देदीप्यमान है तथा यह नाना प्रकार के रूप धारण करने वाला है। यह सब औषधि का स्वामी है तथा वैद्यों में सबसे बड़ा वैद्य है, यह अपने उपासकों के पुत्र–पौत्रादि (बच्चों) तक को आरोग्य व दीर्घायु प्रदान करता है। इसके हाथों को **''मृणयाकु''** (सुख देने वाला) **''जलाष''** (शीतलता, शांति प्रदान करने वाला) तथा **''भेषज''** (आरोग्य प्रदान करने वाला) धारण कहा गया है।

यंत्र के मध्य स्थापित महामृत्युंजय यंत्र के चारों ओर अन्य यंत्र स्थापित कर इसकी शक्ति में वृद्धि की गई है। इसकी साधना से साधक को रोग से मुक्ति मिलती है और स्वास्थ्य उत्तम रहता है। इसमें स्थापित अन्य यंत्रों की अपनी–अपनी महिमा है।

मंत्र : **ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिमपुष्टिवर्धनम् उर्वारूकमिवबन्धनान् मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्**

31. महासुदर्शन यंत्र

यह सुरक्षा प्रदान करने वाला यंत्र है। सुदर्शन विष्णु के सुदर्शन चक्र का प्रतीक है। इस शक्तिशाली यंत्र की उपासना से शत्रुओं का दमन करने में सफलता मिलती है। भगवान विष्णु को विश्व का पोषक माना गया है। इसलिए इस यंत्र में सुरक्षात्मक शक्तियां निहित है। इस यंत्र की सिद्धि के लिए निम्नलिखित मंत्र का जप करें।

मंत्र : **श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी हे नाथ नारायण वासुदेवा।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

32. रामरक्षा यंत्र

यह यंत्र विशेष प्रभावशाली यंत्र है। इस यंत्र को संपूर्ण परिवार की रक्षा के लिए स्थापित किया जाता है, भगवान मर्यादा पुरुषोतम राम की कृपा से साधक पर हर पल कृपा दृष्टि बनी रहती है। मन में संशय, भय, मोह का नाश होता है तथा व्यक्ति निर्भय होकर अपने कार्य क्षेत्र में सफल हो जाता है।

व्यापक ब्रह्म निरंजन, निरगुन विगत विनोद। सोइ अज प्रेम भगति वस, कौशल्या की गोद।।

उस परमसत्ता के मनुष्य रूप में अवतरित होने का मुख्य कारण प्रेम भक्ति है। राम शब्द सभी धर्मों का मूल है। कलियुग में मनुष्य की उम्र इतनी कम रह गई है कि वह यज्ञ, जप, तप आदि नहीं कर सकता है। ऐसे में राम का नाम लेने मात्र से इन सब का फल मिल जाता है।

जो लोग कलिकाल में श्रीराम नाम का आश्रय लेते हैं, उन्हें कलियुग उन्हें बाधा नहीं पहुंचाता।

तुलसी 'रा' के कहत ही, निकसत पाप पहार। पुन आवन पावत नहीं, देत मकार किवार।।

राम बोलते समय 'रा' कहते ही हमारा मुंह खुलता है और हमारे अंदर स्थित पाप निकल जाते हैं। 'म' का उच्चारण करते ही मुंह बंद हो जाता है और पाप पुनः प्रवेश नहीं कर पाते हैं।

शीघ्र फल प्राप्ति के लिए इस यंत्र के सम्मूख बैठकर श्रद्धा विश्वास से रामरक्षा स्तोत्र का पाठ करने से विशेष शुभ फल की शीघ्र प्राप्ति होती है।

मंत्र : **ॐ श्री राम जय राम जय जय राम।**

33. कालसर्पयोग यंत्र

काल का अर्थ है मृत्यु यदि अन्य ग्रह योग बलवान न हों तो कालसर्प योग में जन्मे मनुष्य की मृत्यु शीघ्र हो जाती है। यदि जीवन रहता है तो मृत्युतुल्य कष्ट भोगता है। जन्म कुण्डली में सभी ग्रह का राहु केतु के मध्य होने से कालसर्प योग होता है।

कालसर्पयोग जिसके जन्मांग में है, ऐसे व्यक्ति को अपने जीवन में काफी संघर्ष करना पड़ता है। इच्छित और प्राप्त होने वाली प्रगति में रुकावटें आती हैं बहुत ही विलम्ब से यश प्राप्त होता है। मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक विविध रूप से व्यक्ति परेशान होता है।

कालसर्पयोग से पीड़ित जातक दुर्भाग्य से छुटकारा पाने के लिए तथा पूर्व जन्मकृत पापों को नष्ट करने के लिए और पुण्य का उदय होने के लिए इस यंत्र की पूजा प्रतिष्ठा करें ऐसा करने से लाभ प्राप्त होगा।

इस यंत्र की विधिपूर्वक सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण में पूजा प्रतिष्ठा एवं उपयोग करने से कालसर्पयोग का प्रभाव नष्ट हो जाता है और संघर्षमय जीवन में मानसिक एवं शारीरिक शान्ति प्राप्त होती है।

मंत्र : **ॐ क्लीं मत्स्यरूपाय।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

34. मत्स्य यंत्र

कुछ व्यक्तियों को कठोर परिश्रम और अपार धन का निवेश करने के बाद भी व्यापार, व्यवसाय में वांछित सफलता नहीं मिल पाती है। एक के बाद एक बाधा का सामना करना पड़ता है। कभी–कभी मकान मालिक, किरायेदार, या परिवार के सदस्यों से, लंबे विवाद, या मुकद्दमे में फंसे रहते हैं। इन सब कष्टों के निराकरण के लिए बाधा मुक्ति किट बहुत उपयोगी है।

शत्रुओं पर विजय, मुकद्दमे में जीत, रुके कार्यों में सफलता और बुरी नज़र से बचाव के लिए मत्स्य यंत्र बहुत प्रभावशाली है। इससे जातक का चोट, दुर्घटना, दुर्भाग्य आदि से बचाव होता है। जातक का प्रभा मंडल उज्ज्वल हो जाता है, जिससे वह जिस व्यक्ति से भी कोई कार्य कराना चाहता है, वह उसकी बात मान जाता है। मत्स्य यंत्र को उत्तर, पूर्व, या उत्तर–पूर्व में स्थापित करें। प्रातःकाल, स्नानादि के बाद, यंत्र पर गंगा जल छिड़क कर, उसको स्वच्छ वस्त्र से पोंछ लें। यंत्र को श्रद्धापूर्वक स्थापित करें। इसके सम्मुख घी का दिया जलाएं। यंत्र के पास धूप बत्ती जलाएं। लाल पुष्प अर्पित करें और निम्न मंत्र जप करें।

मंत्र : **ॐ क्लीं मत्स्यरूपाय।**

35. वास्तु यंत्र

भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की तृतीया तिथि, शनिवार, कृतिका नक्षत्र, व्यतीपात योग, विष्टि, करण, भद्रा के मध्य में कुलिक मूहूर्त में वास्तु की उत्पत्ति हुई उसके भयंकर गर्जना से चकित होकर ब्रह्मा ने कहा जो भी व्यक्ति ग्राम, नगर, दुर्ग, मकान, प्रासाद, जलाशय, उद्यान के निर्माणारम्भ के समय मोहवश आपकी उपासना नहीं करेगा या आपके यंत्र को स्थापित नहीं करेगा वह पग–पग बाधाओं का सामना करेगा और जीवन पर्यंत अस्त–व्यस्त रहेगा।

मकान, दुकान, कम्पनी, धर्मशाला, मन्दिर और मोटरगाड़ियों में भी वास्तु का निवास होता है। अगर किसी कारण स्थान निर्माण में वास्तु दोष उत्पन्न होता है तो वास्तु देवता को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने के लिए अनेक उपाय किये जाते हैं। जिनमें वास्तु यंत्र सरल एवं अधिक उपयोगी है इस यंत्र को स्थापित करने से वास्तु दोष का निवारण होता है तथा उस स्थान में सुख समृद्धि का वर्चस्व होता है। इस यंत्र को चल या अचल दोनों प्रकार से प्रतिष्ठित किया जाता है।

प्रत्येक वर्ष यज्ञादि में, पुत्र जन्म पर, यज्ञोपवीत, विवाह, महोत्सवों में, जीर्णोद्धार, धान्य संग्रह में, बिजली गिरने से टूटे हुए घर में, अग्नि से जले हुए घर पर, सर्प व चांडाल से घिरे हुए घर पर, उल्लू और कौआ सात दिन तक जिस घर में रहते हैं, जिस घर में रात्रि में मृत वास करें, गौ व मार्जार गर्जना करें, हाथी, घोड़े विशेष शब्द करें और जिसमें स्त्रियों के झगड़े होते हों, जिस घर में कबूतर रहते हों और अनेक प्रकार के उत्पात होते हों वहां वास्तुयंत्र अवश्य स्थापित करें।

मंत्र : **ॐ वास्तुपुरुषाय नमः।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

36. दशमहाविद्या महायंत्र

शक्ति उपासना में दशमहाविद्या महायंत्र का अत्यंत गौरवपूर्ण वर्णन मिलता है। जिस प्रकार वैष्णव जनों में विष्णु के दशावतारों की विशेष उपासना प्रचलित है, उसी प्रकार शाक्त संप्रदाय में दशमहाविद्या उपासना, विशेष रूप से नवरात्र के अवसर पर, अत्यंत प्रशस्त है।

दशमहाविद्या महायंत्र, समस्त इच्छाओं की पूर्ति, शक्तिमान व भूमिवान बनाने के अतिरिक्त समस्त सिद्धियों को सुलभ करवाता है तथा धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

श्रीयंत्र यंत्र के चारों ओर भगवती दुर्गा के दशावतारों काली, तारा, त्रिपुरसुंदरी, भुवनेश्वरी, त्रिपुर भैरवी, बगलामुखी, छिन्नमस्ता, धूमावती व कमला के यंत्रों को स्थापित करके पूजन किया जाता है। इन सभी शक्तियों के संयुक्त आशीर्वाद से जीवन को अधिक से अधिक सार्थक व सफल बनाया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त महालक्ष्मी मंत्र का जप और दशमहाविद्या स्तोत्र, दुर्गासप्तशती, दुर्गासहस्रनाम, श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त, सौंदर्य लहरी आदि का पाठ करके मनोवांछित फल की प्राप्ति की जा सकती है।

दशमहाविद्या महायंत्र को सामने रख कर शक्ति के निम्नलिखित नवार्ण मंत्र का जप करने से समस्त पुरुषार्थों की सिद्धि होती है।

मंत्र : "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै।"

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

37. सूर्य यंत्र

ब्रह्मांड में सूर्य ही सर्वोपरि ग्रह है जिसके इर्द गिर्द सभी सितारे, ग्रह और नक्षत्र घूमते हैं। पृथ्वी के सभी जड़ और चेतन पदार्थों पर इसकी रश्मियों का प्रभाव पड़ता हैं मौसम, वनस्पति, मानव सभी सूर्य किरणों से प्रभावित होते हैं डॉक्टरों और वैज्ञानिकों की मान्यता है कि उगते हुए सूर्य को, जल के माध्यम से देखने पर नेत्र रोगों को दूर करने में सहायता मिलती है।

इसके अशुभ होने पर नेत्र रोग, अस्थि रोग, हृदय रोग, पित्त रोग, ज्वर, मूर्च्छा, चर्म रोग, रक्त स्राव आदि हो सकते हैं।

'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' वेदों के अनुसार सूर्य संपूर्ण जगत की आत्मा है। सूर्य का हमारे आध्यात्मिक जीवन तथा भौतिक जीवन से घनिष्ठ संबंध है। जीवन में अच्छी आयु–आरोग्यता इसी ग्रह की कृपा से प्राप्त होती है। इस यंत्र को सूर्य ग्रह की शुभता के लिए विशेष रूप से घर में स्थापित करके साधना की जाती है। सामान्यतः इस यंत्र के नित्य दर्शन मात्र से ही लाभ हो जाता है। सूर्य की कृपा से साधक व्यक्ति में आत्म–विश्वास की वृद्धि होकर सर्वत्र यश, सुख, धन की प्राप्ति होती है।

सूर्य ग्रह अगर कुंडली में अशुभ या कमजोर स्थिति में हो अथवा सूर्य ग्रह की महादशा/अंतरदशा चल रही हो तो आंख में किसी न किसी प्रकार की पीड़ा या हड्डी संधी रोग होने की संभावना रहती है। ऐसे में इस यंत्र के पूजन से विशेष शांति प्राप्त होती है। आत्म विश्वास में कमी हों, मन बार–बार कुंठित रहता हो, अधिक परिश्रम करने पर भी उत्तम फल न मिलता हो ऐसी स्थिति में इस यंत्र के नत्य दर्शन पूजन से लाभ मिलता है।

मंत्र : **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।**

38. चंद्र यंत्र

चंद्र जल तत्व, दीर्घ कद का ग्रह है। इसके अशुभ प्रभाव से मनोविकार, मूत्र विकार, पीलिया, नाक से संबंधित रोग, कफ, रक्तचाप, चेहरे से संबंधित रोग, जठर अग्नि का मंद होना, स्त्रियों के संसर्ग से उत्पन्न रोग, अतिसार, क्षय रोग आदि होते हैं। 'चंद्रभामनसोजातः' वेदों के अनुसार चंद्रमा संपूर्ण प्राणियों के मन का कारक है। इसकी उत्पत्ति विराट पुरुष (परमेश्वर) के मन से हुई है। संपूर्ण जगत के प्राणियों के मन पर इसका प्रभाव पड़ता है, इसके अतिरिक्त चंद्रमा संपूर्ण वनस्पति, औषधियों पर अमृतवर्षा करता है।

इस यंत्र की साधना विशेषतया मानसिक सुख शांति तथा आर्थिक समृद्धि के लिए की जाती है। इस यंत्र के नित्य दर्शन से व्यक्ति का मन प्रसन्न रहता है जिससे व्यवहार में भी सरसता आती है तथा जीवन में व्यक्ति अपनी मृदुल प्रकृति से सफल हो जाता है।

अगर जन्मकुंडली में चंद्र ग्रह अल्पवली हो अथवा अशुभ हो या चंद्र ग्रह की दशा/अंतरदशा के समय इस यंत्र का नित्य पूजन करने से विशेष लाभ होता है।

मन बार–बार अशांत रहता हो तथा किसी कार्य में मन न लगता हो ऐसी परिस्थिति में इस चंद्र यंत्र के नित्य दर्शन, पूजन से शांति प्राप्त होती है।

शीघ्र लाभ के लिए इस यंत्र में अंकित मंत्र की नित्य एक माला जप करें।

मंत्र : **ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

39. मंगल यंत्र

मंगल ग्रह के अशुभ होने से रक्तचाप, रक्ति विकार, खुजली, फोड़ा–फुंसी, रक्तस्राव, कुष्ठ रोग, आकस्मिक दुर्घटना जन्य रोग, अग्नि भय, गुप्त रोग, सूजन, वात, पित्त संबंधी रोग होते हैं।

कार्य सफल होगा या नहीं ऐसी भावनायें बार–बार मन में उठती हैं। कई बार कार्य असफल भी होते हैं। ऐसे कार्यों को निर्धारित करते समय में बिना किसी परेशानी के सफलता पाने के लिए यह यंत्र अत्यन्त उपयोगी है।

व्यापार, विदेश गमन, राजनीति, गृहस्थ जीवन, नौकरी पेशा आदि में इस यंत्र का उपयोग करने से सुख एवं समृद्धि प्राप्त होती है।

जब वाहन, मकान, नौकरों से कोई न कोई तकलीफ रहती हो व्यापार व्यवसाय में भयानक उतार–चढ़ाव आते हों तथा घाटा होता हो तो ऐसी स्थिति में व्यापारिक एवं व्यवसायिक स्थिति अनुकूल होने के लिए इस यंत्र की पूजा उपासना करना उचित होगा।

अथक परिश्रम करने के बाद भी वांछित सफलता जिन्हें नहीं मिलती तथा कार्यों में असफलता मिलती है। बार–बार अपयश का सामना होता है। तो ऐसी स्थिति में यह यंत्र अत्यन्त लाभकारी है। इस यंत्र के सम्मुख सिद्धि विनायक मंत्र का जप करने से सुख समृद्धि प्राप्त होती है तथा आकरण हुये अपमान का शत्रु प्रायश्चित करता है और जीवनपर्यन्त सम्मान प्रदान करता है।

मंत्र : **ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।**

40. बुध यंत्र

इसके अशुभ होने से गले के रोग, हिस्टीरिया, चक्कर आना, त्रिदोष ज्वर, टाइफाइड, पांडु, मंदाग्नि, उदर रोग आदि होते हैं। बुध ग्रह का संबंध सौम्यता तथा बुद्धि से है। विशेष रूप से इसका प्रभाव बुद्धि पर रहता है। वर्तमान युग में बुद्धि का और भी महत्व बढ़ गया है। आज जितनी भी विज्ञान ने उन्नति की है वह साखात् मानव बुद्धि का ही चमत्कारिक फल है।

बुध यंत्र की साधना विशेषतया निर्मल बंद्धि तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए लाभकारी होती है। इस यंत्र के प्रतिदिन दर्शन मात्र से व्यक्ति की बुद्धि कुशाग्र होती है, व्यवहार में सौम्यता की वृद्धि होती है साक्षात्कार आदि में सफलता मिलती है। जीवन में अनावश्यक रूप से बुद्धि भ्रमित नहीं होती है।

यंत्र का उपयोग : जन्म कुंडली में यदि बुध ग्रह अशुभ या निर्बल हो अथवा बुध की महादशा अंतरदशा के समय इस यंत्र की अपने घर में नित्य पूजा करने से उत्तम सुख, शांति प्राप्त होती है। साक्षात्कार आदि में सफलता प्राप्त करने के लिए इस यंत्र की नित्य पूजा करने से साक्षात्कार में सफलता मिलती है।

विशेष : शीघ्र सफलता के लिए इस यंत्र में अंकित मंत्र का यंत्र के सम्मुख बैठकर नित्य जप करने से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

मंत्र : **ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

41. गुरु यंत्र

गुरु के निर्बल होने पर यकृत रोग, मज्जा रोग, मोटापा, दंत रोग, मस्तिष्क विकार, कर्ण रोग, वायु जन्य विकार, तनाव आदि होते हैं। बृहस्पति ग्रह अध्यात्म, विवेक, ज्ञान तथा परोपकार आदि का कारक है। अध्यात्मिक साधना में सिद्धि के लिए इस ग्रह का विशेष महत्व है, इसके अतिरिक्त पारलौकिक सुख, ज्ञान, विद्या, न्याय, श्रेष्ठ गुण तथा धर्म–कर्म संबंधी कार्यो से इसका धनिष्ठ संबंध है। स्त्री जातक के लिए इस ग्रह से पति सुख का विचार किया जाता है।

बृहस्पति यंत्र की साधना मुख्यतः विद्या प्राप्ति, यश, धन एवं आघ्यात्म सुख, शांति के लिए अधिक फलदायी होती है। इस यंत्र के नित्य दर्शन, पूजन से व्यक्ति की अभ्यांतर शक्ति जागृत होती है। जिससे नई चेतना का उदय होता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्ति बुद्धि विवेक से सफल होते हैं। यदि कन्या के विवाह में विलंब हो रहा हो तो इस यंत्र की नित्य प्रति धूप, दीप से पूजा करें। अध्ययन में बाधाएं आती हों, मन न लगता हो ऐसी परिस्थिति में इस मंत्र की नित्य पूजा से लाभ प्राप्त होता है।

विशेष : इस यंत्र में अंकित मंत्र का प्रतिदिन जप करने से शीघ्र कार्य सिद्धि होती है।

मंत्र : **ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।**

42. शुक्र यंत्र

शुक्र जल तत्व, मध्यम कद का जलीय ग्रह है। शरीर में यह वीर्य, शुक्राणु, जननेन्द्रिय, स्वर, गर्भाशय, नेत्र एवं संवेग शक्ति को प्रभावित करता है इसके निर्बल एवं अशुभ होने पर वीर्य संबंधी रोग, गुप्त रोग, मूत्र विकार, स्त्री संसर्ग जन्य रोग, नशीले द्रव्यों के सेवन से उत्पन्न रोग, मधुमेह, उपदंश, प्रदर रोग, कफ, वायु विकार रोग होते हैं।

शुक्र सांसारिक सुखों का प्रदायक ग्रह है। रूप–सौंदर्य, प्रेम, वासना, धन–संपत्ति तथा दाम्पत्य सुख का कारक ग्रह है। इसके अतिरिक्त नृत्य संगीत, गायन श्रृंगार की वस्तुओं एवं मनोरंजन से जुड़े सिनेमा, टैलिविजन आदि पर इस ग्रह का विशेष प्रभाव है। पुरुषों के लिए यह स्त्री सुख कारक ग्रह है।

शुक्र यंत्र की साधना विशेषतया भौतिक सुख, संपदा, धन, ऐश्वर्य की वृद्धि के लिए करनी चाहिए। इस यंत्र के नित्य दर्शन, पूजन से साधक को जीवन में कभी भी भौतिक सुख–संसाधनों की कमी नहीं होती है। वैवाहिक जीवन में दांपत्य सुख की वृद्धि होती है तथा पति–पत्नी के संबंधों में सरसता बनी रहती है।

उपयोग : शुक्र ग्रह अशुभ, निर्बल स्थिति में हो, अथवा शुक्र की महादशा/अंतरदशा चल रही हो ऐसे समय में इस यंत्र को अपने घर में स्थापित करके नित्य पूजन, दर्शन से सु,ख, शंति प्राप्त होती है।

गृहस्थ सुख में कमी हो, पति–पत्नी का एक दूसरे के प्रति कम आकर्षण रहता हो, ऐसी स्थिति में इस यंत्र की नित्य पूजा करने से लाभ होता है।

मंत्र : **ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।**

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

43. शनि यंत्र

शनि वायु तत्व, दीर्घ कद का शुष्क ग्रह है। यह शरीर के स्नायु संस्थान, हड्डियों के जोड़, घुटने, पैर, मज्जा और वात को प्रभावित करता है। इसके अशुभ होने पर स्नायु रोग, जोड़ों में दर्द, अपचन, अपराधी प्रवृत्ति, निराशाजनय मानसिक रोग आदि होते हैं।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शनि प्रतिकूल होने पर अनेक कार्यों में असफलता देता है, कभी वाहन दुर्घटना, कभी यात्रा स्थागित तो कभी क्लेश आदि से परेशानी बढ़ती जाती है ऐसी स्थितियों में ग्रह पीड़ा निवारक शनि यंत्र की शुद्धता पूर्ण पूजा प्रतिष्ठा करने से अनेक लाभ मिलते हैं। यदि शनि की ढ़ैया या साढ़ेसाती का समय हो तो इसे अवश्य पूजना चाहिए।

श्रद्धापूर्वक इस यंत्र की प्रतिष्ठा करके प्रतिदिन यंत्र के सामने सरसों के तेल का दीप जलायें। नीला, या काला पुष्प चढ़ायें। ऐसा करने से अनेक लाभ होगा। मृत्यु, कर्ज, मुकद्दमा, हानि, क्षति, पैर आदि की हड्डी, बात रोग तथा सभी प्रकार के रोग से परेशान लोगों हेतु यंत्र अधिक लाभकारी है। नौकरी पेशा आदि के लोगों को उन्नति शनि द्वारा ही मिलती है अतः यह यंत्र अति उपयोगी है, जिसके द्वारा शीघ्र ही लाभ पाया जा सकता है।

मंत्र : **ॐ प्रां प्री प्रौं सः शनैश्चराय नमः।**

44. राहु यंत्र

राहु वायु तत्व एवं मध्यम कद वाला ग्रह है। यह शरीर में मस्तिष्क, त्वचा, रक्त तथा वात को प्रभावित करता है। इसके कुंडली में अशुभ होने पर कृमि रोग, मिरगी, उदर रोग, जहरीले जंतुओं का भय, कुष्ठ, कैंसर आदि होते हैं।

राहु का संबंध आकस्मिक लाभ तथा आकस्मिक शुभाशुभ घटनाओं से है, राहु व्यक्ति के जीवन में अस्थिरता लाता है। जीवन में स्थिरता न होने से व्यक्ति की उन्नति रूक जाती है। इसके प्रभाव से मानसिक उलझनें एवं शारीरिक अस्वस्थता रहती है। जिन व्यक्तियों के जीवन में बहुत प्रयास करने के पश्चात भी अस्थिरता बनी रहती उनको इस यंत्र के नित्य दर्शन, पूजन से नई चेतना जाग्रत होती है, साहस तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। विरोधियों की पराजय होती है।

राहु ग्रह निर्बल, तथा अशुभ हो, अथवा राहु की महादशा/अंतर्दशा चल रही हो ऐसी स्थिति में इस यंत्र को श्रद्धा, विश्वास पूर्वक घर में स्थापित करके प्रतिदिन पूजन, दर्शन से शुभ फल की प्राप्ति होती है।

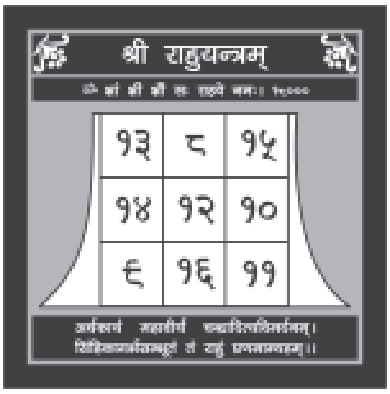

परिश्रम करने के पश्चात भी यदि परिश्रम का पूर्ण फल न मिलता हो तथा बार–बार व्यवसाय में परिवर्तन करना पड़ता हो तो ऐसी परिस्थिति में इस यंत्र की नित्य पूजा से मनोवांछित लाभ होता है।

कोर्ट–कचहरी आदि के मामलों से होनेवाली परेशानी से वचन के लए यंत्र की घर पर नित्य विधिवत पूजा करने से अनिष्ट फल की शांति होती है।

विशेष : शीघ्र फल प्राप्ति के लिए यंत्र में अंकित मंत्र का नित्य एक माला जप करें।

मंत्र : **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

45. केतु यंत्र

केतु वायु तत्व और ह्रस्व कद वाला ग्रह है। यह शरीर में चर्म, वात तथा रक्त को प्रभावित करता है। इसके अशुभ होने से आलस्य, किसी भी काम में मन न लगना, शरीर पर चोट, वात पीड़ा, अलर्जी, चर्म रोग आदि होते हैं।

केतु का संबंध गुप्त विद्या, जासुसी कार्य, तंत्र मंत्र सिद्धि, धार्मिक यात्रा, दुःख, मानसिक शोक संताप शस्त्राघात आदि घटनाओं से विशेष रूप से है। केतु के कारण जीवन में मानसिक संताप, अनावश्यक भय, व्याधि पीड़ा होती है।

केतु यंत्र की पूजा विशेषतया मानसिक वेदना तथा अनावश्यक आकस्मिक व्याधियों से बचने के लिए की जाती है। यदि मन बार–बार अशांत रहता हो तो इस यंत्र की प्रतिष्ठा करके नित्य, दर्शन, पूजन करने से मन में शांति बनती है जिससे मानसिक तथा शारीरिक रूप से स्वास्थ्य लाभ होता है।

यंत्र का उपयोग : जन्म कुंडली में यदि केतु ग्रह निर्बल अथवा अशुभ हो अथवा केतु की महादशा, अंतरदशा चल रही हो तो ऐसे समय में इस यंत्र को घर में स्थापित करके निष्ठापूर्वक नित्य पूजन, दर्शन से केतु ग्रह की शांति होती है। भूत, प्रेत आदि अशुभ बाधाओं से ग्रसित होने पर इस यंत्र को शनिवार के दिन पूजित करके नित्य अपने पास रखने से इन बाधाओं से रक्षा होती है। यदि किसी बीमारी का डॉक्टरी इलाज के पश्चात भी पता न लग रहा हो तो ऐसी स्थिति में इस यंत्र के नित्य दर्शन, पूजन से लाभ प्राप्त होता है।

विशेष : शीघ्र फल प्राप्ति के लिए यंत्र में अंकित मंत्र का नित्य एक माला जप करने से शीघ्र शुभ फल की प्राप्ति होती है।

मंत्र : ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः केतवे नमः।

46. सम्पूर्ण व्यापार वृद्धि यंत्र

सम्पूर्ण व्यापार वृद्धि यंत्र की स्थापना और आराधना से बिक्री में वृद्धि होती है, धन और प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। यंत्र को उत्तर, पूर्व, या उत्तर–पूर्व में स्थापित करें। व्यवसायियों के अतिरिक्त सेवारत व्यक्ति भी इससे लाभान्वित होते हैं। इस यंत्र की पूजा करने से शांति मिलती है और धैर्य में वृद्धि होती है। सम्पूर्ण व्यापार में हानि की संभावना कम हो जाती है और सुख–संपदा की प्राप्ति होती है। 12 अन्य यंत्रो का समावेश इसे अधिक प्रभावशाली बनाता है। इस यंत्र के सम्मुख लक्ष्मी और गणेश के मंत्रों का जप करना चाहिए।

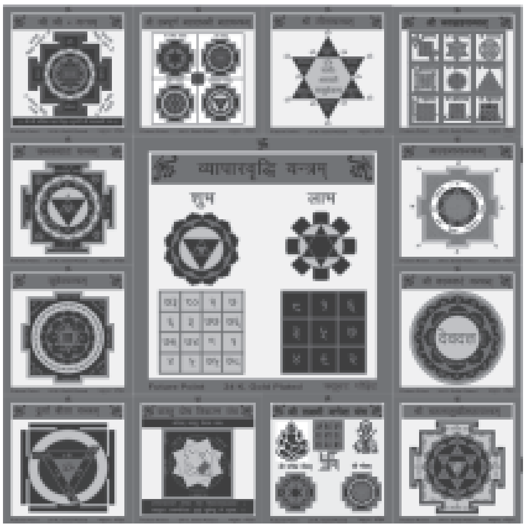

प्रातःकाल, स्नानादि के बाद, यंत्र पर गंगा जल छिड़क कर, उसको स्वच्छ वस्त्र से पोंछ लें। श्रद्धापूर्वक स्थापित करें। इसके सम्मुख घी का दिया जलाएं। यंत्र के पास धूपबत्ती जलाएं। पीले पुष्प अर्पित करें और बुधवार को स्फटिक रुद्राक्ष की माला पर निम्न मंत्र का 108 बार जप करें :

मंत्र : ॐ गं गणपतये नमः।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

47. सम्पूर्ण विद्यादायक यंत्र

संपूर्ण विद्यादायक यंत्र के दर्शन, पूजन मात्र से मां सरस्वती अपनी असीम अनुकंपा से संपूर्ण विद्या प्राप्ति के द्वार खोल देती है। जिन विद्यार्थियों को अधिक परिश्रम करने के बावजूद भी परिक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त नहीं होते, उनके लिए संपूर्ण विद्यादायक यंत्र वरदान सिद्ध साबित हुआ है।

सरस्वती बुद्धि और संगीत की देवी है। सम्पूर्ण विद्यादायक यंत्र की आराधना से विचारशीलता, कठिन विद्या समझने की क्षमता, स्मरण शक्ति और एकाग्रता की वृद्धि होती है। मानसिक विकारों और पागलपन से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए यह यंत्र औषधि के समान कार्य करता है। सम्पूर्ण विद्यादायक यंत्र की उपासना से वैवाहिक जीवन सुखी होता है और अविवाहितों को मनोवांछित जीवन साथी मिलता है। आध्यात्मिक ज्ञान की उपलब्धि के लिए भी सरस्वती जी की कृपा अनिवार्य है। मध्य में सरस्वती यंत्र के साथ साथ इस यंत्र में गुरु यंत्र, बुध यंत्र, गायत्री यंत्र, सर्वकार्य सिद्धि यंत्र एवं अन्य ग्रहों के यंत्र भी सम्मिलित किए गये हैं। इस यंत्र को उत्तर, पूर्व, या उत्तर–पूर्व दिशा में स्थापित करें।

प्रातःकाल, स्नानादि के बाद, यंत्र पर गंगा जल छिड़क कर, उसे स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर श्रद्धापूर्वक स्थापित करें। इसके सम्मुख घी का दिया व धूपबत्ती जलाएं। मिश्रित रंगों के पुष्प अर्पित करें और बुधवार के दिन तुलसी की माला पर निम्न मंत्र का 108 बार जप करें :

मंत्र : ॐ ऐं महासरस्वत्यै नमः।

48. सम्पूर्ण बाधामुक्ति यंत्र

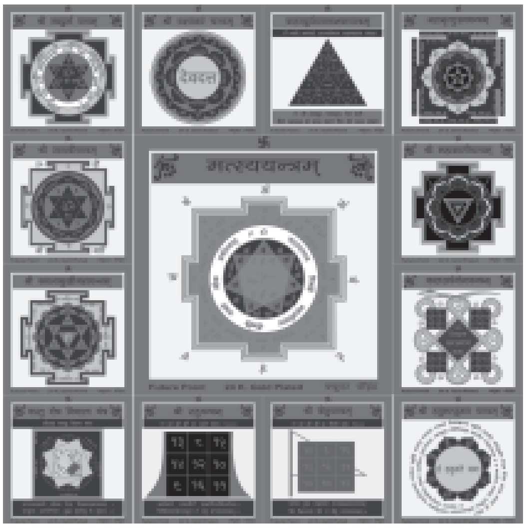

शत्रुओं पर विजय, मुकद्दमे में जीत, रुके कार्यों में सफलता और बुरी नज़र से बचाव के लिए सम्पूर्ण बाधामुक्ति यंत्र बहुत प्रभावशाली है। इससे जातक का चोट, दुर्घटना, दुर्भाग्य आदि से बचाव होता है। जातक का प्रभा मंडल उज्ज्वल हो जाता है। इसके मध्यम मत्स्य और साथ में कुबेर, वास्तु, सर्वकार्य सिद्धि यंत्र और अन्य नवग्रह यंत्र है। इसको उत्तर, पूर्व, या उत्तर–पूर्व दिशा में स्थापित करें।

प्रातःकाल, स्नानादि के बाद, यंत्र पर गंगा जल छिड़क कर, उसको स्वच्छ वस्त्र से पोंछ लें। और श्रद्धापूर्वक स्थापित करें। इसके सम्मुख घी का दिया जलाएं। यंत्र के पास धूपबत्ती जलाएं। लाल पुष्प अर्पित करें और वैजयंती माला पर निम्न मंत्र का 108 बार जप करें।

मंत्र : सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

49. सम्पूर्ण रोगनाशक यंत्र

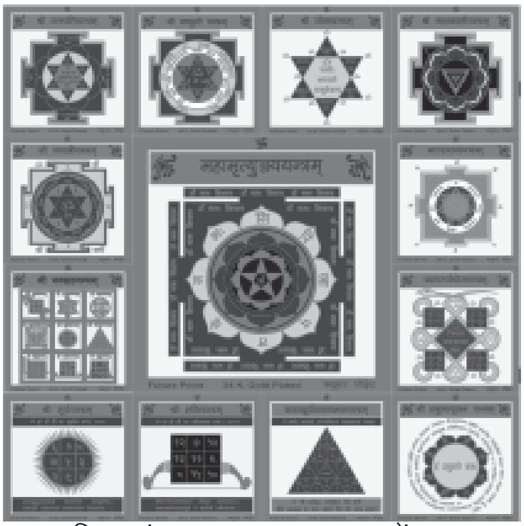

सम्पूर्ण रोगनाशक यंत्र जन्मांग में कमजोर और पीड़ित ग्रहों के बुरे प्रभाव को कम करता है।

इस यंत्र के मध्य में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित किया गया है, जो आराधक को शारीरिक सुरक्षा का कवच प्रदान करता है। इसके अन्य 12 यंत्रों के पूजन से असाध्य एवं प्रदूषण से होने वोल रोगों से सुरक्षा मिलती है। यह पितृ दोष, वास्तु दोष, टोना टोटका, चोट, वात रोग अथवा बुरे कर्मों से उत्पन्न होने वाले रोगों से रक्षा करता है।

पूजन विधि

सोमवार के दिन, प्रातःकाल स्नानादि के बाद, यंत्र पर गंगा जल छिड़क कर, उसे स्वच्छ वस्त्र से पोंछ लें। और श्रद्धापूर्वक स्थापित करें। इसके सम्मुख घी का दिया जलाएं। यंत्र के पास धूपबत्ती जलाएं। श्वेत पुष्प अर्पित करें और रुद्राक्ष माला पर निम्न मंत्र का 108 बार जप करें।

सम्पूर्ण रोगनाशक यंत्र के साथ निम्न मंत्र का स्मरण करना चाहिए :

मंत्र : ॐ त्र्यंबकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्। ऊर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

50. सम्पूर्ण काल सर्प यंत्र

काल सर्प योग अनिष्टकारी होता है। परिश्रम का मनवांछित परिणाम नहीं मिलता और कोई न कोई कमी खटकती रहती है। इसमें अन्य 12 यंत्रों को लगाया गया है जिससे इस यंत्र की शक्ति कई गुणा बढ़ जाती है। प्राण प्रतिष्ठित काल सर्प यंत्र को गृह, या कार्यालय में रखने से काल सर्प योग के दुष्प्रभावों से मुक्ति मिलती है सम्पूर्ण कालसर्प यंत्र पूजन से वास्तु दोष, पितृ दोष एवं अन्य ग्रह दोषों से मुक्ति मिलती है। इस यंत्र को दक्षिण, पश्चिम, या दक्षिण–पश्चिम दिशा में स्थापित करें। निम्न मंत्र का जप काल सर्प यंत्र के सम्मुख करना चाहिए :

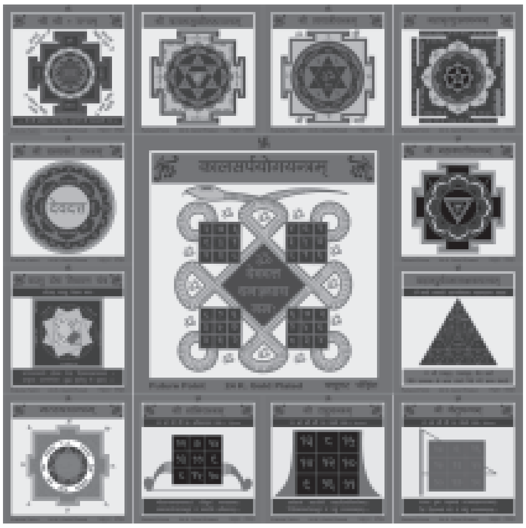

मंत्र : ॐ नमः शिवाय।

सोमवार प्रातःकाल, स्नानादि के बाद, यंत्र पर गंगा जल छिड़क कर, उसे स्वच्छ वस्त्र से पोंछ लें। और श्रद्धापूर्वक स्थापित करें। इसके सम्मुख घी का दिया जलाएं। यंत्र के पास धूपबत्ती जलाएं। श्वेत पुष्प अर्पित करें और रुद्राक्ष की माला पर निम्न मंत्र का 108 बार जप करें।

मंत्र : ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽअंतरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

51. सम्पूर्ण वास्तु यंत्र

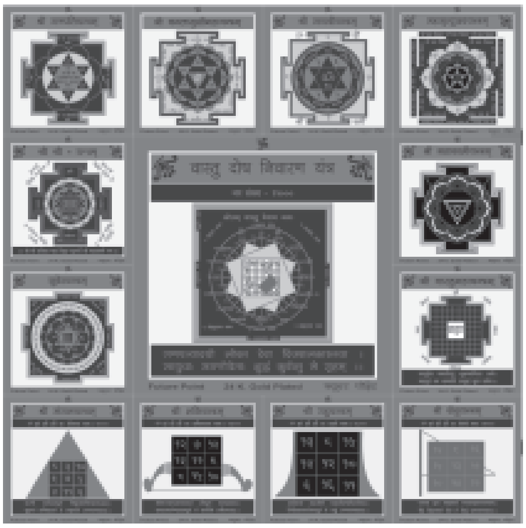

वास्तुशास्त्र के संपूर्ण नियमों के अनुसार बना गृह खीदना आज की परिस्थितियों के अनुसार असंभव सा हो गया है। ऐसी स्थिति में संपूर्ण वास्तु यंत्र को अपने घर में स्थापित करने से वास्तु देवता प्रसन्न होते हैं जिससे घर की सुख–समृद्धि में वृद्धि होती है। यंत्र को घर, व्यवसाय स्थल, कार्यालय आदि में स्थापित कर सकते हैं। इस संपूर्ण वास्तु यंत्र में बारह अन्य महत्वपूर्ण यंत्रों की स्थापना की गई है जिससे यह यंत्र अधिक शक्तिशाली बन गया है।

श्री गायत्री यंत्र : सात्विक वातावरण से घार के सभी सदस्यों में पवित्र भावना का विकास।
महामृत्युंजय यंत्र : दुःख, बीमारियों से रक्षा, उन्नति
श्री काली यंत्र : अकाल मृत्यु से रक्षा, आत्मविश्वास में वृद्धि
श्री वास्तु महायंत्र : वास्तु दोष का निवारण, घर की सुरक्षा
श्री केतु यंत्र : घटनाओं का पूर्वाभास
श्री राहु यंत्र : अड़चनें दूर, समान्य संघर्ष के बाद सफलता
श्री शनि यंत्र : हीन भावनाओं का नाश, श्री मंगल यंत्र : धैर्य एवं साहस में वृद्धि, श्री कुबेर यंत्र : आय के स्रोतों में वृद्धि, श्री यंत्र : घर–परिवार में यश, कीर्ति, धन और ऐश्वर्य की वृद्धि, श्री गणपति यंत्र : विघ्न बाधाओं से रक्षा, उत्तम विद्या, बुद्धि, बगलामुखी यंत्र : शत्रुओं के षडयंत्रों से रक्षा।

मंत्र : वास्तुदेव नमस्तेस्तु भूशय्यानिरत प्रभो। मद्गृहं धन धान्यादि समृद्धं कुरू सर्वदा।।

52. सम्पूर्ण नवग्रह यंत्र

ग्रहों का हमारे जीवन पर शुभाशुभ प्रभाव पड़ता रहता है, जिसके कारण व्यक्ति का जीवन प्रभावित होता है। सम्पूर्ण नवग्रह यंत्र में सभी ग्रहों के अनुकूल यंत्रों का समावेश है। सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु के यंत्रों का विधिवत पूजन ग्रहों की अनुकूल दृष्टि प्रदान करता है एवं आराधक को हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने में सहायता करता है। इसे घर, दफ्तर, कारखाना, दुकान आदि में लगाया जा सकता है। उत्तरी क्षेत्र में लगाने से अधिक शुभता प्राप्त होती है। नवग्रह प्रतिकूल होने पर प्रत्येक कार्य में असफलता नजर आती है। यह यंत्र साधक को कुंडली के 12 भावों के गोचर, 9 ग्रहों तथा तत्वों की ऊर्जा और सभी दिशाओं का लाभ आदि प्रदान करने के साथ–साथ उसके परिवार के अन्य सदस्यों को भी लाभान्वित करता है।

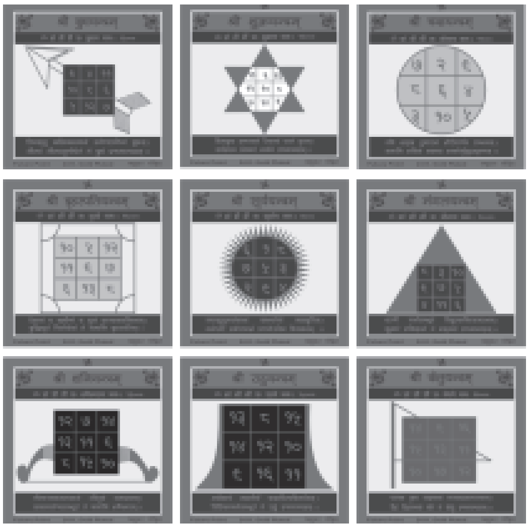

यंत्र को गंगा जल और कच्चे दूध से स्नान कराकरे श्रद्धापूर्वक स्थापित करें और चंदन, दूध, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजा करें। अपने इष्ट देव का स्मरण कर निम्नलिखित नवग्रह मंत्र का नवरत्न माला पर 108 बार जप करे।

ॐ ब्रह्ममुरारीः त्रिपुरान्तकारी भानुः शशीः भूमिसुतो बुधश्च गुरूश्च शुक्रः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

53. सम्पूर्ण महालक्ष्मी यंत्र

हिंदू संस्कृति व परिवारों में धन, व वैभव की देवी श्री लक्ष्मी का विशेष स्थान है यह यंत्र भगवान विष्णु की प्रिया श्री महालक्ष्मी का संपूर्ण यंत्र है इसके प्रभाव से यश, मान, कीर्ति, धन, वैभव, शक्ति, संपन्नता, आरोग्यता की प्राप्ति होती है। संपूर्ण भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए यह यंत्र सर्वश्रेष्ठ है इस संपूर्ण महालक्ष्मी यंत्र में तेरह यंत्रों का समावेश है जिसमें नवग्रह यंत्र, व्यापारवृद्धि यंत्र, वास्तु यंत्र, सूर्य यंत्र और लक्ष्मी यंत्र जैसे महत्वपूर्ण यंत्र है।

प्रत्येक यंत्र की विशेष महत्ता व उपयोगिता है जो कि सफलता प्राप्ति, स्वास्थ्य की अनुकूलता, वैवाहिक जीवन में सुख शांति, व्यापार में वृद्धि आदि के लिए अत्यंत उपयोगी है इस यंत्र की शुक्रवार को स्थापना कर धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन कर पुष्प अर्पित करें व महालख्मी मंत्र का जप करें।

मंत्र : **ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।**

54. सर्वकार्यसिद्धि यंत्र

किसी विशेष कार्य को करने के लिए लोगों में अनेक संशय उत्पन्न होते हैं कार्य सफल होगा या असफल होगा ऐसी भावनायें बार–बार मन में उठती हैं। कई बार कार्य असफल भी होते हैं। ऐसे कार्यों को निर्धारित समय में बिना किसी परेशानी के सफलता पाने के लिए यह यंत्र अत्यन्त उपयोगी है। व्यापार, विदेश गमन, राजनीति, गृहस्थ जीवन, नौकरी पेशा आदि में इस यंत्र का उपयोग करने से सुख एवं समृद्धि प्राप्त होती है।

जब समाज तथा नौकरों से कोई न कोई तकलीफ रहती हो व्यापार व्यवसाय में भयानक उतार चढ़ाव आते हों तथा घाटा होता हो तो ऐसी स्थिति में व्यापारिक एवं व्यवसायिक स्थिति अनुकूल होने के लिए इस यंत्र की पूजा उपासना करना उचित होगा।

अथक परिश्रम करने के बाद भी वांछित सफलता जिन्हें नहीं मिलती तथा कार्यो में असफलता मिलती है। बार–बार अपयश का सामना होता है तो ऐसी स्थिति में यह यंत्र अत्यन्त लाभकारी है। इस यंत्र की चल एवं अचल दोनों प्रतिष्ठा होती है।

इस यंत्र के सम्मुख सिद्धि विनायक मंत्र जप करने से सुख समृद्धि प्राप्त होती है। आकरण हुये अपमान का शत्रु प्रायश्चित करता है और जीवन पर्यन्त सम्मान प्रदान करता है।

मंत्र : **सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्य सुतान्वितः मनुष्योमत्प्रसादेन् भविष्यति न संशयः।**

Future Point

Future Point

अध्याय 5

माला

निर्माण विधि

माला का निर्माण अनेक कार्यो के लिए किया जाता है कुछ मालायें देखने में लुभावनी होती हैं परन्तु उसमें गुण की कमी होती है। बाजार में बिकने वाली मालायें साधक के लिए कम उपयुक्त होती हैं क्योंकि निर्माण के समय इसमें अनेक असावधानियाँ हुई रहती हैं। जप एवं पुरश्चरण के लिए बनाये जाने वाली मालायें मुख्यतः 27, 54 अथवा 108 मनकों की होती हैं।

माला बनाने के लिए सूत का शुद्ध धागा उपयोग में लाया जाता है, रेशमी धागा एवं अन्य धागा भी माला बनाने के लिए उपयुक्त माने जाते हैं। सफेद सूती धागे में माला बनाने के लिए पहले मनके को पिरोया जाता है उसके बाद प्रत्येक दाने के बाद ढायी गाँठ लगायी जाती है। यदि किसी माला में ढाई गाँठ नहीं होती है तो पूर्ण शुद्ध नहीं मानी जाती 108 मनकों में पहले सारे मनकों में ढाई गाँठ लगा ली जाती है तत्पश्चात् सुमेरू पिरोया जाता है। सुमेरु में अन्य मनकों की अपेक्षा दोहरा धागा डाला जाता है और एक ओर ढाई गांठ लगायी जाती है।

दूसरी ओर यह सुमेरु माला को दो भागों में विभाजित करता है जो कि आगे चलकर एक बन जाते हैं। जप में इस सुमेरु का उल्लंघन नहीं किया जाता तथा सुमेरु को या अन्य दानों को तर्जनी अंगुली से स्पर्श नहीं किया जाता। माला बनाने से पूर्व संकल्प आदि किया जाता है तथा माला बनाने वाले धागे को पैर से नहीं स्पर्श किया जाता एवं प्रत्येक मनके को पिरोते समय ऊँ का उच्चारण किया जाता है।

माला संस्कार

माला के मनकों में मुख और पुच्छ का भेद भी होता है। मुख कुछ ऊंचा होता है और पुच्छ समतल। पिरोने के समय यह ध्यान रखना चाहिए कि मनकों का मुख परस्पर मिलता जाय अथवा पुच्छ। गांठ देनी हो तो तीन फेरे अथवा ढाई फेरे की लगानी चाहिए। ब्रह्म ग्रंथि भी लगा सकते हैं। इस प्रकार माला का निर्माण करके उसका संस्कार करना चाहिए।

पीपल के नौ पत्ते लाकर एक को बीच में और आठ को चारों ओर इस ढंग से रखें कि यह अष्टदल कमल सा मालूम हो। बीच वाले पत्ते पर माला रखें और ''ऊँ अं आं'' इत्यादि से लेकर ''हं क्षं'' पर्यन्त समस्त स्वर–वर्णो का उच्चारण करके पंचगव्य के द्वारा उसका प्रक्षालन करें और फिर ''सद्योजात'' मंत्र पढ़कर पवित्र जल से उसको धो डालें और प्रतिष्ठित करके धारण करें अथवा जप करें।

जब कभी जप करते–करते मन अन्यत्र चला जाता है, तब मालूम ही नहीं होता कि जप हो रहा था या नहीं या कितने समय तक जप बंद रहा। यह प्रमाद हाथ में माला रहने पर उचित संख्या से जप करने पर नहीं होता। यदि कभी मन कहीं चला भी जाता है तो माला का चलना बंद हो जाता है, संख्या आगे नहीं बढ़ती , और यदि माला चलती भी रही तो स्वर भी अवश्य ही चलता रहेगा और ये दोनों कुछ ही समय में मन को खींच लाने में समर्थ हो सकेंगे। जो लोग यह कहते हैं कि मैं जप तो करता हूं पर मेरा मन कहीं अन्यत्र रहता है उन्हें माला प्रयोग अत्यन्त आवश्यक है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

माला से सम्बन्धित सावधानियाँ

- स्वयं की बनायी हुई माला जप करने के लिए एवं धारण करने के लिए वर्जित है।
- माला में उपयोग किया गया दाना शुद्ध होना चाहिए तथा खण्डित नहीं होना चाहिए।
- जप करने वाली माला को हमेशा गौमुखी अथवा अन्य स्वच्छ वस्त्र से ढका होना चाहिए।
- जप करने से पूर्व एवं जप करने के पश्चात माला की पूजा होनी चाहिए एवं शुक्र देवता का आवाहन होना चाहिए।
- माला टूट जाए, अथवा धारक उसे, मुंह से स्पर्श कर के, अशुद्ध करे, तो माला से जाप नहीं करना चाहिए और न ही धारण करना चाहिए।
- एक ही माला से पूरे परिवार को जाप नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से उसकी दैविक शक्ति क्षीण हो जाती है।
- माला गलती से पैर के नीचे आ जाए, तो, गंगा जल से धो कर, पुनः प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए।
- माला से मंत्र जाप करते हुए अधूरा जप नहीं करना चाहिए। जप संख्या 108 होनी चाहिए।
- सोते समय माला उतार कर रख देना चाहिए तथा सुबह स्नान करने के बाद उसे धारण करना चाहिए।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

माला – एक नजर में

1.	रुद्राक्ष माला	:	शिव मंत्रों के जप के लिए सर्वश्रेष्ठ मानी है। तुलसी, चंदन, स्वर्ण मुक्ता प्रवाल माला से करोड़ों गुना अधिक लाभ रुद्राक्ष माला पर जप करने से प्राप्त होता है।
2.	तुलसी माला	:	सभी प्रकार के मंत्रों के जप के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। शरीर की शुद्धता के लिए भी धारण की जाती है।
3.	कमलगट्टा माला	:	शत्रु नाश व लक्ष्मी की प्राप्ति से संबंधित मंत्रों के जप के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है।
4.	हल्दी माला	:	शत्रु पर विजय व गुरु मंत्र या बगलामुखी जप के लिए।
5.	पारद माला	:	जादू–टोना व दुख दरिद्रता को नाश करने हेतु
6.	पुत्रप्राप्ति माला	:	इसका प्रयोग संतान प्राप्ति हेतु की जाने वाली साधना में होता है।
7.	वैजंती माला	:	वैष्णव भक्तों व लक्ष्मी जी के जप में प्रयोग की जाती है।
8.	मोनालीसा माला	:	मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।
9.	मोती माला	:	चंद्रमा के मंत्र जप के लिए उपयुक्त है। तासीर ठंडी होने के कारण गर्म स्वभाव वाले व्यक्तियों के लिए बहुत लाभदायक है।
10.	मूंगे की माला	:	हनुमान जी के जप के लिए उपयुक्त है। स्वास्थ्य बढ़ाती है।
11.	कायाकल्प माला	:	शारीरिक दुर्बलता व नकारात्मक विचारों को शमन कर शारीरिक बल व ऊर्जा प्रदान करती है।
12.	स्फटिक माला	:	लक्ष्मी, सरस्वती व दुर्गा जप के लिए उत्तम है। गायत्री मंत्र के जप के लिए सर्वोत्तम है। इसको धारण करने से मानसिक असंतुलन, शारीरिक कष्ट व आर्थिक बाधाओं के प्रतिकूल प्रभाव से बचा जा सकता है।
13.	फिरोजा माला	:	वैवाहिक जीवन की मधुरता के लिए
14.	हकीक माला	:	भाग्य वृद्धि व सौभाग्य प्राप्ति के लिए इसका विशेष महत्व है। भूत–प्रेत व दुर्भाग्य को नाश करने की विशेष शक्ति इसमें होती है।
15.	रक्त एवं श्वेत चंदन	:	इसका प्रयोग शांति पुष्टि कर्मों में व श्री राम, विष्णु व अन्य देवताओं की उपासना में होता है।
16.	लाल चंदन	:	गणेश जी व देवी साधना के लिए उपयुक्त होती है।
17.	रुद्राक्ष स्फटिक माला	:	मंत्र सिद्धि व आध्यात्मिक उन्नति हेतु
18.	मोती रुद्राक्ष माला	:	शिव के प्रत्येक मंत्र जप हेतु
19.	मूंगा–मोती माला	:	शिव शक्ति के मंत्र जप हेतु
20.	नवरत्न माला	:	नवग्रहों की शांति के लिए धारण की जाती है। इससे मानसिक शांति की प्राप्ति होती है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

1. रुद्राक्ष माला

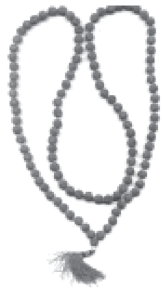

रुद्राक्ष माला को सभी प्रकार के सिद्धियों एवं जप के लिए सर्वोत्तम माना गया है रुद्राक्ष माला पर सभी प्रकार के जप किये जा सकते हैं। बाल्यावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक के सभी व्यक्तियों के लिए रुद्राक्ष माला सर्वोपरि मानी गई है। धारण करने के लिए एक दाने से लेकर 108 दाने तक माला धारण की जाती है तथा जप के लिए 27 दानें से लेकर 1008 दानें तक की माला उपयोग में लायी जाती है। आवश्यकता एवं इच्छानुसार एक से अनेक दानों तक की माला धारण की जा सकती है।

शास्त्रों में प्रमाण मिलता है कि शरीर के अनेक अंगों में रुद्राक्ष अधिक से अधिक धारण करने से ज्यादा लाभ मिलता है असली रुद्राक्ष माला धारण करने से रक्त चाप, वीर्य दोष में लाभ होता है बौद्विक विकास एवं मानसिक शान्ति प्राप्त होती है व्यापार आदि में लाभ होता है। सभी वर्गो के लिए सम्मान एवं कीर्ति प्राप्त होती है।

- उदर तथा गर्भाशय एवं रक्तचाप तथा हृदय रोग से सम्बन्धित अनेक रोगों के लिए छः मुखी रुद्राक्ष की माला को हाँडी में पानी डालकर भिगोये रखें प्रत्येक 24 घंटे पश्चात यह रुद्राक्ष का जल खाली पेट प्रातःकाल पीते रहें निश्चित लाभ होगा।
- मस्तिष्क सम्बन्धी विकारों से पीड़ित व्यक्तियों तथा मस्तिष्कीय कार्य करने वाले लोगों को शक्ति प्राप्ति के लिए चारमुखी रुद्राक्ष की माला चाँदी के किसी बरतन में पानी डालकर भिगोये रखना चाहिए। प्रत्येक 24 घंटे के अन्तराल से यह रुद्राक्ष जल प्रातः खाली पेट पियें। यह प्रयोग चमत्कारी प्रभाव प्रकट करता है।

2. तुलसी माला

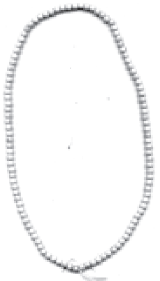

भगवान् विष्णु की प्रिया परम पतिव्रता तुलसी की कथा समाज के विभिन्न वर्गो को ज्ञात है सर्वप्रथम तुलसी का पौधा वृन्दावन क्षेत्र में विकसित हुआ। आज भी तुलसी की असली मालायें इसी क्षेत्र से उत्पन्न तुलसी के वृक्षों से बनायी जाती है और देश–विदेश में मूल्यवान समझी जाती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी तुलसी एक अत्यन्त लाभकारी औषधि है।

तुलसी का पौधा एक अति पवित्र पौधा माना जाता है। जिसका पूजन सम्पूर्ण भारत में होता है तुलसी भारत में प्रायः सर्वत्र पायी जाती है। तुलसी की मुख्य तीन किस्में पायी जाती हैं।

1. श्वेत तुलसी 2. काली तुलसी 3. राम तुलसी आदि।

- आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार तुलसी अत्यन्त चमत्कारी पौधा है और इसके अनेक लाभ हैं। तुलसी के पत्ते को चबाने से उदर सम्बन्धी अनेक रोग नष्ट होते हैं तुलसी का लेप लगाने से मस्तिष्क को शीतलता मिलती है।
- तुलसी की माला धारण करने से विषम ज्वर शान्त होता है।
- तुलसी की माला शिखा में बांधने से वायु विकार नष्ट होता है।
- तुलसी की माला पर विष्णु, राम, कृष्ण आदि देवताओं का जप करने से शीघ्र ही सिद्धि मिलती है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

3. कमल गट्टे की माला

यह माला लक्ष्मी के सर्वाधिक प्रिय कमल पुष्प के बीजों से बनाई जाती हैं। लक्ष्मी को कमल प्रिय होने से उनका नाम पद्मा, कमला, पद्महस्ता आदि पड़ा। इस माला पर लक्ष्मी मंत्र का जप करने से साधक को शीघ्र मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है।

कहा जाता है मां लक्ष्मी देवी का श्रीमुख पद्म के समान सुन्दर, कान्तियुक्त है, ऊरु पद्म समान है आप पद्म से पैदा हुई हैं और आप का एक नाम पद्माक्षि भी है आपकी प्रसन्नता के लिए कमल गट्टा प्रायः सरोवरों और झीलों में पैदा होता है यह कमल पुष्प का बीज माना जाता है। कमल पुष्प लक्ष्मी एवं विष्णु को अत्यधिक प्रिय है। इसे अनेक नामों से जाना जाता है संस्कृत भाषा में पुण्डरीक, रक्तपद्म, नीलपद्म हिन्दी में कमल, पंजाबी में नीलोफर, फारसी में गुलनीलोफर, अरबी में करंबुलमा कहते हैं।

जो मनुष्य उत्तम लक्ष्मी की प्राप्ति की कामना करता हो वह कमल गट्टे की 108 दाने की माला पर लक्ष्मी का मंत्र जप करे तो शीघ्र सफलता मिलती है एवं धन आगमन होता है। कमल गट्टे की माला द्वारा कनकधारा मंत्र का जप करने से स्वर्ण वर्षा होती है ऐसा शास्त्रों का प्रमाण है।

अक्षय तृतीया को कमलगट्टे की माला पर लक्ष्मी गायत्री मंत्र जप करने से सौ गुना अत्यधिक फल प्राप्त होता है। कमलगट्टे की माला धारण करने से माता लक्ष्मी प्रसन्न रहती हैं तथा अपने भक्तों को हमेशा धनधान्य से शोभित करती हैं।

4. हरिद्रा (हल्दी) माला

हरिद्रा (हल्दी) माला मां भगवती श्री बगलामुखी की सर्वप्रिय माला है जो कि अनेक साधनाओं में उपयोगी है। यह माला शुद्ध हरिद्रा से निर्मित की जाती है जिसका उपयोग देश विदेश के सभी भागों में बगलामुखी की पूजा, उपासना में सिद्धि पाने के लिए की जाती है। यह माला मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, आदि सभी क्रियाओं में सिद्धि को देने वाली माला कही गयी है। इस माला पर माता बगलामुखी के सभी मंत्रों का जप किया जाता है और शीघ्र ही सिद्धि की आशा बनी रहती है।

शुभ दिन गुरुवार को इस माला की पूजा प्रतिष्ठा करके पीले रंग की गोमुखी में इसे बगला के मंत्रों को जप करने के लिए उपयोगी बनाया जाता है। इस माला द्वारा बगलामुखी के अनेक जप किये जाते हैं जिनकी सिद्धि शीघ्र ही मिलती है।

- हरिद्रा माला द्वारा बगलामुखी मंत्र को विधिपूर्वक 36,000 की संख्या में जपने से शत्रु का नाश होता है।
- इस माला पर बगलामुखी का वशीकरण मंत्र जप करने से सर्वजन वशीभूत होते हैं।
- इस माला की बगला की मूर्ति समझकर पूजा गृह में प्रतिष्ठित करने से शत्रु से रक्षा होती है।
- इस माला को हमेशा अपने पास रखने से किसी भी प्रकार का शत्रुभय नहीं होता है।
- यह शत्रु संहार के कार्यों में अति उपयोगी और कम कीमत की माला है।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

5. पारद माला

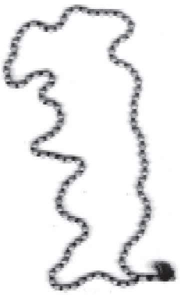

जप एवं धारण के लिए पारद की माला में शुद्धता एवं विश्वासपूर्वक, सोमवार, शुक्रवार, अथवा गुरुवार को सुबह पूजा के समय 108 बार जाप करने से अनेक प्रकार के दोषों की समाप्ति होती है। पारद का उपयोग जातक के ज्ञान और भक्ति दोनों को प्रशस्त करता है तथा दुष्प्रभाव को कम करता है, लक्ष्मी दोष, दरिद्रता दूर करने और धन लाभ, धन रक्षा, धन संचय आदि कार्यों में लाभ पाने के लिए पारद की माला से निम्न मंत्र का पाठ करना काफी लाभकारी है :

- **ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।।**
- **ऊँ महालक्ष्म्यै नमः।।**

6. पुत्र प्राप्ति माला

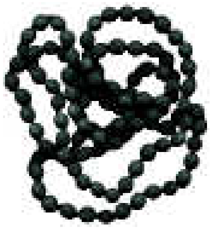

पुत्र प्राप्ति माला, संतान गोपाल यंत्र के सम्मुख वांछित संतान प्राप्ति मंत्रों के जाप हेतु, सर्वश्रेष्ठ है।

ॐ नमो भगवते जगत्प्रसूतये नमः।

7. वैजयंती माला

वैजयंती माला 2 प्रकार की होती है–एक, श्वेत कठोर बीजों से बनती है। यह माला सरलता से उपलब्ध हो जाती है। दूसरे प्रकार की माला काले बीजों से निर्मित की जाती है। यह माला उत्तम मानी जाती है। इस माला का उपयोग जीवन की हर बाधा का निवारण करने के लिए किया जाता है। इसको पहना जा सकता है, या इस पर मंत्र जाप कर सकते हैं। कृष्ण भगवान के मंत्रों के जाप हेतु यह माला विशेष उपयोगी है।

8. मोनालीसा माला

यह माला जप एवं धारण के लिए लाभदायक है। मोनालीसा मालाओं में जो मनके लगाये जाते हैं, उनमें से अलग–अलग रंग की किरणें निकलती हैं। मोनालीसा चिकना, कठोर एवं अपारदर्शक पत्थर है। इस माला को हाथ में ले कर हिलाते हैं, तो इसका रंग हिलता दिखायी देता है और अलग–अलग चमक भी देखने को मिलती है। इस माला द्वारा जप करने पर एवं इसे धारण करने से विशेष फल मिलता है।

उपयोग से लाभ :

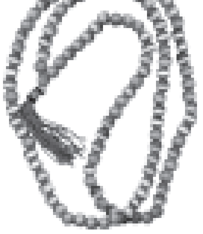

- इस माला से जप करने से, या इसे धारण करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है।
- इस माला द्वारा जाप मानसिक शांति के लिए विशेष लाभप्रद है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

9. मोती की माला

मोती की माला प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी है, यह माला धारण करने से मन में शान्ति का अनुभव होता है तथा यह चन्द्र ग्रह को शान्त रखने वाली माला होती है। कुण्डली में चन्द्रमा की खराब स्थिति होने पर उसकी दशा में भी यह माला अत्यन्त उपयोगी मानी गयी है। यह माला 54 या 108 दोनों की होती है। इसे कोई भी जातक धारण कर सकता है। जल से सम्बन्धित कार्य करने वालों के लिए यह अत्यन्त आवश्यक होती है। कम उम्र के बच्चों को मोती की माला धारण कराने से शिक्षा में अधिक सफलता मिलती है। स्त्रियों को यह माला प्रसन्न रखती है तथा देखने में भी मनमोहक होती है।

सोमवार को सुबह श्वेत वस्त्र धारण करके माला को पीपल के पत्ते पर रखकर उसकी पूजा प्रतिष्ठा करके धारण करने से पूर्ण लाभ देती है।

- मोती की माला धारण अथवा जप दोनों के लिए उत्तम मानी गयी है। इस माला पर चन्द्र ग्रह का मंत्र जपने से चन्द्र मन को शान्त रखता है तथा शारीरिक स्वास्थ्य प्रदान करता है।
- श्वेत चंदन व मोती की माला धारण करके शिव की उपासना करने से भगवान शिव शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं।
- चन्द्रमा की अशुभ दशा में मोती की माला पर चन्द्र मंत्र का जप करने से चन्द्र की अशुभता से रक्षा होती है।
- मोती की माला पर ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः मंत्र को ग्यारह हजार की संख्या में जपने से प्रतिकूल चन्द्र अनुकूल फल प्रदान करता है।

10. मूंगे की माला

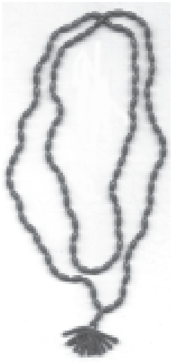

मूंगे की माला अनेक कार्यों में सफलतादायक मानी गयी है, यह तन्त्र क्रिया के लिए भी उपयोगी मानी जाती है। इस माला की सहायता से हनुमान उपासना, गणेश उपासना, लक्ष्मी उपासना, मंगल उपासना आदि की जाती है। मूंगा की माला धन वृद्धि, स्वास्थ्य वृद्धि, यशवृद्धि आदि के लिए शुभ मानी गयी है। यह माला अतिसार, अरुचि, मंदाग्नि, रक्त विकार, संग्रहणी, पित्त आदि कई बिमारियों में लाभ देने वाली माला है।

मंगलवार को सुबह स्नान करके संध्या संकल्प करके मूंगे की माला को प्रतिष्ठित करने के पश्चात धारण करना शुभ माना गया है।

- मूंगे की माला धारण करने से रक्तचाप संतुलित रहता है।
- रक्त संबंधी बिमारी और गुस्सा से राहत मिलती है।
- शत्रु से रक्षा तथा शौर्य की वृद्धि होती है।
- मूंगे की माला पर मंगल ग्रह का जप करने से मंगल की शान्ति होती है।
- हनुमान भक्त को यह माला शीघ्र ही सिद्धि देती है।
- गणेश की प्रसन्नता हेतु यह माला सर्वोत्तम है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

11. काया कल्प माला

काया कल्प माला दूषित विचारों को नष्ट करके अच्छे विचारों का उदय करती है। यह माला विभिन्न प्रकार के रोग दोष को शमन करके धारक की अभिलाषा पूर्ण करने में सहायक सिद्ध होती है। इसे धारण करने से शरीर में अद्भुद् शक्ति का संचार होता है तथा शारीरिक कार्यक्षमता बढ़ती है। यह माला उन व्यक्तियों के लिए अधिक उपयोगी होगी जिन्हें स्वतः पर न तो भरोसा होता है और न ही विश्वास।

- यह माला धारण करने से पति पत्नी का स्नेह बढ़ता है तथा धार्मिक कार्यों की ओर व्यक्ति उन्मुख होता है।
- इस माला को धारण करने से मन एवं बुद्धि का विकाश होता है।
- इस माला को धारण करने से समाज में यश प्राप्त होता है।
- इस माला को धारण करने से विनम्रता बढ़ती है तथा हर प्राणी में ईश्वर नजर आता है।
- इस माला को धारण करने से यज्ञ, अनुष्ठान करने का अवसर प्राप्त होता है।
- इस माला को धारण करने से तीर्थाटन का अवसर प्राप्त होता है।
- इस माला को धारण करने से बुद्धि विवेक बढ़ता है।

12. स्फटिक माला

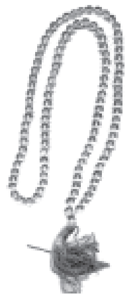

स्फटिक एक सामान्य प्राप्ति वाला प्रायः पारदर्शक मिलने वाला अल्पमोली पत्थर है। यह पत्थर देखने में कांच जैसा प्रतीत होता है।

सिलिका आक्साइड का एक रूप यह स्फटिक पत्थर स्वयं में विशेष आब तथा चमकयुक्त नहीं होता, लेकिन विशेष काट में काटने तथा पालिश करने पर इसमें चमक पैदा की जा सकती है। अच्छी काट के स्फटिक नगीने आभूषणों में प्रयोग किये जाते हैं। स्फटिक पत्थर विशेष कटिंगदार मनके बना कर मालायें भी बनायी जाती हैं, जो अत्यन्त आकर्षक होने के बावजूद अल्पमोली होती हैं। स्फटिक पत्थर से बनी विभिन्न देवी देवताओं की मूर्तियां एवं यंत्र बनाये जाते हैं।

- यह केवल स्वास्थ्य लाभ के लिए नहीं बल्कि आध्यात्मिक क्षेत्र एवं बुद्धि जनित कार्य करने वालों के लिए भी अत्यन्त लाभकारी है।
- सोमवार को स्फटिक माला धारण करने से मन में पूर्णतः शान्ति की अनुभूति होती हैं एवं सिर दर्द नहीं होता है।
- शनिवार को स्फटिक माला धारण करने से रक्त से सम्बन्धित बिमारियों में लाभ होता है।
- अत्यधिक बुखार होने की स्थिति में स्फटिक माला को पानी में धोकर कुछ देर नाभि पर रखने से बुखार कम होता है एवं आराम मिलता है।
- शुक्रवार को स्फटिक माला धारण करने से धन एवं ऐश्वर्य बढ़ता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

13. फिरोजा माला

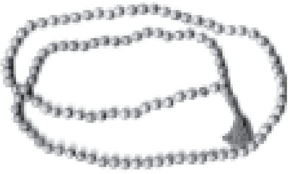

फिरोजा आसमानी रंग का होता है। इस माला के उपयोग से प्रेम संबंधों में मधुरता व विवाह के योग शीघ्र बनते हैं। पति–पत्नी में परस्पर आकर्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस माला को शुभ मुहूर्त में शुक्रवार को भुवनेश्वरी यंत्र की पूजा कर धारण करें।

14. काले हकीक की माला

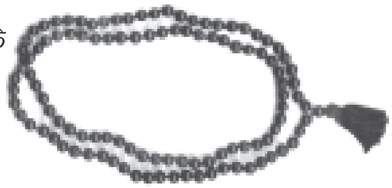

जन्मपत्रिका में शनि अकारक होने पर तथा शनि से संबंधित वस्तुओं के व्यापारियों को शनि उपासना नियमित रूप से करनी चाहिए।

काले हकीक की माला पर शनि के मंत्र का जाप करना लाभकारी है।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।

15. रक्त एवं श्वेत चन्दन की माला

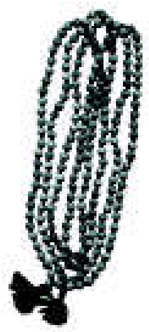

रक्त एवं श्वेत चन्दन की माला देवियों के लिए उपयुक्त है श्वेत चन्दन की माला देवताओं के लिए। चन्दन का गुण शीतल है जो शीतलता प्रदान करता है। श्वेत चन्दन में मनमोहक सुगन्ध पायी जाती है यह इसका प्रधान गुण है चन्दन कई रोगों को शान्त करता है जैसे– तृष्णा, थकान, रक्त विकार, दस्त, सिर दर्द, वात पित्त, कफ, कृमि और वमन आदि। इसे अनेक नामों से जाना जाता है।

रक्त चन्दन की माला धारण करने से देवियों की कृपा प्राप्त होती है तथा श्वेत चन्दन की माला धारण करने से देवताओं की कृपा प्राप्त होती है। श्वेत चन्दन की माला से विष्णु, राम, कृष्ण, गुरु आदि का जप सिद्ध होता है। श्वेत चन्दन की माला धारण करने से सात्विक वृत्ति का उदय होता है, मन शान्त होता है, निद्रा आती है तथा देवताओं के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है।

16. लाल चंदन माला

यह माला जप एवं धारण के लिए सर्वश्रेष्ठ है। इस माला में 108 दाने एवं एक सुमेरु है। अतः यह जप के लिए उत्तम है। इस माला पर शुक्र ग्रह के मंत्र का जाप किया जाता है। इस माला से विशेष फल पाने के लिए इसको शुद्ध स्थान पर रखें तथा शुद्ध मन से जाप करें, तो अवश्य लाभ होगा। यह माला लक्ष्मी जी को अधिक प्रिय है। अतः इस माला से साधक को अवश्य ही धन लाभ होता है।

इस माला को गले में धारण कर सकते हैं। अगर धारण न कर सकें, तो पूजा स्थान पर रख सकते हैं। इससे इसकी शुद्धता अधिक समय तक बनी रहती है। पूजा के समय माला का होना आवश्यक है, क्योंकि माला के बिना पूर्ण रूप से मंत्र जाप का फल नहीं मिलता है।

- इस माला से जप करने से लक्ष्मी की वृद्धि तथा मानसिक शांति मिलती है।
- इस माला द्वारा जप से परिवार में क्लेश–झगड़ा में अनुकूलता प्राप्त होती है।
- कुंडली में शुक्र के बुरे प्रभाव को अनुकूल करने में यह माला सहायक होती है।
- मानसिक शांति, विद्या, दांपत्य सुख, पारिवारिक सुख, स्त्री सुख, ज्ञान प्राप्ति के लिए विशेष लाभदायक है।
- इस माला को धारण करने से शांति मिलती है और क्रोध में कमी आती है।

17. रुद्राक्ष स्फटिक मिश्रित माला

रुद्राक्ष और स्फटिक की माला शिव को अतिप्रिय है, स्फटिक एक पारदर्शक अल्पमोली पत्थर है जो कि देखने पर कांच के सदृश होता है स्फटिक सिलिका आक्साइड का एक रूप है यह देखने में जितना मनमोहक होता है कहीं उससे ज्यादा इसमें गुण पाये जाते हैं। स्फटिक को अगर रुद्राक्ष के साथ पिरोकर माला बनायी जाय तो उसका गुण बढ़ जाता है तथा ऐसी माला धारण करने से या जप करने से अनेक लाभ होते हैं। यह माला 27 , 54 , 108 दाने की होती है जो कि विभिन्न प्रकार के जप, धारण एवं अनुष्ठान कार्यों में उपयोगी होती है।

- इसे धारण करने से परिवार का कल्याण होता है तथा शत्रु का संहार होता है।
- यह माला धारण करने से कफ, वात, ज्वर रोग, दुःस्वप्न आदि से बचा जा सकता है।
- इस माला पर शिव पंचाक्षरी मंत्र जपने से मंत्र सिद्ध हो जाता है और जातक का कल्याण करता है।
- मानसिक शान्ति बनी रहती है तथा गुस्सा कम करने की इसमें अद्भुत शक्ति पायी जाती है।
- इस माला को धारण करने से नींद की बिमारी अथवा आंख की बिमारी दूर होती है।

18. मोती–रुद्राक्ष माला

इस माला पर भगवान शिव के मंत्रों का जप किया जाता है। इस माला के प्रभाव से मानसिक शांति प्राप्त होती है व अध्यात्म में रुचि बढ़ती है। प्रत्येक सोमवार को माला को दूध से धोकर शिव मंत्र का जप करें। चंद्र या शनि ग्रह कमजोर हो वह भी इस माला को धारण कर सकते हैं।

19. मूंगा–मोती मिश्रित माला

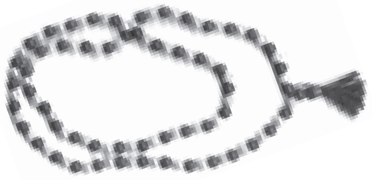

यह माला देखने में अत्यंत सुंदर है। इस माला पर भगवान शिव व पार्वती के मंत्रों का जप करने से कई गुणा फल मिलता है, इस माला पर लक्ष्मी प्राप्ति के लिए लक्ष्मी मंत्रों का जप भी कर सकते हैं। यह माला व्यक्ति के क्रोध भी नियंत्रण में रखती है।

20. नवरत्न माला

इसे धारण करने से सफलता एवं सिद्धियां प्राप्त होती हैं। इसमें अद्भुत विशेषता होती है तथा अनेक तात्विक संरचनायें होती हैं। इसके अलग–अलग मनके अपने से सम्बन्धित ग्रहों की रश्मियों को अपने आप में समाहित करके धारण करने वाले को लाभ प्रदान करते हैं। इस नवरत्न माला में वैज्ञानिक आधार पर निम्न तात्विक संरचना पायी जाती हैं जैसे– अल्यूमिनियम, आक्सीजन, क्रोमियम, लोहा, कैल्शियम कार्बोनेट, मैग्नीशियम, बेरोलियम, फ्लोरीन, हाइड्रोक्सिल, जिक्रोनियम, आदि तात्विक संरचनायें पायी जाती हैं।

प्रत्येक रत्न या उपरत्न नवग्रहों में से किसी एक ग्रह विशेष से सम्बद्ध किया गया है। माला में सारे ग्रहों के रत्नों को समाहित किया गया है इस माला को धारण करने से अनेक लाभ हैं जैसे यश, सम्मान, वैभव, भौतिक समृद्धि में लाभ तथा कफ रोग, शीत रोग, ज्वर रोग आदि रोगों से सुरक्षा।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

अध्याय– 6

स्फटिक सामग्री

परिचय

ईश्वरीय शक्ति एवं प्रकाश से भरपूर स्फटिक (Crystal) का प्रयोग सदियों से ही हमारे संत महात्मा एवं सिद्ध व्यक्ति अपनी प्राण ऊर्जा को विकसित करने तथा नकारात्मक भावनाओं, वातावरण एवं रोगों से बचने के लिए विविध तरीकों से करते रहे हैं। एक सामान्य व्यक्ति के लिए स्फटिक हमेशा एक रहस्यमय या सामान्य पदार्थ ही बना रहा और वे इसका लाभ नहीं उठा सके परंतु हाल ही में गहन वैज्ञानिक अनुसंधानों ने व रहस्य शोधक चिकित्सकों ने सैकडों प्रयोगों से इसकी उपचारक शक्तियों, शरीर मन एवं भावनाओं पर होने वाले आध्यात्मिक प्रभावों को बखूबी स्थापित किया है। इसी कारण स्फटिक चिकित्सा (Crystal Healing) एक अलग चिकित्सा पद्धति के रूप में फैलती जा रही है। प्राचीन काल में लगभग 30,000 वर्ष पहले के लोग भी इसके जादुई गुणों को पहचानते थे व अपनी प्रजा के रोग निदान के लिए इसका प्रयोग करते थे। एटलान्टिस नाम की प्रसिद्ध सभ्यता के लोगों के पास 25 फीट लम्बा और 10 फीट चौड़ा विशाल क्वाट्‌र्ज क्रिस्टल था जिसके ऊर्जा क्षेत्र का प्रयोग करके वहाँ के लोगों की बीमारियों को ठीक किया जाता था। यह कुदरती हरफनमौला पदार्थ दो प्राकृतिक तत्वों ऑक्सीजन व सिलिकॉन के मिश्रण से बना है। जब यह दोनों तत्व गर्मी और असहाय दबाव के साथ भूगर्भ में एक साथ जुडते हैं तो प्राकृतिक स्फटिक का निर्माण होता है। प्राकृतिक स्फटिक के निर्माण में कई सौ वर्ष लग जाते हैं।

एक मेडिकल डॉक्टर भौतिक शरीर का उपचार करता है। एक मनोचिकित्सक मन तथा भावों की चिकित्सा करता है और आध्यात्मिक पुरूष आत्मा का उपचार करता है लेकिन एक उपचारक को तन+मन और भावनाओं तीनों को संतुलित करके उनका उपचार करना चाहिए क्योंकि मनुष्य इन तीनों का संतुलित योग है। मानव शरीर ऊर्जा व्यवस्थाओं की श्रृंखला है और जब कोई वस्तु शरीर के किसी भी कोष को ऊर्जा पाने से रोकती है या अवरोध डालती है तो वह कोष कमजोर हो जाता है और वह मस्तिष्क को अधिक ऊर्जा भेजने के लिए संदेश देता है। यदि मस्तिष्क उसकी प्रार्थना सुन लेता है और उसके पास जो पर्याप्त ऊर्जा होती है उसे भेज देता है तो वह कोष फिर से अपना कार्य सुचारू रूप से करने लगता है अन्यथा शरीर या उसका प्रभावित अंग बीमार पड़ जाता है अर्थात् शरीर का सार तत्व ऊर्जा है। स्फटिक विभिन्न प्रकार की ऊर्जाओं को जैविक ऊर्जा में रूपान्तरित करने और उसका विस्तार करने का कार्य करता है जिससे हमारी जैविक ऊर्जा पुनः शक्ति प्राप्त करती है और संतुलित हो जाती है। स्फटिक शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास कर प्राण शक्ति को कई गुना बढ़ा देता है जिससे रोगों से लड़ने की हमारी आन्तरिक क्षमता मजबूत हो जाती है।

क्वाट्‌र्ज स्फटिक की प्राकृतिक ऊर्जा केवल शरीर पर ही नहीं बल्कि मन एवं भावनाओं पर भी गहरा प्रभाव डालती हैं। स्फटिक वास्तव में हमारी मानसदृष्टि (Visualization) की शक्ति को बढा देता है। इसका प्रभाव हमारे मस्तिष्क रूपी कम्प्यूटर पर पड़ता है अतः इसके द्वारा शरीर और मन में रहने वाली नकारात्मक शक्ति को दूर कर उसके स्थान पर सकारात्मक शक्ति का संचार किया जाता है। मन एवं भावनाओं के साथ+साथ शरीर के सातों चक्रों को संतुलित करके स्फटिक उनकी कार्य क्षमता का विकास करता है। क्रिस्टल व्यक्ति के चारों ओर एक शक्तिशाली सुरक्षा शक्ति का क्षेत्र लगभग 100 फीट तक बढा देता है। यह दूसरों द्वारा भेजे गए नकारात्मक विचारों

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

के रूपों को प्रभावहीन कर देता है, इसके प्रयोग के बाद रोगियों के कमरों में जाने पर भी ;जहां शक्तिशाली नकारात्मक विचार होते हैं उनका कोई दुष्प्रभाव नहीं पडता।

क्वाट्र्ज क्रिस्टल की एक अद्वितीय विशेषता यह है कि यह विचारों और निश्चयों को अपने अन्दर सोख लेता है। हर प्रकार के स्फटिक में अपनी एक अलग तरंग या कंपन होती है। एक उज्ज्वल, स्वच्छ व पवित्र स्फटिक से जो ऊर्जा निकलती है वह जैविक आभा मण्डल द्वारा शीघ्र ही ग्रहण कर ली जाती है। यह ऊर्जा जैविक आभा मंडल से प्रभावित होती है और उस पर अपना प्रभाव भी डालती है। इसकी इसी विशेषता के कारण यह एक कुशल प्राकृतिक उपचार का कार्य करता है। जैसे ही यह किसी सजीव प्राणी, पेड़–पौधे, जीव जन्तु या वातावरण के संपर्क में आता है, यह उस प्राणी या वस्तु की प्राण ऊर्जा में सामान्य से कई गुना वृद्धि कर देता है जिसे किर्लियन फोटोग्राफी या पेण्डुलम के माध्यम से बखूबी सिद्ध किया जा सकता है। क्वाट्ज क्रिस्टल को हाथ में पकडने या इसके शरीर के संपर्क में आने से मस्तिष्क में अत्यधिक मात्रा में अल्फा तरंगें उत्पन्न होती हैं। अपनी कल्पना शक्ति को क्रिस्टल में डालने की क्रिया का उपयोग करने से आपका मनोमस्तिष्क अल्फा तरंगों की आवृत्ति पर कार्य करने लगता है। अल्फा मनोमस्तिष्क का वह स्तर है जिस पर अवचेतन मन के कम्प्यूटर के सुझाव को ग्रहण करने की क्षमता शुरू हो जाती है। इस स्तर पर ही पुराने हानिकारक प्रोग्राम को मिटाकर सही सुझावों द्वारा उपचार की प्रक्रिया की गति को बढ़ा दिया जाता है। दवाओं और सर्जरी के साथ स्फटिक उपचार करने से मरीज को कम समय में अधिक स्वास्थ्य लाभ मिलता है। इसका कोई विपरीत प्रभाव नहीं पडता।

स्वच्छ पारदर्शी क्वाट्र्ज क्रिस्टल अपने अन्दर इंद्र धनुषीय प्रकाश की किरणों को सोखने व उन्हें प्रसारित (Transmit) करने का अद्भुत कार्य करता है। अलग+अलग रंगों जैसे लाल, हरा, नीला, बैंगनी, स्वच्छ पारदर्शी इत्यादि स्फटिक अलग+अलग प्रकार के रोगियों की चिकित्सा में प्रयोग किए जाते हैं। हरे स्फटिक से भौतिक शरीर, हल्के गुलाबी स्फटिक से भावनात्मक शरीर, नीले लाजवर्त (Sodalite) स्फटिक (Rose Quartz) से मानसिक उपचार और आध्यात्मिक शरीर के लिए बैंगनी स्फटिक (Amethyst) का प्रयोग किया जाता है। इनका उपयोग विभिन्न रूपों में सुविधानुसार किया जा सकता है जैसे– माला, लॉकेट, स्फटिक चक्र, श्रीयंत्र, मूर्तियाँ Crystal Balls इत्यादि। हृदय चक्र पर लॉकेट या स्फटिक की माला के प्रयोग से रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ जाती है क्योंकि यह थाईमस ग्रन्थि को बल प्रदान करती है। अपने आसपास के वातावरण में इनका प्रयोग किया जा सकता है जैसे ऑफिस में मेज पर रखकर या रोगी के बिस्तर के आसपास या तकिए के नीचे रखकर ऊर्जा शक्ति के क्षेत्र को बढाया जा सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि शक्तिवर्धक प्रकृति का यह अनमोल सुरक्षा कवच मन, रोग एवं भावनाओं के उद्वेग को शांत कर शरीर व मन की शिथिलता को दूर कर स्वास्थ्य लाभ देता है, आत्मविश्वास और निर्भयता प्रदान कर व्यक्तित्व को निखारता है तथा आध्यात्मिक विकास में सहयोग करता है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

स्फटिक सामग्री – एक नजर में

1.	स्फटिक श्री यंत्र	–	सुंदरता, धन–संपदा, अध्यात्म
2	स्फटिक गणेश	–	सफलता, धन व बुद्धि में विकास
3	स्फटिक लक्ष्मी	–	धन संपदा
4	स्फटिक शिव परिवार	–	प्रत्येक क्षेत्र में सफलता व कल्याण हेतु
5	स्फटिक शिवलिंग	–	बीमारी से बचाव, चिंता से मुक्ति
6.	स्फटिक पेन्सिल	–	सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करने हेतु
7	स्फटिक बॉल	–	नकारात्मक शक्ति को दूर कर सकारात्मक शक्ति का विकास
8	स्फटिक पिरामिड	–	वास्तु सुधार में उपयोग, नकारात्मक शक्ति को दूर करता है।
9	स्फटिक कछुआ	–	वास्तु सुधार व दीर्घायु जीवन
10.	स्फटिक गणेश लॉकेट	–	विघ्न–बाधाओं से मुक्ति व मन की शांति
11.	स्फटिक ग्लोब	–	कैरियर व व्यापार में सफलता
12	स्फटिक चंद्र	–	मानसिक शांति
13	स्फटिक सूर्य	–	सफलता, स्वास्थ्य, कीर्ति
14.	स्फटिक माला	–	मानसिक शांति

Future Point

1. स्फटिक श्री यंत्र

स्फटिक एक सामान्य प्राप्ति वाला रंगहीन तथा प्रायः पारदर्शक मिलने वाला अल्पमोली पत्थर है। यह पत्थर देखने में कांच जैसा प्रतीत होता है। सिलिका आक्साइड का एक रूप यह स्फटिक पत्थर स्वयं में विशेष आब तथा चमकयुक्त नहीं होता, लेकिन विशेष काट में काटने तथा पालिश करने पर इसमें चमक पैदा की जा सकती है। स्फटिक पत्थर से बनी विभिन्न देवी देवताओं की मूर्तियां एवं यंत्र बनाये जाते हैं।

जिस प्रकार से नवग्रह होते हैं। ठीक उसी प्रकार से नौग्रहों की नौ प्रकार की लक्ष्मी होती हैं एवं नौ प्रकार की लक्ष्मी होती हैं। 1. आद्या लक्ष्मी 2. धान्य लक्ष्मी 3. धैर्य लक्ष्मी 4. गजलक्ष्मी 5. सन्तान लक्ष्मी 6. विजय लक्ष्मी 7. विद्या लक्ष्मी 8. धन लक्ष्मी 9. धान्य लक्ष्मी आदि।

अनन्त ऐश्वर्य व लक्ष्मी प्राप्ति के लिए श्रीविद्या व श्रीयन्त्र का महत्त्व सर्वाधिक है। श्रीविद्या ही ललिता, राजराजेश्वरी, महात्रिपुरसुन्दरी, बाला, पंचदशी और षोडशी इत्यादि नामों से विख्यात है। श्रीविद्या की साधना हेतु उसके आधारभूत 'श्रीयन्त्र' को समझना प्रथमः अनिवार्य है। इस 'श्री यन्त्र' के सम्मुख आर्तभाव से श्रद्धापूर्वक 'श्रीसूक्त' पढ़ने पर बहुतों को धन सम्पत्ति की प्राप्ति हुयी है। अनेक धर्मशास्त्रों में यह प्रमाण पाया गया है कि स्फटिक श्री यंत्र, दक्षिणावर्ती शंख, गोमती चक्र एवं तुलसी पत्र जिस घर में यह पांचों वस्तुयें एक साथ प्रतिष्ठित की जाती हैं और प्रतिदिन इनका पूजा एवं दर्शन किया जाता है। वहां धन और ऐश्वर्य की कभी भी कमी नहीं होती है।

षोडशाक्षरी मंत्र : ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

2. स्फटिक गणेश

स्फटिक रत्नों की श्रेणी में आता है, स्फटिक की अनेक मूर्तियां बनती हैं। गणेश की मूर्ति का महत्व अधिक माना जाता है। स्फटिक श्री गणेश की मूर्ति को घर में या कार्यालय में स्थापित करने से अनेक प्रकार के विघ्न टल जाते हैं। यह व्यक्ति को भेंट किया जाय तो अनन्त पुण्य प्राप्त होता है। यह विभिन्न क्षेत्रों में सफलता दिलाने वाला और विघ्नों को नष्ट करने वाला माना जाता है।

भगवान शिव का सर्वप्रिय रत्न होने के कारण स्फटिक गणेश को भी अति प्रिय है। स्फटिक गणेश प्रत्येक जाति धर्म के लिए शुभ माना गया है। इसके प्रभाव से ग्रहों की प्रतिकूलता भी नष्ट हो जाती है।

- शुभ मुहूर्त में प्रतिष्ठित करके, उपवास कर 108 बार गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करने से दिव्य विद्या की प्राप्ति होती है।
- श्वेत पुष्प, श्वेत चावल, श्वेत मोदक और दही का 90 दिनों तक दूर्वा डालकर भोग लगाने से समस्त विघ्नों का नाश होता है।
- किसी कार्य को निर्विघ्नतापूर्ण सम्पन्न होने के लिए घर के मुख्य दरवाजे के ऊपर इसे स्थापित करने से वांछित लाभ होता है।
- पंचमेवा का प्रतिदिन (सवा माह तक) भोग लगाने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।
- स्फटिक गणेश या किसी भी स्फटिक की मूर्ति को बार–बार स्पर्श करने से मस्तिष्क को धनात्मक ऊर्जा मिलती है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

3. स्फटिक लक्ष्मी

देवी लक्ष्मी का सभी देवी–देवताओं में एक विशेष स्थान है, यह सुख–समृद्धि, यश, मान आदि को देने वाली देवी कहा जाता है। स्फटिक लक्ष्मी की उपासना हिंदू परिवारों में दीपावली पर अथवा शुभ मुहूर्तों में की जाती है। इनके आशीर्वाद से व्यक्ति को सभी दिशाओं में सफलता प्राप्त होती है व शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक सुख की प्राप्ति होती है।

मंत्र : **ॐ महालक्ष्म्यै नमः।**

4. स्फटिक शिव परिवार

भारतीय हिंदू संस्कृति में भगवान शिव की अहम् भूमिका है। शिव परिवार की स्थापना सभी प्रकार के कष्टों से छुटकारा देने वाली तथा सुख–समृद्धि व वैभव की प्राप्ति कराती है। दाम्पत्य जीवन में मधुरता व संतान प्राप्ति हेतु स्फटिक शिव परिवार की पूजा अत्यंत सुखदायी व लाभकारी है। इसकी स्थापना शिव रात्रि प्रदोष, नागपंचमी आदि मुहूर्तों में करें व निम्न मंत्र का जप करें।

मंत्र : **ॐ नमः शिवाय।**

5. स्फटिक शिवलिंग

स्फटिकशिवलिंग की साधना में सिद्धि की बात सौ प्रतिशत सत्य है। भौतिक युग में विविध क्षेत्रों में साधनारत पुरुषार्थी चमत्कारी सफलतायें पाते देखे गये हैं। जीवन तो ऐसा विलक्षण क्षेत्र है जो कि जड़ जगत के किसी मूल्यवान एवं महत्वपूर्ण घटक से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है। जड़ सीमित है, चेतन असीम और अनन्त है। जड़ से केवल साधनभर पाये जा सकते हैं जबकि चेतन में तो आनन्द और उल्लास के भण्डार भरे पड़े हैं। इसकी उपासना से सैकड़ों गऊओं के दान हजारों, स्वर्ण मुद्राओं के दान तथा चारों तीर्थ का जो पुण्य मिलता है, वह फल इसके दर्शन करने से प्राप्त हो जाता है। शास्त्रकारों ने इसे साक्षात शिव कहा है।

भगवान् शिव वैष्णव, शैव, शाक्त तीनों धर्मो के लिए उपासना में श्रेष्ठ एवं सिद्धि के प्रदाता माने गये हैं। भगवान शिव के लिंग की स्थापना एवं पूजन का अत्यधिक महत्व पुराणों में वर्णित है। शिवलिंग को अनेक धातुओं एवं काष्ठ से निर्मित किया जाता है तथा पत्थर एवं रत्नों से भी शिवलिंग का निर्माण होता है। सर्वाधिक महत्व पार्थिव शिवलिंग पारद शिवलिंग एवं स्फटिक शिवलिंग का है पार्थिव शिवलिंग मिट्टी से निर्मित किया जाता है तथा पारद शिवलिंग पारा द्रव को ठोस बनाया जाता है और शिवलिंग का आकार दिया जाता है।

स्फटिक शिवलिंग का स्पर्श करने मात्र से इसकी दैवीय शक्ति मानव शरीर में प्रवेश कर जाती है तथा अनेक रोगों से मुक्त करता है। स्फटिक शिवलिंग पर अभिषेक करने से अन्य शिवलिंग की अपेक्षा हजारों गुना अत्यधिक फल मिलता है। इसे निर्मित करने में अत्यन्त परिश्रम होता है। स्फटिक शिवलिंग अत्यन्त दुर्लभ है जहाँ पर इनके मन्दिर हैं वहाँ लोग दूर–दूर से दर्शन मात्र के लिए हजारों की संख्या में आते रहते हैं और निश्चित ही लाभ प्राप्त करते हैं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

6. स्फटिक पेन्सिल

स्फटिक पेन्सिल सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करने के लिए गले में धारण की जाती है। इसका प्रयोग रेकी में भी किया जाता है। शरीर के एक विशेष अंग या चक्र को स्वस्थ करने हेतु रेकी लाइट को क्रिस्टल पाइन्टर के माध्यम से प्रयोग किया जाता है। नकारात्मक ऊर्जा को शरीर से हटाने के लिए भी क्रिस्टल पेन्सिल को झाड़ा लगाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। किसी विशेष इच्छा को पूरा करने के लिए इसका चार, आठ या 12 पेन्सिल का पावरग्रिड बना कर प्रयोग कर सकते हैं। स्फटिक पेन्सिल को वास्तु के जानकार घर के अंदर जगह–जगह इसको टांग देते हैं ताकि हमारे इर्द–गिर्द सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ा कर उसका सुरक्षा चक्र बनाया जा सके। मेडिटेशन में भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।

7. स्फटिक बॉल

स्फटिक बॉल का अपना अलग ही महत्व है। इसे अपने घर, दुकान या ऑफिस में लटका कर रखने से वहां की सभी नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव नष्ट होता है व सकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव बढ़ता है। यह शारीरिक व मानसिक बल को भी प्रदान करती है। इसे शुद्ध कर निम्न मंत्र का जप कर लटकाएं।

मंत्र : **ॐ ब्रह्मणे नमः।**

8. स्फटिक पिरामिड

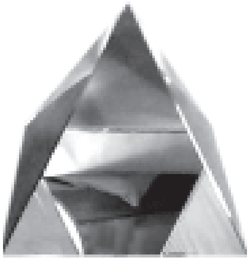

पिरामिड का अर्थ 'ऊर्जा की वृद्धि करने वाला' होता है। स्फटिक पिरामिड को वास्तु शास्त्र में विशेष महत्व दिया जाता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार पिरामिड नकरात्मक ऊर्जा को समाप्त कर सकारात्मक ऊर्जा का सृजन करता है। वास्तविक रूप से स्फटिक व पिरामिड दोनों ही यह कार्य करते हैं। इसकी स्थापना से पहले निम्न मंत्र का जप करें।

मंत्र : **ॐ ब्रह्मणे नमः।**

9. स्फटिक कछुआ

स्फटिक कछुए को वास्तु दोष के उपायों में उपयोग किया जाता है। इसे दीर्घायु का प्रतीक माना जाता है। यह प्रयोक्ता को एक सुरक्षात्मक कवच प्रदान करता है। इसके प्रभाव से व्यक्ति का मानसिक संतुलन बना रहता है। इसे अपने ऑफिस या घर में उचित स्थान में रखने से लाभ मिलता है व ऊर्जा वृद्धि होती है। इसे निम्न मंत्र का जप कर स्थापित करें।

मंत्र : **ॐ ब्रह्मणे नमः।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

10. स्फटिक गणेश लॉकेट

स्फटिक गणेश लॉकेट शुद्ध स्फटिक धातु से निर्मित है। इसे गले में माला की तरह धारण किया जाता है। जिनकी बौद्धिक ऊर्जा अधिक खपत होती है उन्हें इसे धारण करने से मानसिक शांति प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त यह लॉकेट क्रोध को भी नियंत्रित रखता है। अगर इसे गले में धारण करना न चाहें तो अपने पूजा स्थल में स्थापित करके पूजन करें। इससे भी शुभ फल की प्राप्ति होती है।

11. स्फटिक ग्लोब

क्रिस्टल ग्लोब को घर या व्यापारिक स्थल पर इस प्रकार रखना चाहिए कि यह आपके सामने रहे और दिन में कम से कम तीन बार इसे घुमाना चाहिए। यह कैरियर व व्यापार की सफलता में आपका सहायक सिद्ध होगा। शिक्षा व ज्ञान की वृद्धि में सहायक होगा।

12. स्फटिक चंद्र

ज्योतिष शास्त्र के अनुसारं चंद्र ग्रह का मानव जीवन पर शीघ्र प्रभाव पड़ता है। ग्रहों में चंद्र की गति संपूर्ण ग्रहों में अन्य संपूर्ण ग्रहों में सबसे अधिक है। इस ग्रह का प्रभाव अविलंब रूप से अनुभव किया जाता है। वेदों के अनुसार 'चंद्रमा मनसो जातः' अर्थात चंद्रमा मन का चंद्रमा विराट पुरूष परमात्मा का मनस्वरूप है जो कि संपूर्ण प्राणियों का मन का कारक मानसिक शांति होने पर सभी कार्य आसानी से पूर्ण हो जाती है। चंद्र ग्रह की हमारे भारतीय धर्म दर्शन में देव रूप में भी पूजा की जाती है। यदि किसी व्यक्ति के जन्मांग में चंद्र ग्रह अशुभ या कमजोर स्थिति में हो तो उसकी अनुकूलता के लिए स्फटिक चंद्र की नित्य पूजा एवं दर्शन करने से मानसिक शांति प्राप्त होकर आत्मबल में वृद्धि होती है।

किसी शुभ मुहूर्त में शुक्ल पक्ष के सोमवार के दिन रात्रि में चंद्रोदय होने पर प्रतिष्ठा आदि करके पंचोपचार पूजन करना चाहिए एवं शुक्ल पक्ष में चंद्रोदय के समय स्फटिक चंद्र को चांदी की प्लेट अथवा तांबे के लोटे में जल, दूर्वा, अक्षत, चंदन (पाउडर) आदि डालकर चंद्र के समक्ष ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः बोलकर चंद्रमा को अर्घ्य अर्पण करने से चंद्र ग्रह की शांति होती है।

स्फटिक चंद्र के समक्ष घी का दीपक जलाकर 108 बार चंद्र मंत्र से अभिषेक करने से मानसिक शांति एवं पारिवारिक सुख शांति बनी रहती है।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

13. स्फटिक सूर्य

विभिन्न कार्यों की सिद्धि हेतु पुराणों में अनेक विधियां बतायी गयी हैं जो कि गृहस्थ आश्रम में सम्पादित करना कठिन है। इस भाग दौड़ की जिन्दगी में प्रतिदिन पूजा पाठ के लिए कई घण्टे समय निकालना कठिन है। जिन जातकों को ग्रह शान्ति के उपाय में बाधाएं आती हैं या सामर्थ्य न हो तो वे स्फटिक सूर्य की उपासना से लाभ ले सकते हैं। सूर्य ग्रहों का राजा है। ज्योतिष के अनुसार सूर्य का उपाय करने से समस्त ग्रहों की शान्ति हो जाती है।

शुभ मुहूर्त में रविवार के दिन प्रातः काल स्फटिक सूर्य की प्रतिष्ठा आदि करके षोडषोपचार पूजन करना चाहिये तत्पश्चात यथा विधि प्रतिदिन सूर्योदय के समय स्फटिक सूर्य को तांबे की थाली में रख कर तांबे के लोटे में जल, दूर्वा, अक्षत, पुष्प, हल्दी (पाउडर) आदि डालकर सूर्य के समक्ष ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः बोलकर अर्घ्य अर्पण करने से अनेक ग्रहों का शुभ प्रभाव प्राप्त होता है।

- स्फटिक सूर्य को प्रतिदिन सूर्य के सम्मुख रखकर सूर्य मंत्र से 108 विल्व पत्र अर्पण करने से लक्ष्मी लाभ होता है।

14. स्फटिक माला

ईश्वरीय शक्ति से भरपूर स्फटिक माला का प्रयोग सदियों से हमारे ऋषि मुनि करते आ रहे हैं। इस माला के प्रभाव से नकारात्मक भावनाओं व वातावरण का शमन होता है। आध्यात्मिक ज्ञान की वृद्धि हेतु व रोगों से बचने के लिए यह माला अत्यंत महत्वपूर्ण है। जिन व्यक्तियों को रक्त संबंधी विकार होता है वह भी इसे धारण करें तो लाभ मिलता है। इसे शुक्रवार को धारण करें व मंत्र जप करें।

मंत्र : **ॐ नमः शिवाय।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अध्याय – 7

पारद

परिचय एवं संरचना

पारद वस्तुओं की साधना से सफलता शीघ्र प्राप्त होती है। वर्तमान भौतिक युग में विविध क्षेत्रों में साधनारत जातक चमत्कारी सफलताएं पाते देखे गये हैं। जीवन तो ऐसा विलक्षण क्षेत्र है, जो जड़ जगत के किसी मूल्यवान घटक से अधिक बहुमूल्य है। शिव पुराण में पारे को शिव का पौरुष कहा गया है। इसके दर्शन मात्र से पुण्यफल की प्राप्ति होती है। यही कारण है कि शास्त्रों में इसे अत्यंत महत्व दिया गया है।

पारद सामग्री घर, व्यवसाय, वाहन आदि में रखने से उसकी दैवीय शक्ति जातक को लाभ प्रदान करती है। घर में पारद सामग्री रखना ज्यादा उचित होता है। पारद सामग्री का तापमान हमेशा ही न्यूनतम् होता है, जिसे छूते ही उसकी गुणवत्ता का आभास हो जाता है। पारद धातु में वे अनुपम एवं असीमित गुण पाये जाते हैं, जो मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक होते हैं। पारद से निर्मित वस्तुओं को सूक्ष्मता से देखने पर उन पर छोटे–छोटे धब्बे दिखते हैं। वजन में यह लोहे से सोलह गुना अधिक भार का होता है। पारद सामग्री को बर्फ के बीच में रखने से वह अपने भार के अनुपात में बर्फ को शोषित कर लेता है। पारद सामग्री के निर्माण में अत्यंत कठिनाइयां आती हैं। अनेक औषधियों के संयोग, मिश्रण, घर्षण एवं विमलीकरण से इसे ठोस बनाया जाता है। ठोस होने पर इसे आलौकिक, दुर्लभ, मूल्यवान एवं शुद्ध माना जाता है।

उपयोग एवं लाभ

जैसे एक ही रोग की हजारों दवाईयां होती हैं, उसी प्रकार पारद सामग्री का उपयोग भी अनेक प्रकार से किया जा सकता है, जैसे सामग्री के सम्मुख स्तोत्र, मंत्र, कवच, पूजन, जप, अभिषेक, सामान्य रूप से नमन्, स्पर्श एवं दर्शन आदि जातक को लाभ प्रदान करते हैं। यह धातु शिव की है, अतः शिव के किसी भी मंत्र द्वारा इसकी पूजा की जा सकती है।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

पारद सामग्री – एक नजर में

1. पारदशिवलिंग – सभी क्षेत्रों में सफलता
2. पारद लक्ष्मी – धन की प्राप्ति
3. पारद गणेश – धन, सफलता, बुद्धि की वृद्धि
4. पारद श्रीयंत्र – सुंदरता, धन, कलात्मकता
5. पारद पिरामिड – नकारात्मक शक्ति को दूर करने तथा वास्तु में सुधार हेतु
6. पारद लक्ष्मी गणेश – सभी तरह की सफलता
7. पारद शिव – बीमारी से छुटकारा, मृत्यु और गंभीर खतरे से बचाव
8. पारद शंख – भाग्योन्नति
9. पारद दुर्गा – दुःख, बीमारी और गरीबी से मुक्ति
10. पारद शिव परिवार – चारों ओर सफलता और कल्याण
11. पारद लक्ष्मी पादुका – लक्ष्मी का अशीर्वाद प्राप्त करने के लिए
12. पारद वैभव लक्ष्मी चौकी – श्रीयंत्र को स्थापित करने हेतु
13. पारद हनुमान – शक्ति, बल और सुरक्षा
14. पारद पंचमुखी हनुमान – शक्ति, बल और सुरक्षा
15. पारद गोली – जेब व अनाज भंडार में रखने हेतु

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

1. पारद शिवलिंग

पारद तरल होता है इसकी विशेषता यह है कि यह अपना रंग हर धातु पर चढ़ा देती है। चाहे सोना, चांदी, पीतल, तांबा आदि कोई भी धातु क्यों न हो। शिवपुराण में पारा धातु को भगवान शिव का वीर्य कहा गया है। शास्त्रकारों ने इसे साक्षात् शिव कहा है।

शिवलिंग का महत्त्व

शिवलिंग को अनेक धातुओं एवं काष्ठ तथा पत्थर एवं रत्नों से भी शिवलिंग का निर्माण होता है। सर्वाधिक महत्व पार्थिव शिवलिंग एवं पारद शिवलिंग का है पार्थिव शिवलिंग मिट्टी से निर्मित किया जाता है तथा पारद शिवलिंग पारा द्रव को ठोस बनाकर निर्मित किया जाता है। पारद शिवलिंग का स्पर्श करने मात्र से अनेक रोगों से मुक्ति मिलती है। इसका अभिषेक करने से अन्य शिवलिंगों की अपेक्षा हजारों गुना अधिक फल मिलता है। इसे घर में स्थापित कर नित्य बिल्व पत्र अर्पित करने से धन की वृद्धि होती है। पारद शिव लिंग पर पानी का असर नहीं होता। इसे धूप में देखने पर इंद्रधनुषी आभा दिखाई देती है। पारद अपने आप में सिद्ध पदार्थ माना गया है। रत्न समुच्चय में पारद शिव लिंग की महिमा का विशद उल्लेख है। इसकी आराधना से सभी रोग दूर हो जाते हैं।

पारद शिवलिंग की परख

- पारद शिवलिंग का प्रत्यक्ष प्रमाण स्पर्श करने मात्र से पता चल जाता है इसका तापमान बहुत कम होता है।
- पारद शिवलिंग को छूने से बर्फ के समान ठण्डा और वजन में यह बहुत भारी होता है।
- पारद शिवलिंग को माइक्रोस्कोप से देखने पर इसमें कुछ छोटे–छोटे धब्बे दिखते हैं।

मंत्र : **ॐ नमः शिवाय। अथवा**

ॐ त्र्यम्बकम् यजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

2. पारद लक्ष्मी

पारद लक्ष्मी की स्थापना करने पर लक्ष्मी संबंधी सभी दोषों का शमन होता है तथा धनादि की वृद्धि होती है। लक्ष्मी जी का आर्थिक समृद्धि के लिए विशेष महत्व है। इनकी कृपा से धन प्राप्ति में आने वाली संपूर्ण विघ्न–बाधाएं नष्ट होती हें जिससे धनागम के द्वार खुल जाते हैं। श्रीमहालक्ष्मी त्रिशक्ति चंडी देवी का ही तीन स्वरूपों में एक स्वरूप हैं, इनकी अपने घर में पूजा करने से विशेष धन लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

पारद धातु स्वयं सिद्ध धातु होने से इस धातु से बनी देव मूर्तियों का विशेष पूजा प्राण प्रतिष्ठा आदि करने की आवश्यकता नहीं होती। इस धातु में बनी लक्ष्मी, की पूजा करने से शीघ्र धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होते हैं। जीवन में उत्तरोत्तर धनवृद्धि होती है। घर में सभी प्रकार से सुख, शांति, समृद्धि बनी रहती है।

पारद लक्ष्मी को अपने घर के अतिरिक्त व्यवसाय स्थल, फैक्ट्री, दुकान कार्यालय आदि में भी स्थापित कर सकते हैं। इनके प्रभाव से आमदनी में वृद्धि, व्यवसायिक संपर्कों में सुधार होता है।

बुध दोष, दरिद्रता, बौद्धिक तनाव, मानसिक रोग आदि के शमन् के लिए पारद लक्ष्मी के सम्मुख निम्न मंत्र का 24 संख्यात्मक जप और पाठ करने से अनोखा लाभ होता है :

मंत्र : **ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

3. पारद गणेश

गणेश जी का आर्थिक समृद्धि के लिए विशेष महत्व है। गणेश जी ऋद्धि–सिद्धि व बुद्धि के दाता हैं सकल विघ्नों के विनाशक हैं, शुभ हैं। विशेष मंगल कारक हैं, इनकी कृपा से धन प्राप्ति में आने वाली संपूर्ण विघ्न–बाधाएं नष्ट होती हें जिससे धनागम के द्वार खुल जाते हैं।

पारद धातु स्वयं सिद्ध धातु होने से इस धातु से बनी देव मूर्तियों का विशेष पूजा प्राण प्रतिष्ठा आदि करने की आवश्यकता नहीं होती। इस धातु में बनी गणेश की पूजा करने से शीघ्र धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होते हैं। जीवन में उत्तरोत्तर धनवृद्धि होती है। घर में सभी प्रकार से सुख, शांति, समृद्धि बनी रहती है।

पारद गणेश जी को अपने घर के अतिरिक्त व्यवसाय स्थल, फैक्ट्री, दुकान कार्यालय आदि में भी स्थापित कर सकते हैं। इनके प्रभाव से आमदनी में वृद्धि, व्यवसायिक संपर्कों में सुधार व व्यापार में वृद्धि होकर ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत होता है। अनेक प्रकार के दोषों को शमन करने, भौतिक सुख पाने, पूर्व जन्म के दोषों का शमन के लिए पारद गणेश के सम्मुख निम्न मंत्र का जप करना लाभकारी है :

मंत्र : एक दंताय विद्‌महे वक्र तुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।।

4. पारद श्री यंत्र

यह पूजा स्थल अथवा किसी भी स्थान पर स्थापित किया जा सकता है। श्री यंत्र को स्थापित करने से आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। इस यंत्र के प्रभाव से जीवन के अनेक अभाव दूर होते हैं। यदि नौकरी में अधिकारियों से मतभेद, मनमुटाव तथा तरक्की में विलंब हो तो ये बाधाएं दूर होती हैं।

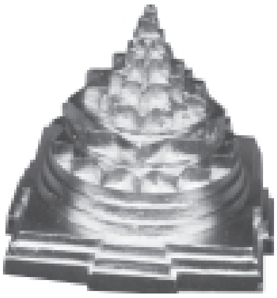

श्री लक्ष्मी के अनेक मंत्र : अधिक सुख–समृद्धि पाने के लिए भगवती के किसी भी मंत्र को कमल गट्‌टे अथवा लाल चंदन की माला पर यथाशक्ति जप करना चाहिए। जप करने के लिए निम्न मंत्रों में से किसी भी मंत्र का चयन किया जा सकता है:

1. श्रीं ह्रीं क्लीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा लक्ष्म्यै नमः।
2. ऊं श्री महालक्ष्म्यै स्वाहा।

श्री यंत्र की स्थापना विधि : शुद्धता एवं विश्वासपूर्वक शुक्रवार, सोमवार अथवा गुरुवार को सुबह उठ कर, गंगा जल युक्त जल से स्नानादि कर के, ललाट पर लाल चंदन अथवा रोली का चंदन लगा कर, यथाशक्ति लक्ष्मी का कोई भी मंत्र जप करते हुए, श्री यंत्र को केसर युक्त कच्चे दूध में धो कर पूजन स्थल, व्यवसाय स्थल, दफ्तर, घर, अथवा कहीं भी, शुद्ध स्थान पर लाल रेशमी कपड़े पर स्थापित करना चाहिए। दीपावली, दशहरा, शिवरात्रि, नवरात्रि, सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण आदि पर्वो पर श्री यंत्र की विशेष पूजा में लक्ष्मी के प्रिय मंत्रों का पाठ, श्रीसूक्त का पाठ, कनकधारा आदि का पाठ करना चाहिए। श्री यंत्र के सम्मुख प्रतिदिन सामान्य रूप से धूप, अथवा अगरबत्ती तथा घी का दीपक जलाने से लक्ष्मी की सामान्य पूजा हो जाती है। श्री यंत्र के चोरी होने, टूट जाने, पर पुनः स्थापित किया जाता है।

बुध ग्रह को बली करने के लिए पारद श्री यंत्र शीघ्र ही शुभ फल प्रदान करता है तथा जातक की बौद्धिक क्षमता में वृद्धि लाता है।

• लक्ष्मी दोष, दरिद्रता, धन लाभ, धन रक्षा, धन संचय आदि कार्यों में लाभ पाने के लिए पारद श्री यंत्र के सम्मुख निम्न मंत्र का पाठ अथवा जप करना लाभकारी है :

मंत्र : ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

5. पारद पिरामिड

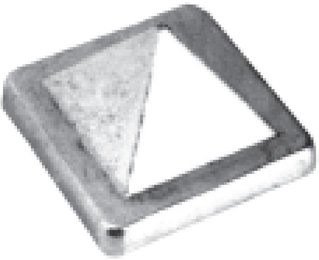

विभिन्न दिशाओं से प्रवेश करने वाली आकाशीय ऊर्जा अवरुद्ध होने से वास्तु के नियम भंग होते हैं तथा आकाशीय ऊर्जा की कमी हो जाती है। इसे वास्तु दोष कहते हैं। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि जिन घरों में आकाशीय ऊर्जा अवरुद्ध, या प्रभावित होती है, उन घरों में वास्तु दोष माना जाता है। वास्तु दोष को कम करने तथा आकाशीय ऊर्जा बढ़ाने के लिए अनेक उपाय करने होते हैं, अथवा घर को पुनः तोड़ कर नये ढंग से बनाना होता है। ऐसी स्थिति में आर्थिक हानि भी होती है।

पारद पिरामिड अल्प मूल्य का उपाय है। घर, कार्यालय, अथवा कोई भी कार्यस्थल हो, वहां यह पिरामिड रखने से आकाशीय ऊर्जा अधिक मिलती है, जिसके फलस्वरूप शरीर की अनेक बीमारियां धीरे–धीरे नष्ट हो जाती हैं, घर में शांति का वातावरण बना रहता है, आर्थिक स्थिति स्वतः सुधरने लग जाती है तथा व्यक्ति दीर्घायु और सुखी जीवन का मालिक बन जाता है।

पारद पिरामिड को बिना किसी मंत्र जप, अथवा उपासना के उपयोग किया जा सकता है। यह पिरामिड जीवन पर्यंत लाभ प्रदान करता रहता है। मानसिक पीड़ा में यदि कोई जातक पारद पिरामिड को अपने सिर पर कुछ समय प्रत्येक सुबह रखे, तो उसे शीघ्र ही चमत्कारिक लाभ होता है। बुखार, पेट दर्द, जोड़ों के दर्द में पारद पिरामिड को दर्द के स्थान पर कुछ समय तक रखने से शीघ्र ही दर्द से छुटकारा मिलता है तथा नाभि पर रखने से बुखार खत्म हो जाता है।

6. पारद लक्ष्मी गणेश

दीपावली के दिन शुभ मुहूर्त में इन दोनों की युगल पूजा करने से सभी विघ्न–बाधाओं का शमन होता है। व्यापार एवं नौकरी में अच्छी तरक्की होती है। घर–परिवार में सुख, समृद्धि एवं मंगल का वास होता है।

लक्ष्मी एवं गणेश जी का आर्थिक समृद्धि के लिए विशेष महत्व है। गणेश जी ऋद्धि–सिद्धि के दाता हैं सकल विघ्नों के विनाशक हैं, शुभ हैं। विशेष मंगल कारक हैं, इनकी कृपा से धन प्राप्ति में आने वाली संपूर्ण विघ्न–बाधाएं नष्ट होती हें जिससे धनागम के द्वार खुल जाते हैं।

श्रीमहालक्ष्मी त्रिशक्ति चंडी देवी का ही तीन स्वरूपों में एक स्वरूप हैं, इनकी गणेश जी के साथ संयुक्त रूप से अपने घर में पूजा करने से विशेष धन लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

पारद धातु स्वयं सिद्ध धातु होने से इस धातु से बनी देव मूर्तियों का विशेष पूजा प्राण प्रतिष्ठा आदि करने की आवश्यकता नहीं होती। इस धातु में बनी लक्ष्मी, गणेश की साथ–साथ पूजा करने से शीघ्र धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होते हैं। जीवन में उत्तरोत्तर धनवृद्धि होती है। घर में सभी प्रकार से सुख, शांति, समृद्धि बनी रहती है।

पारद लक्ष्मी गणेश जी को अपने घर के अतिरिक्त व्यवसाय स्थल, फैक्ट्री, दुकान कार्यालय आदि में भी स्थापित कर सकते हैं। इनके प्रभाव से आमदनी में वृद्धि। व्यवसायिक संपर्कों में सुधार व्यापार में वृद्धि होकर ऐश्वर्याशाली जीवन व्यतीत होता है। **अनेक प्रकार के दोषों को शमन करने, भौतिक सुख पाने, पूर्व जन्म के दोषों का शमन करने के लिए पारद गणेश के सम्मुख निम्न मंत्र का जप करना लाभकारी है :**

मंत्र : एक दंताय विद्महे वक्र तुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात।।

Future Point

7. पारद शिव

भगवान शिव परमयोगी, परमगुरु, मृत्युंजय, सर्वशक्तिमान, त्रैलोक्य स्वामी आदि नामों से जाने जाते हैं पारद शिव की उपासना या दर्शन मात्र से व्यक्ति को सैकड़ों गायों के दान, हजारों स्वर्ण मुद्राओं के दान तथा काशी तीर्थों के स्नान करने से जितना फल मिलता है उतना ही पारद शिव की उपासना करने से मिलता है। भगवान शिव स्वयं कहते हैं कि जो मेरी आराधना करता है उसके घर में कभी दरिद्रता नहीं आती न ही जीवन में उसे मृत्यु भय रहता है। पारद शिव की पूजा से व्यक्ति को यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, पुत्र आदि में पूर्णता प्राप्त करते हुए अंत में मुक्ति की प्राप्ति होती है।

मंत्र : **गुरुणाम् गुरो शिवः।**

आदि गुरु शंकराचार्य के अनुसार मनोवांछित फल हेतु निम्न मंत्र का जप करना चाहिए –

चंद्रोद्भासितशेरवरे स्मरहरे गंगाधरे शंकरे। सर्पैर्भूषितकण्ठ कर्ण विविरे नेत्रोत्थ वैश्वानरे।
दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे मोक्षार्थम्कुरूचित्तवित्तिम् अखिलामन्यस्तुकिम् कर्मभिः॥
अथवा ॐ नमः शिवाय।

8. पारद शंख

पारद शंख को भगवान कुबेर का प्रतीक माना जाता है। इसका आध्यात्मिक पूजा–पाठ, वैदिक अनुष्ठानों में पूजन किया जाता है। शंख को देवताओं का प्रतीक मानकर पूजा जाता है। पारद शंख की स्थापना से व्यक्ति को मानसिक शांति आध्यात्मिक उन्नति की प्राप्ति तथा चिरस्थायी लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है। ऐसी भी मान्यता है कि पारद शंख की स्थापना से वास्तु दोषों का निराकरण भी होता है।

9. पारद दुर्गा

माता दुर्गा के नवार्ण मंत्र का जप करने मात्र से वांछित लाभ मिलता है तथा शीघ्र ही इसका प्रभाव वहां के सम्पूर्ण वातावरण को शुद्ध करता है। पारद दुर्गा की स्थापना से चोर भय, प्रेत भय, शत्रु भय, रोग भय, बन्धन भय आदि से छुटकारा पाया जा सकता है।

मंत्र : **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

10. पारद शिव परिवार

भारतीय हिंदू संस्कृति में भगवान शिव की अहम् भूमिका है। शिव परिवार की स्थापना सभी प्रकार के कष्टों से छुटकारा देने वाली तथा सुख–समृद्धि व वैभव की प्राप्ति कराती है। शिव परिवार में भगवान शिव, पार्वती, गणेश, कार्तिकेय व नंदी संभी साथ होते हैं। दाम्पत्य सुख व संतान प्राप्ति के लिए पारद शिव परिवार की पूजा अत्यंत ही लाभकारी होती है अधिकतर हिंदू परिवारों में इसकी स्थापना होती है। इसकी स्थापना शिव रात्रि, प्रदोष नागपंचमी आदि शुभ मुहूर्तो में की जा सकती है।

ॐ नमः शिवाय। अथवा
ॐ त्र्यम्बकम् यजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

11. पारद लक्ष्मी पादुका

पारद धातु में बनी लक्ष्मी पादुकाएं विशेष शुभदायी मानी जाती हैं। घर में अथवा व्यवसाय स्थल पर इनका पूजन करने से आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। इन चरण पादुकाओं को बिछाकर मन ही मन देवी लक्ष्मी से अपने घर में अथवा व्यवसाय स्थल आदि में स्थिर रूप से पधारने की प्रार्थना करें। दीपावली के पूजनोपरांत इन पादुकाओं की लक्ष्मी जी के चरणकमलों की भांति पूजा करें। लक्ष्मी की पादुकाओं के दर्शन–पूजन से आर्थिक असुरक्षा का भय दूर होता है और जीवन में आर्थिक सुरक्षा बनती है। इन पादुकाओं में अंकित समस्त चिह्न जैसे– स्वास्तिक, कमल, कलश, चक्र, मत्स्य, त्रिकोण, त्रिशूल, शंख, सूर्य, ध्वजा आदि शुभ एवं लाभ के प्रतीक हैं। दीपावली के दिन इन लक्ष्मी पादुकाओं का पंचामृत, गंध, अक्षत, धूप, दीप आदि से पूजन करें। ध्यान रहे कि इन पादुकाओं को इस प्रकार से स्थापित करें कि उनका मुख अपनी ओर रहे। नित्य उन्हें प्रणाम करें, दर्शन करें और सिर पर स्पर्श करें। इस प्रकार, नित्य पूजन दर्शन आदि करने से घर में लक्ष्मी का वास बना रहता है।

12. पारद वैभव लक्ष्मी चौकी

यह चौकी पारद धातु से निर्मित है, इसके आसन पर यंत्र राज श्रीयंत्र बना है तथा ऊपरी भाग पर अष्ट लक्ष्मी के चित्र अंकित हैं। दीपावली के शुभ मुहूर्त में इस चौकी पर चावल एवं पुष्पों का आसन बिछाकर अष्ट लक्ष्मी प्रतीक श्रीयंत्र की स्थापना करके पूजन करें। इस सिद्ध चौकी पर यंत्र हमेशा जागृत रहता है, जिसके प्रभाव से जीवन में धन, वैभव की कभी कमी नहीं होती है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

13. पारद हनुमान

पारद धातु से निर्मित पारद हनुमान जी की अत्यंत विशेषता है इनकी पूजा आराधना अत्यंत ही शीघ्र फलदायी सिद्ध होती है। किसी भी प्रकार की शारीरिक, मानसिक, वाद–विवाद भूत–प्रेत व वाहन दुर्घटना जैसी व्याधियों को दूर करने में विशेष उपयोगी है। शनि, राहु के दुष्प्रभावों को भी इनकी उपासना करके शांत किया जा सकता है। इनकी पूजा आराधना में विशेष रूप से ब्रह्मचर्य का पालन अति आवश्यक है। इनकी पूजा के लिए मंगलवार को हनुमान चालीसा, रामचरित मानस व सुंदर कांड का पाठ अवश्य करें। ऐसा करने से व्यक्ति को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

मंत्र : हं हनुमते रूद्रात्मकाय हुं फट्।

14. पारद पंचमुखी हनुमान

यह शत्रुनाश, कोर्ट कचहरी के मामलों में विजय, वाहन दुर्घटना व रोग से रक्षा के अतिरिक्त ऊपरी बाधा, बुरी नजर, जादू टोना इत्यादि से रक्षा में अत्यंत प्रभावशाली होते हैं। चिंता, भय, मानसिक तनाव, दुःख, दारिद्रय, संकट, खतरा व दुर्भाग्य नाश के लिए पंचमुखि पारद हनुमान की उपासना सर्वश्रेष्ठ है। इसके लिए निम्नांकित मंत्र का जप करें –

मंत्र : हं हनुमते रूद्रात्मकाय हुं फट्।

15. पारद गोली

इसे जादू, टोना, बुरी नजर तथा आकस्मिक दूर्भाग्य से सुरक्षा हेतु जेब में रखा जाता है। इसके अतिरिक्त इसे जनाज की विभिन्न प्रकार से कीटों से रक्षा के उद्देश्य से कृषक अपने अनाज भण्डारों में रखते हैं।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अध्याय – 8

शंख

हर मंगल कार्य का प्रारंभ शंख ध्वनि से होता है क्योंकि शंख ध्वनि से काल कंटक दूर भागते हैं और चारों ओर का वातावरण परिशुद्ध हो जाता है। भारतीय धर्म शास्त्रों में शंख का स्थान विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण है। शंख का अर्थ है संकल्प, सुनिश्चय का प्रकटीकरण। पुराणों में शंख को 'ॐ' का प्रतीक माना गया है इसलिए पूजा अर्चना तथा अन्य मांगलिक कार्यों पर शंख ध्वनि की विशेष महत्ता है।

वैज्ञानिक दृष्टि कोण से कहें तो शंख सागर में पाया जाता है जो कि ज्यादातर वामावर्त या दक्षिणावर्त आकार में बना होता है। शास्त्रों में विभिन्न स्थानों पर शंख को समुद्र मंथन से प्राप्त 14 रत्नों में एक माना जाता है।

महत्व व उपयोग

शंख को निधि का प्रतीक माना जाता है। इसे घर में पूजा स्थल पर रखने से अनिष्टों का शमन व सौभाग्य में वृद्धि होती है। पूजा, अनुष्ठान, आरती, यज्ञ तथा तांत्रिक क्रियाओं में इसका विशेष उपयोग किया जाता है। शंख साधक की इच्छित मनोकामना पूर्ति तथा अभीष्ट प्राप्ति में सहायक होते हैं। शंख को लक्ष्मी जी का सहोदर भाई माना जाता है। जो शंख दाहिने हाथ से पकड़ा जाता है, वह दक्षिणावर्ती तथा जो बाएं हाथ से पकड़ा जाता है वह वामावर्ती शंख कहलाता है। अपनी दुर्लभता एवं चमत्कारिक गुणों के कारण ये दोनों शंख अन्य शंखों की तुलना में अधिक मूल्यवान होते हैं।

शंख को यश, मान, कीर्ति, विजय और लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है इसलिए इसे वैदिक अनुष्ठानों एवं पूजन क्रियाओं, पारद तथा पार्थिव शिवलिंग की स्थापना, मंदिरों के निर्माण तथा रुद्राभिषेक करते समय उपयोग में लाया जाता है। इसके अतिरिक्त आरती, हवन, धार्मिक उत्सव, गृह प्रवेश, वास्तु दोष शमन, पूजन आदि शुभ अवसरों पर शंख नाद किया जाता है। पितृ तर्पण में शंख का अत्यधिक महत्व है।

ऊपर वर्णित पूजा अनुष्ठानों के अतिरिक्त शंख का उपयोग अन्य लाभ के लिए भी किया जाता है। इसे दुकान, मकान, ऑफिस, फैक्ट्री आदि में स्थापित करने से वहां के वास्तु दोष दूर होते हैं तथा लक्ष्मी का वास व व्यवसाय में उन्नति होती है। शंख को देवताओं के चरणों में रखा जाता है। पूजा स्थान में दक्षिणावर्ती शंख की स्थापना करने से चिरस्थायी लक्ष्मी का वास होता है। कामनापूर्ति हेतु शंख की नर और मादा की जोड़ी की स्थापना करनी चाहिए। कहा जाता है कि गणेश शंख में जल भरकर प्रतिदिन गर्भवती स्त्री को सेवन कराने से संतान स्वस्थ व रोग मुक्त होती है। कछुआ शंख की स्थापना से अन्न, धन, लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार मोती शंख को घर में रखने व उसकी पूजा करने से आध्यात्मिक उन्नति, सौभाग्य और लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा स्वास्थ्य अनुकूल रहता है।

शंख से रुद्र भगवान देवाधिदेव शिव का रुद्राभिषेक करने का विशेष माहात्म्य है। सूर्य को अर्घ्य देने के लिए भी सभी प्रकार के शंख काम में लाए जाते हैं। ज्योतिष और तांत्रिक साधनाओं में, भिन्न–भिन्न कार्यों की सिद्धि के लिए विभिन्न आकृतियों और नामों वाले शंखों को काम में लिया जाता है।

धन्वन्तरि के आयुर्वेद में भी शंख का महत्व कम नहीं है। शंख के बारे में बताया गया है कि इसके मध्य में वरुण, पृष्ठ भाग में ब्रह्मा तथा अग्र भाग में पवित्र नदियों गंगा और सरस्वती का वास है। शंख के दर्शन मात्र से सभी पाप नष्ट हो जाते

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

हैं। इन दिव्य शंखों को दरिद्रतानाशक, आयुवर्धक और समृद्धिदायक कहा गया है।

शंख का आयुर्वैदिक व वैज्ञानिक महत्व

शंख का आयुर्वैदिक एवं वैज्ञानिक महत्व भी है। वैज्ञानिकों के अनुसार शंख नाद करने से वायु शुद्ध होती है तथा नकारात्मक ऊर्जा का नाश और सकारात्मक ऊर्जा का सृजन होता है। इसकी ध्वनि के प्रसार क्षेत्र तक सभी कीटाणुओं का नाश हो जाता है। ह्रदय और दमा के रोगियों के लिए शंख नाद करना लाभदायक होता है। शंख नाद करने से गले से संबंधित बीमारियों से भी मुक्ति मिलती है। आयुर्वेद के अनुसार शंखोदक भस्म के सेवन से पेट से संबंधित बीमारियां दूर होती हैं और रक्त शुद्ध होता है।

शंख पूजन

शंख देवता का प्रतीक है। गंगाजल, दूध, घी, शहद, गुड़, पंचद्रव्य आदि से इसका अभिषेक किया जाता है। दीपावली, होली, नवरात्रि, राम नवमी, गुरु पुष्य योग या शुक्रवार को शुभ मुहूर्त में लाल रंग के वस्त्र पर विशिष्ट कर्मकांड विधि से शंख की स्थापना कर धूप, दीप, नैवेद्य से इसका पूजन नित्य करना चाहिए। ऐसा करने से सभी प्रकार के असाध्य रोग, दुख व दारिद्र्य दूर होते हैं।

अनुकूल वास्तु के लिए शंख स्थापना

घर के ईशान कोण में आसन पर शंख की स्थापना इस तरह करनी चाहिए कि उसका धारा मुख उत्तर की ओर हो। इससे सुख–संपदा और परिवार के सदस्यों में परस्पर प्रेम की अभिवृद्धि होती है और उनका स्वास्थ्य अनुकूल रहता है। शंख को तुलसी अर्पित करने से सभी प्रकार की सिद्धियों की प्राप्ति होती है। किंतु ध्यान रहे, यह क्रिया रविवार को नहीं करना चाहिए।

घर में ईशान कोण बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस दिशा में दक्षिणावर्ती शंख में गंगाजल भरकर रखने से घर में लक्ष्मी का सदैव वास रहता है। घर के ईशान कोण में शंख की स्थापना करने से विद्या का निरंतर विकास होता है व परिवार के सदस्यों का मानसिक संतुलन बना रहता है।

इस प्रकार शंख की विधिवत स्थापना और नियमित पूजा आराधना से सुख–समृद्धि, दीर्घायु पुत्र, लक्ष्मी आदि की प्राप्ति होती है। संभवतः इसीलिए कहा गया है, ''शंख शब्दो भवेद् यत्र तत्र लक्ष्मीश्च सुस्थिरा''।।

शंखों की उत्पत्ति के स्थलों में मालद्वीप, श्रीलंका, कैलाश मानसरोवर, निकोबार द्वीप समूह, अरब सागर, हिंद महासागर, प्रशांत महासागर आदि प्रमुख हैं।

भारतीय सभ्यता और संस्कृति के इतिहास में रुचि रखने वाले प्रत्येक हिंदू धर्मावलंबी के मन में शंख के प्रति विशेष आस्था है। प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान तथा जीवन में होने वाले 16 संस्कारों तथा अन्य कर्मकांडों में शंख का अपना अलग महत्व है।

हिंदू धर्म के सबसे पवित्र और गोपनीय कर्म 'गुरु दीक्षा' में शंख का महत्व किसी से छिपा नहीं है। गुरु शंख से शिष्य के कान में गुरु मंत्र फूंकता है। इस प्रक्रिया के प्रति आस्तिक समाज में विशेष श्रद्धा है।

आरती के समय मंदिरों में शंख ध्वनि की जाती है। मान्यता है कि आरती के समय शंख ध्वनि करने वाले व्यक्ति के समस्त पाप समूल नष्ट हो जाते हैं।

शंख ध्वनि का वैज्ञानिक आधार

भारतीय वैज्ञानिकों के अनुसार शंख ध्वनि का वातावरण पर विशेष प्रभाव पड़ता है। शंख ध्वनि जहां तक पहुंचती

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

है वहां तक के वातावरण में रहने वाले सभी किटाणु पूर्णतया नष्ट हो जाते हैं। इस तरह के सभी जीवाणु व रोग वातावरण में लगातार शंख ध्वनि होते रहने से पूर्ण रूप से समाप्त हो जाते हैं।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार शंख में जल भरने के बाद मंदिर में रख देना चाहिए और फिर घर की सभी वस्तुओं पर छिड़क देना चाहिए।

जिस तरह से किसी भी धातु के बर्तन में रखे हुए जल में उस धातु के गुण आ जाते हैं, उसी प्रकार शंख में रखे हुए जल में भी शंख के गुण आ जाते हैं। इस जल को मानव शरीर पर छिड़कने से संक्रामक रोग से उसकी रक्षा होती है और उसके जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। किसी भी धार्मिक अनुष्ठान का आरंभ शंख ध्वनि से किया जाता है। हिंदू धर्म में इसे प्रार्थना करने की मुख्य वस्तु माना जाता है।

प्रत्येक शंख का एक विशेष नाम होता है। विष्णु का शंख पांचजन्य शंख कहलाता है। अर्जुन शंख देवदत्त, भीम का पौंड्र, युधिष्ठर का अनंतविजय, नकुल का सुघोष और सहदेव का शंख मणिपुष्पक नाम से जाना जाता था।

वैज्ञानिक महत्व

शंख को कानों के करीब ले जाने पर समुद्र की हिलोरों की सी हल्की–हल्की ध्वनि सुनाई पड़ती है। शंख की ध्वनि से उत्पन्न कंपन पृथ्वी की नकारात्मक व विध्वंसक शक्तियों को रोकने में समर्थ हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त इन कंपनों के फलस्वरूप प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग से बचाव हो सकता है तथा ओजोन लेयर के सुराख भर सकते हैं। विज्ञान के अनुसार शंख बजाने से बजाने वाले के अंदर साहस, दृढ़ इच्छाशक्ति, आशा व उत्साह जैसे गुणों का संचार होता है। केवल वादक में ही नहीं, उस वातावरण में रहने वाले अन्य लोगों में भी इन गुणों का संचार होता है।

लोकश्रुति के अनुसार

शंख की ध्वनि से पशुओं को घबराहट होने लगती है, जिससे पूजा स्थल में ईश्वर ध्यान में पुजारी को सर्प इत्यादि खतरनाक जीव बाधा नहीं पहुंचाते। ऐसी भी मान्यता है कि शंख ध्वनि से बुरी आत्माएं दूर भागती हैं। शंख के इन्हीं गुणों के कारण पूर्वी भारत में प्राकृतिक आपदाएं व भूचाल इत्यादि आने पर शंखनाद करने की परंपरा आज भी प्रचलित है। इसके पीछे भावना यह होती है की भक्त जगत के पालनकर्ता (संरक्षक) को रक्षा के लिए पुकार रहा है।

शंख का आयुर्वेदिक या औषधीय महत्व

आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार शंख का विशेष औषधीय महत्व है। सावधनीपूर्वक शंख भस्म निर्मित दवाएं बहुत से रोगों को दूर कर देती हैं।

योग साधना करते समय नियमित रूप से शंख बजाने से श्वास नली मजबूत होती है, हृदय रोग दूर होता है तथा रोगप्रतिरोधक क्षमता विकसित होती है।

शंख से जुड़े सभी धार्मिक विश्वास वैज्ञानिक आधार लिए हुए हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि ध्वनि के प्रसारण में सूर्य की किरणें बाधा उत्पन्न करती हैं। इसलिए शंख ध्वनि का उपयुक्त समय प्रातः काल या सायंकाल माना गया है, जब सूर्य की किरणों का घनत्व कम होता है। शंख ध्वनि समस्त संक्रामक रोगों के किटाणुओं को नष्ट करती है।

भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बोस ने इस तथ्य को प्रयोगों के माध्यम से सत्य साबित किया। शंख ध्वनि का

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

श्रवण हकलाहट तथा बहरापन को दूर करता है। जो व्यक्ति नियमित रूप से शंख बजाता है, उसे श्वास रोग, अस्थमा तथा फेफड़ों के रोग में आराम मिलता है।

शंख ध्वनि कई प्रकार के रोगों को दूर कर सकती है। नियमित रूप से की गई शंख ध्वनि हवा तथा वातावरण को शुद्ध रखती है।

ऐसा मान्यता है कि जब शंख बजाया जाता है तो यह पुण्य की पाप पर विजय का ऐलान करता है। भगवान श्रीकृष्ण ने अत्यंत उच्च स्वर में महाभारत के युद्ध में शंखनाद करके पूरे संसार को चकित कर दिया था।

शंख के प्रकार

शंख कई प्रकार के होते हैं। इनमें प्रमुख इस प्रकार हैं। • दक्षिणावर्ती शंख • वामावर्ती शंख

- **दक्षिणावर्ती शंख** : जो शंख दाहिनी (दक्षिण) ओर खुलता है, दक्षिणावर्ती शंख कहलाता है। यह बड़ा दुर्लभ होता है। यह सफेद रंग का होता है तथा इस पर भूरी रेखाएं होती हैं। धन के देवता कुबेर की दिशा दक्षिण है, इसलिए दक्षिणावर्ती शंख धन संपत्ति व ऐश्वर्य का प्रतीक माना जाता है। इसका आकार अनाज के दाने जैसा तथा नारियल जितना बड़ा हो सकता है। यह बहुत गहरे समुद्र में मिलता है।
- **वामावर्ती शंख** : यह शंख बाईं ओर खुलता है, इसीलिए यह वामावर्ती शंख कहलाता है। यह शंख आसानी से मिल जाता है तथा सभी धार्मिक कार्यों में इसका प्रयोग होता है। अधिकतर शंख वामावर्ती होते हैं। ज्योतिषीगण इन शंखों को ऋणात्मक ऊर्जाओं को दूर करने हेतु प्रयोग करने की सलाह देते हैं। वामावर्ती शंख के बजाने से समस्त ऋणात्मक ऊर्जाएं समाप्त होती हैं तथा आस–पास के वातावरण व आत्मा का शुद्धिकरण होता है।

शंख – एक नजर में

1.	दक्षिणावर्ती शंख	– सुख–समृद्धि व वैभव लक्ष्मी की कृपा
2.	गणेश शंख	– ऋद्धि–सिद्धि का भंडार भरा रहता है तथा दरिद्रता से मुक्ति मिलती है।
3.	कछुआ शंख	– पारिवारिक उन्नति में आनेवाली बाधाओं को दूर करने हेतु
4.	मोती शंख	– मानसिक अशांति को दूर करने व सौभाग्य प्राप्ति हेतु
5.	वामवर्ती या बजानेवाले शंख	– धार्मिक कार्यों हेतु
6.	गोमुखी शंख	– धन–संपत्ति की प्राप्ति तथा अन्य मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए
7.	विष्णु शंख	– व्यवसाय में उन्नति और दरिद्रता को दूर करने हेतु
8.	अन्नपूर्णा शंख	– भाग्यवृद्धि और सुख–समृद्धि की प्राप्ति हेतु
9.	पांचजन्य शंख	– विजय व यश की प्राप्ति
10.	शनि शंख	– शनि कृपा के लिए
11.	कौड़ी शंख	– वैवाहिक सुख व ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए
12.	सीप शंख	– आरोग्य प्राप्ति
13.	गुरु शंख	– स्मरण शक्ति व शिक्षा प्राप्ति हेतु

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

1. दक्षिणावर्ती शंख

भारतीय संस्कृति में शंख की अपार महिमा एवं उपयोगिता बताई गई है। समृद्धि और आयु के वर्धन और दरिद्रता के शमन के साथ–साथ देवी–देवताओं के पूजन, ज्योतिष और तांत्रिक साधनाओं एवं शुभ कार्य के प्रारंभ में इसकी विशेष उपयोगिता बताई गई है। शंख भगवान विष्णु के चतुर्भज स्वरूप में उनके एक हाथ का आभूषण है। महाभारत में भगवान कृष्ण ने पांचजन्य शंख बजाकर युद्ध की शुरुआत की थी। आयुर्वेद में शंख भस्म अनेक प्रकार के रोगों को दूर करने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। योग में भी शंख मुद्रा का वर्णन है। बौद्ध धर्म में शंख अष्ट मंगल (शंख, श्रीवत्स, मत्स्य, पद्म, छत्र, कलश, चक्र, ध्वज) पदार्थों में से एक है।

पुराणों के अनुसार शंख की उत्पत्ति समुद्र मंथन से हुई थी। शंख समुद्र में लगभग सभी जगह पाए जाते हैं। मालदीव, श्री लंका, अंडेमान निकोबार, हिंद महासागर, अरब सागर व प्रशांत महासागर में मुख्य रूप से पाए जाते हैं। शंख एक समुद्री जीव का बाहरी हिस्सा होता है। प्रकृति में पचास हजार से भी अधिक प्रकार के शंख पाए जाते हैं – कुछ खारे पानी में तो कुछ मीठे पानी में। इनके आकार एक मिली मीटर से चालीस इंच तक के होते हैं व एक ग्राम से कई किलो तक के वजन में अनेक रंगों में पाएं जाते हैं।

शंख को बजाने से वातावरण की नकारात्मक ऊर्जा समाप्त और सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है। इससे आशा, आत्मबल, शक्ति व दृढ़ता बढ़ती है तथा भय दूर होता है। इसके अतिरिक्त श्रद्धा व विश्वास जागृत होता है तथा भाग्य और सुख–समृद्धि में वृद्धि होती है।

ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मांड एवं शंख की आकृति समान है। शंख के अंदर का घेरा ब्रह्मांड की कुंडली (स्पाइरल) की तरह होता है। शंख में गूंजने वाला स्वर ब्रह्मांड की गूंज के समान है। शब्द की गूंज भी शंख के द्वारा गुंजायमान ध्वनि जैसी ही होती है।

शंखनाद से अनेक प्रकार के कीटाणुओं का नाश होता है। वराह पुराण में कहा गया है कि मंदिर के दरवाजे खुलने व कोई धार्मिक कार्य प्रारंभ करने से पहले शंख अवश्य बजाना चाहिए। शंख के बजाने से सात्विक स्पंदन (वाइब्रेशन) का संचार होता है और तामसिक व राजसिक स्पंदन (वाइब्रेशन) समाप्त हो जाता है।

रुद्राभिषेक या किसी देवता का जलाभिषेक करते समय शंख में जल या दूध भरकर डाला जाए तो पाप नष्ट होते हैं व सुख–समृद्धि में वृद्धि होती है। इसके धारा मुख पर गंगा और सरस्वती, मध्य में प्रजापति एवं सिर पर सूर्य, चंद्र तथा वरुण का स्थान माना गया है।

अधिकतर शंख वामावर्ती होते हैं। दक्षिणावर्ती शंख दस प्रतिशत से भी कम पाए जाते हैं। यह जानने के लिए कि शंख दक्षिणावर्ती है या वामावर्ती उसके मस्तक को अपनी ओर व धारा मुख को बाहर की ओर रखें। यदि दायां भाग खुला हो तो वह दक्षिणावर्ती और यदि बायां भाग खुला हो तो वामवार्ती होगा। सामान्यतः दक्षिणावर्ती शंख को बाएं हाथ से पकड़ने में और वामावर्ती शंख को दाएं हाथ से पकड़ने में सुविधा होती है। वामावर्ती शंख को दाएं हाथ से पकड़ कर बजाया जा सकता है। दक्षिणावर्ती शंख को दाएं हाथ से पकड़ कर बजाने में असुविधा होती है। इसलिए बजाने वाले शंख वामावर्ती ही होते हैं।

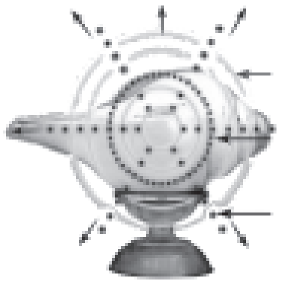
शंख का ऊर्जा चक्र

मुख्यतः दक्षिणावर्ती शंख भारत के दक्षिण में हिंद महासागर में पाया जाता है। जीव विज्ञान में इसे टर्बिनेला पायरम कहा जाता है। दक्षिणावर्ती शंख मुख्यतया तर्पण आदि के लिए उपयोग में लाए जाते हैं। लेकिन इनकी कुछ किस्में बजाने वाली भी पाई जाती हैं। इनका उपयोग बजाने में प्रचलित नहीं है, क्योंकि ये केवल बाएं हाथ से पकड़कर ही बजाए जा सकते हैं।

शंख की मौलिकता की पहचान एक्स–रे द्वारा की जाती है। कभी–कभी शंख के दोषों

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

को दूर करने के लिए कृत्रिम रूप से उसकी पाउडर द्वारा फिलिंग कर दी जाती है या कोने आदि बना दिए जाते हैं। यह कथन सत्य नहीं है कि केवल महंगे शंख ही दक्षिणावर्ती शंख होते हैं। दक्षिणावर्ती शंख अनेक किस्मों में पाए जाते हैं। किसी में रेखाएं होती हैं किसी में नहीं। बिना रेखाओं वाले शंख भी नकली नहीं होते– केवल अन्य साधारण तथा प्राप्त जाति के होते हैं और इन्हें भी दक्षिणावर्ती शंख की तरह माना व पूजा गया है। इनके फल किसी भी प्रकार से महंगे या अप्राप्त जाति के दक्षिणावर्ती शंख के बराबर ही होते हैं।

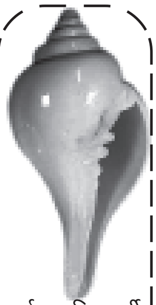

दुर्लभ दक्षिणावर्ती (टर्बिनेला पायरम)

साधारण दक्षिणावर्ती शंख

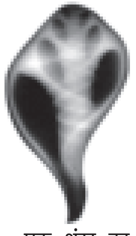

एक शंख का एक्सरे

दक्षिणावर्ती शंख के उपयोग

- धन प्राप्ति के व्यवधानों के निवारण के लिए दक्षिणावर्ती शंख प्रभावकारी माना गया है। इसकी स्थापना करने और शंखोदक छिड़कने से दुख, कष्ट, दरिद्रता और दुर्भाग्य का शमन होता है और यह भाग्य को चमकाता है। यह शंख साक्षात! लक्ष्मी का रूप है।

शंखादौ चंद्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता। पृष्ठे प्रजापति विद्यादग्रे गंगा सरस्वती।।
त्वं सागरोत्पन्नो विधृतःकरे। नमित सर्वदैवेश्च पांचजन्य नमोऽस्तुते।।

दक्षिणावर्ती शंख के शीर्ष में चंद्र देवता, मध्य में वरुण, पृष्ठ भाग में ब्रह्मा और अग्र भाग में गंगा, यमुना तथा सरस्वती नदियों का वास होता है।

- दक्षिणावर्ती शंख से लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है – इसके बिना लक्ष्मी जी की आराधना पूजा सफल नहीं मानी जाती।
- दक्षिणावर्ती शंख से पितृ–तर्पण करने पर पितरों की शांति होती है।
- दक्षिणावर्ती शंख में जलभर कर गर्भवती स्त्री को सेवन कराने से संतान स्वस्थ व रोग मुक्त होती है।
- दक्षिणावर्ती शंख से शालिग्राम व स्फटिक श्री यंत्र को स्नान कराने से वैवाहिक जीवन सुखमय और लक्ष्मी का चिर स्थायी वास होता है।
- चंद्र ग्रह की प्रतिकूलता से होने वाले श्वास व हृदय रोगों की शांति के लिए दक्षिणावर्ती शंख की नित्य पूजा करें।
- दक्षिणावर्ती शंख की स्थापना से वास्तु दोषों का निवारण होता है।
- पुलस्त्य संहिता के अनुसार, स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति का एक मात्र उपाय दक्षिणावर्ती शंख कल्प (प्रयोग) ही है। इस प्रयोग से ऋण, दरिद्रता तथा रोग आदि मिट जाते हैं और साधक के घर में हर प्रकार से संपन्नता आने लगती है।
- दक्षिणावर्ती शंख को अपने घर अथवा व्यवसाय स्थल में विधिवत् प्राण प्रतिष्ठित करके स्थापित कर नित्य प्रातः उसके दर्शन और निम्नलिखत मंत्र से उसे नमस्कार करें, चित्त शांत होगा, दरिद्रता दूर होगी और लक्ष्मी की कृपा बनी रहेगी।

ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिणमुखाय, शंखानिधये समुद्रप्रभावय नमः।

- दक्षिणावर्ती शंख में जल भरकर किसी स्त्री, पुरुष या बच्चे के ऊपर छिड़कने से रोग, नजर दोष, ग्रहों के कुप्रभाव, जादू–टोना आदि से उसकी रक्षा होती है।
- दक्षिणावर्ती शंख में गाय का दूध भरकर भगवान शिव को अर्पित करने या उससे उनका अभिषेक करने से वह शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं तथा भक्त की मनोकामना पूरी करते हैं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

2. गणेश शंख

गणेश शंख रूपाकृति में गणपति स्वरूप है। चारों ओर से घुमा कर देखने पर लंबोदर, विघ्नहरण गणेश की प्रतिमा के दर्शन होते हैं। इसलिए इस शंख का नाम गणेश शंख रखा गया है। इस दिव्य शंख की रूपाकृति सफेद और पीली आभायुक्त एवं इसकी लंबाई 2 से 3 इंच तक होती है। इसकी उत्पत्ति हिमालय के मानसरोवर झील और समुद्री तटवर्ती क्षेत्रों में कम गहराई में होती है। दुर्लभ तथा अपर्याप्त होने के कारण इसका मूल्य भी अधिक होता है। गणेश शंख के सूंड क्षेत्र से बाण गंगा निकली होती है। आचमन आदि करने का विधान यहां के जल निकास से होता है। असली गणेश शंख कहीं से प्राप्त कर, ॐ गणेश शंखाय मम् धनवर्षा कुरु–कुरु नमः। मंत्र से 108 बार शंख माला से सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठित कर, अपने भवन, या व्यवसाय स्थल पर, स्नानादि से निवृत्त हो कर, पूजा स्थल पर स्थापित करें और जल भर कर आचमन करें तथा भवन और व्यवसाय स्थल पर जल का छिड़काव करें। जिस घर में इस शंख की स्थापना होती है, उस घर में आर्थिक समस्या नहीं रहती है। ऋद्धि–सिद्धि का भंडार भरा रहता है तथा दरिद्रता से मुक्ति मिलती है। इसके प्रभाव से रूका उद्योग भी फिर चालू हो जाते हैं। उस जगह लक्ष्मी स्वतः आ जाती है। स्वयं भगवान एकदंत गणेश विराजमान हो जाते हैं। कर्ज मुक्ति और वास्तु दोष शांति का यह अचूक साधन है। व्यवसाय वृद्धि और श्री समृद्धि का यह सटीक उपाय है। कपिला गाय के दूध से आचमन करने से परिवार निरोग रहता है। इससे सुख–शांति, समृद्धि का स्थायी वास होता है। कष्ट कभी भी पास नहीं आते हैं।

3. कछुआ शंख

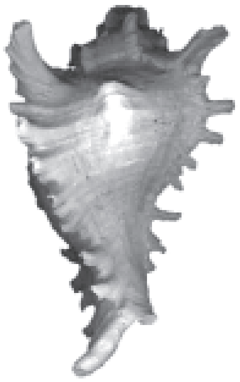

इस शंख की आकृति कछुए के समान होती है। जिस कारण इसे कछुआ शंख कहा जाता है। इस शंख को धन संपत्ति प्रदाता माना जाता है। यह शंख परिवार की उन्नति में आने वाली बाधाओं को दूर करती है। यह एक धार्मिक मंगल चिह्न के रूप में मंदिरों व घरों के पूजा स्थल में रखा जाता है।

शुद्ध एवं पवित्र शंख को महाशिवरात्रि, होली, दीपावली, नवरात्रि आदि शुभ एवं पावन अवसरों पर अथवा रवि पुष्य व गुरु पुष्य नक्षत्रों के शुभ मुहूर्त में लाल वस्त्र के आसन पर इसकी विधिवत् स्थापना से अच्छे फल प्राप्त होते हैं और घर हर प्रकार के वास्तुदोष से सुरक्षित रहता है। स्थापना के पश्चात् इसका धूप, अगरबत्ती और दीपक से नियमित रूप से पूजन करना चाहिए।

इसमें लाल गाय का दूध भरकर घर में छिड़काव करने से वास्तु दोष समाप्त हो जाते हैं। पूजा करने के पश्चात इसमें गाय का दूध व गंगाजल भरकर पीने से असाध्य रोग व मानसिक दुर्बलता से मुक्ति मिलती है व मन स्थिर होता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

4. मोती शंख

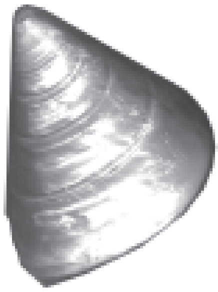

यह चमकदार आभायुक्त होता है। इस शंख की ऊंचाई 4 से 5 इंच की होती है तथा यह गोलाकार होता है। यह ऊपर से संकरा और नीचे से चौड़ा होता है। इस शंख की उत्पत्ति कैलाश मानसरोवर झील के बर्फीले ठंडे–मीठे स्वच्छ जल में होती है। उच्च गुणवत्ता का मोती भी इसी शंख में उत्पन्न होता है। मानसिक अशांति दूर करने के लिए यह उत्तम माना गया है। इस शंख से गंगा जल का रोजाना आचमन करने से हृदय और श्वास संबंधी रोगों का शमन होता है। इसे सौभाग्य प्राप्ति के लिए सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। दक्षिणावर्ती, वामावर्ती, आदि शंखों की भांति इसमें विष्णु का निवास माना जाता है। इसे घर में पूजा स्थल में रखने से चन्द्रमा का दोष नष्ट होता है। इसकी प्रतिदिन पूजा प्रतिष्ठा करने से मन को एक विशेष प्रकार की शान्ति मिलती है।

ॐ नमः मोती शंखायः मम शरीरस्यः असाध्य रोग शीघ्र मुक्ति प्रदान कुरु–कुरु स्वाहाः।' मंत्र का शंख की माला से 108 बार जप कर मोती शंख को सिद्ध और जाग्रत करना चाहिए। प्रमाणिक मोती शंख प्राप्त कर अपने घर में पूजा स्थल पर स्थापित करें। हृदय रोगी को यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

मोती शंख में अनेक औषधीय गुण भी हैं। मान्यता है कि इस शंख के जल से भोजन बनाने से भोजन रोगाणुओं से मुक्त होता है। इसकी भस्म का करेले के रस और गाय के दूध के साथ सेवन करने से मधुमेह से रक्षा होती है। त्वचा रोग से बचाव के लिए इसकी भस्म को नारियल के तेल के साथ मिला कर लेप करना चाहिए। एक रत्ती शुद्ध शिलाजीत को गर्म दूध में मिलाकर उसे शंख में भरकर सेवन करने से शारीरिक और स्मरण शक्ति में अत्यंत वृद्धि होती है।

5. वामवर्ती या बजानेवाले शंख

यह शंख बाईं ओर खुलता है, इसीलिए यह वामावर्ती शंख कहलाता है। इसे दायें हाथ से पकड़ा जाता है। यह शंख आसानी से मिल जाता है तथा सभी धार्मिक कार्यों में इसका प्रयोग होता है। अधिकतर शंख वामावर्ती होते हैं। दैनिक पूजा–पाठ एवं कर्मकांड अनुष्ठानों के आरंभ में तथा अंत में वामावर्ती शंख का नाद किया जाता है। इसका मुख ऊपर से खुला होता है। इसका नाद प्रभु के आवाहन के लिए किया जाता है। इसकी ध्वनि से ॐ शब्द निकलता है। यह ध्वनि जहां तक जाती है, वहां तक की नकारात्मक ऊर्जा नष्ट हो जाती है। वैज्ञानिक भी इस बात पर एकमत हैं कि शंख की ध्वनि से होने वाले वायु–वेग से वायुमंडल में फैले वे अति सूक्ष्म किटाणु नष्ट हो जाते हैं, जो मानव जीवन के लिए घातक होते हैं।

उक्त अवसरों के अतिरिक्त अन्य मांगलिक उत्सवों के अवसर पर भी शंख वादन किया जाता है। महाभारत के युद्ध के अवसर पर भगवान कृष्ण ने पांचजन्य निनाद किया था। कोई भी शुभ कार्य करते समय शंख ध्वनि से शुभता का अत्यधिक संचार होता है।

शंख वादन के अन्य लाभ भी हैं। इसे बजाने से सांस की बीमारियों से छुटकारा मिलता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से शंख बजाना विशेष लाभदायक है। शंख बजाने से पूरक, कुंभक और प्राणायाम एक ही साथ हो जाते हैं। पूरक सांस लेने, कुंभक सांस रोकने और रेचक सांस छोड़ने की प्रक्रिया है। आज की सबसे घातक बीमारी हृदयाघात, उच्च रक्त चाप, सांस से संबंधित रोग, मंदाग्नि आदि शंख बजाने से ठीक हो जाते हैं।

घर में शंख वादन से घर के बाहर की आसुरी शक्तियां भीतर नहीं आ सकतीं। यही नहीं, घर में शंख रखने और बजाने से वास्तु दोष दूर हो जाते हैं।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

6. गोमुखी शंख

इस शंख की आकृति गाय के मुख के समान होती है। इसे शिव पार्वती का स्वरूप माना जाता है। धन–संपत्ति की प्राप्ति तथा अन्य मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए इसकी स्थापना दक्षिणावर्ती शंख के समान उत्तर की ओर मुंह कर के की जाती है। मान्यता है कि इसमें रखा पानी पीने से गौहत्या के पाप से मुक्ति मिलती है। विशाखा, पुश्य, अश्लेषा आदि नक्षत्रों में इसकी साधना विषेश रूप से की जाती है। इसे कामधेनु शंख भी कहा जाता है। इस शंख की उत्पत्ति स्वच्छ मीठे पानी के झीलों और समुद्रों में अधिक होती है। विश्व में सबसे अधिक साफ–सुथरे और सुंदर आभायुक्त चमक वाले चमत्कारी शंख की अधिक उत्पत्ति मानसरोवर, लक्षद्वीप, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, श्रीलंका, हिंद महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के समुंद्री तटों से होती है। कैलाश मानसरोवर में सफेद रंग और पीत वर्ण के उभरी आभा वाले गोमुखी शंख पाये जाते हैं। इस शंख का प्राकृतिक भार 500 ग्राम से 3 किलो तक का होता है। शंख का ऊपरी भाग गाय के सींग की तरह ऊपर उठा होता है। यह शंख बहुत दुर्लभ और चमत्कारी प्रकृति की देन है।

इस शंख को प्राप्त कर, प्राण प्रतिष्ठित करवा कर, सिद्ध जागृत मंत्र का उपयोग करके शंख माला से जागृत कराना चाहिए। पौराणिक शास्त्रों के अनुसार इंद्रलोक में भी यही शंख स्थापित है। इस शंख का आचमन करने और शंख बजाने से असाध्य रोगों का शमन होता है।

7. विष्णु शंख

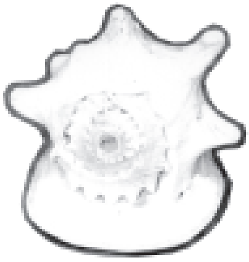

इसे वैष्णव सप्रंदाय के लोग विष्णु स्वरूप मानकर घरों में रखते हैं। मान्यता है कि जहां विष्णु होते हैं, वहां लक्ष्मी भी होती हैं। इसीलिए जिस घर में इस शंख की स्थापना होती है, उसमें लक्ष्मी और नारायण का वास होता है। मान्यता यह भी है कि इस शंख में रोहिणी, चित्रा व स्वाति नक्षत्रों में गंगाजल भरकर और मंत्र का जप कर किसी गर्भवती को उस जल का पान कराने से सुंदर, ज्ञानवान व स्वस्थ संतान की प्राप्ति होती है।

यह श्वेत आभायुक्त शंख प्रकृति द्वारा जटिल रूपाकृति में बनाया गया है। इस शंख की रूपाकृति भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ जैसी प्रतीत होती है। शास्त्रों में इस शंख को चंद्र शंख की सज्ञा दी गयी है। शंखोदक जल का उपयोग गर्भवती नारी करे, तो सुंदर और स्वस्थ संतान को जन्म देगी। इससे संतान को फेफड़ों का रोग नहीं होता है। इस शंख का उपयोग व्यक्ति अपने व्यवसाय में उन्नति और दरिद्रता को दूर करने में करता है।

इस शंख को निम्न मंत्र से सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठित करें: ॐ विष्णु शंखाय मम् सर्व मनोवांछित फल प्रदान कुरु–कुरु नमः।। 108 बार, शंख की माला से जप कर, फूंक मारें तथा व्यवसाय स्थल, या भवन में उत्तर–पूर्व कोण में ईशान कोण में स्थापित करें। स्थापित कर के, शंख में जल भर कर, 5 बार उपर्युक्त मंत्र का जाप कर, इस जल का आचमन करें और जल का व्यवसाय स्थल पर छिड़काव करें तथा जल का आचमन करावें।

यह शंख घर–परिवार से लेकर व्यवसाय तक की सभी प्रकार की मनोकामनाओं को पूर्ण करता है। संतान बाधा, विवाह में विलंब, असाध्य रोग, व्यवसाय आदि समस्याओं का हल विष्णु शंख के पास है। जिस घर में विष्णु शंख होता है, वह, संसार के सभी भौतिक सुख–सुविधाओं को भोग कर, अंत में भगवान विष्णु धाम को चला जाता है। यह हृदय के रोगियों के लिए एक रामबाण औषधि है। विष्णु शंख में गंगाजल भरकर चंद्र की साक्षी में रख कर प्रातः उसका सेवन करने से हृदयाघात जैसे रोगों का शमन होता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

8. अन्नपूर्णा शंख

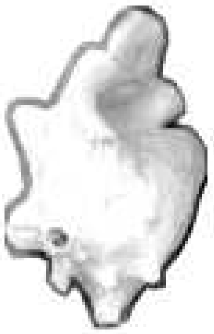

इसका प्रयोग भाग्यवृद्धि और सुख–समृद्धि की प्राप्ति हेतु किया जाता है। इस शंख में गंगाजल भरकर प्रातःकाल सेवन करने से मन में संतुष्टि का भाव जाग्रत होता है तथा व्याकुलता समाप्त होती है।

सभी प्रकार के दिव्य शंखों में अन्नपूर्णा शंख का वजन अधिक होता है। इस शंख का वजन औसतन 3 किलोग्राम से 9 किलोग्राम तक होता है। इस शंख की आकृति मन मोहमोहक होती है। इसके उत्पत्ति स्थल, समुद्रों की अपेक्षा, कैलाश मानसरोवर की शीतल स्वच्छ मीठे जल में तथा मालद्वीप, लक्षद्वीप, कन्याकुमारी हैं। प्राचीन काल में सिद्ध ऋषि–महर्षि अन्नपूर्णा शंख की महिमा से पूर्णतः परिचित थे तथा वे इसका उपयोग अधिक करते थे। इस शंख को प्राप्त कर, स्नानादि से निवृत्त होकर, एकांत में श्वेत आक के पत्तों पर अपना नाम लिख कर, शंख को पत्तों पर आसन देकर, ॐ अन्नपूर्णा शंखाय मम् अन्न् धन् जय विजय फलं कुरु नमः का 108 जाप रोजाना 21 दिन तक करने पर यह शंख सिद्ध हो जाता है। अभिमंत्रित होने पर, कार्यसिद्धि हेतु, ॐ अन्नपूर्णा शंखायः मम् अन्न् धन् देहि नमः मंत्र का उपयोग करने पर, साधक को निश्चित ही लाभ होता है। जिस घर में अन्नपूर्णा शंख स्थापित होता है, वह घर अन्न–धन से परिपूर्ण, चहुंमुखी विकास को प्राप्त करता हुआ, सौभाग्यदायक माना जाता है। साधक को मांगलिक कार्य, विवाहादि तथा सार्वजनिक भंडारे में अन्नपूर्णा शंख का उपयोग करना चाहिए।

9. पांचजन्य शंख

यह भगवान कृष्ण का आयुध है। इसे विजय व यश का प्रतीक माना जाता है। इसमें पांच उंगलियों की आकृति होती है। घर को वास्तु दोषों से मुक्त रखने के लिए स्थापित किया जाता है। यह राहु और केतु के दुष्प्रभावों को भी कम करता है।

मान्यता है कि पांचजन्य का नाद करने से कोर्ट कचहरी के मामलों में विजय मिलती है। राजनेताओं को चुनावों में विजय के लिए पांचजन्य का नाद करना चाहिए। धर्म ग्रंथों में इसे विजय प्रदाता और समृद्धि, यश, कीर्ति और मनोकामना पूर्ति करने वाला बताया गया है। यह विवादों से मुक्ति दिलाता है।

पांचजन्य शंख में पंच तत्व सम्मिलित हैं। वास्तु दोष शांति के लिए पांचजन्य शंख ही सबसे प्रभावी रामबाण औषधि है। विजय प्राप्ति के लिए पांचजन्य शंख से शंखनाद करने से विजय प्राप्ति होती है। इस शंख की आकृति वामावर्ती शंख की तरह होती है तथा इस पर पंचांगुली की आकृति बनी होती है। यह शंख 250 ग्राम से 3 किलोग्राम तक पानी वाला आता है। इस शंख के द्वारा मुख्य व्यवसाय स्थल, भवन में वास्तु दोष को, बिना तोड़–फोड़ और परिवर्तन किये, पूर्णतः शांत किया जा सकता है। भवन, कार्यालय में, कारखाने या व्यवसाय स्थल पर वास्तु दोष को देख कर उसके अनुसार ईशान कोण में भवन के मध्य या मुख्य द्वार पर एक फुट गहरा गढ़ा खोद कर इसे अंदर वास्तु पुरुष की तरह उल्टा गाड़ कर, ऊपर वास्तु शांति का हवन किया जाता है। हवन आदि करने से पूर्व पांचजन्य शंख को सिद्ध करने के लिए शंख माला से 108 बार निम्न मंत्रों का जाप करना चाहिए : ॐ पंचजन्य शंखाय मम् गृहं वास्तु दोष शांति कुरू–कुरू नमः। यह वास्तु दोष शांति का अचूक उपाय है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

10. शनि शंख

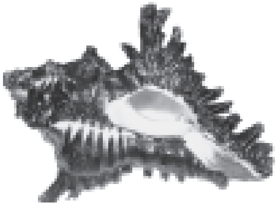

यह काले रंग का शंख बहुत ही प्रभावकारी शंख है यह शनि देव के प्रकोप को शांत करने व उनकी कृपा दृष्टि पाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है शत्रु शमन, दुर्घटना, दरिद्रता आदि के निवारण में अत्यंत लाभदायक है। जिनको साढ़ेसाती चल रही है या शुरू होने वाली है उनको यह शंख अपने साथ रखना चाहिए या इसे सरसों के तेल में डुबोकर घर के मंदिर में रखना चाहिए जिससे शनि के अशुभ प्रभावों में कमी हो और शुभ प्रभाव अधिकाधिक प्राप्त हों।

इस प्रकार इस शंख को शनि स्वरूप मानते हुए घर, ऑफिस, दुकान आदि में स्थापित कर अरिष्टों एवं अनिष्टों से छुटकारा पाए तथा सौभाग्य वृद्धि करें।

11. कौड़ी शंख

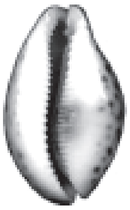

वैदिक काल से इसका महत्व रहा है। यह अति पवित्र मानी जाती है हिंदू संस्कृति व परिवारों में इसे प्रेम के बंधन का प्रतीक माना जाता है। यह लक्ष्मी प्राप्ति में भी सहायक है इसे घर की तिजोरी, आभूषणों के साथ रखने पर सुख समृद्धि में वृद्धि होती है। भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त होती है।

विवाह के समय कंगन में कौड़ी बांधने का प्रचलन प्राचीन है। इस शंख को प्राचीन भारत में ऐश्वर्य तथा वैवाहिक सुख का प्रतीक माना गया है। इसे संतान, संपत्ति व मान–सम्मान की रक्षा हेतु प्रयोग किया जाता है। यह नजर व जादू टोना इत्यादि से रक्षा के लिए भी पहनाई जाती है। आदि काल में कौड़ी सिक्के के रूप में उपयोग लाई जाती थी।

12. सीप शंख

यह शंख घर में रखने से आरोग्य की प्राप्ति होती है तथा व्यक्ति का मन स्थिर व एकाग्रचित होकर पूजा–पाठ में लगता है, व आध्यात्मिक कार्यों सत्संग आदि में रुचि बढ़ती है। इसी सीप शंख के अंदर मोती रत्न का निर्माण होता है। जिसका चंद्रमा कमजोर हो या मन अस्थिर रहता हो या चंद्रमा की दशा हो उन्हें सीप को गले धारण करने से या साथ रखने से विशेष लाभ प्राप्त होता है।

13. गुरु शंख

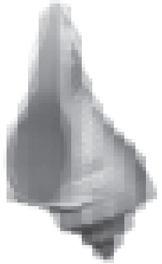

यह हल्की पीली आभा लिए होता है यह शंख विद्यार्थीगणों के लिए विशेष है इस शंख से शालिग्राम (विष्णु प्रतीक शिला) जी को स्नान कर, तुलसी दल चढ़ाने से स्मरण शक्ति प्रबल व शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति होती है।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अध्याय – 9

पिरामिड

पिरामिड का शाब्दिक अर्थ है 'सूच्याकार पत्थर का खंभा' कुछ लोगों ने इसको पिरा (Pyra) एवं मिड (Mid) में संधि विच्छेद कर इसका अर्थ दिया है त्रिकोणाकार ऐसी वस्तु, जिसके मध्य में अग्नि ऊर्जा के स्रोत का निर्माण होता है। पिरामिड 'आकाश तत्व' के अंतर्गत स्पेस एनर्जी (Space Energy) में आता है और उसी हिसाब से घर में आकाश तत्व और प्रकाश को बढ़ाने के लिए इसको उपयोग में लिया जाता है।

पिरामिड कभी ठोस नहीं होता। पिरामिड तो पृथ्वी पर भार है। उनका कोई महत्व नहीं। ऐसे तो बड़े–बड़े तिकोने पर्वत पृथ्वी पर खड़े हैं। उनमें कोई चमत्कार नहीं। पिरामिड का असली संबंध तो अंदर के (Space) आकाश तत्व एवं उसमें प्रवाहित होने वाली ऊर्जा से है। फिर पिरामिड ज्यामितीय सिद्धांतों एवं वास्तु सिद्धांतों पर खरे उतरने चाहिएं। तभी उनमें चमत्कारी शक्ति आएगी। पिरामिड के अंदर गहन शक्ति का अनुभव होता है।

पिरामिड की ऊर्जा, भूगर्भ के चारों कोनों की चार भुजा से उर्ध्वगामी होती है तथा पिरामिड का शक्ति बिंदु ऊपरी नोक की ओर बढ़ता है। उधर सूर्य की ऊर्जा पिरामिड की ऊपरी नोक से नीचे की ओर उतरती है। इस प्रकार से पिरामिड ऊर्जा भूगर्भ एवं ऊपर आकाश द्वारा दोनों ओर से संपादित होती है। आयुर्वैदिक, एक्यूप्रेशर, या अन्य कोई योग, ध्यान लगाने में पिरामिड बाधक नहीं है। यदि पिरामिड में मंत्रपूत लक्ष्मी यंत्र स्थापित किया जाए और उसे तिजोरी, गल्ले (Cash-Box) के ऊपर रखा जाए, तो चमत्कारी रूप से धन की वृद्धि होती है। यदि यह कूर्मपृष्ठीय या मेरूपृष्ठीय हो, तो शत–प्रतिशत काम करता है।

पिरामिड एक अत्यंत उपयोगी यंत्र है, जो मानव के लिए हर पल हर क्षेत्र में लाभ देता है। यह किसी धर्म संप्रदाय से संबंध न रखते हुए निरंतर मानव का कल्याण करता है। इसकी उत्पति पर विचार करने के लिए भले ही हमें विश्व इतिहास के प्रारंभिक काल में लौटना पड़े, परंतु यह ध्रुव सत्य है जिसे आज चिकित्सा विज्ञान भी सहजता से स्वीकार रहा है। पिरामिड यंत्र स्थूल या सूक्ष्म गतिविधियों को संचालित करने वाले स्नायु को ऐसा प्रभावित करता है कि वे चिकित्सा का कार्य करते हैं। यह एक ऐसी बंद अलमारी है जिसके भीतर प्रकृति ने अनेक शक्तियों को छिपा रखा है, मानव के लिए आंतरिक एवं बाह्य कार्य क्षमता प्रदान करने के साथ–साथ शरीर में विशेष प्रकार की कंपन (Vibrations) पैदा करता है, इसके द्वारा मन और मस्तिष्क में निरंतर प्रसन्नता बनी रहती है।

स्वस्थ्य एवं प्रसन्न रहने के लिए पिरामिड यंत्र अति चमत्कारिक यंत्र है, जिसको वैज्ञानिक आधार प्राप्त है। इस यंत्र के उपयोग से मानव शरीर में आवश्यकतानुसार ऊर्जा प्राप्त होती है, यही इसका मूलभूत सिद्धांत है। मनुष्य का गुण, अवगुण, कार्य, रुचियां, प्रायः भिन्न होती हैं लेकिन उनकी आवश्यक ऊर्जा एक जैसी ही होती है। इस कारण यह सिद्ध हो चुका है कि व्यक्ति चाहे किसी भी श्रेणी का हो उसे पिरामिड यंत्र अवश्य लाभ देगा।

उपयोग विधि

पिरामिड का उपयोग अत्यंत सहज है जिसे आप स्वतः कर सकते हैं। सर्व प्रथम इस यंत्र को गंगा जल या पंचामृत में धो कर **ईशान कोण** की ओर किसी आधार (चौकी) पर रखें तत्पश्चात इसकी सूक्ष्म पूजा (धूप दीपादि से) कर के इसके अनेक प्रकार के लाभ हेतु उपयोग कर सकते हैं।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

लाभ

1. किसी भी रोग की औषधि को कुछ घंटे पिरामिड के नीचे रख दें, तत्पश्चात दवा का सेवन करने से दवा का प्रभाव द्विगुणित हो जाता है।
2. इसे गले या भुजा में धारण करने से स्वतः का कम वजन आभास होता है तथा मन प्रफुल्लित रहता है।
3. किसी भी मंत्रादि का जप करने या पूजा करने के समय सम्मुख रखने से धनात्मक ऊर्जा मिलती है तथा मन एकाग्र होता है।
4. छोटा शिशु रात को सोते समय चौंकता हो या डरता हो, तो उसके विस्तर के नीचे रखने से उसे अच्छी नींद आती है और डरावने सपने नहीं आते।
5. शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोगों को शिक्षण के समय पिरामिड को टेबल पर सामने रख कर अध्ययन करने से अधिक सफलता मिलती है।
6. यह पिरामिड मनुष्य को आवश्यकतानुसार 1. ब्रह्माण्डीय ऊर्जा, 2. चुम्बकीय ऊर्जा, 3. आणविक ऊर्जा को निरंतर प्रदान करता है, जिससे आप स्वस्थ्य और संतुलित रहते हैं।

पिरामिड – एक नजर में

1.	बंद पिरामिड सेट	–	वास्तु सुधार हेतु
2.	अष्टधातु में पिरामिड	–	मानसिक शांति, भाग्योदय
3.	पिरामिड (ब्रास)	–	मस्तिष्क का निष्क्रिय तंत्रिका तंत्र कार्य करने लगता है।
4.	पिरामिड लॉकेट	–	मानसिक शांति, स्वास्थ्य वृद्धि, धन
5.	पिरामिड श्रीयंत्र	–	ज्ञान और सीखने की क्षमता
6.	सुमेरू पिरामिड श्रीयंत्र	–	धन, लोन, लॉटरी आदि में सफलता
7.	अष्टधातु में श्रीयंत्र	–	अष्टलक्ष्मी की कृपा (लक्ष्मी का आठ रूप)
8.	कच्छप पिरामिड सेट	–	शारीरिक शक्ति और धैर्य का विकास
9.	स्फटिक श्रीयंत्र	–	मानसिक शांति, भाग्योदय
10.	संगसितारा श्रीयंत्र	–	दृढ़ निश्चय, साहस, भाग्योदय
11.	स्वास्तिक पिरामिड	–	अच्छे भाग्य की प्राप्ति
12.	अष्टधातु में पिरामिड यंत्र	–	शारीरिक, मानसिक क्षमता बढ़ाने के लिए
13.	नवग्रह पिरामिड	–	सकारात्मक ऊर्जा वृद्धि के लिए

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

1. बंद पिरामिड सेट

यह वास्तु सुधार में कार्य करता है। चारों ओर की ऋणात्मक शक्तियों को दूर कर उसे धनात्मक शक्तियों में परिवर्तित करता है क्योंकि दैनिक जीवन में मानसिक शांति और स्फूर्ति का अनुभव करता है। व्यक्ति तनावमुक्त रहता है। व्यक्ति धैर्य से कार्य करता है। कार्य से संतुष्टि मिलती है। व्यक्ति आनंददायक जीवन व्यतीत करता है और शांति का अनुभव करता है। इसलिए इसे व्यक्ति को अपने कार्य स्थल और घर में अवश्य रखना चाहिए।

2. अष्टधातु में पिरामिड

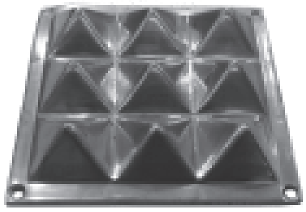

व्यक्ति को नींद न आने की अवस्था में पिरामिड यंत्र को अपने तकिये के नीचे रख कर सोना चाहिये, ऐसा करने से अच्छी नींद की अनुभूति होगी। संतुष्टि, सोचने की शक्ति, दबाव से मुक्ति मिलती है। थकावट, संक्रमण और बीमारियों से छुटकारा मिलता है। ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है। व्यक्ति शक्तिपूर्ण और शुभ चिंतन करने वाले हो जाते हैं। यह पिरामिड धातु, काष्ठ, रत्न, पत्थर, सोना, चांदी, तांबा, पारा, अष्ट धातु, पंच धातु आदि से निर्मित किया जाता है।

चरक तथा सुश्रुत ने स्पष्ट किया है कि औषधि लेने के अतिरिक्त, रोगों के निवारणार्थ, पारे के शिव लिंग एवं पिरामिड की उपासना अवश्य करनी चाहिए। विशेष कर यह पिरामिड उन जातकों के लिए अधिक लाभप्रद है, जो विशेष पूजा न कर सकें। इसकी उपासना जितनी सरल है, उतनी ही अधिक लाभकारी भी है। यह पिरामिड स्थापित करने से धन की वृद्धि होती है।

कार्यालय में मन अशांत एवं परेशान रहने पर, इसे मेज़ के ऊपर सामने रख कर लिखने, पढ़ने आदि का कार्य करने से यह अधिक लाभ देता है। वाहन में यात्रा के समय जब सब खिड़कियां–दरवाजे बंद होते हैं, तो ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रवेश कम हो जाता है। ऐसी स्थिति में यह पिरामिड सामने रख कर यात्रा करने से ब्रह्मांडीय ऊर्जा निरंतर मिलती रहती है। फलस्वरूप यात्रा में, परेशानी के बजाय, आनंद और स्फूर्ति का अनुभव होता है।

3. पिरामिड ब्रास

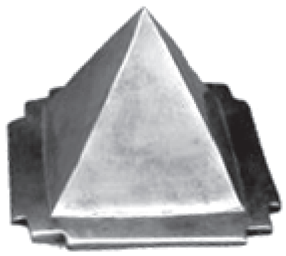

पिरामिड एक बहुत ही उपयोगी यंत्र है जो व्यक्ति के जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में मदद करता है। इसकी उत्पति पर विचार करने के लिए भले ही हमें विश्व इतिहास के प्रारंभिक काल में लौटना पड़े, परंतु यह ध्रुव सत्य है जिसे आज चिकित्सा विज्ञान भी सहजता से स्वीकार रहा है।

पिरामिड यंत्र स्थूल या सूक्ष्म गतिविधियों को संचालित करने वाले स्नायु को ऐसा प्रभावित करता है कि वे चिकित्सा का कार्य करते हैं। मानव के लिए आंतरिक एवं बाह्य कार्य क्षमता प्रदान करने के साथ शरीर में विशेष प्रकार की कंपन पैदा करता है, जिसके द्वारा मन और मस्तिष्क में निरंतर प्रसन्नता बनी रहती है।

स्वस्थ्य एवं प्रसन्न रहने के लिए पिरामिड यंत्र अति चमत्कारिक यंत्र है, जिसका वैज्ञानिक आधार प्राप्त है कि इस यंत्र के उपयोग से मानव शरीर में आवश्यकतानुसार ऊर्जा प्राप्त होती है, यही इसका मूलभूत सिद्धांत है।

मनुष्य का गुण, अवगुण, कार्य, रुचियां, प्रायः भिन्न होती है परंतु उनकी आवश्यक ऊर्जा एक जैसी ही होती है। इस कारण यह सिद्ध हो चुका है कि व्यक्ति चाहे किसी भी श्रेणी का हो उसे पिरामिड यंत्र अवश्य लाभ देगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

4. पिरामिड लॉकेट

पिरामिड ब्रह्माण्डीय ऊर्जा को ग्रहण कर उसको जल्द ही व्यक्ति विशेष के लिए स्फूर्तिदायक बनाता है। पिरामिड लॉकेट का उपयोग कर मानसिक शांति, अच्छा स्वास्थ्य और धन–संपत्ति देता है। अगर व्यक्ति भवन में प्रवेश करता है तो पिरामिड लॉकेट भवन के चारों ओर मौजूद ऋणात्मक शक्तियों के प्रभाव को दूर कर वास्तु दोष से बचाता है।

5. पिरामिड श्रीयंत्र

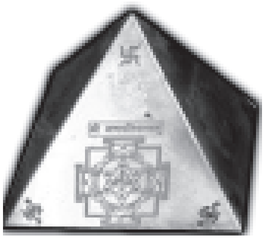

वास्तु शास्त्र में पिरामिड और श्रीयंत्र को काफी महत्वपूर्ण माना गया है। क्योंकि श्रीयंत्र का वास्तु के साथ संबंध है। श्रीयंत्र वास्तु पर आधारित है। आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों से यह स्पष्ट हो चुका है कि भारत के कई शहरों में पूर्वकाल में भवन का निर्माण कर श्रीयंत्र अवश्य स्थापित किया जाता था। किसी भवन निर्माण में श्रीयंत्र वास्तु दोष दूर करने का संपूर्ण यंत्र है। यह यंत्र व्यक्ति को किसी भी क्षेत्र में ज्ञान, बुद्धि और सीखने की क्षमता प्रदान करती है। यह एकाग्रता और मानसिक शक्ति को बढ़ाता है। यह बुध, राहु और केतु को संतुष्ट करने के लिए और धन–संपत्ति के लिए लाभदायक है।

ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

6. सुमेरू पिरामिड श्रीयंत्र

यह वास्तु सुधार हेतु उपयोगी है। यह धन संपत्ति, रुपये, लोन व लॉटरी में सफलता तथा दरिद्रता नाश के लिए उत्तम है। इसे फैक्ट्री, कार्यालय, घर आदि में स्थापित कर सकते हैं। निम्न मंत्र का जप करें।

ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

7. अष्टधातु में पिरामिड श्रीयंत्र

श्रीयंत्र को लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है। इसे अष्टधातु में तैयार किया गया है जो अष्टलक्ष्मी का प्रतिनिधित्व करती है। पिरामिड के आकार का यह यंत्र और इसके आधार पर बने भारतीय मंदिरों में श्रद्धा विश्वास से जैव ऊर्जा का लगातार प्रसारण होता है। यह वातावरण को शुद्ध करके ऋणात्मक शक्ति व वास्तु दोषों को दूर करता है। प्रसन्नता, संतोष व जीवन में विशेष उद्देश्य की पूर्ति प्रदान करने में सहायक होता है। इस श्रीयंत्र को पूजा के स्थान पर रखने से घर की रक्षा होती है।

हमारे शरीर में जैव रासायनिक तत्व व विद्युत चुंबकीय ऊर्जा है जो सुरक्षा और जैविक ऊर्जा बनाए रखने हेतु ब्रह्मांड के साथ ऊर्जा क्षेत्र से घिरी है। ऊर्जा का समुचित प्रवाह श्रीयंत्र द्वारा सुनिश्चित किया जाता है। श्रीयंत्र की स्थापना अनुष्ठान के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। इसकी स्थापना शुक्रवार को सुबह पूजा स्थान पर पंचामृत या दूध से धोकर लाल कपड़े पर रखें और निम्न मंत्र का 108 बार जप प्रतिदिन करें।

ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

8. कच्छप श्रीयंत्र

यह कछुए के सदृश देखने में लगता है। इसका निर्माण धातु या स्फटिक से होता है। इसे अपने घर, शयन कक्ष, कार्यालय या मंदिर में रख सकते हैं। ध्यान रहे कि कछुए का मुख सामने होना चाहिए। यह यंत्र शारीरिक शक्ति का विकास, धैर्यता, धन व आराम प्रदान करता है तथा झगड़ा–झंझट व गलती से छुटकारा मिलता है।

9. पिरामिड के आकार का स्फटिक श्रीयंत्र

यह श्रीयंत्र स्फटिक का बनाया गया है। जिस पर श्रीविद्या का जीवन भर पूजन किया जा सकता है। जीवन के हर क्षेत्र में सफलता और पूर्णता प्राप्त करने के लिए श्रीविद्या और श्रीयंत्र सर्वाधिक लाभकारी है। श्रीविद्या, श्रीललितामहात्रिपुरसुंदरी, राजेश्वरी, बाला, पंचदशी और षोडशी के नाम से प्रसिद्ध है। श्रीविद्या की पूजा करने से पहले इस श्रीयंत्र के बारे में समझ लेना जरूरी है। इस श्रीयंत्र के द्वारा अत्यंत श्रद्धा के साथ श्रीसूक्त का पाठ करने से अपार धन की प्राप्ति होती है। श्रीयंत्र सर्वश्रेष्ठ यंत्र है। स्फटिक श्रीयंत्र को अत्यधिक प्रभावी माना जाता है। क्योंकि यह न केवल शुद्ध, प्राकृतिक स्फटिक पत्थर से बना हैं बल्कि यह पिरामिड ब्रह्मांड में मौजूद आयामी घटकों के रूप में ब्रह्मांडीय शक्तियों का संतुलन कायम रखने अर्थात् नकारात्मक को सकारात्मक ऊर्जा में परिवर्तित करने में सक्षम है। इसके लिए निम्न मंत्र का जप करें :

ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

10. संगसितारा श्रीयंत्र

यह यंत्र सौंदर्य, ज्ञान और धन को प्राप्त करने के लिए अत्यंत लाभकारी है। किसी कुंडली में शुक्र के बुरे प्रभाव से ग्रस्त जातक के लिए इस यंत्र के उपयोग से बुरे प्रभाव को कम किया जा सकता है। वास्तु सुधार उपकरण के रूप में यह पिरामिड काम करते हैं। इसके लिए निम्नलिखित मंत्र का जप करना चाहिए।

ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

11. स्वास्तिक पिरामिड

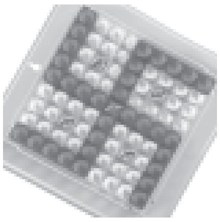

यह पिरामिड बहुत ही शुभ माना जाता है। जो नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करने के लिए अत्यंत प्रभावशाली है। क्योंकि यह गणेश यंत्र, श्रीयंत्र, बगलामुखी यंत्र और महामृत्युंजय यंत्र का एक संयोजन है। यह पिरामिड नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करने में अधिक कारगर है। जिससे व्यक्ति लंबे समय तक सफल, भाग्यशाली, धनी, प्रसिद्ध, शक्तिशाली और रोग मुक्त रहता है।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनम्मे वशमानय ठः ठः।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

12. अष्टधातु में पिरामिड यंत्र

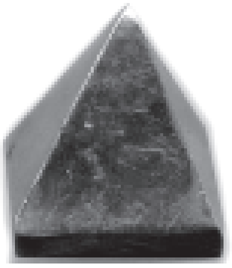

पिरामिड एक अत्यंत उपयोगी यंत्र है, जो मानव के लिए निरंतर हर क्षेत्र में लाभ देता है व स्थूल या सूक्ष्म गतिविधियों को संचालित करने वाले स्नायु को ऐसा प्रभावित करता है। स्वस्थ्य एवं प्रसन्न रहने के लिए उपयोगी माना जाता है, इस यंत्र के उपयोग से मानव शरीर में आवश्यकतानुसार ऊर्जा प्राप्त होती है। इस यंत्र को गंगा जल या पंचामृत में धो कर **ईशान कोण** की ओर किसी आधार (चौकी) पर रखें तत्पश्चात इसकी धूप, दीप से पूजा करें।

1. व्यक्ति को नींद न आने की अवस्था में पिरामिड यंत्र को अपने तकिये के नीचे रख कर सोना चाहिये, ऐसा करने से अच्छी नींद की अनुभूति होगी।
2. किसी भी बिमारी के औषधि को कुछ घंटे पिरामिड के नीचे रख दें, तत्पश्चात दवा का सेवन करने से दवा का प्रभाव द्विगुणित हो जाता है।
3. इसे गले या भुजा में धारण करने से स्वतः का कम वजन आभास होता है तथा मन प्रफुल्लित रहता है।
4. किसी भी मंत्रादि का जप करने या पूजा करने के समय सम्मुख रखने से धनात्मक ऊर्जा मिलती है तथा मन एकाग्र होता है।
5. छोटा शिशु रात को सोते समय चौंकता हो या डरता हो, तो उसके विस्तर के नीचे रखने से उसे अच्छी नींद आती है और डरावने सपने नहीं आते।
6. शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोगों को शिक्षण के समय पिरामिड को टेबल पर सामने रख कर अध्ययन करने से अधिक सफलता मिलती है।
7. यह पिरामिड मनुष्य को आवश्यकतानुसार 1. ब्रह्माण्डीय ऊर्जा, 2. चुम्बकीय ऊर्जा, 3. आणविक ऊर्जा को निरंतर प्रदान करता है, जिससे आप स्वस्थ्य और संतुलित रहते हैं।
8. इस पिरामिड के अन्दर पानी का गिलास कुछ घंटे रख कर तत्पश्चात पानी पीने से उसकी ऊर्जा बढ़ जाती है।

13. नव ग्रह पिरामिड

नव ग्रह पिरामिड की पूजा सभी के लिए श्रेष्ठ मानी गयी है। पूर्व काल में प्रायः सभी ऋषि, मानव पिरामिड के उपयोग से जुड़े रहते थे। यह पिरामिड धातु, काष्ठ, रत्न, पत्थर, सोना, चांदी, तांबा, पारा, अष्ट धातु, पंच धातु आदि से निर्मित किया जाता है।

आयुर्वेद शास्त्र के आचार्यों में मुख्य चरक तथा सुश्रुत ने बहुत विस्तार से स्पष्ट किया है कि औषधि लेने के अतिरिक्त, रोगों के निवारणार्थ, पारे के शिव लिंग एवं पिरामिड की उपासना अवश्य करनी चाहिए। विशेष कर यह पिरामिड उन जातकों के लिए अधिक लाभप्रद है, जो विशेष पूजा न कर सकें। इसकी उपासना जितनी सरल है, उतनी ही अधिक लाभकारी भी है। यह पिरामिड स्थापित करने से धन की वृद्धि होती है।

कार्यालय में मन अशांत एवं परेशान रहने पर, इसे मेज़ के ऊपर सामने रख कर लिखने, पढ़ने आदि का कार्य करने से यह अधिक लाभ देता है। वाहन में यात्रा के समय जब सब खिड़कियां–दरवाजे बंद होते हैं, तो ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रवेश कम हो जाता है। ऐसी स्थिति में यह पिरामिड सामने रख कर यात्रा करने से ब्रह्मांडीय ऊर्जा निरंतर मिलती रहती है। फलस्वरूप यात्रा में, परेशानी के बजाय, आनंद और स्फूर्ति का अनुभव होता है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अध्याय – 10

सिक्का

हर धर्म व सभ्यता में भाग्यशाली सिक्कों के उपयोग की एक परंपरा है। इन सिक्कों का उपयोग भाग्योदय के लिए किया जाता है। सिक्कों का उपयोग बहुत लोकप्रिय और प्रचलित है। यह जेब में, सुरक्षित स्थान पर या पूजा स्थान में रखा जा सकता है। श्रीयंत्र का सिक्का आमतौर पर घर के दरवाजे पर लगाना चाहिए और वास्तु विशेषज्ञ के अनुसार इसे वास्तु सुधार उपकरण के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इन सिक्कों का ताबीज भाग्योदय के लिए किया जाता है। सिक्का लॉकेट के रूप में गले में धारण किया जा सकता है।

सिक्का – एक नजर में

1. वाहन दुर्घटना नाशक सिक्का – दुर्घटना से बचाव
2. लक्ष्मी गणेश का सोने का सिक्का – धनार्जन
3. लक्ष्मी गणेश का चांदी का सिक्का – धनार्जन और मानसिक शांति
4. गणेश सिक्का – विघ्न बाधाओं से मुक्ति
5. सरस्वती सिक्का – बुद्धि और ज्ञान के लिए
6. श्रीयंत्र सिक्का – रुपये का आगमन हेतु

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

1. वाहन दुर्घटना नाशक सिक्का

परिचय : आज की इस भाग दौड़ की जिन्दगी में वाहन दुर्घटनाओं की अत्यधिक संभावनाएं बनती है। ऐसे में यह सिक्के सुरक्षित यात्रा व वाहन दुर्घटना को रोकते हैं।

उपयोग : किसी भी मंगलवार के दिन इन सिक्कों को गंगा जल, कच्चे दूध से शुद्ध कर पुष्प चढ़ाएं, इसके बाद इन्हें अपनी जेब में रख लें व नित्य एक माला मंत्र जप करें। ऐसा करने से व्यक्ति सुरक्षित व वाहन दुर्घटना से होने वाली हानियों से बचता है। उपासना के लिए निम्न मंत्र का जप करें:

मंत्र : ॐ हं हनुमते नमः।

2. लक्ष्मी गणेश का सोने का सिक्का

परिचय : सुवर्ण धातु से निर्मित यह लक्ष्मी गणेश के सिक्के समृद्धिकारक, शुभता व लाभ प्रदान करने वाले होते हैं। यह शुभ लाभ का प्रतिनिधित्व करता है।

उपयोग : अगर किसी को वाहन, इमारत या नौकर से समस्याओं का सामना करना पड़ता है। व्यापार में उतार–चढ़ाव आ रहा है तो यह सिक्का अपार सुख और समृद्धि प्रदान करता है।

किसी बुधवार के दिन इन सिक्कों को पंचामृत, गंगा जल या स्वच्छ जल से शुद्ध कर धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन करके अपनी जेब में रखने से पारिवारिक शांति, सुख समृद्धि व यश, मान, कीर्ति, व्यापारिक वृद्धि आदि शुभ फल प्राप्त होते हैं। उपासना के लिए निम्न मंत्र का जप करें :

मंत्र : ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर वरद सर्वजनम्ये वशमानय स्वाहा।।

3. लक्ष्मी गणेश का चांदी का सिक्का

परिचय : यह सिक्का गलतफहमी, वहम, संदेह आदि दोषों को दूर करता है। जिन लोगों के परिवारों और संबंधों में कड़वाहट या दुःख व्याप्त हैं उनके मन की शांति और सहन शक्ति बढ़ती है।

उपयोग : अगर किसी वाहन से समस्याओं का सामना, व्यापार में नुकसान हो रहा है तो यह सिक्का अपार सुख और समृद्धि प्रदान करता है। जो वांछित परिणाम नहीं पाते उनके लिए यह सिक्का उपयोगी है। तुच्छ व्यक्ति भी परिश्रम के बाद ख्याति पाता है। उपासना के लिए निम्न मंत्र का जप करें :

मंत्र : ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर वरद सर्वजनम्ये वशमानय स्वाहा।।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

4. गणेश सिक्का

परिचय : देवों के देव गणपति आदि महाशक्ति है और इन्हें सबसे पहले पूजा जाता है। उसे 'विघ्नहरण' के रूप में भी जाना जाता है। गणेश का सिक्का रिद्धि सिद्धियों को देने वाला व आजीविका के क्षेत्र में वृद्धिकारक होता है। उसका हर कार्य सहजता से हो जाता है।

उपयोग : सिक्कों पर व्यक्ति को घी व अनाज के दाने चढ़ाने चाहिए व प्रतिदिन चावल, नारियल व काली मिर्च चढ़ाने से अत्यधिक धन वृद्धि, मान–सम्मान व व्यापार में सफलता प्राप्त होती है। उपासना के लिए निम्न मंत्र का जप करें :

मंत्र : ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनम्मे वशमानय ठः ठः।

5. सरस्वती सिक्का

परिचय : यह सिक्का विद्या व संगीत की देवी सरस्वती का है। इस सिक्के के प्रभाव से एकाग्रता, दृढ़ता व उच्च संकल्प शक्ति की प्राप्ति होती है।

उपयोग : किसी भी गुरुवार या शुक्रवार को इस सिक्के को शुद्ध कर लें व नित्य सफेद या पीले पुष्प अर्पित करें। यह विधि करने के बाद मंत्र जप करें ऐसा करने से व्यक्ति को ज्ञान, बुद्धि, मधुर वाणी व संपन्नता प्राप्त होती है। उपासना के लिए निम्न मंत्र का जप करें :

मंत्र : ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वाग्देव्यै सरस्वत्यै नमः।

6. श्रीयंत्र सिक्का

परिचय : यह सिक्के ऊर्जा वृद्धि, शक्ति वृद्धि व समृद्धिदायक होते हैं। किसी शुभ मुहूर्त में इनकी स्थापना कर महालक्ष्मी मंत्र व श्री सूक्त के पाठ से व पंचमेवा, धूप, दीप आदि से इनकी पूजा करें।

उपयोग : इनके प्रभाव से व्यापार में वृद्धि व कार्य क्षेत्र में उन्नति होती है। सुख–समृद्धि, मान–सम्मन व आर्थिक स्थिति में आशातीत लाभ होता है। इसी प्रकार शारीरिक व मानसिक शक्ति को बल मिलता है। उपासना के लिए निम्न मंत्र का जप करें :

ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अध्याय – 11

लॉकेट

Future Point

यंत्र, रुद्राक्ष और रत्न के लॉकेट गले में धारण किए जाते हैं। हमारे ऋषि, मुनियों के अनुसार लॉकेट हमारे शरीर में नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त कर सकारात्मक ऊर्जा की बृद्धि करते हैं। इन लॉकेटों के प्रभाव से ग्रीवा चक्र और हृदय चक्र क्रियान्वित हो जाते हैं। इनके प्रभाव से जादू–टोना, बुरी आत्माओं व तंत्र शक्तियों के दुष्प्रभाव से रक्षा होती है। विशेष रूप से लॉकेट नवग्रह की शांति, भाग्य वृद्धि व अनुकूल स्वास्थ्य हेतु अथवा विशेष समस्या के समाधान हेतु धारण किए जाते हैं।

लॉकेट – एक नजर में

1. सूर्य यंत्र लॉकेट	–	यश प्राप्ति हेतु
2. चंद्र यंत्र लॉकेट	–	मानसिक शांति हेतु
3. मंगल यंत्र लॉकेट	–	शत्रुओं पर विजय के लिए
4. बुध यंत्र लॉकेट	–	विद्या, ज्ञान प्राप्ति के लिए
5. गुरु यंत्र लॉकेट	–	धन वृद्धि के लिए
6. शुक्र यंत्र लॉकेट	–	प्रेम संबंधों के लिए
7. शनि यंत्र लॉकेट	–	शनि ग्रह की शांति हेतु
8. राहु यंत्र लॉकेट	–	राहु ग्रह की शांति हेतु
9. केतु यंत्र लॉकेट	–	केतु ग्रह की शांति हेतु
10. पांच मुखी हनुमान लॉकेट	–	शत्रु बाधा निवारण
11. सरस्वती लॉकेट	–	ज्ञान व बुद्धि
12. गणेश लॉकेट	–	कार्य सफलता हेतु
13. लक्ष्मी लॉकेट	–	लक्ष्मी प्राप्ति
14. लक्ष्मी गणेश लॉकेट	–	व्यापारिक वृद्धि हेतु
15. श्रीयंत्र लॉकेट	–	धन, वैभव, यश प्रापित के लिए
16. महामृत्युंजय लॉकेट	–	उत्तम स्वास्थ्य हेतु
17. गोपाल यंत्र लॉकेट	–	संतान प्राप्ति के लिए
18. दुर्गा बीसा लॉकेट	–	रुके हुए धन की प्राप्ति हेतु
19. कालसर्प लॉकेट	–	समस्त कार्यों में सफलता व कालसर्प शांति
20. बगलामुखी लॉकेट	–	शत्रु शमन, मुकदमे में विजय

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

21. पारद लॉकेट	–	शिव कृपा के लिए
22. माणिक्य लॉकेट	–	स्वास्थ्य, मान–सम्मान हेतु
23. मोती–चांद लॉकेट	–	शिशुओं के स्वास्थ्य के लिए
24. मूंगा लॉकेट	–	सहन शक्ति व ऊर्जा वृद्धि के लिए
25. पन्ना लॉकेट	–	वद्या व ज्ञान प्राप्ति के लिए
26. पुखराज लॉकेट	–	विद्या व सौभाग्य प्राप्ति हेतु
27. पीताम्बरी लॉकेट	–	व्यवसाय वृद्धि व शिक्षा हेतु
28. ओपल लॉकेट	–	उच्च स्तरीय सफलता हेतु
29. नीलम लॉकेट	–	शत्रु शमन के लिए
30. नीली लॉकेट	–	शनि शमन
31. गोमेद लॉकेट	–	वास्थ्य व राहु शांति के लिए
32. लहसुनिया लॉकेट	–	गर्भपात संबंधी समस्या हेतु
33. मोती लॉकेट	–	मानसिक शांति के लिए
34. नवरत्न लॉकेट	–	नवग्रहों की शांति के लिए
35. नवरत्न अंगूठी	–	नवग्रहों की शुभता हेतु
36. मोती माला में नवरत्न लॉकेट	–	नवग्रहों की शुभता हेतु
37. नवरत्न ब्रेसलेट	–	नवग्रहों की शुभता हेतु
38. लक्ष्मीदायक त्रिशक्ति लॉकेट	–	लक्ष्मी प्राप्ति हेतु
39. स्वास्थ्यवर्धक त्रिशक्ति लॉकेट	–	अच्छी स्वास्थ्य के लिए
40. विद्या प्रदायक त्रिशक्ति लॉकेट	–	शिक्षा क्षेत्र में सफलता
41. बाधामुक्ति त्रिशक्ति लॉकेट	–	समस्या निवारण के लिए
42. त्रिशक्ति लॉकेट	–	धन, सुख व स्वास्थ्य वृद्धि हेतु
43. काल सर्प लॉकेट	–	कालसर्प दोष निवारण

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

1. सूर्य यंत्र लॉकेट

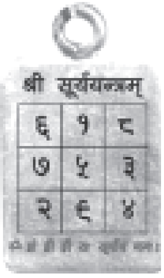

इस लॉकेट का उपयोग सूर्य ग्रह की शांति के लिए किया जाता है। इसको धारण करने से व्यक्ति को उत्तम स्वास्थ्य, मान–सम्मान, यश–कीर्ति व पिता से संबंधों में सुधार होता ळै। जिन व्यक्तियों को पेट से संबंधित परेशानियां होती है उनके लिए इस लॉकेट को धारण करना श्रेयष्कर होता है। लॉकेट को रविवार के दिन पूजा–पाठ कर व सूर्य मंत्र का 108 बार जप कर धारण करें।

मंत्र : **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौ सः सूर्याय नमः।**

2. चंद्र यंत्र लॉकेट

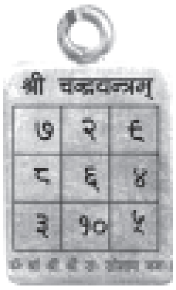

इस लॉकेट से व्यक्ति को मानसिक शांति मिलती है। यह लॉकेट धारण करने से चंद्र ग्रह की प्रतिकूलता से होने वाले श्वास व हृदय रोग की शांति होती है व जिन व्यक्तियों को मौसम परिवर्तन प्रभाव जल्दी पड़ता है उनके लिए भी यह उत्तम है। इस लॉकेट को सोमवार के दिन गंगाजल से शुद्ध कर व मंत्र जप कर धारण करें।

मंत्र : **ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।**

3. मंगल यंत्र लॉकेट

जिन व्यक्तियों को अपनी कार्यक्षमता के अनुसार श्रेष्ठ फल प्राप्त नहीं होता उनके लिए यह विशेष लाभकारी है। इसके प्रभाव से व्यक्ति अपने कार्य क्षेत्र में एक विशेष पहचान बनाता है। यह लॉकेट अनूकूल स्वास्थ्य के लिए भी धारण करना श्रेयस्कर होता है। इस लॉकेट को मंगलवार के दिन निम्नांकित मंत्र का जप कर धारण करें।

मंत्र : **ॐ भौमाय नमः।**

4. बुध यंत्र लॉकेट

यह चांदी में बना लॉकेट होता है। इस लॉकेट को धारण करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है, वाकपटुता व ज्ञान में वृद्धि होती है। यह लॉकेट विद्यार्थीगण के साथ मार्केटिंग, वकालत, कामर्स, एकाउंटेंट आदि का काम करने वालों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। बुधवार की प्रातः इस यंत्र लॉकेट को पंचामृत से स्नान कराएं व मंत्र जप करने के पश्चात धारण करें।

मंत्र : **ॐ बुं बुधाय नमः।**

5. गुरु यंत्र लॉकेट

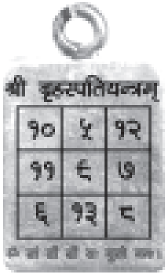

यह चांदी में बना देव गुरु बृहस्पति का लॉकेट है। शिक्षा, प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्ति हेतु यह बहुत महत्वपूर्ण है। बृहस्पति ग्रह के शुभ प्रभाव को प्राप्त करने के लिए इसे धारण करें। इसे धाारण करने से धन, वैभव की प्राप्ति व व्यापार में आशातीत लाभ मिलता है व आध्यात्मिक ज्ञान, पूजा–पाठ आदि शुभ कार्यों में रुचि पैदा होती है। इसे गुरुवार के दिन निम्न मंत्र का जप कर धारण करें।

मंत्र : **ॐ बृं बृहस्पतये नमः।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

6. शुक्र यंत्र लॉकेट

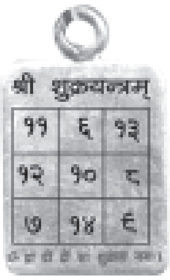

जो व्यक्ति फिल्म उद्योग, मॉडलिंग, ज्वैलरी आदि का कार्य करते हैं उनके लिए इस लॉकेट को धारण करना लाभकारी है। समृद्धिशाली जीवन, प्रेम संबंधों व वैवाहिक जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी है। इस लॉकेट को शुक्रवार को इत्र, सफेद फूल आदि अर्पित कर धारण करें।

मंत्र : **ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।**

7. शनि यंत्र लॉकेट

यह चांदी में बना शनि यंत्र का लॉकेट है। वाहन दुर्घटनाएं, आर्थिक स्थिति में न्यूनता व पारिवारिक शांति आदि समस्याओं में लाभकारी होता है। नौकरी पेशा वाले व्यक्तियों को इस लॉकेट को धारण करने पर नौकरी में पदोन्नति व मान–सम्मान प्राप्त होता है। इस लॉकेट को शनिवार के दिन मंत्र जप कर धारण करें।

मंत्र : **ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।**

8. राहु यंत्र लॉकेट

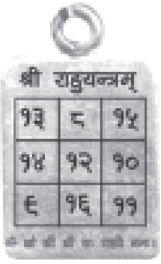

ग्रह से संबंधित दोषों की शांति इसके प्रभाव से होती है। व्यक्ति विदेशों से संबंधित कार्य को करते हैं उनके लिए लाभकारी होता है। अशुभ राहु की दशा में इस लॉकेट को नीला या काला फूल अर्पित करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण कर धारण करें।

मंत्र : **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।**

9. केतु यंत्र लॉकेट

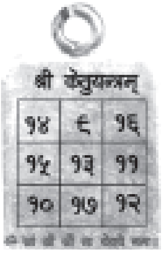

यह राहु ग्रह के यंत्र का लॉकेट होता है। ग्रह से संबंधित दोषों की शांति इसके प्रभाव से होती है। व्यक्ति विदेशों से संबंधित कार्य को करते हैं उनके लिए लाभकारी होता ळै। यदि राहु की दशा अशुभ हो तो इस लॉकेट को धारण करने से अत्यधिक लाभ मिलता है। इस लॉकेट को नीला या काला फूल अर्पित करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण कर धारण करें।

मंत्र : **ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः केतवे नमः।**

10. पांचमुखी हनुमान लॉकेट

यह लॉकेट भगवान श्रीराम के भक्त हनुमान के पंचमुखी स्वरूप का लॉकेट है इसे धारण करने से हनुमान कृपा के साथ–साथ शत्रु शमन, कोर्ट–कचहरी के मामलों में विजय प्राप्त होती है। पंचमुखी हनुमान लॉकेट के प्रभाव से व्यक्ति की वाहन दुर्घटना से बचाव व रोग मुक्ति प्राप्त होती है, भूत–प्रेत बाधा निवारण के लिए भी यह रामबाण है। इस लॉकेट को मंगलवार के दिन हनुमान जी की पूजा करके मंत्र जप कर धारण करें।

मंत्र : **ॐ हं हनुमते नमः।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

11. सरस्वती लॉकेट

बुद्धि को कुशाग्र करने के लिए, मंदबुद्धि वालों की बौद्धिक क्षमता बढ़ाने के लिए एवं स्मरण–शक्ति की तीव्रता के लिए सिद्ध सरस्वती यंत्र का लॉकेट एक मात्र अवलम्बन है, जिससे हम आज के इस बौद्धिक युग में सर्वाधिक सफल व्यक्ति हो सकते हैं।

मंत्र : **ॐ ऐं महासरस्वत्यै नमः।**

12. गणेश लॉकेट

किसी भी क्षेत्र में ऋद्धि–सिद्धि हेतु श्री गणेश यंत्र का लॉकेट सदैव लाभ देता है और कार्यों को निर्विघ्न सम्पन्न होने के लिए सहायता करता है। इस लॉकेट को शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि अथवा सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार के दिन शुद्धजल से धुलकर रोली, चंदन, धूप, दीप से पूजन करके धागे या चेन में धारण करें।

मंत्र : **ॐ गं गणपतये नमः।**

13. लक्ष्मी लॉकेट

इस लॉकेट को दीपावली के दिन पंचोपचार पूजा करके गले में धारण करने से नौकरी अथवा व्यवसाय में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। दूसरे लोगों पर भी इसे धारण करने से अच्छा लाभकारी प्रभाव पड़ता है जिससे आजीविका एवं व्यवसाय में मनोनुकूल उन्नति एवं लाभ प्राप्त होता है।

मंत्र : **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।**

14. लक्ष्मी गणेश लॉकेट

व्यापार, विदेश गमन, राजनीति, गृहस्थ जीवन नौकरी पेशा आदि में सफलता प्राप्ति के लिए यह लॉकेट उपयोगी है। व्यापारिक एवं व्यवसायिक स्थिति अनुकूल होने के लिए इस लॉकेट को धारण करना लाभदायक होता है। इस लॉकेट को धारण करके लक्ष्मी गणेश मंत्र का जप करने से शीघ्र लाभ प्राप्त होता है।

ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर वरद सर्वजनम्मे वशमानय स्वाहा।

15. श्रीयंत्र लॉकेट

धन वृद्धि व अनन्त ऐश्वर्य एवं लक्ष्मी प्राप्ति के लिए इस लॉकेट को श्रद्धा पूर्वक हमेशा धारण करें। व्यापार वृद्धि के लिए तिजोरी में, धान्य वृद्धि के लिए धान्य में रखा जाता है। वेलवृक्ष की छाया में उपासना करने से लक्ष्मी शीघ्र प्रसन्न होती है और अचल सम्पत्ति प्रदान करती हैं। वेलपत्र घी में डुबोकर वेल की समिधा में आहुति डालने से भगवती प्रसन्न होती है।

मंत्र : **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

16. महामृत्युंजय लॉकेट

'यन्त्रचिन्तामणि' में भगवान् शिव ने प्राणों की रक्षा के लिए **'मृत्युंजय–यन्त्र'** का विधान बतलाया है। इस यन्त्र को सम्मुख रखकर नीम के पत्ते सरसों के तेल में मिलाकर महामृत्युंजय मंत्र द्वारा हवन करने से शत्रु का विनाश होता है। घोर विपत्ति से छुटकारा पाने के लिए जवापुष्प और विष्णुक्रान्ता के पुष्पों से हवन करना चाहिए। मनोवांछित फल की प्राप्ति के लिए द्रोणपुष्प ओर कनेर के पुष्पों का हवन श्रेष्ठ कहा गया है।रोग से मुक्त होने के लिए सफेद अथवा लाल चन्दन, द्रोणपुष्प तथा केवड़े के पुष्पों का हवन उत्तम है। सर्वसिद्धि के लिए रक्तकमल, धतूरे के पुष्प, और बिल्व पत्र का हवन किया जाता है। पुत्र प्राप्ति के लिए चम्पा के पुष्प, श्वेत कमल, रक्तकमल, कनेर के पुष्प, बिल्वपत्र, अगस्त के पुष्प और केशर से हवन करना चाहिए।क्रूर ग्रहों की शान्ति के लिए मृत्युंजय–मन्त्र से घृत, दूध और शहद मिलाकर उसमें दूर्वा डुबोकर, हवन करना चाहिए।

मंत्र : **ॐ त्र्यम्बकम् यजामहेसुगन्धिमपुष्टिवर्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।**

17. गोपाल लॉकेट

जीवन की पूर्णता के लिए संतान अनिवार्य है। इस लॉकेट की आराधना से प्रतिभावान और दीर्घायु संतान की प्राप्ति होती है। इसे गले में धारण कर, संतान गोपाल स्तोत्र का पाठ करना लाभदायक है। संतान गोपाल मंत्र का पुत्र प्राप्ति माला पर 108 बार जाप करें और लॉकेट को प्रातःकाल, बृहस्पतिवार के दिन धारण करें।

ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं जीं ओं भूर्भुवः स्वः ॐ देवकीसुतगोविंद वासुदेवजगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॐ ॐ स्वः भुवः भूः जीं ह्रीं श्रीं त्वीं ओं।

18. दुर्गा बीसा लॉकेट

यह बीसा यंत्र शावर तंत्र से संबंधित यंत्र है इसका प्रभाव शीघ्र होता है इसको धारण करने से व्यवसाय में वृद्धि व रुके हुए धन की प्राप्ति होती है। इसे बुधवार अथवा शुक्रवार के दिन सांय काल धूप एवं दीप से पूजन करके धारण करना चाहिए।

दुर्गा बीसा लॉकेट को जेब या पर्स में रखें या पहनें। इसके उपयोग से चोरी, अग्नि, लड़ाई–झगड़े आदि से बचाव होता है। यह शक्ति का प्रतीक है। इसके सम्मुख, शुभ मुहूर्त में, हनुमान चालीसा का पाठ करने से रोग से मुक्ति मिलती है।

लॉकेट को कच्चे दूध में 10 मिनट के लिए डाल दें। बाहर निकाल कर पंचामृत (दूध, दही, मधु, बूरा और थोड़े से घी का मिश्रण) में डुबो दें। एक मिनट बाद गंगा जल, या शुद्ध जल से, 4–5 बार धो लें। अब इसे धूप बत्ती दें। निम्न मंत्र का वैजयंती माला पर 108 बार जाप करें और लॉकेट को सांय काल मंगलवार के दिन धारण करें :

मंत्र : ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चै।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

19. काल सर्प लॉकेट

काल सर्प योग में उत्पन्न जातक का जीवन कष्टों से भरा रहता है। काल सर्प लॉकेट को धारण कर के जातक जीवन के कष्टों, बाधाओं से निजात पा सकता है। निम्न मंत्र का रूद्राक्ष की माला पर 108 बार जाप करें और सोमवार के दिन धारण करें :

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

20. बगलामुखी लॉकेट

श्री बगलामुखी यंत्र का लॉकेट शत्रु विनाश, सर्वत्र विजय, भूत–प्रेत बाधाहरण, सर्वाभीष्ट सिद्धि व शत्रुओं से रक्षा के लिए धारण किया जाता है। शत्रु बाधा हो या कोर्ट–कचहरी का चक्कर, बगलामुखी के लॉकेट और उसके यंत्र से अनुकूलता की प्राप्ति होती है।

शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को, संध्या वेला में, विशेष कर रात्रि में 11 बजे के बाद, अर्थात तुरीय संध्या में, पूजन हेतु समस्त सामग्री के साथ बैठें। रवि पुष्य, गुरु पुष्य, धन तेरस को, या दीपावली, नव रात्रि, या मंगलवार और चतुर्दशी तिथि को, जब नक्षत्र और योग अनुकूल हों, उस समय ईशान कोण में पूर्व–उत्तर दिशा में लॉकेट को एक शुद्ध आम की लकड़ी पर, जो गंगा जल से धो कर पवित्र की हुई हो, स्थापित करें।

मंत्र : **ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वाम् कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।**

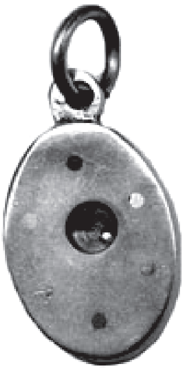

21. पारद लॉकेट

भगवान शिव की कृपा प्राप्ति के लिए सोमवार, गुरुवार के दिन धारण करें। इस लॉकेट को धारण करने से शनि, राहु, केतु आदि अशुभ ग्रहों के कुप्रभाव में न्यूनता आती है व स्वास्थ्य अनुकूल रहता है बुरी आत्माओं, जादू–टोना आदि दोषों का प्रभाव नष्ट होता है।

मंत्र : **ॐ तत्पुरूषाय विद्महे महादेवाय धिमही, तन्नो रूद्रः प्रचोदयात।**

22. माणिक्य लॉकेट

इस लॉकेट को सूर्य ग्रह के शुभ फल की प्राप्ति के लिए धारण किया जाता है। इसे धारण करने से आकर्षक व्यक्तित्व, मान–सम्मान, यश–कीर्ति, आत्म विश्वास की प्राप्ति व उदर रोगों में लाभ मिलता है। इसे रविवार के दिन धारण करें व नित्य सूर्य मंत्र का 108 बार जप करें।

मंत्र : **ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

23. मोती लॉकेट

जन्म पत्री में चंद्र की कमजोर स्थिति, मानसिक परेशानी या मां से अनबन की स्थिति में धारण करें। अच्छी स्मृति, मानसिक शांति प्राप्त होती है व गहरी नींद आती है। टीबी, कब्ज, हिस्टीरिया, गर्भाशय, हृदय व आंख संबंधी बीमारियों में लाभकारी है। स्त्रियों के लिए सुंदरता, चेहरे में निखार लाता है। यौन शक्ति व वैवाहिक जीवन के लिए उत्तम है। सोमवार को प्रातःकाल कच्चे दूध से धोकर चंदन, धूप, दीप से पूजन करके धारण करें।

मंत्र : **ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।**

24. मूंगा लॉकेट

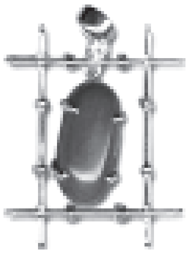

इसे धारण करने से शारीरिक परेशानियां दूर होती है। बल, बुद्धि, पौरूष में वृद्धि करता है। क्रोध नियंत्रित होता है, वात, पित, कफ की परेशानी में उत्तम है। वैवाहिक जीवन में आनेवाली बाधाओं को दूर करने के लिए मंगलवार को शुद्ध कर व मंत्र जप कर धारण करें।

मंत्र : **ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।**

25. पन्ना लॉकेट

इसके प्रभाव से वाकपटुता, ज्ञान, स्मरण शक्ति प्रबल होती है व व्यापारिक वृद्धि में सहायता मिलती है। त्वचा संबंधी विकारों को दूर करने में भी यह लॉकेट लाभकारी है। विद्यार्थीगणों को इसे अवश्य धारण करना चाहिए। इस लॉकेट को बुधवार के दिन मंत्र जप कर धारण करें।

मंत्र : **ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।**

26. पुखराज लॉकेट

आध्यात्मिक विकास, विद्यार्थियों, शिक्षाविदों, वकील, निदेशक, राजनेता और राजनीतिज्ञ के लिए शुभ माना जाता है। जीवन सुरक्षा प्रदान करता है। दूर्भाग्य को दूर करता है। अंधविश्वास, डायरिया, गैस, पीलीया, हृदय की बीमारी व आर्थराइटिस आदि बीमारी को दूर करता है। कन्याओं को शीघ्र विवाह, अनुकूल पति और मंगलमय वैवाहिक जीवन के लिए गुरुवार को धारण करें।

मंत्र : ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः।

27. पीतांबरी लॉकेट

यह बृहस्पति ग्रह का उपरत्न है। गुरु की शुभता व विद्यार्थियों के लिए बृहस्पतिवार को प्रातःकाल हल्दी, केसर धूप, दीप से पूजन करके धारण करें।

मंत्र : **ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

28. डायमंड (ओपल) लॉकेट

यह लॉकेट शुक्र ग्रह के लिए पहना जाता है। मीडिया, फिल्म, टूरिज्म, होटल, म्यूजिक, कास्मेटिक, नृत्य, फोटोग्राफी आदि कार्य करने वाले लोगों के लिए उत्तम है। शुगर या मूत्र संबंधी विकारों में लाभकारी है। इसे शुक्रवार को मंत्र जप कर धारण करें।

मंत्र : **ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।**

29. नीलम लॉकेट

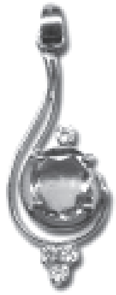

यह शनि ग्रह के रत्न नीलम का लॉकेट होता है। शनि ग्रह के कुप्रभाव को समाप्त कर उनकी कृपा दृष्टि प्राप्त करने के लिए उत्तम है। इसे धारण करने से दशा, अंतर्दशा, ढैय्या, साढेसाती में शनि ग्रह अच्छा फल प्रदान करते हैं। शनि ग्रह भाग्यवृद्धि, मान सम्मान, व राजयोग देने वाले हैं। यदि जन्म लग्न में शनि राजयोग कारक है तो इसे धारण करने से लाभ होता है। इसे शनिवार को धारण करें।

मंत्र : **ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।**

30. नीली लॉकेट

नीली नीले रंग का होता है। शनि ग्रह के कुप्रभाव को समाप्त करता है, भाग्य और आकर्षण बढ़ता है। यह दूर्भाग्य, कठिनाईयों और विफलताओं से बचने हेतु व सुरक्षा और स्थायित्व प्राप्त करने के उद्देश्य से शनिवार को धारण करें।

मंत्र : **ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।**

31. गोमेद लॉकेट

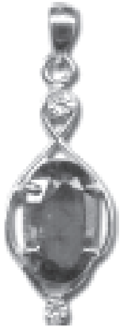

राजनीति, सामाजिक व विदेश संबंधी कार्यों को करने वाले लोगों के लिए यह उत्तम लॉकेट है। इसे धारण करने से राहु ग्रह का शुभत्व प्राप्त होता है तथा दुर्भाग्य व विपत्तियों से मुक्ति मिलती है। किसी भी शनिवार को मंत्र जप कर धारण करें।

मंत्र : **ॐ रां राहवे नमः।**

32. लहसुनिया लॉकेट

यह केतु ग्रह के रत्न लहसुनिया का लॉकेट है। यह लॉकेट अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसके प्रभाव से बने कार्यों में आनेवाली बाधाएं दूर होती है। दुःख, दरिद्रता, व्याधि, भूत बाधा आदि के बचाव के लिए यह उपयुक्त है, यह लॉकेट प्रबल शत्रु संहारक माना जाता है। विशेष रूप से जिन स्त्रियों को बार–बार गर्भपात होता है उनके लिए यह लॉकेट श्रेष्ठ है। इसे मंगलवार को शुद्ध करें व मंत्र जप करके धारण करें।

मंत्र : **ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः केतवे नमः।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

33. मोती चांद लॉकेट

यह मोती चांद लॉकेट अर्द्धचंद्राकार आकृति में होता है। इसको धारण करने से मानसिक शांति में वृद्धि होती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। मन में स्थिरता बनी रहती है। इस लॉकेट को सोमवार सुबह कच्चे दूध से अभिषेक करके धूप दीप से पूजन करके धारण करना चाहिए।

मंत्र : **ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।**

34. नवरत्न लॉकेट

इस लॉकेट में सभी ग्रहों के रत्न होते हैं, कभी–2 सफलता के सारे उपाय व्यर्थ हो जाते हैं इसका मुख्य कारण नवग्रहों की कृपा दृष्टि का कम होना होता है। ऐसी स्थिति में इस लॉकेट का प्रयोग सभी ग्रहों की तुष्टि करता है। लॉकेट को जल में डालकर छः घंटे बाद जल को पीने से अनेक बीमारियों में लाभ मिलता है, ग्रहों के कुप्रभाव व शत्रुओं से रक्षा करता है, यात्रा मंगलमय होती है।

ॐ ब्रह्मुरारी त्रिपुरान्तकारी भानु शशिः भूमि सुतो बुधश्च।

गुरूश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रह शांति करा भवन्तु।।

35. नवरत्न अंगूठी

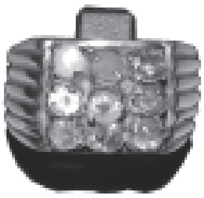

यह नवग्रहों के नौ रत्नों से निर्मित किया गया है। इसे कोई भी व्यक्ति धारण कर सकता है। इसको धारण करने से नवग्रहों के अशुभ फल की शांति होती है एवं शुभ फल में वृद्धि होती है। यह व्यवसाय, कला, शिक्षा, नौकरी आदि के क्षेत्र में संलग्न व्यक्तियों के लिए विशेष शुभफलदायक होती है। रविवार या गुरुवार को गंगाजल से शुद्ध करके, धूप दीप आदि से पूजन करके धारण करें।

ॐ ब्रह्मुरारी त्रिपुरान्तकारी भानु शशिः भूमि सुतो बुधश्च।

गुरूश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रह शांति करा भवन्तु।।

36. मोती माला में नवरत्न लॉकेट

इसको धारण करने से नवग्रहों के अशुभ फल की शांति होती है एवं शुभ फल में वृद्धि होती है। इससे व्यवसाय तथा व्यक्तिगत जीवन में खुशहाली रहती है। यह माला मानसिक शांति और नवग्रह के अशुभ प्रभावों से मुक्ति दिलाती है। यह शत्रु बाधा, दुर्घटना से सुरक्षा और स्वास्थ्य और धन की वृद्धि करती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलती है।

ॐ ब्रह्मुरारी त्रिपुरान्तकारी भानु शशिः भूमि सुतो बुधश्च।

गुरूश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रह शांति करा भवन्तु।।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

37. नवरत्न ब्रैसलेट

यह नवरत्न ब्रैसलेट नवग्रहों के नौ रत्नों से कंगन के आकार में निर्मित किया गया है। यह दाहिने हाथ में रक्षा सूत्र की तरह धारण किया जाता है। इसको धारण करने से नवग्रहों के अशुभ फल की शांति होती है एवं शुभ फल में वृद्धि होती है।

ॐ ब्रह्ममुरारी त्रिपुरान्तकारी भानु शशिः भूमि सुतो बुधश्च।
गुरूश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रह शांति करा भवन्तु।।

38. लक्ष्मीदायक त्रिशक्ति लॉकेट

यह लॉकेट मूंगा, मोती और पीतांबरी इन तीन रत्नों को एक साथ जोड़कर बनाया गया है। लॉकेट को गले में धारण करने से जीवन में आर्थिक सम्पन्नता बनी रहती है। शक्ति, साहस आत्मविश्वास व मानसिक शांति में वृद्धि होती है, कार्यों में मन लगता है तथा परिश्रम का उत्तम फल प्राप्त होता है।

39. स्वास्थ्य वर्द्धक त्रिशक्ति लॉकेट

इस लॉकेट को धारण करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है। इस लॉकेट में मोती, मूंगा और माणिक्य तीन रत्नों का समावेश किया गया है। शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है, हृदय एवं रक्त से संबंधित रोगों से रक्षा होती है एवं क्रोध पर नियंत्रण रहता है। मानसिक रोगों से रक्षा होती है। इसके अतिरिक्त जुकाम, खांसी, दमा आदि रोगों से बचाव होता है। आत्मबल व रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है।

40. विद्या प्रदायक त्रिशक्ति लॉकेट

यह विद्या प्रदायक लॉकेट पन्ना, पीतांबरी एवं मोती इन तीन रत्नों को एक साथ जोड़ कर बनाया गया है। इसे धारण करने से बुद्धि तीव्र होती है और व्यक्ति किसी भी कठिन विषय को सहजता से ही आत्मसात कर लेता है। पढ़ाई के प्रति गंभीर बनाता है एवं समर्पित होकर विद्या अध्ययन करता है। ज्ञानार्जन, अध्ययन क्षमता में वृद्धि होती है और किसी भी विषय को लंबे समय तक स्मरण रखने में सहायता मिलती है। मन में स्थिरता बनी रहती है जिससे विद्या अध्ययन के क्षेत्र में मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है।

41. बाधामुक्ति त्रिशक्ति लॉकेट

इस लॉकेट को धारण करने से सभी बाधाओं से मुक्ति मिलती है और कोर्ट–कचहरी के मामलों में लाभ होता है। इसके अतिरिक्त भूत–प्रेतादि बाधाओं से मुक्ति के लिए यह लॉकेट कवच की तरह कार्य करता है और बुरी नजर, जादू–टोने, तांत्रिक प्रभावों आदि से भी रक्षा करता है। यह लॉकेट जरकन, गोमेद, नीली इन तीन रत्नों को जोड़कर बनाया गया है। बुरी शक्तियों से रक्षा होती है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

42. त्रिशक्ति लॉकेट

यह किसी तीन ग्रह के रत्नों से बना है और धन, सुख समृद्धि, मन की शांति और स्वास्थ्य वृद्धि में लाभदायक है। इसे पहनने से पहले पंचामृत से शुद्ध करें और निम्न मंत्र का जप करें।

मंत्र : **ॐ ब्रह्ममुरारी त्रिपुरान्तकारी भानु शशिः भूमि सुतो बुधश्च। गुरूश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रह शांति करा भवन्तु।।**

43. कालसर्प लॉकेट

यह लॉकेट नीली, गोमेद व लहसुनिया इन तीन रत्नों को एक साथ जोड़ कर बनाया गया है। काल सर्प योग में उत्पन्न जातक का जीवन कष्टों से भरा रहता है। काल सर्प लॉकेट को धारण करके जातक जीवन के कष्टों, बाधाओं से निजात पा सकता है। इसे सोमवार के दिन धारण करें। निम्न मंत्र का रूद्राक्ष की माला पर नित्य प्रति 108 बार जप करें।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अध्याय – 12

फेंगशुई

फेंग शुई चीन की एक विद्या है तो पिरामिड मिस्र की देन है। ये दोनों ही मानव कल्याण के लिए हैं। फेंग शुई दो शब्द–फेंग और शुई से मिलकर बनी है। यह चीन की वास्तु शास्त्रीय पद्धति है। चीनी भाषा में फेंग का अर्थ है जल और शुई का अर्थ है वायु। इससे यह ज्ञात होता है कि फेंग शुई प्रकृति के दो प्रमुख तत्वों के सन्तुलन पर आधारित विद्या है। इन दोनों तत्वों का सही सन्तुलन व्यक्ति को स्वास्थ्य, यश, सम्मान और अच्छा भाग्य देने में समर्थ है। यह विज्ञान हमें बताता है कि हम अपने आस–पास की वस्तुओं को आकार, रंग, तत्व, ग्रह और अंकों के हिसाब से किस दिशा में रख सकते हैं। अपने आस–पास की वस्तुओं को इस तरह से रखते हैं ताकि न तो ऊर्जा का बहाव कहीं रुकने पाए और न ही ऊर्जा की गति इतनी तेज हो कि वो हमें कुछ दिए बगैर भवन से निकल जाए।

फेंग शुई के आधार पर किया गया संशोधन किसी भी आम मनुष्य के भाग्य को ठीक करने का सबसे सरल इलाज है । इसके पीछे एक महान् कारण है । इसे भाग्य का त्रित्व कहते हैं भाग्य तीन प्रकार का होता है – 1. पृथ्वी से प्राप्त भाग्य 2. मनुष्य का अपने द्वारा प्राप्त किया गया भाग्य और 3. स्वर्ग द्वारा प्राप्त किया गया भाग्य। जिसे आप अपने पूर्व जन्मों के कर्मों के कारण प्राप्त करते हैं जैसे ग्रहों, नक्षत्रों, सितारों का आपके भाग्य पर बहुत प्रभाव या आपके पूर्व जन्म के कर्मों के प्रतिफल या पुरस्कार के रूप में होता है। इस प्रकार भाग्य वह होता है जिसे मनुष्य अपनी कड़ी मेहनत और लगन के बल पर हासिल करता है। इसे कर्म कहते हैं। आमतौर पर मान्यता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी–अपनी सामर्थ्य के अनुसार पूरी शक्ति के साथ काम करता है। पृथ्वी से प्राप्त भाग्य वह भाग्य होता है जिसे आप उन स्थानों से अर्जित करते हैं जहाँ आप रहते हैं अथवा काम करते हैं। इस प्रकार के भाग्य का संशोधन करना सर्वाधिक आसान होता है और इसे पूर्ण रूप से आपके पक्ष में भेजा जा सकता है। फेंग शुई इस अवस्था में लाभकारी सिद्ध हो चुकी है। फेंग शुई में जिस पद्धति का सर्वाधिक उपयोग होता है वह है कम्पास पद्धति जो मुख्य रूप से लो–शु (चमत्कार वर्ग) पा–कुआ चौखट पर आधारित है।

फेंग शुई के उपयोग से हम अपने फ्लैट को घर की अनुभूति दे सकते हैं तथा उसे सामंजस्यपूर्ण बना कर स्वयं को पहले से ज्यादा प्रसन्न, स्वस्थ तथा जीवन के प्रत्येक पक्ष को ज्यादा सफल बना सकते हैं।

चीन के अधिकांश महत्वपूर्ण भवनों का निर्माण फेंग शुई के सिद्धान्तों के अनुसार किया गया है।

फेंग शुई का उद्देश्य ऐसे पर्यावरण का निर्माण करना है जिससे **'ची'** सुगमता से प्रवाहित हो ताकि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बना रहे। जिस घर में **'ची'** का प्रवाह संतुलित व निर्बाध होता है उसमें रहने वाले अनुकूल स्थिति में होंगे और उनकी जिंदगी बड़ी सरलता से व्यतीत होगी। जब **'ची'** की गति सुस्त और मंद पड़ जाती है तो इसकी संभावना बढ़ जाती है कि हर रोज नयी समस्याओं का सामना करना पड़े। जिस ऑफिस में **'ची'** का प्रवाह मुक्त व स्वच्छंद होता है वहां कर्मचारी सुख और मददगार होते हैं, योजनाएं समयानुसार पूरी होती हैं और तनाव का नामोनिशान नहीं रह जाता। जहां **'ची'** का प्रवाह रुका हुआ होगा, वहां सौहार्द का अभाव होगा और व्यापार कभी प्रगति नहीं करेगा। चीन में यह **'ची'** कहलाती है तो जापान में **'की'** और भारत में ऊर्जाशक्ति कहलाती है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

जिस स्थान पर दोनों में से किसी भी **'ची'** की उपस्थिति नहीं हो वहां **'शा'** की उपस्थिति होती है। यह वह शक्ति है जो कि नकारात्मक व हानिकारक दुष्ट, शैतान का प्रतीक है। जिस स्थान पर **'ची'** का प्रवाह होता है वह स्थान फेंग शुई सम्भव होता है।

ये दोनों परस्पर विरोधी हैं परन्तु एक–दूसरे के तत्वों को स्वयं में समाहित किये रहते हैं। जैसे कि यीन में सूक्ष्म प्रकाश तथा यांग में भी सूक्ष्म अन्धकार होता है। इस प्रकार से दोनों तत्व एक–दूसरे पर आश्रित हैं। ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु यीन और यांग ऊर्जाओं से मिलकर बनती है तथा एक–दूसरे के साथ प्रतिक्रिया करती रहती है।

यीन व यांग में अनुपाताक सन्तुलन होने पर संसार में समरसता और सुमधुरता पायी जाती है। यांग शक्ति का चिन्ह ऊष्णता एवं दक्षिण दिशा है तथा यह ऊर्ध्वगामी होता है। इसके विपरीत यीन शीत का प्रतीक है। इसकी दिशा उत्तर है। यीन और यांग के सन्तुलन से आवास में सुख–शान्ति ओर समृद्धि स्थापित होती है।

यह पूरा का पूरा चिन्ह ब्रह्माण्ड में एक तरह का सन्तुलन बनाता है चाहे उसमें यीन ज्यादा हो या यांग। रात के बाद सुबह होती है एवं शरद और सर्दी के बाद बसन्त और गर्मी। इसी तरह मनुष्य को भी अपनी जिन्दगी में सन्तुलन बनाना पड़ता है। इसी तरह हम यांग द्वारा बाकी की यीन का सन्तुलन बनाने की कोशिश करते हैं।

फेंग शुई केवल कुछ कठोर सिद्धान्त नहीं है जो माने जाएं। यह एक कला है जिसे लागू कर आप अपने व्यक्तित्व चुनाव आदि में बदलाव लाकर एक आदर्श फेंग शुई घर का निर्माण कर सकते हैं।

आपका घर आपके लिए और आपके परिवार के लिए आदर्श होता है। इसका प्रभाव आपके पूरे जीवन पर देखा जा सकता है।

फेंग शुई के सिद्धान्तों को अपने घर पर लागू करने के बाद आप और आपका परिवार जिन्दगी में नए स्तर का अनुभव कर सकते हैं।

आप अपने गार्डन, रसोई, भोजनगृह, शयनकक्ष व बाथरूम में फेंग शुई का उपयोग करके जीवन में अच्छे परिणामों का अनुभव कर सकते हैं। इनके अलावा फेंग शुई में और बहुत सी रहस्यमयी चीजें हैं जिनका उपयोग करके आप अपने जीवन को सुखी व समृद्धिशाली बना सकते हैं।

फेंगशुई टिप्स

- घर में कैक्टस के पौधे ना रखें। कैक्टस का पौधा नकारात्मक ऊर्जा प्रवाहित करता है।
- सूखे हुए फूल नकारात्मक ऊर्जा का प्रनिनिधित्व करते हैं। उन्हें मुरझाते ही फेंक दें। ताजे फूल सौभाग्यवर्द्धक होते हैं।
- बंद पड़ी घड़ियां नकारात्मक ऊर्जा की प्रतीक होती हैं। इन्हें तुरंत ठीक कराएं।
- घर में हिंसात्मक तस्वीरें ना लगवाएं। घर के सदस्य तनाव में रहते हैं।
- रात को बाहर कपड़े सुखाने से नकारात्मक ची पहननेवाले के मन पर बुरा प्रभाव डालती है।
- शौचालय का दरवाजा खुला नहीं रखना चाहिए। नकारात्मक ऊर्जा घर में प्रवेश करती है।
- दरवाजें के ऊपर कैलेंडर अथवा घड़ी ना लगाएं। यह दीर्घायु के लिए बुरा है।
- कैश बॉक्स, बैंक पास बुक, कैश रजिस्टर पर 3 फेंग शुई सिक्के चिपकाने से आय में वृद्धिहोती है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

- बीम के दोषों से छुटकारा पाने के लिए लकड़ी की बांसुरियों को लाल फीते की सहायता से बांध कर इसके मुख की ओर करके बीम से 45 डिग्री के कोण पर लटकाएं।
- लाल धागे में बंधे 3 फेंग शुई के सिक्के एवं 3 छोटी घंटियां दरवाजे में लटकाने से समृद्धि आती है। पर ये उन दरवाजों के पीछे नहीं लगाने चाहिए, जो बाहर की ओर खुलते हैं।
- मुंह में सिक्का लिए 3 टांगोंवाला मेढ़क घर में इस तरह रखें कि लगे वह घर में प्रवेश कर रहा है। इससे प्रतीत होता है कि मेढ़क घर में धन ला रहा है। यदि इसका मुंह बाहर की तरफ कर दें, तो प्रभाव उल्टा हो जाएगा। इसे ड्राइंगरूम में रखना शुभ है। शौचालय में नहीं रखना चाहिए।
- सौभाग्य वृद्धि के लिए घर में ड्रैगन रखें। इसे ड्राइंगरूम में लगाते हैं पर इसे शयनकक्ष में नहीं रखना चाहिए।
- ड्रैगन के मुंहवाला यान घर में रखें। यह इस बात का प्रतीक है कि हमारा परिवार लंबे समय तक सुख समृद्धि से चलता रहेगा।
- धन–समृद्धि के लिए घर में कैश–ज्वैलरी रखने की जगह पर सोने की नाव रखें। इसे दक्षिण–पूर्व दिशा में रखते हैं।
- कैरियर, एजुकेशन तथा व्यापार में सफलता के लिए क्रिस्टल ग्लोब कमरे में रखें। इसे दिन में 3 बार घुमाएं। इससे ग्लोब से निकली सकारात्मक ऊर्जा पूरे क्षेत्र में फैल जाती है। प्रयोग से पहले इस ग्लोब को स्टैंड से उतार कर नमक के पानी में धो कर कांच की बरतन में रख कर 2–3 घंटे सुबह की धूप में रखते हैं।
- पश्चिम तथा उत्तर पश्चिम दिशा में धातु से बने सिक्कों का कटोरा या पौधा रखने से मित्रों की संख्या बढ़ती है।
- घोड़े ऊर्जा प्रवाहित करते हें। इनका चित्र प्रवेश द्वार पर लगाने से व्यक्ति सफलता की ओर अग्रसर रहता है।
- पति–पत्नि के शयनकक्ष में लव बर्ड लगाने से उनके बीच रोमानी संबंध बने रहते हैं। लव बर्ड खरीदते समय ध्यान रखें कि उसमें 2 ही परिंदे हों।
- जिन बच्चों का पढ़ाई में मन ना लगता हो, उनके स्टडी टेबल पर एजुकेशन टॉवर रखने से लाभ मिलता है। इसे उत्तर–पूर्व दिशा में रखना चाहिए।
- चीन में चांद को विवाह का देवता मानते हैं। पूर्णिमा के दिन अविवाहित कन्या को 1 संतरा नहर, नदी या समुद्र में प्रवाहित करना चाहिए। मान्यता के अनुसार वायु और जल के देवता कन्या का संदेश चंद्रमा तक पहुंचा दते हैं, जिससे कन्या को जल्द ही मनचाहा वर मिल जाता है।
- चांद की रोशनी या चंद्रमा का चित्र भी अविवाहित कन्याओं के कमरे में लगाने से उन्हें योग्य वर मिलता है।
- 2 लोगों के बीच रिश्ते की गरमाहट बरकरार रखने के लिए 2 डॉल्फिन का चित्र लगाएं। अगर आप बिजनेस पार्टनरशिप में हैं, तो भी डॉल्फिन का चित्र लगा सकते हैं।
- चील सुरक्षा की प्रतीक है। इसकी मूर्ति घर में रखने से बीमारियों तथा दुश्मनों से रक्षा होती है।
- मछलियां संपत्ति और समृद्धि दिलाती हैं। इसलिए छोटी मछली की मूर्ति घर के संपत्ति क्षेत्र में रखें। इसे दक्षिण–पूर्व या उत्तर दिशा में रखते हैं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

फेंगशुई – एक नजर में

1. झाड़फानूस ची	–	विवाह एवं आपसी सम्बन्धों के पहलू से जुड़ा
2. बागवा दर्पण	–	प्रतिकूल ऊर्जाओं से रक्षा
3. पाकवा	–	द्वार वेध या अशुभ स्थान होने पर
4. दोहरा खुशी संकेत	–	लड़के–लड़कियों की शीघ्र ही शादी
5. मिस्टिक नॉट सिम्बल	–	धन व स्वास्थ्य की प्राप्ति हेतु
6. एनीमल सेट	–	चहुंमुखी उन्नति हेतु
7. बांसुरी	–	बीम के प्रभाव को कम करने के लिए
8. विंड चाईम	–	स्वास्थ्य लाभ व जीवन में नये सुअवसर
9. रत्नों का पेड़	–	घर में सुख, सौभाग्य और शांति की वृद्धि
10. फिनीक्स	–	इच्छा पूरी होने वाले भाग्य का प्रतीक
11. धातु का कच्छप	–	वातावरण को शांत और समृद्ध रखने के लिए
12. स्फटिक का गोला	–	स्वास्थ्य लाभ, संतान सुख
13. तीन टांगों वाला मेढक	–	धनागमन
14. हंसते हुए बुद्ध की मूर्ति	–	संपन्नता, सफलता और समृद्धि
15. लव बर्डस	–	आपसी सम्बन्धो को मधुर बनाता है
16. सौभाग्यदायक सिक्का	–	संपत्ति की वृद्धि
17. सुनहरी मछली	–	धन और समृद्धि की वृद्धि
18. ड्रैगन	–	यांग ऊर्जा का प्रतीक
19. ड्रैगन के मुंह वाला बोट	–	संयुक्त परिवार को एकजुट बनाये रखने के लिए
20. लुक, फुक और साउ	–	समृद्धि, उच्च श्रेणी एवं दीघार्यु के देवता
21. एजुकेशन टावर	–	तर्क शक्ति में वृद्धि
22. मैंडरिन डक	–	प्रेमपूर्ण जीवन हेतु
23. क्रिस्टल ग्लोब	–	कैरियर व व्यापार की सफलता

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

1. झाड़–फानूस– 'ची'

आपके घर में दक्षिण पश्चिम दिशा का कोना पृथ्वी तत्व से सम्बन्ध रखता है। यह विवाह एवं आपसी सम्बन्धों के पहलू से जुड़ा हुआ है। यदि आपका दीवानखाना इस दिशा में है तो आप इस जगह का फायदा उठाएं और यहां एक झाड़फानूस लगाइए। प्रतिदिन दो घन्टे शाम के समय इसे जला कर रखिए। इससे आपके परिवार के सदस्यों में मेल–जोल की भावना बलवती होगी और साथ ही साथ अविवाहित व्यक्तियों के विवाह होने की सम्भावनाएं भी बढ़ेंगी।

2. बागवा दर्पण

इस प्रकार के बागवा दर्पण चीन में घरों दुकानों के बाहर लगा कर उन प्रतिकूल ऊर्जाओं का प्रतिरोध किया जाता है जिनसे हानि होने की आशंका रहती है। इसको मुख्य द्वार पर लटका कर उन स्रोतों को वापस लौटाया जाता है जो घर को हानि पहुंचा सकते हैं। ये स्रोत हैं तीखे कोने, ऊंचे टावर, खम्बे, जहां से **'जहरीले तीर'** घर में आने का सन्देह होता है। बागवा दर्पण की बनावट यीन ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करती है अतः इनको घर के अन्दर बिल्कुल न टांगे। वरना घर वालों पर इसका प्रतिकूल असर पड़ेगा। बागवा दर्पण अपने मुख्य द्वार पर एवं पीछे के द्वार पर लगाने से नकारात्मक ऊर्जा रुक जाती है। यह सकारात्मक ऊर्जा को घर से बाहर नहीं जाने देता है।

3. पाकुआ

मुख्य द्वार के सामने किसी भी प्रकार का द्वार वेध या अशुभ स्थान होने पर इसे द्वार से ऊपर बाहर लगाया जाता है। जिससे नकारात्मक ऊर्जा अन्दर नहीं आती।

4. दोहरा खुशी संकेत

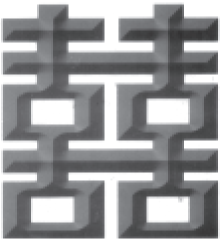

इस चिन्ह को घर के दक्षिण पश्चिम में लगाने से घर में खुशियों के मौके बढ़ते हैं। विवाह योग्य लड़के–लड़कियों की शादी शीघ्र हो जाती है।

5. मिस्टिक नॉट सिम्बल

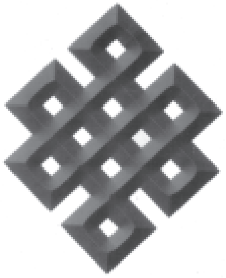

रहस्यमय गांठ अर्थात जिसका न प्रारम्भ पता है न अंत। इस चिन्ह को घर व आफिस की उत्तर दिशा में लगाने से धन व स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

6. एनीमल सेट

इसे ड्राईंग रूम की चारों दिशाओं में लगाया जाता है। ड्रैगन पूर्वी दीवार पर, टाईगर पश्चिमी दीवार पर, फिनिक्स दक्षिणी दीवार पर तथा कछुआ उत्तर की दीवार पर लगाया जाता है। इसे लगाने से व्यक्ति की चहुँमुखी उन्नति होती है।

7. बांसुरी

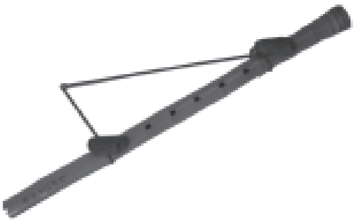

बीम के प्रभाव को कम करने के लिए बाँसुरियों पर लाल रिबन लपेट कर बीम के साथ इस प्रकार लटकाते हैं कि बाँसुरी का मुँह नीचे की ओर रहे और आपस में त्रिकोण बनाएं।

8. विंड चाईम

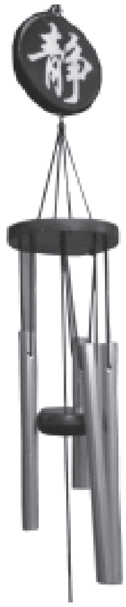

विंड चाईम अर्थात् हवा से जिसमें झंकार हो, ऐसी पवन घंटी घर व व्यापार के वातावरण को मधुर बनाती है। वास्तु और फेंग शुई के पाँच तत्वों को दर्शाने वाली पाँच रॉड की विंड चाईम शुभ मानी जाती है। ब्रह्म स्थान पर लगाने से स्वास्थ्य लाभ व उत्तर पश्चिम में लगाने से जीवन में नये सुअवसर प्राप्त होते हैं। इसकी आवाज मधुर व दिलकश होनी चाहिए। इसे मुख्य द्वार के पास भी लगाया जा सकता है, जिससे द्वार से आने वाली हवा से इसमें झंकार हो।

9. रत्नों का पेड़

घर में सुख, सौभाग्य और शान्ति की वृद्धि करना चाहते हैं तो रत्नों का पेड़ अपने घर में रखें। इसे पश्चिम दक्षिण अथवा उत्तर में रखना शुभ होता है। यह व्यापार व धन के लिए उपयोगी है। रत्नों के उपयोग से ग्रहों के खराब प्रभावों में कमी आ जाती है और सुख–समृद्धि की आशाएं बढ़ती हैं।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

10. फिनिक्स

फीनिक्स चीन की पौराणिक कथाओं में वर्णित असाधारण पक्षी है। फेंगशुई के अनुसार यह इच्छा पूरी होने वाले भाग्य का प्रतीक है। अपने भाग्य को क्रियाशील करने के लिए आप फीनिक्स के प्रतीक के रूप में उक्त चित्र या पेन्टिंग दक्षिण कोने में लगाइए। दक्षिण कोने को गतिशील करने के लिए फीनिक्स बहुत ही प्रभावशाली है दक्षिण दिशा में फीनिक्स का चित्र होना दूरदर्शिता का भी प्रतीक है जो किसी भी बुद्धिमान व्यवसायी के लिए आवश्यक है।

11. धातु का कच्छप

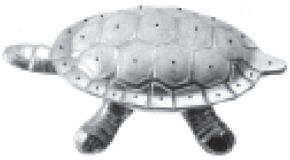

लंबी गर्दन वाला धातु का कच्छप भी वास्तु दोष कम करता है तथा वातावरण को शांत और समृद्ध बनाता है। रोग, दोष एवं अशुभता स्वयं नष्ट हो जाते हैं। कई पौराणिक कथाओं में कच्छप को ईश्वर का रूप भी माना जाता है। किसी भी धर्म या संप्रदाय के लोग इसे रख सकते हैं। धातु का कच्छप, व्यापार स्थल, कार्यालय, या घर में, किसी मेज़ पर रख कर, मुख्य दरवाजे की ओर रखा जाता है। दरवाजे से प्रवेश करने वाले व्यक्ति को यह देखता है। आने वाले व्यक्ति में इसका प्रभाव स्वतः प्रवेश कर जाता है। जिन व्यक्तियों को प्रतिदिन अनेक लोगों से मिलना होता है, वे इस कच्छप को अपनी मेज़ पर रख कर कार्य करें तो बेहतर सफलता मिलेगी और मन प्रसन्न रहेगा। प्रतिदिन विष्णु मंत्र से कच्छप की पूजा करने से ज्ञान और भक्ति में वृद्धि होती है। कच्छप के सम्मुख घी का दीपक जलाने से घर में सुख समृद्धि आती है। कच्छप को शयन कक्ष में रखने से बुरे सपने नहीं आते हैं।

12. स्फटिक बॉल

क्रिस्टल ऊर्जा वर्धक होते हैं। यह सकारात्मक किरणों के प्रभाव को बढ़ा देते हैं। यदि इसे पूर्व दिशा में इस प्रकार लगाया जाए कि प्रातः सूर्य की किरणें इस पर पड़ें तो यह सारे घर को जगमगा देता है। पूर्व दिशा में लगाने से स्वास्थ्य लाभ होता है। उत्तर पश्चिम दिशा में लगाने से परिवार में आपसी प्रेम बढ़ता है और आपके मित्रों व सहायकों की संख्या में वृद्धि करता है। पश्चिम में लगाने से संतान सुख व दक्षिण पश्चिम में लगाने से दाम्पत्य संबंधों में सुधार होता है।

13. तीन टांगों वाला मेंढ़क

मुँह में सिक्का लिए तीन टाँग का मेंढक भी इस प्रकार ही लगाना चाहिए जिससे यह लगे कि यह धन लेकर घर के अंदर आ रहा है। इसे रसोई या शौचालय में कभी नहीं रखना चाहिए। यदि व्यापारिक स्थल पर लगाना हो तो भी इस प्रकार लगायें कि ग्राहक से धन लेकर आपके पास आ रहा है। इसे छिपा कर भी रखा जा सकता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

14. हंसते हुए बुद्ध की मूर्ति

हंसते हुए बुद्ध की मूर्ति धन दौलत के देवताओं में से एक मानी जाती है। इससे घर में संपन्नता, सफलता और समृद्धि आती है। इसे घर में या व्यापारिक स्थल में इस प्रकार लगाना चाहिए, जिससे यह लगे कि यह धन लेकर घर के अंदर की तरफ आ रहे हैं। यह मूर्ति शयन कक्ष तथा भोजन कक्ष में नहीं रखनी चाहिए। ड्राईगंरूम में रख सकते हैं। पीठ पर धन की पोटली लेकर अन्दर आते हुए लाफिंग बुद्धा सबसे उत्तम माने गये हैं। सम्पत्ति के इस देवता की पूजा या अराधना नहीं की जाती बल्कि इसे सजा कर रखा जाता है क्योंकि इसकी उपस्थिति शुद्ध रूप से प्रतीकात्मक और शुभ मानी जाती है।

15. लव बर्ड्स

पति पत्नी के आपसी सम्बन्धो को मधुर बनाने के लिए इसे शयन कक्ष में लगवाया जाता है।

16. सौभाग्यदायक सिक्का

फेंग शुइ भाग्यशाली सिक्के के मध्य में छेद होता है तथा इस पर फेंग सुइ की शुभ बातें अंकित होती हैं। फेंग शुइ का यह भाग्यशाली सिक्का तीन की संख्या में लाल फीते में बांध कर घर में लटकाने से संपत्ति की वृद्धि होती है। इसे घर, कार्यालय, या गाड़ी में लटकाना शुभ माना गया है। भाग्यशाली सिक्के को घर में लटकाने से कार्यव्यवस्था में सुधार आता है तथा कार्यालय में लगाने से लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होती है। यह सौभाग्यदायक सिक्का अनेक प्रकार के धातु, प्लास्टिक आदि से निर्मित किया जाता है। कुछ लोग इसे पूजा के स्थान पर रखना शुभ मानते हैं। यह कम कीमत का विशेष उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सिक्का है, जिसे किसी भी जाति, धर्म और देश का व्यक्ति उपयोग कर सकता है।

17. सुनहरी मछली

सुनहरी मछली धन और समृद्धि की वृद्धि करती है। इनको घर की उत्तर दिशा में पूर्व की ओर मुँह करके लगाना चाहिए। इसे भगवान विष्णु का मत्स्य अवतार माना गया है।

18. ड्रैगन

ड्रैगन उत्तम यांग ऊर्जा का प्रतीक है। इसका सम्बन्ध पूर्व दिशा से जुड़ा हुआ है। इस दिशा का तत्व काष्ठ है। इसलिए लकड़ी की नक्काशी वाला ड्रैगन अच्छा रहता है। मिट्टी व स्फटिक से बना हुआ भी रख सकते हैं परन्तु धातु का कभी मत रखिए क्योंकि पूर्व दिशा में धातु काष्ठ को नष्ट कर देती है। ड्रैगन यांग ऊर्जा का प्रतीक होने के कारण रेस्टोरेन्ट, दुकानं, डिपार्टमेन्टल स्टोर आदि जहां पर ऊर्जा की अधिक आवश्यकता होती है, लोगों का आना–जाना अधिक रहता है वहां पर भी पूर्व दिशा में चित्र रखना बहुत अच्छा होता है। इसे शयनकक्ष में न लगाएं क्योंकि वहां यांग ऊर्जा की जरूरत नहीं होती है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

19. ड्रैगन के मुँह वाला बोट

संयुक्त परिवार को एकजुट बनाये रखने के लिए इसको घर के दक्षिणी पश्चिमी कोने में रखना चाहिए।

20. लुक, फुक और साउ

चीन के प्रत्येक घर में आपको इन तीन चीनी देवताओं की मूर्तियां देखने को मिलेंगी। लुक, फुक और साउ क्रमशः समृद्धि, उच्च श्रेणी एवं दीघार्यु के देवता हैं। इनकी उपस्थिति केवल प्रतीकात्मक होती है, पूजा नहीं की जाती। इनकी उपस्थिति समृद्धि, प्रभुत्व, सम्मान, दीर्घायु, अच्छे स्वास्थ्य एवं सौभाग्य को सुनिश्चित करती है। फुक समृद्धि के देवता हैं, वे अन्य दोनों देवताओं से कद में ऊँचे हैं। आम तौर पर उन्हें बीच में रखा जाता है।

21. एजुकेशन टावर

विद्या की सीढ़ियों को चढने के लिए एजुकेशन टावर को विद्यार्थियों की स्टडी टेबल पर लगवाया जाता है। इसे सामने रख कर पढ़ने से पढाई में ध्यान एकाग्रचित होता है। इच्छा शक्ति व तर्क शक्ति में वृद्धि होती है। अधिक पढ़ने की प्रेरणा मिलती है।

22. मैंडरिन डक

चीनी संस्कृति में मैंडरिन बत्तख का जोड़ा नौजवान पति–पत्नियों के बीच प्रेम एवं रोमान्स का प्रतीक होता है। इन्हें घर की दक्षिण–पश्चिम दिशा के कोने में अथवा शयनकक्ष की दक्षिण–पश्चिम दिशा के कोने में रखना चाहिए। यदि विवाह के इच्छुक हैं तो आप इन बत्तखों की पेन्टिंग अपने शयनकक्ष में लटका सकते हैं। इस बात का ध्यान रखें कि आप बत्तख का एक जोड़ा रखेंगे। सिर्फ एक बत्तख नहीं रखेंगे और न ही तीन बत्तखें रखेंगे। अकेली रखने का परिणाम यह होगा कि आप अकेले (अविवाहित) ही रहेंगे। तीन रखने का परिणाम यह होगा कि आपके वैवाहिक जीवन में कसी तीसरे व्यक्ति का प्रवेश हो सकता है। यह जोड़ा रखने से पहले ध्यान रखें कि एक बत्तख नर और दूसरी मादा हो।

23. क्रिस्टल ग्लोब

क्रिस्टल ग्लोब को घर या व्यापारिक स्थल पर इस प्रकार रखना चाहिए कि यह आपके सामने रहे और दिन में कम से कम तीन बार इसे घुमाना चाहिए। यह कैरियर व व्यापार की सफलता तथा शिक्षा व ज्ञान की वृद्धि में सहायक होगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अध्याय – 13

पूजनीय दुर्लभ वस्तुएं

पूजनीय दुर्लभ वस्तुओं में यहां कुछ वस्तुएं जैसे कि काले घोड़े की नाल, एकाक्षी नारियल, नर्मदा शिवलिंग, अंगूठी, उपचार पोटली आदि दिये गए हैं जो बहुत ही प्रभावशाली और उपयोगी हैं। इन वस्तुओं को प्राप्त कर व्यक्ति आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त कर सकता है। ये सभी दुर्लभ वस्तुएं हैं।

पूजनीय दुर्लभ वस्तुएं – एक नजर में

1.	काले घोड़े की नाल	शनि ग्रह के दुष्प्रभाव की शांति हेतु
2.	एकाक्षी नारियल	समृद्धि के लिए
3.	इन्द्रजाल	बाधा शांति
4.	नर्मदा शिवलिंग	शिव की पूजा हेतु
5.	शालिग्राम	बुध ग्रह और भगवान विष्णु की उपासना हेतु
6.	श्वेतार्क गणपति	समृद्धि प्राप्ति हेतु
7.	गोमती चक्र	बच्चों के लिए सुरक्षात्मक
8.	हरिद्रा गणपति	मनोकामना की पूर्ति
9.	लाल किताब सामग्री	विभिन्न उद्देश्यों हेतु
10.	मूंगे में लक्ष्मी गणेश	समृद्धि के लिए
11.	संगसितारा लक्ष्मी गणेश	समृद्धि के लिए
12.	संगसितारा गणेश	बिघ्न बाधाओं से मुक्ति
13.	सीप कछुआ	दीर्घायु, स्थिरता और सौभाग्य हेतु
14.	पेंडुलम	डाउजिंग के लिए
15.	काले घोड़े की नाल की अंगूठी	शनि ग्रह के दुष्प्रभाव की शांति हेतु
16.	कालसर्प की अंगूठी	कालसर्प दोष से मुक्ति हेतु
17.	विद्युत हवनकुंड	मानसिक शांति व तनाव दूर करने के लिए
18.	नवरत्न डिब्बी	नए घर की नींव में स्थापित करने हेतु
19.	उपचार पोटलियां	विभिन्न उद्देश्यों के लिए

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

1. काले घोड़े की नाल

भगवान शनि कार्यो में सफलता प्रदान करते हैं। भगवान शनि की राजोपचार पूजा, यज्ञ, उपासना आदि में हजारों लाखों रुपये खर्च करने के बाद भी सफलता मिलने में आशंका बनी रहती है, जबकि कुछ ही पैसे में काले घोड़े की असली नाल प्रतिष्ठित करके उपयोग करने से शनि देवता प्रसन्न हो जाते हैं। शनि की ढैया, साढ़ेसाती एवं दशा में सबसे उत्तम उपाय काले घोड़े की नाल है। घोड़े की नाल कार्यो में सफलता के लिए प्रसिद्ध है। दुःख व बीमारी में घोड़े की नाल से बना छल्ला दांयें हाथ की मध्यमा उंगली में धारण करने से आराम मिलता है। चिन्ताओं से परेशान व्यक्ति इसे प्रतिष्ठित करके कंगन बनवाकर पहनने पर धोखा, भ्रम, शंका आदि से छुटकारा प्राप्त कर सकता है। यह नपुंसकता से बचाती है, नीच कर्मों से दूर रखती है व नौकरी पेशावालों के लिए उपयोगी है। जहां मजदूर कार्य करते हों उस स्थान में रखने से मजदूर आपस में मिल–जुल कर कार्य करते हैं। जो दूसरे पर आश्रित हों वह इससे बना छल्ला उपयोग में लायें तो उसका आश्रय बना रहता है। कृषि करने वाले लोग भी इसका उपयोग करते हैं। लोहे से सम्बन्धित कारखानें में वृद्धि एवं सफलता के लिए इस का उपयोग लाभकारी है। मोटरवाहन में सामने लगाकर प्रतिष्ठित किया जाये तो दुर्घटना की आशंका कम होती है। घर में मुख्य दरवाजे पर लगाने से भूतप्रेत, पिशाच, यक्ष, टोना, नजर, टोटका आदि से रक्षा होती है एवं परिवार में कलह पीड़ा नहीं होती। रवि पुष्य नक्षत्र के समय नाल की अंगूठी निर्मित करके लकवा से सम्बन्धित रोगी को अंगूठी धारण करवाने से रोगी को जीवन भर लकवे का प्रकोप नहीं होता। शनिपुष्य योग में धारण करने से अनेक प्रकार की बाधायें एवं शंकाये नष्ट होती हैं तथा हर कार्य में पूरी सफलता मिलती है। गुरुपुष्य योग में घोड़े की नाल से छल्ला तैयार करके दांहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करने से पथरी रोग दूर होता है। निम्नांकित मंत्र नित्यप्रति या शनि वार के दिन जपें।

मंत्र : **ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।**

2. एकाक्षी नारियल

यह नारियल दुर्लभ है। एक ही आंख होने से एकाक्षी नारियल कहलाता है। शुभता व समृद्धि का प्रतीक है जिसके पूजन से भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति होती है। पूजा अथवा व्यवसाय स्थल में सिंदूर से रंग कर, लाल कपड़े में लपेटकर किसी विशेष मूहूर्त में प्राण–प्रतिष्ठा करके देव प्रतिमा की भाँति स्थापित कर देना चाहिए तथा निम्न मंत्र का ग्यारह हजार की संख्या में जप करने से विशेष लाभ होता है।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं मम गृहे धनसमृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

3. इन्द्र जाल

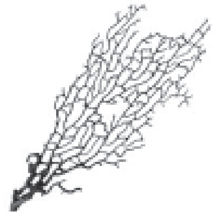

इन्द्र जाल एक दुर्लभ एवं अमूल्य वस्तु है, इसे प्राप्त करना न तो आसान है और न ही यह नकली होता है। इन्द्र जाल की महिमा डामरतंत्र, विश्वसार, रावण संहिता आदि ग्रन्थों में पायी जाती है। इसे विधि पूर्वक पूजा प्रतिष्ठा करके शुद्धवस्त्र में लपेट कर पूजा घर में रखने से अनेक प्रकार के लाभ होते हैं। इसकी पूजा अपासना करने से घर में हमेशा शान्ति बनी रहती है। प्रतिदिन पुष्प, अक्षत आदि अर्पण करने से देव भक्ति की वृद्धि होती है। पंचोपचार पूजा एवं दर्शन करने से मानसिक और शारीरिक शान्ती मिलती है। इसके प्रयोग से भूत, प्रेत, आदि घर में दुष्प्रभाव नहीं कर पाते। यह जिस घर में पूजा स्थल पर होता है वहां बुरी नज़र का प्रभाव नहीं होता है। नित्य दर्शन से अनेक बाधायें दूर होती हैं, मनोकामना पूर्ण होती है।

4. नर्मदा शिवलिंग

शिव की साधना में नर्मदा शिवलिंग का अधिक महत्व है। नर्मदा शिवलिंग नर्मदा नदी से प्राप्त होता है जो कि भगवान शिव का चमत्कार है। इस शिवलिंग की पूजा उपासना करने से अनेक लाभ हैं तथा शिव की कृपा से ज्ञान की वृद्धि होती है। नर्मदेश्वर शिवलिंग पर नित्य वेलपत्र अर्पण करने से लक्ष्मी प्राप्त होती है। प्रतिदिन काला तिल अर्पण करने से शनि ग्रह की कृपा से अनेक सफलतायें हासिल होती हैं। पंचामृत से अभिषेक करने पर गुणवान और भाग्यशाली पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है। सरसों का तेल अर्पण करने से शत्रु का नाश होता है। गंगाजल अर्पण करने से श्रद्धा, भक्ति और शक्ति की वृद्धि होती है। खीर अर्पण करने से वांछित सफलता मिलती है। हाथ का स्पर्श करने से या हाथ में रख कर अधिक समय तक पूजा अर्चना करने से शारीरिक शक्ति बढ़ती है। नीला कमल अर्पण करने से भाग्योदय होता है। तुलसी की मंजरी अर्पण करने से शिव भक्ति बढ़ती है।

मंत्र : **ॐ नमः शिवाय।**

5. शालिग्राम

शालिग्राम भगवान विष्णु की साक्षात् प्रतिमा है इसे बड़ी–बड़ी पूजाओं एवं यज्ञादि में रखना आवश्यक होता है। भारत देश की एक मात्र गण्डकी नदी से प्राप्त होता है जिसे घर में प्रतिष्ठित करने से धर्म, कर्म और ऐश्वर्य की वृद्धि होती है। नित्य पूजा, उपासना करने से पूर्व जन्म के पाप नष्ट होते हैं। इसके साथ तुलसी, बेलपत्र, चन्दन, शंख और गोमती चक्र इन पांच वस्तुओं को रखने से हर प्रकार की कामना पूर्ति होती है। एकादशी को शालिग्राम पर 108 तुलसी पत्र अर्पण करने से हजार गौदान का पुण्य प्राप्त होता है। प्रतिदिन गंगा स्नान कराने से विष्णु यज्ञ का फल मिलता है। विभिन्न प्रकार के भोग लगाने से रोग नष्ट होता है। कमल पुष्प अर्पण करने से प्रचुर लक्ष्मी प्राप्त होती है। पंचामृत से स्नान कराने से श्रीमद्भागवत श्रवण का फल मिलता है।

मंत्र : **ॐ नमो नारायणाय।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

6. श्वेतार्क गणपति

यह श्वेत आक का पौधा गणपति जी का स्वरूप माना जाता है। श्वेत आक की जड़ी (मूल) यदि खोदकर निकाल दी जाए तो नीचे की जड़ में गणपति जी की प्रतिमा प्राप्त होगी, इस दुर्लभ प्रतिमा का पूजन करना महान कल्याणकारी है। यह प्रतिमा स्वतः सिद्ध होती है तन्त्र शास्त्रों के अनुसार ऐसे घर में जहाँ यह प्रतिमा स्थापित हो, वहाँ ऋद्धि–सिद्धि तथा अन्नपूर्णा वास करती है तथा उस स्थान में कोई भी शत्रु हानि नहीं पहुँचा सकता। श्वेतार्क को हिन्दी में आक तथा अकौडा, पंजाबी में देशी आक, उर्दू में मदार, संस्कृत में अर्क, गुजरती में आकड़ा कहते हैं। श्वेत आक की कलम से गणपति जी के यंत्र–मंत्र लिखकर धारण करने से साधक की मनोकामना पूर्ण होती है। बच्चे को नजर उतारने के लिए उसे श्वेत आक की माला पहनाने पर नजर का कुप्रभाव समाप्त हो जाता है। रवि पुष्य योग में आक की जड़ कान में बाँधने से अनेक प्रकार के ज्वरों का नाश होता है। यह प्रयोग प्रातःकाल के समय बिना किसी व्यक्ति के टोके करें। इस प्रयोग में जड़ को गणपति के मूल मंत्र से अभिमन्त्रित कर, प्रयोग करें। जिस नेत्र मे पीड़ा हो उसके विपरीत पैर के अंगूठे पर श्वेत आक के दूध से तर की गई रूई का फाया रखने से नेत्र पीड़ा दूर होती है।

मंत्र : **ॐ नमो सिद्धिविनायकाय सर्वकार्यकर्त्रे सर्वविघ्नप्रशमनाय सर्वराज्य वश्यकरणाय सर्वजन सर्वस्त्री पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा।।**

7. गोमती चक्र

गोमती चक्र शुभफलदायक होता है। इसमें कृष्ण के सुदर्शन चक्र जैसा चिन्ह प्राकृतिक रूप से अंकित होता है। घर में स्थापित करने से पारिवारिक सुख व सौहार्द में वृद्धि होती है तथा नकारात्मक भावनाएं नष्ट होती हैं एवं अशावादी विचारधारा उत्पन्न होती हैं। इन चक्रों को लाल कपड़े के ऊपर 5, 11, 21 संख्या में किसी शुभ मुहूर्त में बुधवार, गुरुवार के दिन श्रद्धा विश्वास पूर्वक स्थापित करें व नित्य दर्शन करें।।

8. हरिद्रा गणपति

तन्त्र शास्त्र में हरिद्रा गणपति का विशेष महत्व बताया गया है। जब हरिद्रा का पौधा कई वर्षो का हो जाता है तो उसकी जड़ में गणपति का निवास हो जाता है तब उसे अच्छे मुहूर्त में पूजन स्थल में प्रतिष्ठित किया जाता है। यह प्रतिमा ऋद्धि सिद्धि में सहायक होती है। घर या व्यापार स्थल में स्थापित करने पर किसी भी प्रकार की विघ्न बाधायें नहीं आती हैं तथा शत्रु पर विजय प्राप्त होती है। इसे पूर्व दिशा में स्थापित कर इसके सम्मुख नित्य गं गणपतये नमः का जप किया जाता है। नित्य दूर्वांकुर अर्पण करने से सभी प्रकार की बाधायें नष्ट होती है। नित्य मोदक का भोग प्रदान करने से वांछित सफलता मिलती है। इसके सम्मुख **गणांनांत्वा गणपति** मंत्र का पाठ करने से परिवार व समाज का कल्याण होता है। नित्य उपासना करने से नजर, टोना, टोटका आदि से रक्षा होती है। नित्य पीला अक्षत अर्पण करने से अच्छे विचारों की वृद्धी होती है। इसके सम्मुख **ये पथांपथिरक्ष**, मंत्र जप करके यात्रा प्रारम्भ करने पर दुर्घटनादि नहीं होती है। व्यापार स्थल में विधिपूर्वक इसकी प्रतिष्ठा पूजा करने से व्यापार में वृद्धि होती है।

मंत्र : **ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रा गणपतये वरवरद सर्वजन हृदयम् स्तंभय स्तंभय स्वाहा।।**

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

9. लाल किताब सामग्री

लाल किताब की उपाय सामग्री का उपयोग करने से पूर्व बुधवार या रविवार को सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य कभी भी इसे गंगा जल में धो कर इसकी पूजा करनी चाहिए। तत्पश्चात श्रद्धा एवं विश्वासपूर्वक इसका उपयोग करना चाहिए।

हाथी

बुध और राहु ग्रह की शुभता हेतु इसे अपने घर में रखना चाहिए।

मछली

शुक्र ग्रह की शुभता और आपसी प्रेम कायम रखने हेतु इसे अपने पूजा स्थान में रखना चाहिए।

नाग नागिन

नाग नागिन का जोड़ा व्यक्ति के आपसी संबंधों में मधुरता लाती है। ऐसे व्यक्ति जिनकी उन्नति में बाधा आ रही है, अनावश्यक कठिनाईयों से गुजरना पड़ता है। जिसकी कुंडली में कालसर्प दोष है वह इसकी पूजा अवश्य करें।

केतु

केतु ग्रह की शुभता हेतु

राहु

इसे पूजा स्थान पर रख कर राहु ग्रह का स्मरण करना चाहिए, अशुभता का शमन होता है और व्यक्ति को अनावश्यक कठिनाईयों से नहीं गुजरना पड़ता है।

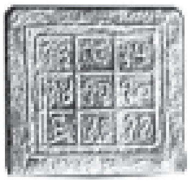

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

10. मूंगे के लक्ष्मी–गणेश

यह लक्ष्मी–गणेश की मूर्तियां मूंगे रत्न से निर्मित की गई हैं। मूंगा रत्न धन, वैभव, संपत्तिदायक माना जाता है। लक्ष्मी एवं गणेश की संयुक्त रूप से की जाने वाली साधना का स्थिर लक्ष्मी प्राप्ति के लिए विशेष महत्व है। इनकी अपने घर में स्थापना करके नित्य पूजन एवं दर्शन करने से लक्ष्मी–गणेश की कृपा से पारिवारिक सुख, समृद्धि, संपत्ति लाभ में वृद्धि होती है। व्यक्ति अपने कार्यक्षेत्र में धैर्य एवं साहस पूर्वक कार्य करता है। किसी शुभ मुहूर्त में शुक्ल पक्ष तथा मंगलवार के दिन प्रातःकाल के समय शुद्ध जल से अभिषेक करके चंदन, रोली, धूप, दीप से पूजन करके घर में स्थापित करें एवं निम्न मंत्र का 49 दिन तक नित्य 108 बार जप करें।

मंत्र : ॐ श्रीं गं लक्ष्मी गणेशाभ्यां नमः।

11. संग सितारा लक्ष्मी गणेश

शुक्र ग्रह की शुभता हेतु और लक्ष्मी गणेश का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए संगसितारा लक्ष्मी गणेश की पूजा की जाती है। यह व्यवसाय के लिए उत्तम तथा कला में अभिरुचि, बुद्धि विकास और विघ्न–बाधाओं से मुक्ति दिलाने में सहायक है।

12. संग सितारा गणेश

गणेश विघ्न निवारण के देवता हैं सभी कार्यो में सफलता हेतु भगवान गणेश की उपासना ही सर्वश्रेष्ठ मानी गयी है। विघ्नों को नष्ट करने के लिए गणेश की उपासना आवश्यक है। तीव्र बुद्धि की प्राप्ति और धनागमन के साधन खुलते हैं।

13. सीप कछुआ

कछुआ एक शांत धीर–गंभीर प्रवृत्ति का प्राणी है। यह धैर्य एवं शांति का प्रतीक है। हमारे सनातन धर्म के चौबीस अवतारों में कच्छप अवतार की भी अपनी प्रमुख विशेषता है, इसी कारण कच्छप अवतार के रूप में इसकी पूजा भी की जाती है। इस सीप कछुए को अपने घर, कार्यालय अथवा व्यापार स्थल में मेज पर रखकर मुख्य दरवाजे की ओर रखा जाता है। इसके अतिरिक्त इसे बैठक के कमरे में या शो पीस के रूप में उपयोग कर सकते हैं।

घर या व्यवसाय स्थल पर बाहर से आने वाले व्यक्तियों पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जिस स्थान पर यह स्थापित किया जाता है उस स्थान का वातावरण इसके प्रभाव से शांत बना रहता है। इसके प्रभाव से व्यक्ति के आरोग्य में वृद्धि होती है, मानसिक उलझनें समाप्त होती है, सकारात्मक भावनाओं का उदय होता है, आत्मविश्वास में विशेष वृद्धि होती है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

14. पेंडुलम

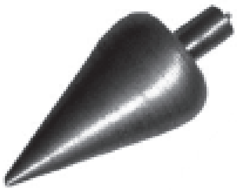

डाउजिंग के माध्यम से निकट भविष्य में होने वाली घटनाओं को विशेष प्रकार से रचित प्रश्नों के आधार पर जाना जा सकता है। किसी व्यक्ति के रोग के बारे में जाना जा सकता है। बहुत से चिकित्सक भी इसकी सहायता लेते हैं। किसी भी स्थान या भवन की वास्तु संबंधी ऊर्जा को जाना जा सकता है। किसी स्थान या भवन की नकारात्मक ऊर्जा को बिना वास्तु परिवर्तन किए सकारात्मक बनाया जा सकता है। कोई भी वस्तु डाउजिंग से परख कर खरीदी जाए तो वह स्वास्थ्य के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। इस प्रकार डाउजिंग के माध्यम से बहुत कुछ जान सकते हैं, लेकिन भविष्य की बारीक जानकारी देने में यह अक्षम है क्योंकि इससे प्रायः हम दो ही उत्तर लेते हैं – नकारात्मक या सकारात्मक। इन्हीं दो उत्तरों के अनुसार हमें अपने प्रश्नों की रचना करनी होती है।

15. काले घोड़े की नाल की अंगूठी

शनि भगवान को प्रसन्न करने के लिए राजोपचार पूजा, यज्ञ, उपासना आदि पर लाखों खर्च करने के बाद भी वांछित फल प्राप्ति में शंका बनी रहती है लेकिन काले घोड़े की नाल का छल्ला पहनने से वह शीघ्र ही कृपालु हो जाते हैं और हर कार्य में सफलता प्रदान करते हैं। ज्योतिष के अनुसार शनि जीवन में कई बार ढैया, साढ़ेसाती, महादशा व अंतर्दशा के रूप में प्रभावी होते हैं। अंगूठी नपुंसकता से बचाती है, नीच कर्मों से दूर रखती है तथा भूतप्रेत, टोना, नजरदोष आदि से रक्षा होती है एवं परिवार में कलह पीड़ा नहीं होती, नौकरी पेशावालों के लिए यह उपयोगी है।

मंत्र : **ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।**

16. कालसर्प अंगूठी

कालसर्पयोग के कारण जीवन संघर्षमय हो जाता है। प्रगति में रुकावटें आती है। विलम्ब से यश प्राप्त होता है, मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक परेशानी होती है। दुर्भाग्य से छुटकारा पाने तथा पूर्व जन्मकृत पापों को नष्ट करने और पुण्य का उदय होने के लिए इस अंगूठी की विधिपूर्वक सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण में पूजा प्रतिष्ठा एवं उपयोग करने से कालसर्पयोग का प्रभाव नष्ट हो जाता है। काल का अर्थ है मृत्यु यदि अन्य ग्रह योग बलवान न हों तो कालसर्प योग में जन्मे मनुष्य की मृत्यु शीघ्र हो जाती है। यदि जीवन रहता है तो मृत्युतुल्य कष्ट भोगता है। जन्म कुण्डली में सभी ग्रह का राहु केतु के मध्य होने से कालसर्प योग होता है। महर्षि पराशर एवं वराहमिहिर, महर्षि भृगु, कल्याण वर्मा, बादरायण, गर्ग, भणित्थ, नाड़ी गन्थों व जैन ज्योतिष में भी कालसर्प स्वीकार किया है। 'कालसर्पयोग' सर्वसाधारण रूप में किसी ने भी अच्छा नहीं माना है।

मंत्र : **ॐ आस्तिक मुनये नमः।**

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

17. विद्युत हवन कुंड

विद्युत हवन कुंड का उपयोग करके जड़ी–बूटी युगल आदि मिश्रित हवन सामग्री द्वारा प्रतिदिन हवन करके आध्यात्मिक, भौतिक एवं ज्योतिषीय लाभ पा सकते हैं। भौतिक लाभों में हवन द्वारा प्रयुक्त होने वाली हवनीय सामग्री जड़ी बुटियां, गुग्गल आदि में निश्चित तापमान के संपर्क में आते ही दूर–दूर फैलने के विशिष्ट गुण होते हैं। जिनके कारण वातावरण पूर्णतः शुद्ध हो जाता है। प्रदूषण मुक्त वातावरण अत्यंत फलदायी हो जाता है। चारो तरफ धनात्मक ऊर्जा का संचार होने लगता है। दिव्य शक्तियां अनुकूल होती हैं। मानसिक शांति, व्यक्तित्व विकास, तनाव और उलझन रहित वातावरण व अच्छी विचार धारा की उत्पत्ति होती है। यज्ञ हवन से देवता प्रसन्न होते हैं तथा आपको लाभ के अभिष्ट परिणाम प्रदान करते हैं। शास्त्र में भी इसका प्रमाण है।

उपयोग विधि :

- हवन कुंड की तार को बिजली में लगाएं। हवन कुंड की लाइट जल जाएगी। अगर नहीं जले तो तार में लगे स्विच को ऑन कर लें। 2 मिनट इंतजार करें।
- दो चम्मच हवन सामग्री डालें। कुछ समय में सामग्री की महक वातावरण को पूजामय बना देगी। हवन सामग्री में घी की आवश्यकता नहीं है।
- जब हवन कुंड में सामग्री जल रही हो, तो उसे हाथ न लगाएं। गर्म होने के कारण हाथ जल सकता है।
- लगभग 10 मिनट जलाने के बाद हवन कुंड को बंद कर दें। बाद में डाली जाने वाली सामग्री पहले जली हुई सामग्री की गर्मी से ही जल जाएगी।
- लघु आकार के कारण इसे गृह/कार्यालय में कहीं भी रख सकते हैं या प्रतिदिन स्थानांतरित कर सकते हैं।
- इलैक्ट्रिक हवन कुंड प्रदूषण रहित यंत्र है। इलैक्ट्रिक हवन कुंड के उपयोग में लकड़ी, देसी घी, कपूर आदि की आवश्यकता नहीं हैं और हरबल सामग्री के उपयोग द्वारा शारीरिक लाभ भी मिलता है।

18. नवरत्न डिब्बी

इसे नये घर की नींव में स्थापित किया जाता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

19. उपचार पोटली

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। आज के इस भौतिक व आधुनिक युग में हर व्यक्ति जो कि अपने जीवन में आने वाली समस्याओं से परेशान होता है, वह सुखद व सुरक्षित भविष्य की कामना करते हुए शास्त्रों व वेदों में निहित उपचारों को करता है। भारतीय धर्म शास्त्रों व ग्रंथों में सुखद व शांति प्रिय जीवन जीने के लिए अनेकानेक उपाय बताए गए हैं और इसी दिशा में शोध कार्य करते हुए ज्योतिषियों व विद्वानों ने मानव जीवन में आने वाली समस्याओं के निदान हेतु सभी उपायों को ध्यान में रखते हुए उपचार पोटली बनाई, जो कि शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिक और व्यापारिक जीवन को सुदृढ़ व सफल बनाने में विशेष उपयोगी है। प्रत्येक पोटली को उपयोग करने की विधि का मंत्र दिया गया है जिसको उपयोग में लाने पर अत्यधिक लाभ प्राप्त होता है।

उपचार पोटली – एक नजर में

(i)	दीपावली पूजन पोटली	महालक्ष्मी को दीपावली में पूजने हेतु
(ii)	आपसी सामंजस्य व समन्वय पोटली	आपसी रिश्तों व विचारों में एकरुपता (सी)
(iii)	स्वास्थ्यवर्धक पोटली	असाध्य रोगों का निराकरण
(iv)	परस्पर प्रेम व आकर्षण पोटली	रिश्तों व संबंधों को सुधारने हेतु
(v)	सुख–समृद्धि व मानसिक शांति की पोटली	सुख–समृद्धि व मानसिक शांति हेतु
(vi)	सुरक्षित यात्रा के लिए पोटली	वाहन दुर्घटनाओं से सुरक्षा हेतु
(vii)	मंगलकारी पारिवारिक पोटली	हर क्षेत्र में सफलता
(viii)	सफलता व विजय प्राप्ति के लिए पोटली	शत्रुओं का शमन
(ix)	व्यापार वृद्धि पोटली	व्यापार वृद्धि हेतु

(i) दीपावली पूजन पोटली

परिचय : इस पोटली में कमल गट्टे की माला, महालक्ष्मी यंत्र, स्फटिक लक्ष्मी गणेश, स्फटिक श्रीयंत्र और महालक्ष्मी का चांदी में लॉकेट होता है।

लाभ : इस पोटली को दीपावली के पर्व पर उपयोग में लाया जाता है। इसके शुभ प्रभाव से व्यापार वृद्धि व कार्य क्षेत्र में उन्नति होती है तथा धन व मान–सम्मान प्राप्त होता है।

उपयोग विधि : इस पोटली से प्राप्त सामग्री को गंगाजल से धोकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात् शुभ मुहूर्त में पंचामृत से स्नान कराएं और महालक्ष्मी यंत्र स्फटिक श्रीयंत्र, स्फटिक लक्ष्मी–गणेश की श्री सूक्त के पाठ से पूजा कर धूप, दीप, नैवेद्य पुष्प आदि अर्पित करें और चांदी में बने महालक्ष्मी जी के लॉकेट को धारण करें और नित्य महालक्ष्मी जी के मंत्र की एक माला जपें।

मंत्र : ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

(ii) आपसी सामंजस्य व समन्वय पोटली

परिचय : इस पोटली में प्रेमवृद्धि यंत्र, छः मुखी रुद्राक्ष, जरकन का लॉकेट, रुद्राक्ष स्फटिक माला तथा स्फटिक गणेश होते हैं।

लाभ : आपसी रिश्तों व विचारों में एकरुपता प्राप्त होती है विशेष कर युवा पीढ़ी के लड़के–लड़कियों के लिए यह सर्वश्रेष्ठ है।

उपयोग विधि : इस पोटली से प्राप्त सामग्री को गुरुवार या शुक्रवार को स्वच्छ जल व गंगाजल से स्नान कराएं। यंत्र व गणेश जी को घर की उत्तर दिशा में स्थापित करें तत्पश्चात् नित्य धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन करें तथा जरकन के लॉकेट व रुद्राक्ष को धारण करें। अंत में स्फटिक रुद्राक्ष माला से नित्य इस मंत्र का एक माला जाप करें।

मंत्र : ॐ उमामहेश्वराभ्याम् नमः।

(iii) स्वास्थ्यवर्धक पोटली

परिचय : इस पोटली में महामृत्युंजय यंत्र, चांदी में महामृत्युंजय का लॉकेट, स्फटिक शिवलिंग तथा रुद्राक्ष की माला व सातमुखी रुद्राक्ष चांदी की चेन में होता है।

लाभ : यह सामग्री प्रत्येक व्यक्ति के आत्मबल में वृद्धि, शरीर की स्वस्थता व मानसिक शांति को प्रदान करती है। इसके प्रभाव से असाध्य रोगों का निराकरण होता है।

उपयोग विधि : इस पोटली से प्राप्त सामग्री को कच्चे दूध व गंगाजल को मिलाकर स्नान कराएं। महामृत्युंजय यंत्र और स्फटिक शिवलिंग की घर के उत्तर दिशा में स्थापना कर धूप, दीप आदि से पूजन कर रुद्राक्ष की माला पर मंत्र जप करें तथा सातमुखी रुद्राख व महामृत्युंजय लॉकेट को गले में धारण करने से लाभ प्राप्त होगा।

मंत्र : ॐ नमः शिवाय

(iv) परस्पर प्रेम व आकर्षण पोटली

परिचय : इस पोटली में आकर्षण यंत्र, चांदी में बना फिरोजा रत्न का लॉकेट, स्फटिक चंद्र लॉकेट तथा स्फटिक की माला होती है।

लाभ : किसी भी व्यक्ति विशेष को अपनी और आकर्षित करने के लिए यह अति उत्तम सामग्री है। इसके उपयोग से व्यक्ति अपने करीबी रिश्तों व संबंधों को सुधार सकता है।

उपयोग विधि : किसी भी शुक्रवार के दिन प्राप्त सामग्री को शुद्ध जल व गंगाजल से धो लें। यंत्र की नित्य प्रतिदिन धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजा करें इसके बाद यंत्र को पीले रंग के वस्त्र या कागज में लपेट कर अपनी जेब या पर्स में रखें व स्फटिक माला पर मंत्र जप करें। इसके बाद एक लॉकेट अपने गले में व दूसरा लॉकेट अपने साथी को भेंट स्वरूप दें तथा निम्न मंत्र का 108 बार जप करें।

मंत्र : ॐ क्लीं कामदेवाय नमः।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

(v) सुख–समृद्धि व मानसिक शांति की पोटली

परिचय : इस सुख–समृद्धि की पोटली में स्फटिक श्री यंत्र, महालक्ष्मी यंत्र, स्फटिक माला और एक मुखी रुद्राक्ष का लॉकेट चांदी में बना हुआ होता है।

लाभ : आर्थिक स्थिति में लाभ व जीवन में शक्ति, मानसिक शक्ति, सुख–समृद्धि में वृद्धि तथा कार्य क्षेत्र में प्रगति मिलती है।

उपयोग विधि : इस सामग्री को स्वच्छ जल या गंगा जल से किसी भी गुरुवार या शुक्रवार को स्नान कराकर यंत्र को घर की उत्तर दिशा में स्थापित कर नित्य पूजा करें व रुद्राक्ष लॉकेट को धारण कर स्फटिक माला पर लक्ष्मी जी के मंत्र का जप करें।

मंत्र : ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐश्वर्यैलक्ष्म्यै नमः।

(vi) सुरक्षित यात्रा के लिए पोटली

परिचय : इस सुरक्षित यात्रा उपचार पोटली में वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र, स्फटिक गणेश, हनुमान चालीसा और पांचमुखी रुद्राक्ष चांदी में बना लॉकेट होता है।

लाभ : ये किसी भी प्रकार की होने वाली वाहन दुर्घटनाओं को रोकता है।

उपयोग विधि : इस सामग्री को मंगलवार के दिन कच्चा दूध, स्वच्छ जल व गंगाजल को मिलाकर स्नान कराकर घर की उत्तर दिशा यंत्र व स्फटिक गणेश की स्थापना करें और पांच मुखी रुद्राक्ष के लॉकेट को धारण करके कम से कम 11 या 21 बार हनुमान मंत्र का जप करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें।

मंत्र : ॐ हं हनुमते नमः।

(vii) मंगलकारी पारिवारिक पोटली

परिचय : इसमें एक स्फटिक श्रीयंत्र, वास्तु यंत्र, मातंगी यंत्र, स्फटिक बॉल, दक्षिणावर्ती शंख व गौरी शंकर रुद्राक्ष का चांदी में बना लॉकेट है।

लाभ : यह सामग्री शारीरिक, मानसिक, भौतिक व आध्यात्मिक शांति देने वाली तथा नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त कर सकारात्मक ऊर्जा का सृजन करती है।

उपयोग विधि : इस सामग्री को किसी भी गुरुवार या सोमवार को शुद्ध जल अथवा गंगा जल से स्नान कराएं। इसके बाद यंत्रों को घर की उत्तर पूर्व दिशा में स्थापित कर दें व नित्य धूप, दीप, नैवेद्य व पुष्प आदि से पूजा करें और गौरी शंकर रुद्राक्ष को घर के मुखिया को धारण करवाएं व स्फटिक बॉल को बच्चों के कमरे में लटका दें और दक्षिणावर्ती शंख से नित्य सूर्य को अर्घ्य दें। ऐसा करने से व्यक्ति को चारों दिशाओं में मान–सम्मान व जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

मंत्र : सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके शरण्ये त्र्यंबके गौरी! नारायणि नमोऽस्तुते।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

(viii) सफलता व विजय प्राप्ति के लिए पोटली

परिचय : इस पोटली में बगला मुखी यंत्र, चांदी में बना बगला मुखी लॉकेट, सनसितारा श्रीयंत्र, आठमुखी रुद्राक्ष का लॉकेट व हल्दी माला होती है।

लाभ : इसके प्रभाव से शत्रुओं का शमन होता है, प्रतिद्वंदियों के द्वारा होने वाली हानि से बचाता है व अपने सहयोगियों का साथ प्राप्त होता है।

उपयोग विधि : इस प्राप्त सामग्री को स्वच्छ जल में गंगाजल को मिलाकर उससे स्नान करा शुद्ध कर लें इसके बाद घर की उत्तर पूर्व दिशा में इसे स्थापित कर नित्य धूप, दीप आदि से पूजन करें और आठ मुखी रुद्राक्ष को गले में धारण करें तथा हल्दी की माला पर 42 दिन तक मंत्र जप करें और चांदी के लॉकेट को शुद्ध कर किसी विशेष कार्य में जाने से पहले अवश्य ही धारण करके जाने से निश्चित ही सफलता प्राप्त होती है।

मंत्र : **ॐ ह्लीं बगलामुख्यै नमः।**
अथवा

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वाम् कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।।

(ix) व्यापार वृद्धि पोटली

परिचय : इस पोटली में महालक्ष्मी यंत्र, कुबेर यंत्र, चांदी में बना ग्यारह मुखी रुद्राक्ष का लॉकेट, सनसितारा श्रीयंत्र, सनसितारा लक्ष्मी गणेश का जोड़ी, नव रत्न श्रीयंत्र लॉकेट और स्फटिक माला होती है।

लाभ : इस सामग्री के उपयोग से शारीरिक, व्यापारिक, मानसिक शक्ति को बल प्राप्त होता है, व्यापारिक क्षेत्र में अपना लक्ष्य प्राप्त करने से वर्चस्व बढ़ो में अत्यंत लाभकारी है।

उपयोग विधि : इस प्राप्त सामग्री को शुद्ध जल, गंगाजल से स्नान कराकर शुद्ध कर लें इसके बाद अपनी दुकान, ऑफिस या फैक्ट्री के पूजा स्थान अथवा ईशान कोण में इसकी स्थापना करें और नित्य, धूप, दीप, पुष्प आदि से पूजन करें। ग्यारह मुखी रुद्राक्ष व नवरत्न श्रीयंत्र लॉकेट को गले में धारण कर स्फटिक माला पर नित्य एक माला मंत्र जप करने से व्यापार में वृद्धि, आर्थिक स्थिति में मजबूती व सह कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

मंत्र : **ॐ श्रीं ह्लीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद**
श्रीं ह्लीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अध्याय–14

नवग्रहों के कुछ अन्य शास्त्रसम्मत उपाय

सूर्य

भगवान् सूर्य सिंह राशि के स्वामी हैं। इनकी महादशा छः वर्ष की होती है। सूर्य की प्रसन्नता और शांति के लिए नित्य सूर्यार्घ्य देना चाहिए और हरिवंशपुराण का श्रवण करना चाहिए। माणिक्य धारण करना चाहिए तथा गेंहू, सवत्सा गाय, गुड़, तांबा, सोना एवं लाल वस्त्र ब्राह्मण को दान करना चाहिए। सूर्य की शांति के लिए वैदिक मंत्र– 'ॐ घृणि सूर्याय नमः' है। व बीज मंत्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। इनमें से किसी एकका श्रद्धानुसार एक निश्चित संख्या में नित्य जप करना चाहिए। जप की कुल संख्या 7000 तथा समय प्रातःकाल है।

चंद्रमा

चंद्र देव की प्रतिकूलता से मानसिक कष्ट तथा श्वास आदि के रोग होते हैं। इनकी प्रसन्नता के लिए सोमवार का व्रत, शिवोपासना, शिव स्तुति तथा मोती धारण करना चाहिए चावल, कपूर सफेद वस्त्र चांदी, शंख, सफेद चंदन, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, दही और मोती–ब्राह्मण को दान करना चाहिए। इनकी उपासना के लिए वैदिक मंत्र– 'ॐ इमं देवा असपन्न ᳪ सुवध्वं। महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ᳪ राजा।। पौराणिक मंत्र– दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।। बीज मंत्र– 'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः', तथा सामान्य मंत्र– 'ॐ सों सोमाय नमः', है। इनमें से किसी भी मंत्र का श्रद्धानुसार नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। कुल जप–संख्या 11000 तथा समय संध्याकाल है।

मंगल

मंगल ग्रह की पूजा की पुराणों में बड़ी महिमा बतायी गयी है। यह प्रसन्न होकर इच्छा पूर्ण करते हैं। भविष्य पुराण के अनुसार मंगल देवता के नामों का पाठ करने से ऋण से मुक्ति मिलती है। यह अशुभ ग्रह माने जाते हैं। यदि ये वक्र गति से न चलें तो एक–एक राशि को तीन–तीन पक्ष में भोगते हुए बारह राशियों को डेढ़ वर्ष में पार करते हैं। मंगल ग्रह की शांति के लिए शिव–उपासना तथा (मूंगा) प्रवाल रत्न धारण करने का विधान है। दान में तांबा, सोना, गेहूं, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चंदन, लाल पुष्प, केशर, कस्तूरी, लाल बृषभ, मसूर की दाल तथा भूमि देना चाहिए। मंगलवार को व्रत करना चाहिए तथा हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। इनकी महादशा सात वर्षों तक रहती है। यह मेष तथा वृश्चिक राशि के स्वामी हैं। इनकी शांति के लिए वैदिक मंत्र– 'ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् अपा ᳪ रेता ᳪ सि जिन्वति।।', पौराणिक मंत्र– 'धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।', बीज मंत्र 'ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः,' तथा सामान्य मंत्र– ॐ अं अंगारकाय नमः' है। इनमें से किसी का श्रद्धानुसार नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। कुल जप–संख्या 10000 तथा समय प्रातः आठ बजे है। विशेष परिस्थितियों में विद्वान् ब्राह्मण का सहयोग लेना चाहिए।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

बुध

बुध ग्रह के अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता भगवान् विष्णु हैं। बुध मिथुन और कन्या राशि के स्वामी स्वामी हैं। इनकी महादशा 17 वर्ष की होती है। बुध ग्रह की शांति के लिए प्रत्येक अमावस्या को व्रत करना चाहिए तथा पन्ना धारण करना चाहिए। ब्राह्मण को हाथी दांत, हरा वस्त्र, मूंगा, पन्ना, सुवर्ण, कपूर, शस्त्र, फल, षट्रस भोजन तथा घृत का दान करना चाहिए। नव ग्रह मण्डल में इनकी पूजा ईशान कोण में की जाती है। इनका प्रतीक वाण है तथा रंग हरा है। इनके जप का वैदिक मंत्र– 'ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्ठापूर्ते स ँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।', पौराणिक मंत्र– 'ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः', तथा सामान्य मंत्र 'ॐ बुं बुधाय नमः' है। इनमें से किसी का भी नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप की कुल संख्या 9000 तथा समय 5 घड़ी दिन है। विशेष परिस्थिति में विद्वान् ब्राह्मण का सहयोग लेना चाहिए।

बृहस्पति

बृहस्पति धनु और मीन राशि के स्वामी हैं। इनकी महादशा सोलह वर्ष की होती है। इनकी शांति के लिए प्रत्येक अमावस्या को तथा बृहस्पति को व्रत करना चाहिए और पीला पुखराज धारण करना चाहिए। ब्राह्मण को दान में पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि तथा छत्र देना चाहिए। इनकी शांति के लिए वैदिक मंत्र– 'ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।', पौराणिक मंत्र– 'देवनां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूत्र त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।', बीज मंत्र– 'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।', तथा सामान्य मंत्र– 'ॐ बृं बृहस्पतये नमः' हैं। इनमें किसी एक का श्रद्धानुसार नित्य निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप का समय संध्याकाल तथा जप संख्याा 19000 है।

शुक्र

मत्स्य पुराण के अनुसार शुक्र ग्रह का वर्ण श्वेत है। शुक्र वृष और तुला राशि के स्वामी हैं तथा इनकी महादशा 20 वर्ष की होती है। शुक्र ग्रह की शांति के लिए गोपूजा करनी चाहिए तथा हीरा धारण करना चाहिए। चांदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद अश्व, दही, चीनी, गौ तथा भूमि ब्राह्मण को दान देना चाहिए। नवग्रह मण्डल में शुक्र का प्रतीक पूर्व में श्वेत पंचकोण हैं। शुक्र की प्रतिकूल दशा में इनकी अनुकूलता ओर प्रसन्नता हेतु वैदिक मंत्र– 'ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदपयोऽमृतं मधु।।', पौराणिक मंत्र– 'हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारम् भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।' बीज मंत्र– 'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः', तथा सामान्य मंत्र– 'ॐ शुं शुक्राय नमः' है। इनमें से किसी एक का नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। कुल जप संख्या 16000 तथा जप का समय सूर्योदय काल है। विशेष अवस्था में विद्वान् ब्राह्मण का सहयोग लेना चाहिए।

शनि

शनि के अधिदेवता प्रजापति ब्रह्मा और प्रत्यधि देवता यम हैं। इनका वर्ण कृष्ण, वाहन गीध तथा रथ लोहे का बना हुआ है। यह एक–एक राशि में तीस–तीस महीने रहते हैं। यह मकर और कुम्भ राशि के स्वामी हैं तथा इनकी महादशा 19 वर्ष की होती है। इनकी शांति के लिए मृत्युंजय जप, नीलम–धारण तथा ब्राह्मण को तिल, उड़द, भैंस,

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, काली गौ, जूता, कस्तूरी और सुवर्ण का दान देनाचाहिए। इनके जप का वैदिक मंत्र– 'ॐ शं नो देवीरभ्ष्टिय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।', पौराणिक मंत्र– 'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चयराय नमः।', तथा सामान्य मंत्र– 'ॐ शं शनैश्चराय नमः' है इनमें से किसी एक का श्रद्धानुसार नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप का समय संध्याकाल तथा कुल संखा 23000 होनी चाहिए।

राहु

मत्स्यपुराण के अनुसार राहु का रथ अन्धकार रूप है। इसे कवच आदि से सजाए हुए काले रंग के आठ घोड़े खींचते हैं। राहु के अधिदेवता काल तथा प्रत्यधि देवता सूर्य हैं। नव ग्रह मण्डल में इसका प्रतीक वायव्य कोण में काला ध्वज है। राहु की महादशा 18 वर्ष की होती है। अपवाद स्वरूप कुछ परिस्थितियों को छोड़कर यह क्लेशकारी ही सिद्ध होता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यदि कुण्डली में राहु की स्थिति प्रतिकूल या अशुभ है तो यह अनेक प्रकार की शारीरिक व्याधियां उत्पन्न करता है। कार्य सिद्धि में बाधा उत्पन्न करने वाला तथा दुर्घटनाओं का यह जनक माना जाता है। राहु की शांति के लिए मृत्युंजय जप तथा फिरोजा धारण करना श्रेयस्कर है। इसके लिए अभ्रक, लोहा, तिल, नीला वस्त्र, ताम्रपात्र, सप्तधान्य, उड़द, गोमेद, तेल, कम्बल, घोड़ा तथा खड्ग का दान करना चाहिए। इसके जप का वैदिक मंत्र– 'ॐ कया निश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कयाशश्चिष्ठया वृता।।', पौराणिक मंत्र– 'अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिहिंकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।' बीज मंत्र– 'ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः', तथा सामान्य मंत्र– 'ॐ रां राहवे नमः', है इसमें से एक का निश्चित संख्या में नित्य जप करना चाहिए। जप का समय रात्रि तथा कुल संख्या 18000 है।

केतु

यद्यपि राहु–केतु का मूल शरीर एक था अैर वह दानव–जाति का था। परंतु ग्रहों में परिगणित होने के पश्चात् उनका पुनर्जन्म मानकर उनके नये गोत्र घोषित किए गये हैं। इस आधार पर राहु पैठीनस–गोत्र तथा केतु जैमिनी–गोत्र का सदस्य माना गया। केतु का वर्ण धूम्र है। कहीं–कहीं इसका कपोत वाहन भी मिलता है। केतु की महादशा सात वर्ष की होती है। इसके अधिदेवता चित्र केतु तथा प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा हैं। यदि किसी व्यक्ति की कुंण्डली में केतु अशुभ स्थान में रहता है तो अनिष्टकारी हो जाता है। अनिष्टकारी केतु का प्रभाव व्यक्ति को रोगी बना देता है। इसकी प्रतिकूलता से दाद, खाज तथा कुष्ठ जैसे रोग होते हैं। केतु की प्रसन्नता हेतु दान की जाने वाली वस्तुएं इस प्रकार बतायी गईं हैं।

वैदूर्य रत्नं तैलं च तिलं कम्बलमर्पयेत्। शस्त्रं मृगमदं नीलपुष्पं केतु ग्रहाय वै।।
वैदूर्य नामक रत्न, तेल, काला तिल, कम्बल, शस्त्र, कस्तूरी तथा नीले रंग का पुष्प दान करने से केतु ग्रह साधक का कल्याण करता है। इसके लिए लहसुनिया रत्न धारण करने तथा मृत्युंजय जप का भी विधान है। नव ग्रह मण्डल में इसका प्रतीक वायव्य कोण में काला ध्वज है। केतु की शांति के लिए वैदिक मंत्र– 'ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे।' सुमुषद्भिरजायथाः।।' पौराणिक मंत्र– 'ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।', तथा सामान्य मंत्र– 'ॐ कें केतवे नमः' है। इसमें किसी एक का नित्य श्रद्धापूर्व निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप का समय रात्रि तथा कुल जप संख्या 17000 है। हवन के लिए कुशा के आसन का उपयोग करना चाहिए। विशेष परिस्थिति में विद्वान् ब्राह्मण का सहयोग लेना चाहिए।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

नवग्रह का ध्यान

सूर्य : पद्मासन पद्मकरः पद्मगर्भः समद्युतिः। सप्ताश्च द्विभुजः स्यात् सदारविः।।
चंद्रमा : श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्चः श्वेतवाहनः। गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्तव्यो वरदः शशी।।
मंगल : रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूंलगंदाधरः। चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद् धरासुतः।।
बुध : पीतमाल्याबरधरः कर्णिकारसमद्युतिः। खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः।।
बृहस्पति : देवानां गुरुः तद्वत् पीतवर्णः चतुर्भुजः। दण्डी च वरदः कार्यः साक्ष सूत्रकमण्डलुः।।
शुक्र : दैत्यानां गुरुः तद्वत् श्वेतवर्णः चर्तुर्भुजः। दण्डी च वरदः कार्यः साक्ष सूत्र कमण्डलुः।।
शनि : इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदोगृधवाहनः। बाणबाणासनधरः कर्तव्योऽर्कसुतस्तथा।।
राहु : करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः। नीलसिंहासनस्थश्च राहु रत्न प्रशस्यते।।
केतु : धूम्रा द्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः। गृधासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः।।

(मत्स्यपुराण 14। 1–9)

नवग्रह–कवच

नीचे 'यामलतंत्र' का एक 'नवग्रह–कवच' दिया जा रहा है। इसका श्रद्धापूर्व पाठ करने तथा इसे ताबीज में रखकर भुजा में धारण करने से बहुत लाभ होता है।

ॐ शिरो मे पातु मार्त्तण्डः कपालं रोहिणीपतिः।
मुखमङ्गरकः पातु कण्ठं च शशिनन्दः।।
बुद्धि जीवः वदा पातु हृदयं भृगुनन्दनः।
जठरं च शनिः पातु जिह्वां मे दिनिनन्दनः।।
पादौ केतु सदा पातु वाराः सर्वाङ्गमेव च।
तिथयोऽष्टौ दिशः पातु नक्षत्राणि वपुः सदा।।
अंसौ राशिः सदा पातु योगश्च स्थैर्यमेव च।
सुचिरायुः सुखी पुत्री युद्धे च विजयी भवेत्।
रोगात्प्रमुच्यते रोगी बन्धो मुच्येत बन्धनात्।।
श्रियं च लभते नित्यं रिष्टिस्तस्य न जायते।
यः करे धारयेन्नित्यं रिष्टिर्न जायते।
पठनात् कवचस्यास्य सर्वपापात् प्रमुच्यते।
मृतवत्सा च या नीरी काकवन्ध्या च या भवेत्।।
जीववत्सा पुत्रवती भवत्येत न संशयः।
एतां रक्षां पठेद् यस्तु अङ्गं स्पृष्टिाप वा पठेत्।।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

ग्रह व उनके उपाय

विभिन्न कष्टों में किसका उपाय करें ?

सूर्य— पिता से संबंध ठीक न होना, सरकार से परेशानी, सरकारी नौकरी में परेशानी, सिरदर्द, नेत्र रोग, हृदय रोग, चर्म रोग, अस्थि रोग, पीलिया, ज्वर, क्षय रोग, मस्तिष्क की दुर्बलता आदि।

चंद्रमा— माता से संबंध ठीक न होना, मानसिक परेशानियां, अनिद्रा, दमा, श्वास रोग, कफ, सर्दी—जुकाम, मूत्र रोग, मासिक धर्म संबंधी रोग, पित्ताशय की पथरी, निमोनिया आदि।

मंगल— क्रोध अधिक आना, भाईयों से संबंध ठीक न होना, दुर्घटनाएं होना, रक्त विकार, कुष्ठ रोग, फोड़ा—फुंसी, उच्च रक्तचाप, बवासीर, चेचक, प्लेग आदि।

बुध— विद्या, बुद्धि संबंधी परेशानियां, वाणी दोष, मामा से संबंध ठीक न होना, स्मृति लोप, मिर्गी, गले के रोग, नाक का रोग, उन्माद, मति भ्रम, व्यवसाय में हानि, शंकालु, अस्थिर विचार आदि।

गुरु— पूजा में मन न लगना, देवताओं, गुरुओं और ब्राह्मणों पर आस्था न रहना, आय में कमी, संचित धन व्यय होना, विवाह में देरी, संतान में देरी, मूर्छा, उदर विकार, कान का रोग, गठिया, कब्ज, अनिद्रा आदि।

शुक्र— पत्नी सुख में बाधा, प्रेम में असफलता, वाहन से कष्ट, श्रृंगार के प्रति अरूचि, नपुंसकता, हरनीया, मधुमेह, धातु एवं मूत्र संबंधित रोग, गर्भाशय रोग आदि।

शनि — नौकरों से क्लेश, नौकरी में परेशानी, वायु विकार, लकवा, रीढ़ की हड्डी, भूत प्रेत का भय, चेचक, कैंसर, कुष्ठ रोग, मिर्गी, नपुंसकता, पैरों में तकलीफ आदि।

राहु— दादा से परेशानी, अहंकार हो जाना, त्वचा रोग, कुष्ठ रोग, मस्तिष्क रोग, भूत प्रेत का भय आदि।

केतु— नाना से परेशानी, जादू टोना से परेशानी, छूत की बीमारी, रक्त विकार, दर्द, चेचक, हैजा आदि।

जन्मपत्री से उपाय निर्धारण करने के लिए जिन बातों पर विचार किया जाता है उन पर गौर करें :—

1. केन्द्र और त्रिकोण की क्या स्थिति है।
2. कौन कौन से ग्रह अस्त व वक्री है।
3. कौन से ग्रह शत्रु क्षेत्री है।
4. योग कारक ग्रहों की क्या स्थिति है।
5. कौन से ग्रह नीच व उच्च के हैं।
6. महादशा व अन्तर्दशा स्वामियों की आपस में क्या स्थिति है।
7. कौन सा भाव ज्यादा पीड़ित है।
8. कौन सा ग्रह ज्यादा पीड़ित है।
9. कुण्डली में बनने वाले महत्वपूर्ण योग क्या है।
10. जिस भाव के बारे में विचार कर रहे हैं, उस भाव, भावेश और कारक की क्या स्थिति है।
11. महादशा और अन्तर्दशा स्वामी कुण्डली के लिए योग कारक है, बाधक है या मारक है।
12. विभिन्न वर्गों में ग्रहों की क्या स्थिति है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

इन सभी बातों का विचार करके ही यह निर्धारण किया जाता है कि किस ग्रह का उपाय करें।

"लाल किताब का फरमान"

विभिन्न ग्रहों के दुष्परिणाम को कम करने के लिए कुछ उपायः—

सूर्य

पिता का सम्मान करें। विष्णु पूजा करें। गेहू, गुड़ और तांबे का दान करें। अपना चरित्र उत्तम रखें। तांबे का सिक्का बहते हुए पानी में बहाएं। रिश्वत खोरी न करें।

चन्द्रमा

माता का सम्मान करें। शिव आराधना करें। चांदी, चावल और दूध का दान करें। गंगा स्नान करें।

मंगल

भाई की सेवा करें। हनुमान जी की पूजा करें। मसूर की दाल बहते हुए पानी में बहाएं। शुद्ध चांदी शरीर पर धारण करें।

बुध

बहन, बुआ, मौसी से आशीर्वाद प्राप्त करें। सुराख वाला तांबें का पैसा बहते पानी में बहाएं। मां दुर्गा की पूजा करें।

बृहस्पति

गुरु और ब्राह्मणों की पूजा करें। धार्मिक पुस्तकें दान करें।

शुक्र

स्त्री का सम्मान करें। लक्ष्मी की उपासना करें। गोदान करें।

शनि

मीट और शराब का सेवन न करें। नौकरों को प्रसन्न रखें। भैरो की उपासना करें।

राहु

सरस्वती पूजन करें। बिजली का सामान घर में ठीक से रखें।

केतु

गणेश जी की पूजा करें। काला—सफेद कुत्ता घर में पालें।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

अध्याय–15

रंग चिकित्सा

सूर्य चिकित्सा एक बहुत पुरानी प्राकृतिक रासायनिक तत्त्वों वाली चिकित्सा है। सूर्य स्नान, सतरंगी किरणों के सातो रंग, लाल, हरे एवं नीले रंगों के गुण ही इस चिकित्सा की मुख्य विशेषताएं हैं। सूर्य की किरणों एवं इसके सात रंगों द्वारा हमारे शरीर को लाभ देने की उत्तम एवं लाभकारी तकनीक है। सूर्य की किरणों के सातों रंग हरेक रोग में सफल इलाज के अतिरिक्त रोगी को तंदुरुस्ती प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसीलिए 'क्रोमोपैथी' हानिरहित, बिना लागत, प्राकृतिक रासायनिक तत्त्व सूर्य देव के अमूल्य आशीर्वाद से सुसज्जित है। इस पुस्तक में सूर्य चिकित्सा द्वारा आसान तरीके से विभिन्न रोगों के उपचार बताए गए हैं। एक साधारण व्यक्ति भी इस निःशुल्क चिकित्सा से लाभ प्राप्त कर सकता है।

दिव्य सूर्य किरण चिकित्सा एवं इसका महत्व

महर्षि चरक जी आयुर्वेद के मर्मज्ञ ज्ञानी थे। इसके अलावा वह सभी शास्त्रों के ज्ञाता थे। उन्होंने सूर्य किरण तथा रंग चिकित्सा का बड़ी ही विस्तार से वर्णन किया है। उन्हीं के आशीर्वाद से उनका दर्शन, विचार, सांख्य दर्शन ही हमारा प्रतिनिधित्व करता है। बहुत से रोगों का इलाज खान–पान से जैसे अंकुरित चना, ताजे फल, हरी सब्जियां लेने से ही हो जाता है। चिकने और मसालेदार वस्तुओं को अपने भोजन में से हटा देने से, विश्राम, व्यायाम, विशेष व्यायाम जैसे व्यायाम आदि करने से तथा वायु परिवर्तन आदि से हो जाता है।

सूर्य किरण चिकित्सा का संक्षिप्त इतिहास एवं उपयोग

सृष्टि की उत्पत्ति एवं प्राणी का जन्म आज तक रहस्यमय बना हुआ है। कोई निश्चित सिद्धांत आज तक इस समस्या के समाधान हेतु सर्व सम्मति से नहीं बन पाया है। चरम शिखर पर पहुंचे विज्ञान के पास आज भी कई अनसुलझे प्रश्न हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि ज्ञान या विज्ञान एक निश्चित सीमा पर जा कर खत्म हो जाता है।

किसी भी विषय पर विज्ञान एक निश्चित सीमा तक ही जानकारी रखता है एवं उसके पश्चात् की जानकारी या तो नहीं होती या वह खामोश हो जाता है, क्योंकि विज्ञान ने यहीं तक का सफर तय किया है।

मनुष्य के जीवित रहने के उस रहस्य, जिसे हम ''प्राण'' कहते हैं, के संबंध में जानकारी आज तक नहीं हो पाई। यह प्राण क्या है? शरीर में इसका वास कहां है? प्राण एक तत्व है जिसके निकल जाने पर शरीर के अंग अपना कार्य करना बंद कर देते हैं और तब हम कहते हैं, वह मर गया।

हम पूर्णतः ईश्वर एवं प्रकृति पर निर्भर हैं। विज्ञान का अंत है, किंतु अध्यात्म अनंत है। इसे थोड़ा और विस्तार देते हुए हम यह कह सकते हैं कि अपने शरीर की रक्षा जितनी हम प्राकृतिक रूप से कर सकते हैं उतनी कृत्रिम रूप से नहीं। वास्तव में अनंत प्रकृति के अनुसार प्राण की सुरक्षा करना ही ''सूर्य–चिकित्सा'' है।

चिकित्सा की विभिन्न वैकल्पिक प्रणालियों में सूर्य किरण चिकित्सा का अपना अलग स्थान है। इस प्रणाली में रोगी की चिकित्सा सूर्य की रश्मियों से की जाती है। सूर्य शक्ति का पुंज है, जीवन का प्रतीक है।

हिंदू धर्म ग्रंथों में सूर्य को ईश्वर का स्थान दिया गया है। समस्त मानव जाति आदि काल से ही उसकी पूजा अर्चना करती रही है। आदि काल में चिकित्सा की कोई वैज्ञानिक प्रणाली नहीं थी। तब अपने कष्टों से मुक्ति पाने के लिए लोग सूर्य को हाथ उठाते थे और प्रायः तभी से शुरू हई सूर्य चिकित्सा। समय–समय पर इसमें खोज एवं

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

शोध होते रहे और आज भी हो रहे हैं।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, सूर्य चिकित्सा का इतिहास बहुत प्राचीन है। यह चिकित्सा की यह प्रणाली सर्वप्रथम भारत में विकसित हुई और फिर मिश्र, यूनान, चीन, ईरान आदि विभिन्न देशों से होती हुई अमेरिका एवं इग्लैंड जैसे अति विकसित देशों में पहुंची जहां यह अत्यंत लोकप्रिय होने लगी है। आज इक्कीसवीं सदी के इस युग में इस प्रणाली के प्रति लोगों का आकर्षण एक बार फिर से बढ़ने लगा है।

इसके चमत्कारिक परिणामों एवं सहज उपलब्धता के कारण यह प्रणाली दिनानुदिन लोकप्रिय होती जा रही है। इस बढ़ती लोकप्रियता के फलस्वरूप संभव है, आने वाले कुछ ही समय में यह चिकित्सा जगत् में सर्वोपरि हो जाए।

किंतु विडंबना यह है कि इसकी सरलता को देखते हुए लोगों को इस चिकित्सा प्रणाली पर विश्वास नहीं होता। वर्तमान समय में लोग हर बात को तर्क की कसौटी पर कसते हैं और उसका वैज्ञानिक आधार खोजते हैं। जब वह बात तर्क संगत एवं वैज्ञानिक आधार पर खरी उतरती है तभी वे उस पर विश्वास करते हैं। ऐसे में आज के युग में प्रामाणिकता अनिवार्य हो गई है। जबकि हजारों ऐसी बातें हैं जिनका प्रमाण देना संभव नहीं है, उनका आधार सिर्फ अनुभव एवं परंपरा हुई है।

प्राचीन काल में इस चिकित्सा का कोई वैज्ञानिक आधार खोजा नहीं गया था। उन दिनों लोग यह चिकित्सा सिर्फ धर्म और अनुभव के आधार पर करते थे। अतः उन दिनों इस चिकित्सा का विशेष प्रचार प्रसार नहीं हो पाया। किंतु आज इस चिकित्सा पद्धति का जो स्वरूप सामने आया है उसका विकास अमेरिका, इग्लैंड आदि पश्चिम के देशों में अधिक हुआ है। अब एलोपैथिक चिकित्सा के प्रति वहां के लोगों का भी मोह भंग होने लगा। वे भी अब वैकल्पिक चिकित्सा को अपनाने लगे हैं।

मजदूर दिन भर खेतों में या रास्तों पर काम करते हैं, तेज धूप के कारण उनकी त्वचा जल कर काली पड़ जाती है, फिर भी वे आम आदमियों से अधिक स्वस्थ एवं ताकतवर होते हैं, जबकि उन्हें न तो भर पेट भोजन मिलता है न ही कोई स्वास्थ्यवर्धक पदार्थ। इसके ठीक विपरीत जो लोग वातानुकूलित कमरों में बैठ कर भर पेट स्वास्थ्यवर्धक भोजन करते हैं, दूध, मलाई, घी, मक्खन आदि का सेवन करते हैं, उनकी शारीरिक क्षमता अपेक्षाकृत कम होती है। उन्हें बीमारियां भी अधिक होती हैं। इसका मुख्य कारण सिर्फ धूप का अभाव है।

प्रायः सभी लोग किसी न किसी रूप में धूप का सेवन करते हैं पर वैज्ञानिक जानकारी की कमी के कारण इसका उचित लाभ उन्हें नहीं मिल पाता। अर्थात् उन्हें सूर्य की किरणें प्राप्त तो होती हैं पर वे शरीर की आवश्यकता के अनुरूप ऊर्जा नहीं दे पातीं।

आम तौर पर प्राणी निरोग जन्म लेते हैं। किंतु आज प्रकृति से दूर होते जाने के कारण लोगों को नई–नई बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है। एक प्राचीन कहावत है– पहला सुख निरोगी काया। यदि शरीर स्वस्थ नहीं हो तो संपूर्ण संपन्नता निरर्थक हो जाती है।

मानव का प्रथम लक्ष्य होना चाहिए स्वास्थ्य रक्षा के नियमों को समझना एवं उनका पालन करना न कि रोगी होकर स्वास्थ्य रक्षा के नियमों को समझना और उनका पालन करना। चालीस वर्ष की उम्र के बाद हमें रात्रि में भोजन नहीं लेना चाहिए बल्कि कुछ हल्का सा सात्विक भोजन जैसे दूध, थोड़ी सी खीर आदि का सेवन करना चाहिए। ऐसा करने से हम स्वयं फुर्तीला एवं स्वस्थ अनुभव करेंगे।

स्वास्थ्य रक्षा के नियमों में वायु, श्रम, आहार एवं जल अनिवार्य हैं, तो कुछ परहेज भी जरूरी है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए सभी प्रकार के नशीले पदार्थों का त्याग करना चाहिए क्योंकि ये दिमाग की स्नायुओं पर कुप्रभाव डालते हैं। ये पदार्थ वास्तव में दिमाग को सुप्त एवं स्नायुओं को उत्तेजित कर देते हैं, जिसके फलस्वरूप

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

दिमाग के न्यूरॉन्स में खराबी आ जाती है और मनुष्य धीरे–धीरे निस्तेज होने लगता है। वह अपनी सोचने की शक्ति को खो बैठता है।

प्राण शक्ति के जागृती करण से समस्त रोगों का उपचार हो जाता है। इसके लिए सूर्य किरण चिकित्सा प्रणाली का सहारा लिया जा सकता है।

विशेषताएं :

- कोई साइड इफेक्ट नहीं होता।
- लंबे समय तक या बार–बार के इलाज से शरीर अर्थात इम्यून नहीं हो होता।
- इसमें बीमारी दबाई नहीं जाती बल्कि सिस्टम को दुरुस्त किया जाता है।
- यहां एक प्राकृतिक उपचार है जिसके फलस्वरूप कोई बीमारी बार–बार नहीं होती।

इस चिकित्सा से अनिद्रा, अवसादख तनाव, पागलपन, माइग्रेन, पारकिंसन रोग, मिरगी आदि से बचाव होता है। इसके अतिरिक्त स्मरण शक्ति तथा दिमाग की कोशिकाएं पुष्ट होती हैं। वहीं बच्चों के दिमाग का समुचित विकास होता है।

यह चिकित्सा कील–मुंहासों और फोड़े–फुंसियों से बचाव में भी सहायक होती है।

यह थाइरॉइड की बीमारी साइनस, दमा, टी. बी. आदि से भी हमें बचाती है।

स्पौंडलाइटिस, ऑस्टियो आर्थराइटिस, गठिया, शियाटिका, घुटने के दर्द एवं उनकी निर्बलता, पीठ दर्द, कमर दर्द, रीढ़ के अंतिम छोर पर दर्द, पसलियों में दर्द आदि के इलाज में भी यह लाभदायक होती है।

- इस चिकित्सा से पेट दर्द, हाजमे की समस्या, एसिडिटी, अलसर, पेट में कीड़े आदि से भी बचाव हो सकता है।
- यह लकवा, पोलियो, मांसपेशी की कमजोरी आदि के इलाज में अत्यंत लाभदायक होती है। कोई बात नहीं। इस्तेमाल करें सूर्य किरण चिकित्सा।
- यह उपचार नियमित रूप से करते रहने से थकान, बदन दर्द आदि से मुक्ति तथा किसी अंग के जल होने पर उसके जलन से राहत मिलती है।

सूर्य किरण पद्धति

सूर्य किरण रश्मियों के आधार पर सूर्य की सात किरणें दृष्ट तथा दो किरणें अदृश्य होती हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों के अनुसार सूर्य के रथ में सात घोड़े होते हैं। यही सात घोड़ों को खोजते–खोजते न्यूटन ने प्रिज्म की सहायता से सूर्य की किरणों को विभिन्न वर्णों में वर्गीकृत किया तथा उनके गुण ज्ञात किये। प्रिज्म से निकली रश्मियां इस प्रकार हैं –

इन रश्मियों के आधार पर ही विभिन्न ग्रहों के गुण अवगुण का प्रभाव देखा गया। विभिन्न ग्रहों की रश्मियों के रंग इस प्रकार हैं।

सूर्य – संतरी, चंद्र – सफेद, मंगल – लाल, बुध – हरा, गुरु– पीला, शुक्र– हल्का सलेटी, शनि – बैंगनी, राहु–अदृश्य बैंगनी, केतु – अदृश्य लाल

हम आज भी जाने–अनजाने रंग प्रणाली का प्रयोग कर रहे हैं। विवाह से पहले हल्दी को आटे में मिला कर वर–वध ू के शरीर पर उबटन लगाया जाता है। इसका दोहरा प्रभाव पड़ता है। हल्दी बृहस्पति का प्रतिनिधित्व करती है, जो नैतिक शास्त्र का ग्रह है। यह पति–पत्नी के संबंध को मधुर बनाता है। इसी प्रकार वर–वधू को लाल रंग के

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

वस्त्र तथा पिता गुलाबी रंग की पगड़ी पहनते हैं। यह रंग मंगल का प्रतिनिधित्व करता है। मंगल करे दंगल की इस प्रवृति को शांत करने के लिए ही विवाह के समय गुलाबी वस्त्र पहने जाते हैं। मंगल का अर्थ शुभ भी होता ळै। शनि यम का प्रतिनिधित्व करता है। यम हमारे कर्मों के अनुसार हमें दंड देता है यही कारण है कि न्यायाध् ाीश तथा अधिवक्ता दोनों ही काले रंग के वस्त्र पहनते हैं तथा हमारे कर्म के अनुसार हमें दंड देते हैं। काला रंग सभी रंगों को अपने में सोख लेता है। काला रंग शोक का भी सूचक है अतः ईसाई जन शोक प्रकट करने जाते हैं तो काले कपड़े पहनते हें। सात रंगों में से यदि वस्तु लाल रंग की होगी वह वह वस्तु छः रंगों को आत्मसात कर लेती है और केवल सातवां रंग हमारे पास वापिस आता है और हमें उस का वही रंग प्रतीत होता है। बृहस्पति का रंग पीला है। हमारे मुनि नारंगी या पीले रंग के वस्त्र धारण करते हैं।

सूर्य की किरणों के गुण व अवगुण उनके रंग के अनुरूप विकसित किये गये। लाल रंग उष्णता प्रदान करता है और बैंगनी रंग ठण्डक। सूर्य की किरणों में लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, नील तथा बैंगनी रंग होते हैं। इन सातों रंगों को प्रिज्म की सहायता से देखा जा सकता है।

इस प्रकार के उपाय काफी लाभकारी सिद्ध हुए हैं।

1. लाल – लाल रंग का गुण, तापन, उत्तेजना तथा फैलाव का निर्देशक है तथा एक टानिक के रूप में कार्य करता है। यह तांत्रिकीय प्रणाली का उद्दीपक है तथा शरीर में रक्त के संचारण को नियमित करता है। लसीका संबंधी तांत्रिकीय प्रणाली को भी उद्दीपित करने में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। शरीर में शीत लगने की अवस्था पर काबू पाने तथा शरीर का रंग पीला या नीला पड़ जाने पर यह सहायता करता है। चिरकाली घबराहट, खांसी तथा नपुंसकता की समस्याओं को दूर करने में भी यह लाभ करता है। परंतु शरीर में जलन की संवेदना या उत्तेजना होने पर इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए।

2. संतरी – यह भी स्वभाव से गर्म है परंतु लाल से कम। यह तांत्रिकीय प्रणाली को उद्दीप्त करता है तथा शरीर में रक्त संचरण को नियमित करता है।

3. पीला – यह स्वासयि के लिए बहुत अच्छा और लाभदायक है। यह हमें खुशी देता है। यह रेचक का काम करता है तथा मूत्र तथा मल के उचित उत्सर्जन में सहायता करता है। यह मस्तिष्क, जिगर तथा तिल्ली को मजबूत करता है। यह मानसिक शक्ति के सुधार में सहायक होता है तथा नपुंसकता तथा लकवे के रोग को दूर करने में सहायक होता है। किंतु यदि हृदय स्पंदन, दस्त, मरोड़ या तंत्रिकीय उत्तेजना हो तो इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि ये गर्मी के दुष्प्रभाव या शरीर में लाल रंग की अधिकता के कारण होते हैं।

4. हरा – इसके गुण हैं, तटस्थ, समन्वय, विलोपन तथा रक्त शुद्धता। मुख्यतया यह शरीर पर लाल और नीले के मध्यम प्रभाव का प्रतिनिधित्व करता है। यह पीले तथा नीले का मिश्रण हैं यह आंखों में जलन, संवेदना, हिस्टीरिया तथा जननेंद्रिय अंगों से संबंधित समस्याओं को दूर करने में सहायक होता है। यह उत्तेजना, जीव–विष के जमाव तथा अस्वस्थता संबंधी मामले जैसे ज्वर, फुंसियां तथा बवासीर की बीमारियों को ठीक करने में सहायक होता है। इसे इसी तरह या शरीर की मांग के अनुसार लाल या पीले रंग में मिलाकर प्रयोग करना चाहिए।

5. नीला – इसका गुण है ठंडक, शामक, अनुबंधन तथा रोगाणुरोधक। स्वभाव से यह ठंडा है। इसमें रोगाणुरोधक गुण हैं जिसके कारण से यह जलन को नियंत्रित करता है। जलने या तपन से हुए दर्द के नाश में यह सहायक होता है। ज्वर को नियंत्रित करने में यह एक अद्वितीय औषधि का काम करता है। चोट के स्थान पर यह रक्त के प्रवाह को नियंत्रित करता है। यह हैजे, लू, त्वचा रोग, मुहासों तथा चिरकाली जख्मों को नियंत्रित करता है।

6. हल्का नीला – इसकी प्रकृति बहुत ठंडी है तथा वाहिका संकीर्णता ज्वर दूर करना, तंत्रिका प्रणाली को शक्तिशाली बनाना तथा दबावों को नियंत्रित करना इसके गुण हैं। यह रोगाणुरोधक भी होता है तथ्ग लाल तथा नीले रंग को मिला कर बनता है।

7. जामुनी – इसके गुण भी हल्के नीले के समान हैं। यह अनिंद्रा रोग को दूर करता है। यह लोहिताणुओं को

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

बढ़ा कर अनीमिया को दूर करता है तथा तीव्र टी.बी. की बीमारी को नियंत्रित करने में भी यह सहायक होता है।

इन सात रंगों के अलग–अलग गुण हैं तथा शरीर पर इसके प्रभाव भी भिन्न–भिन्न हैं परंतु मुख्यतया यह तीन रंगों में विभाजित हैं, लाल, पीला तथा नीला। दिन का प्रकाश इन तीनों का मिश्रण है। यदि यह प्रकाश प्रिज्म से होकर गुजरे तो उपर्युक्त सातों रंग दिखाई दे सकते हैं।

शरीर के विभिन्न भागों पर पड़ने वाले प्रभाव के अनुसार रंगों का वर्गीकरण

1. **सिर तथा मस्तिष्क** : इसे हमेशा ठंडा रखना चाहिए, इसलिए इन भागों के रोगों को दूर करने के लिए नीले रंग तथा जामुनी रंग की आवश्यकता पड़ती है।

2. **गर्दन तथा गला** : इन्हें भी उन रंगों की आवश्यकता है जो ठंडक पहुंचाने वाले हों। अतः नीला रंग इनका सही चुनाव है। फिर भी ये भाग उन रंगों को भी सहन कर लेते हैं जो थोड़ी बहुत गरमाहट देते हों।

3. **पेट** : इसे मध्यम दर्जे के रंग चाहिए जो पाचन क्रिया में सहायक हों, अतः हल्के पीले रंग की आवश्यकता होती है।

जिगर, छोटी आंतों, तिल्ली तथा अग्नाशय : इन भागों के लिए लाल तथा पीले रंग की आवश्यकता है ताकि इन भागों की दोषपूर्ण क्रिया को ठीक किया जा सके तथा उनकी सामानय क्रिया की वापसी में सहायता की जा सके।

आंते : भली प्रकार कार्य के लिए पीले रंग की आवश्यकता होती है जिससे कि वे कब्ज को दूर कर सकें तथा आंतों की सफाई कर सकें।

श्रोणीय क्षेत्र : इस क्षेत्र के लिए हरा रंग बहुत प्रभावशाली है। इन भागों के रोगों को इससे बहुत सहायता मिलती है। यदि गर्भाशय में दर्द है तथा अत्यधिक उत्तेजित है तो हरा तथा नीला रंग तथा यदि इनकी क्रिया सामान्य नहीं है तथा सुस्ती है तो पीला तथा हरा रंग प्रयोग में लाना चाहिए।

हाथ या पांव : इन भागों के उपचार के लिए लाल तथा संतरी रंग अपेक्षित है। विशेष भाग में रंग का क्या प्रभाव होता है, इसके अनुसार इस वर्गीकरण से पीड़िती भागों के उपचार में सहायता मिल सकती है। यदि कोई भाग अत्याधिक क्रियाशील है तो विरोधी रंग का प्रयोग करना पड़ता है और यदि उसकी गति मंद है तो उसे पुनः क्रियाशील करने के लिए वही रंग देना होता है।

गीता के अनुसार तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं, यथा तमोगुणी, रजोगुणी तथा सतोगुणी। जिन्हें लाल, पीले तथा नीले रंग द्वारा दर्शाया गया है।

तमोगुणी या लाल रंग चिड़चिड़े स्वभाव को दर्शाता है। यह आक्रामकता, उग्रता तथा उत्तेजक स्वभाव को दर्शाता है।

रजोगुणी या पीला प्रसन्नता तथा साहस को इंगित करता है। यह चिड़चिड़ेपन को नियंत्रित करता है।

सतोगुणी या नीला सच्चाई या प्रेरक स्वभाव को दर्शाता है। यह व्यवस्था में ठंडक पहुंचाता है।

क्रोमोपैथी क्या है ?

सूर्य किरण और रंग चिकित्सा एक पुरानी प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति है। जिसके अंतर्गत आयुर्वेद पद्धति के मूल सिद्धांत वात, पित्त तथा कफ की तरह ही शरीर में रंगों के घटने–बढ़ने से रोगों की उत्पत्ति मानी गई है। रोग ज्ञात होने पर जिस रंग की शरीर में कमी हो उस रंग के पूर्ण हो जाने पर रोगों से छुटकारा पाया जाता है। इन रंगों की उत्पत्ति के मूल स्रोत भगवान सूर्य स्वयं हैं। सूर्य की तेजस्वनी किरणें भिन्न–भिन्न रंगों को लिये हुए होती हैं। जिनको उसी रंग की पारदर्शी बोतलों में जल के द्वारा अवशोषित किया जाता है। जिस रंग की बोतल होती है उसमें भरे जल में सूर्य की किरणें उसी रंग के चिकित्सकीय गुण छोड़ देती है। जिसके कारण वह जल साध

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

ारण जल न होकर एक औषधि के रूप में तैयार हो जाता है। यद्यपि यह जल दिखने में साधारण ही लगता है परंतु जिस रंग की बोतल में यह सूर्य की रोशनी में चार्ज किया हुआ होता है उस रंग के पूर्ण चिकित्सकीय गुण इसमें समाहित होते हैं।

यह चिकित्सा सभी जगह सुलभ व निःशुल्क प्राप्त होती है। जिसके प्राप्त करने में किसी भी व्यक्ति को कोई कठिनाई नहीं होती है। इस चिकित्सा से असाधारण से असाधारण रोग भी ठीक किए जा सकते हैं। इसके लिए रोगी को अपने मनोबल और चिकित्सा पर विश्वास कायम रखना चाहिए।

सूर्य किरण और रंग चिकित्सा 'क्रोमोपैथी' की उपयोगिता

महर्षि आचार्य चरक के अनुसार जिस संगति में सभी औषधियां एक संग रहती हैं वह सूर्य किरण और रंग चिकित्सा ही है। इस पद्धति की औषधियों के माध्यम से सभी रोगों से बड़ी आसानी से मुक्ति मिल जाती है।

1. सूर्य किरण और रंग चिकित्सा के माध्यम से औषधि बनाने की विधि एकदम सरल है। उसी प्रकार सूर्य तप्त तथा सूर्य चार्ज से बनने वाली औषधियां को बनाने की विधि भी एकदम सरल है।
2. इस पद्धति से उपचार करते समय न तो दर्द होता है और न किसी प्रकार का कोई कष्ट होता है।
3. सूर्य किरण और रंग चिकित्सा के माध्यम से इस पद्धति में जहरीला प्रयोग नहीं होता और न ही बुरा प्रभाव पड़ता है।
4. इस पद्धति में बेहोश करने की आवश्यकता नहीं पड़ती और न ही चीर–फाड़ करने की आवश्यकता होती है।
5. उसी प्रकार जख्म और घाव का निशान तक नहीं पड़ता है। सूर्य की किरणों में रोगों को नष्ट करने की विशेष क्षमता होती है।

सूर्य किरणों में सात रंगों के गुण

1. बैगनी (Violet): शीतल, लाल कणों का वर्धक, क्षय रोग का नाशक है तथा विविधता का प्रतीक है।
2. गहरा नीला (Indigo): शीतल, पित्त रोगों का नाशक, ज्वर नाशक तथा शांति प्रदान करने वाला है। सूर्य शरीर को निरोगिता प्रदान करता है।
3. आसमानी (Blue) : शीतल, पित्त रोगों का नाशक तथा ज्वरनाशक, आशा का प्रतीक होता है।
4. हरा (Green) : समृद्धि और बुद्धि का प्रतीक है। समशीतोष्ण, वात रोगों का नाशक और रक्त शोधक है। ताजगी, उत्साह, स्फूर्ति और शीतलता का प्रतीक होता है।
5. पीला (Yellow) : यश तथा बुद्धि का प्रतीक होता है। ऊष्ण, कफ, रोगों का नाशक, ह्रदय और पेट रोग नाशक होता है। संयम, आदर्श, परोपकार का प्रतीक होता है।
6. नारंगी (Orange) : आरोग्य तथा बुद्धि का प्रतीक है। ऊष्ण, कफ रोगों का नाशक मानसिक रोगों में शक्तिवध् ाक है तथा दैवी महत्वाकांक्षा का प्रतीक होता है।
7. लाल (Red) : प्रेम भावना का प्रतीक होता है। अति गर्म, कफ रोगों का नाशक, उत्तेजना देने वाला और केवल मालिश के लिए उत्तम होता है। आप की गाड़ी में हीटर पर लाल एवं ठंडक पर नीला निशान क्यों ? जी है, यह क्रोमोपैथी ही है।

रंग के तीन परिवारों का महत्त्व

1. पीला, नारंगी, लाल – इन तीनों रंगों में से नारंगी रंग ही ठीक रहता है।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

2. हरा रंग – यह रंग शीतोष्ण होने के कारण सबसे उत्तम होता है।
3. बैंगनी रंग, गहरा नीला रंग और आसमानी नीला रंग इन तीन रंगों में गहरा नीला रंग ही ठीक रहता है।

रोगी के दोष के अनुसार रंगों द्वारा चिकित्सा

नीले रंग के गुण धर्म

पित्त दोषों में शरीर में गर्मी बढ़ जाती है। इसका संतुलन नीले रंग की ठंडक देने वाला सूर्य तप्त नीले पानी और सूर्य चार्ज वायु आदि से होता है। यह हर प्रकार के पित्त जन्य प्रधान रोगों को दूर करता है तथा शांतिवर्धक है। संदल, कासमी, संतरा, नीबू, क्लोरोफार्म, हाइड्रोजन, अल्युमिनिय, नीलम आदि में नीले रंग की किरणों के तत्व समाए होने के साथ–साथ ही चुम्बकीय शक्ति भी विद्यमान हैं।

1. सूर्य चार्ज नीली बोतल का पानी सारे शरीर को ठण्डक देने वाला होता है।
2. शरीर की अग्नि को कम करता है। तेज बुखार को कम करता है। ज्वर में ज्यादा प्यास लगने को संतुलित करता है। प्यास बुझाता है। चोट के कारण बहने वाले खून को बंद करता है।
3. सूर्य चार्ज किए नीले तेल को सिर में, तालू और कनपटी पर मालिश करने से सिर दर्द ठीक हो जाता है और बुखार भी कम हो जाता है।
4. दस्त तथा खूनी पेचिश में प्रयोग करने से यकीनन आराम आ जाता है।
5. गर्मी से शरीर पर दाने, चेहरे के कील–मुहासे, फोड़े–फुंसी आदि होने पर सूर्य चार्ज नारियल के नीले तेल से ठीक हो जाते हैं और अच्छा लाभ होता है।
6. मच्छर, बिच्छू तथा ततैया आदि के काटने पर सूर्य चार्ज नीला तेल लगाने से तुरंत फायदा होता है।
7. सूर्य किरण और रंग चिकित्सा से तैयार नारियल के नीले तेल को लगाने से तुरंत लगाने से जल जाने की जगह पर तुरंत आराम आ जाता है। फफोला भी नहीं पड़ता। नीला तेल लगाना बहुत लाभकारी है।
8. टांसिल बढ़ने पर सूर्य तप्त नीले पानी से गरारे करें और सूर्य चार्ज नीली ग्लिसरीन का गले में लेप करने से लाभ मिलता है।
9. दांत दर्द, मसूड़ों की सूजन, दांतों में भोजन या पानी गर्म–सर्द लगना तथा मुंह में छालों के पड़ने पर सूर्य तप्त नीले पानी से गरारे करें और सूर्य चार्ज नीली ग्लिसरीन का मुंह में लेप करने से तुरंत आराम मिलता है।
10. बच्चों का काग लटकने पर सूर्य चार्ज ग्लिसरीन मुंह में लगाने से कुछ ही दिन में आराम आ जाता है।
11. कील–मुहांसे, फोड़े–फुंसियां और सूजन हो जाने पर सूर्य चार्ज नीला तेल लगाने से लाभ मिलता है।
12. कान में दर्द होने पर सूर्य चार्ज नारियल का तेल हल्का गर्म करके कान में डाला जाए तो तुरंत आराम आ जाता है।
13. तेज बुखार में अर्थात एक सौ एक डिग्री से ज्यादा अगर बुखार हो जाए तो सिर में, तालू पर सूर्य चार्ज नारियल के नीले तेल की धीर–धीरे मालिश करने से और पीने के लिए सूर्य तप्त नीला पानी देने से रोगी को लाभ होता है। लेकिन अगर एक सौ एक डिग्री से कम बुखार हो तो नीला पानी बंद कर दें और सूर्य तप्त हरा पानी देने से लाभ होता है।
14. स्नायु तंत्र के उत्तेजित होने पर सूर्य चार्ज नारियल के नीले तेल की सिर पर, तालू में हाथ की अगली पोरों से धीरे–धीरे मालिश करने से शांति मिलती है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

15. बवासीर के मस्सों या अर्श पर सूर्य चार्ज नारियल का नीला तेल कुछ दिन लगाने से बहुत लाभ होता है।
16. बच्चों के दांत निकलने पर सूर्य चार्ज नारियल के नीले तेल की तालू पर तीन–चार बूँदें डाल कर हाथ की अगली पोरों से मालिश करने से बच्चों के दांत आसानी से निकल आते हैं।
17. दिमागी काम करने वालों के लिए सूर्य चार्ज नारियल के नीले तेल की तालू पर हाथ की अगली पोरों से ध ीरे–धीरे दस–पन्द्रह मिनट मालिश करें। यह दिमाग के लिए बहुत अच्छी औषधि है।
18. तेज ज्वर में सूर्य चार्ज नारियल के नीले तेल की सिर पर मालिश करने से तेज ज्वर में फायदा होता है।
19. सूखी खुजली, दाद, खाज आदि पर सूर्य चार्ज नारियल का नीला तेल लगाने से ठण्डक और शांति मिलती है।
20. सूर्य चार्ज नीले तेल से तैयार की गई दवाई सब प्रकार की ठंडक देने वाली दवाइयों से सर्वश्रेष्ठ होता है।
21. जो लोग नींद की गोली खाकर नींद लेते हैं वे अब सूर्य चार्ज नारियल का नीला तेल सिर में तालू पर लगाकर हाथ की अगली पोरों से धीरे–धीरे मालिश करने से गहरी व मीठी नींद का आनंद ले सकते हैं।

हर रंग कुछ कहता है

संपन्न वर्ग के लोग रंगों के विज्ञान को बहुत ज्यादा मानते हैं। पुणे और हैदराबाद शहर इसमें सबसे आगे हैं। अब धीरे–धीरे छोटे शहरों के लोग भी रंगों के चमत्कार से अछूते नहीं हैं। संपन्न व्यक्ति में सबसे ज्यादा असुरक्षा की भावना होती है, इसलिए सभी प्रकार के टोटके अपनाने में संपन्न वर्ग आगे होता है।

फायदेमंद हैं कलर

कलर थैरेपिस्ट बताते हैं कि हमारे शरीर पर रंगों का प्रभाव बहुत ही सूक्ष्म प्रक्रिया से होता है। सबसे उपयोगी सूर्य का प्रकाश है, लेकिन रंगों से भरा आहार, घर या कमरों के रंग, कपड़े के रंग आदि भी शरीर की ऊर्जा पर प्रभाव डालते हैं। रंगों की इसी माया पर इलाज की एक पद्धति रंग चिकित्सा पर आधारित है। मनोरोग संबंधी मामलों में भी इस चिकित्सा पद्धति का अनुकूल प्रभाव देखा गया है।

स्वभाव भी दर्शाते हैं रंग

कलर्स भी व्यक्तित्व का आईना होते हैं, जो हमारे स्वभाव को दर्शाते हैं। जैसे सफेद रंग शांति का प्रतीक होता है। पीला रंग त्याग का, तो लाल आक्रामकता का। नीला रंग होता है धीरज का और हरा समर्पण का। व्यक्ति पर ग्रह, राशि और कलर का प्रभाव पड़ता है। इतना ही नहीं हर दिन राशि रंग के अनुसार कपड़े पहनने से कई बार फायदा भी होता है। इस मामले में अब कई लोग मुझे फॉलो भी करने लगे हैं। रंग का प्रभाव व्यक्ति में सीधे तौर पर पड़ता है जो हमारे व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। चूंकि रंगों और ग्रहों के तालमेल का असर राशियों पर भी पड़ता है। इसलिए कुछ लोग दिन के अनुसार रंगों का निर्धारण करते हुए कपड़ों का चुनाव करते हैं। और कई लोग केवल मानसिक सुकून के लिए रंग का चयन करते हैं।

किस दिन, कौन सा कलर

रंगों का तालमेल देता है पॉजीटिव एनर्जी

रंगों का अपना एक विशेष महत्व है। रंग व्यक्तित्व को निखारते हैं। खुशी का अहसास कराते हैं। मन की भावनाएं भी दर्शाते हैं। कई रोग भी रंगों द्वारा ठीक किए जाते हैं जिन्हें हम कलर थैरेपी के नाम से जानते हैं। तो क्या रंग

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

हमारे भाग्य को तय करने में भी कोई भूमिका निभाते हैं? जो लोग इस पर विश्वास करते हैं, उनका तो जवाब यही है कि हाँ! दिनों के हिसाब से रंगों का चुनाव फायदेमंद है।

सोमवार – सोमवार यानि शीतल चंद्रमा का दिन। इसलिए इस दिन का रंग है सफेद।

मंगलवार – यह हनुमानजी का दिन है। उनकी मूर्तियों में नारंगी रंग में देखा है। इसलिए इस दिन का विशेष रंग है नारंगी, जिसे अंग्रेजी में ऑरेंज कलर कहते हैं।

बुधवार – तीसरा दिन होता है देवों के देव गणपति का, जिन्हें सबसे ज्यादा प्रिय है दूबा। इसलिए इस दिन हरे कलर का महत्व है।

गुरुवार – यानी हफ्ते का चौथा दिन, जो बृहस्पति देव और साईं बाबा का है। बृहस्पति देव स्वयं पीले हैं, तो इस दिन का रंग है पीला।

शुक्रवार – यह देवी मां का दिन होता है, जो सर्वव्यापी जगत जननी हैं। इसलिए यह दिन सभी रंगों का मिक्स या शेप्रटेड कपड़ों का होता है।

शनिवार – शनि देवता को समर्पित इस दिन नीला कलर पहना जाता है।

रविवार – सूर्य की उपासना के लिए इस दिन गुलाबी रंग का विशेष महत्व है।

कुछ रंगों से हमारा अच्छा तालमेल होता है, जो हमें 'पॉजीटिव एनर्जी' देते हैं। इसलिए कुछ खास रंग हमें ज्यादा आकर्षित करते हैं। इसे ही 'कलर साइंस' या रंग विज्ञान कहा जाता है। लेकिन ज्योतिष पर यकीन करने वाले भी दिन के लिहाज से रंगों का चयन करने लगे हैं। कई लोग हैं, जो खास दिन में खास रंग के कपड़े पहनने को प्राथमिकता देते हैं।

रंग चिकित्सा से रहें स्वस्थ

रंगों से हमारा जीवन काफी गहराई से जुड़ा हुआ है। रंगों का स्वास्थ्य से भी गहरा संबंध है। वैज्ञानिक स्तर पर रंगों से लाभ पर लंबे समय से शोध हो रहा है। शोध के अनुसार प्रकाश हमारे शरीर को आंखों के द्वारा बेधकर 'पिट्यूटरी ग्लैंड' को उत्तेजित करता है। इसके परिणामस्वरूप कुछ विशेष हारमोंस का स्राव होता है। यह शरीर द्वारा रंगों के प्रति होने वाली प्रतिक्रिया होती है। रंग चिकित्सा में शरीर में समस्या के कारण को रंगों का अतिरिक्त एक्सपोजर करके दूर किया जाता है। उदाहरण के लिए स्पैक्ट्रम का आखिरी रंग लाल उत्तेजित करता है, तो नीला रंग गहन शांति देता है। मानसिक चिकित्सालय में लाल अथवा नारंगी रंग का प्रयोग कष्ट उत्पन्न करने वाला पाया गया है, लेकिन नीला रंग शांति देने वाला था। रंग खाद्य पदार्थों का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। धूप हमारे लिए पोषक होती है। शोध द्वारा सिद्ध हो गया है कि पूरे स्पैक्ट्रम का शरीर पर अत्यंत लाभकारी प्रभाव होता है। इससे हमारे शरीर का एंडोक्राइन तंत्र सक्रिय होता है तथा इलेक्ट्रोमैग्नेटिक क्षेत्र का निर्माण भी होता है। लाल रंग हमारी इंद्रियों तथा भाव–भंगिमाओं को उत्तेजित करता है। यह शक्ति, ऊर्जा तथा जीवन के प्रति उत्साह को दर्शाता है। सकारात्मक स्तर पर यह जीवन में ताकत, खुशी, सुख एवं प्रेम को देने वाला होता है। अग्नि का प्रमुख गहरा लाल रंग, मनुष्य की आदिम भावनाओं को जाग्रत कर देता है। गहरा लाल एक ओर खतरा दिखाता है, वहीं सौम्य गुलाबी रंग मातृत्व की भावना जगाता है। इस रंग का नकारात्मक पक्ष यह है कि यह दुस्साहस पैदा करते अनियंत्रित उन्माद, वासना एवं क्रोध को जन्म देता है। इस रंग का प्रयोग जीवन शक्ति के कमजोर होने, रक्त संचार धीमा होने की स्थिति से किया जा सकता है। लाल रंग मानसिक रूप से परेशान तथा स्नायुविक तकलीफ वाले व्यक्तियों को ज्यादा परेशान कर देता है। अतः इस रंग का प्रयोग ऐसे व्यक्ति के आसपास बहुतायत से नहीं करना चाहिए। यह सभी रंगों में सबसे धीमी वाइब्रेशन वाला रंग है, जो भावनाओं को अन्य रंगों की अपेक्षा जल्दी प्रभावित करता है। इसमें शोध के दौरान पाया गया कि जब कोई व्यक्ति लाल रंग के संपर्क में आता है, तब एंडोक्राइन पिट्यूटरी

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

ग्लैंड सक्रिय हो जाती है।

यह काम कुछ सेकंड का ही समय लेता है। पिट्यूटरी ग्लैंड से एडरीनलिन का स्राव बढ़ जाता है तथा स्राव रक्त में मिलकर अपना प्रभाव अनेक स्तर पर दर्शाता है। रक्तचाप बढ़ जाता है। रक्त का बहाव तीव्र हो जाता है एवं वास की गति बढ़ जाती है। स्वाद कलिका अति संवेदनशील हो जाती है तथा भूख भी बढ़ जाती है। हमारी सूंघने की शक्ति भी बढ़ जाती है। लाल रंग भूख बढ़ाने में सहायक होता है। इसी कारण कई मंहगे रेस्त्रां लाल मेजपोश तथा लाल नेपकिन का प्रयोग करते हैं। लाल रंग की किरणें हीमोग्लोबिन बनाने में सहायक होती हैं तथा लीवर को ताकत देती हैं। यह रंग शरीर में जमा फालतू खनिज तत्वों को तोड़कर निष्कासित करता है। खून की कमी, अस्थमा, ब्रान्काइटिस, कब्ज, लकवा, तपेदिक में लाल रंग लाभकारी होता है। भावनात्मक कष्ट, उन्माद, बुखार, सूजन, उच्च रक्तचाप, मानसिक रोग की स्थिति में लाल रंग से बचना बेहतर है। लाल रंग मंगल ग्रह का होता है। 9, 12, 27 तारीख को जन्में व्यक्तियों हेतु लाल रंग बेशक लाभप्रद हो किंतु इन लोगों का उग्र स्वभाव होने के कारण इसके विरोधाभासी परिणाम सामने आते हैं, लाल रंग पसंद करने वाले लोग बहिर्मुखी होते हैं। इनका मूड निरंतर बदलता रहता है तथा आक्रामक एवं आवेगपूर्ण रहता है। ये आशावादी होने के साथ शिकायती भी होते हैं तथा निरंतर आवाज उठाते रहते हैं। पुरुष पीले मिश्रित लाल रंग की ओर सहज आकृष्ट होते हैं। वहीं महिलाओं को नीला मिश्रित लाल रंग अपनी ओर खींचता है।

मानव जीवन पर रंगो का प्रभाव

लाल, पीला, नीला, ये तीन प्राथमिक रंग हैं। अन्य अनेक रंग प्रकृति में मिलते हैं। इंद्रधनुष के सात रंग होते हैं: बैंगनी, आसमानी, नीला, हरा, पीला, नारंगी, लाल। ये मुख्य रंग कहलाते हैं। इनको आपस में अलग–अलग मात्रा में मिलाने से अनगिनत रंग मिलते हैं।

मकान का रंग

आठ दिशाएं हैं। प्रत्येक दिशा का स्वामी एक ग्रह होता है, जो इस चित्र में दिखाया गया है। प्रत्येक ग्रह का एक विशेष रंग होता है, जिसे नीचे बताया गया है :

बृहस्पति	उत्तर–पूव	पीला
बुध	उत्तर	हरा
चंद्रमा	उत्तर–पश्चिम	सफेद
शनि	पश्चिम	काला
राहु–केतु	दक्षिण–पश्चिम	काला
मंगल	दक्षिण	लाल, सुनहरा
शुक्र	उत्तर–पूव	सफेद, नीला
सूर्य	पूव	लाल

जिस दिशा में मकान का मुख्य द्वार, हो, बाहर का रंग उसी दिशा के स्वामी के अनुसार होना चाहिए, जैसे:

मुख्य द्वार की दिशा रंग

ईशान कोण	पीला
उत्तर	हरा
उत्तर–पश्चिम	सफेद
दक्षिण	लाल

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

पूर्व	लाल
दक्षिण–पूर्व	सफेद और नीला
दक्षिण–पश्चिम	काला

दक्षिण–पश्चिम दिशाओं के मालिकों का रंग काला है। काला रंग मृत्युसूचक है। इस वजह से मकान का मुख इन दोनों दिशाओं में नहीं होना चाहिए। विवश हो कर यदि मुख्य द्वार इन दिशाओं में रखना पड़े, तो मकान का रंग हल्का नीला कर लेना चाहिए, काला नहीं।

औषधि के रूप में रंगों का उपयोग

लाल रंग का प्रषव गर्म है। सूर्य, अग्नि, दीपक इन सबका रंग लाल है। इसलिए यह रंग गर्मी देता है। मिर्च पकने पर लाल हो जाती है और खूब गर्मी देती है। गिलास में पानी भर कर उसके ऊपर पारदर्शी लाल कागज लगा कर उसे लकड़ी के ऊपर आठ घंटे धूप में रख दिया जाए, तो यह पानी दवा का काम करता है, जो खांसी, जुकाम, सर्दी में लाभदायक है।

नीले रंग का प्रषव ठंडा है। गिलास में पानी भर कर, पारदर्शी नीला कागज लगा कर, आठ घंटे खुले में रख दिया जाए, तो ऐसा पानी पेट की जलन, पित्त, आदि में फायदा करता है।

हरा रंग पेट के रोगों के लिए हितकर है। गिलास में पानी भर कर, उस पर पारदर्शी हरा कागज लगा कर, लकड़ी के ऊपर रख कर, आठ घंटे धूप में रख दिया जाए, तो ऐसा पानी पेट के रोगों के लिए बहुत उत्तम होता है।

अल्ट्रा–वायलेट लैंप से सिकाई करने पर गर्दन, पीठ आदि के दर्द, जो ठंड लगने से होते हैं, फौरन ठीक हो जाते हैं। शरद पूर्णिमा की रात को खीर को, रात भर चंद्रमा की सफेद किरणों में रख कर खाया जाए, तो यह शक्तिवर्धक होती है। कार्तिक पूर्णिमा की रात को घी, बूरा और सफेद मिर्च मिला कर, चंद्रमा की किरणों में रख दिया जाए, तो यह मिश्रण नेत्र रोग में फायदा करता है। अरुणोदय की किरणों को हृदय पर लेने से हृदय रोग दूर होता है। हरे रंग के कपड़े पहनने से पेट के रोगों में लाभ मिलता है। लाल रगं के कपड़े ठंड से बचाते हैं। नीले रंग के कपड़े गर्मी में पहनने चाहिएं। पीले रंग के कपड़े पीलिया, यकृत, तिल्ली आदि के रोगी के लिए अच्छे हैं। सफेद रंग के कपड़े मानसिक बीमारियों में उत्तम हैं। मटियाले कपड़े पहनने से चर्म रोगी को फायदा होता हैं।

रंगों के अन्य उपयोग

पीला रंग : यह रंग देवताओं के गुरु बृहस्पति का है। पूजा के वस्त्रों में भी यही रंग इस्तेमाल होता है। तीर्थ यात्री के कपड़े भी इसी रंग के होने चाहिएं। संत, साधु, ब्रह्मचारी, पुजारी आदि इसी रंग के कपड़े पहनते हैं। थाइदेश में इस प्रकार के कपड़े पहनते देख कर सड़क पर यातायात रुक जाता है और उसके लिए रास्ता छोड़ दिया जाता है। सोने का रंग भी पीला है, जिसके आभूषण सबको प्रिय हैं। बृहस्पति के दिन कोई विशेष कार्य किया जाए, तो इसी रंग के कपड़े पहनें।

अरुणोदय का रंग : शास्त्र कहते हैं कि हमारा झंडा अरुणोदय के समान हो। सिंदूर का भी यही रंग होता है। स्त्रियां इसे अपनी मांग में भर कर सौभाग्य को जताती हैं। धार्मिक पुस्तकों के आवरण इसी रंग के होते हैं। मांगलिक कार्यो में यही रंग इस्तेमाल होता है।

लाल रंग : साम्यवादी देशों में यह रंग श्रमिक के खून का प्रतीक है। झंडे में और दूसरे शुभ कामों के लिए इसी रंग को इस्तेमाल करते हैं। स्वागत–सम्मान में लाल रंग के फल, अथवा लाल रंग के आवरण वाले उपहार अच्छे लगते हैं। स्त्रियां शुभ अवसरो में लाल रंग की साड़ियां पहनती हैं। रोली का रंग भी लाल है, जिससे तिलक किया जाता है। मंगल अवसरों पर इसी रंग की रंगोली सजती है। पैरों और हाथों में लाल रंग की मेहंदी लगाते हैं। मंगल

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

एवं रविवार के कार्य करने के लिए लाल रंग के कपड़े पहने जाएं।

क्रोध में चेहरा लाल हो जाता है। उस समय सबसे पहले क्रोध को शांत करने के लिए एक गिलास ठंडा पानी पिलाना चाहिए। पानी का रंग नीला है, जो शांति का द्योतक है।

सफेद रंग : चंद्रमा के समान यह शांतिप्रदायक है। चंद्रमा वनस्पतियों तथा औषधियों को रस देता है। दूध, घी, मक्खन, पनीर आदि सबका रंग सफेद है, जो शुचिता का प्रतीक है।

हरा रंग : यह हरियाली का रंग है और समृद्धि का सूचक है। अतिथि गृह, शयन कक्ष का रंग हल्का हरा होना चाहिए। बहुत देशों के झंडे हरे होते हैं, जिससे वहां समृद्धि रहे। बुधवार को किसी विशेष कार्य के लिए जाएं, तो इसी रंग के कपड़े पहनें।

नीला रंग : यह आसमान का रंग है। नदि, तालाब, समुंद्र के पानी का यही रंग है, जो शांति का द्योतक है। रसोई, भंडार आदि हल्के नीले रंग के होने चाहिएं। ईश्वर की छतरी, यानी छत्रछाया नीले रंग की है। शनि के दिन किसी विशेष कार्य के लिए जाएं, तो हल्के नीले रंग के कपड़े पहनें।

काला रंग : हर वस्तु जलने के बाद काली हो जाती है। अंधेरे का रंग भी काला है, जो यम और शनि का सूचक है। विदेशी लोग शोक सभाओं में काले कपड़े पहन कर जाते हैं। यमुना का रंग भी श्याम है। दाह–संस्कार यमुना के किनारे स्वर्गप्रदायक माने गये हैं। यमुना यम की बहन है। माता यशोदा भगवान कृष्ण से प्रार्थना करती हैं कि जब प्राण तन से निकले, तो वहां यमुना का बंसीबट हो।

वकील–न्यायाधीश काले कपड़े पहनते हैं, क्योकि वे मौत, सजा और अन्य झगड़ों से जूझते हैं। शराब पीने से मुंह काला होता है। अतः इसका छोड़ना ही श्रेयस्कर है।

सभी मंगल कार्यों में काले रंग का उपयोग अशुभ माना जाता है, क्योकि यह मौत का सूचक है। अपने वाहन का रंग काला नहीं होना चाहिए। ऊपर से नीचे तक यदि कोई आदमी काले रंग के कपड़े पहन कर बाहर निकले, तो वह अच्छा होने पर भी भयानक प्रतीत होता है।

रंगो से पहचान : मानक संस्थाओं ने रंगो से वस्तुओं का रंग मानक निर्धारित किया है; साथ–साथ क्रियाओं का भी। स्कूल एवं स्कूल की बस पीले रंग के हों, सरकारी इमारतों का रंग लाल; स्मारको का यही रंग हो। तेल, लोहा, लकड़ी, पीतल, एल्यूमीनियम आदि अनेक प्रकार के होते हैं। ये सब एक विशेष रंग से प्रदर्शित किये जाते हैं, जो उनके अंत में होता है, ताकि खरीदने के समय इनकी पहचान की जा सके तथा गुणों को समझा जा सके। ट्रैफिक लाइट में रंगो का उपयोग होता है। लाल बत्ती हो, तो रुकना है; हरी हो, तो जाना है; पीली हो, तो रुक कर, देखभाल कर के, जाना होता है।

वर्दी के रंगों से पता लगता है कि अमुक व्यक्ति किस संस्था का है। पुलिस की वर्दी खाकी, फौज की हरी, नौसेना की नीली, वायुसेना की सफेद होती है। शल्य चिकित्सक जब शल्य क्रिया करता है, तो सफेद कपड़ो में होता है। फौज जब आत्मसमर्पण करती है, तो सफेद झंड़ा दिखाती है। शांति के लिए सफेद कबूतर उड़ाये जाते हैं।

जापान में कर्मचारी अपना असंतोष काले बैज लगा कर प्रकट करते हैं। शासन तुरंत झुकता है तथा मांगें पता लगाता है। अपने देश में भी शायद ऐसा ही होता है।

अलग–अलग प्रदेशों के वाहनों के रंग भिन्न–भिन्न होते हैं, जिससे अनपढ़ यात्री भी उनको दूर से ही पहचान लें और उन्हें गंतव्य स्थान तक पहुंचने में मदद मिले। विदेशों में होटल, स्टेशन, सरकारी भवन, स्कूल, अस्पताल आदि एक विशेष रंग के होते हैं, जो उनकी मानक संस्थाओं ने तय किये हों। उनको ढूंढ़ने में आसानी होती है। एटलस में नदी, पहाड़, रेगिस्तान, मैदान, पठार, रेल, सड़क आदि सभी एक विशेष रंग से दिखाये जाते हैं, जिससे देखते ही उनका पता लग जाए।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

जीवन में रंगों का महत्व

विश्व की प्रत्येक संस्कृति में रंगों को काफी महत्व दिया गया है। गृहों का अलंकरण हो, या शारीरिक अलंकरण, रंग सब जगह बड़ी ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। रंगों के चयन की भी अलग–अलग अवधारणाएं हैं। कोई व्यक्ति लाल रंग पसंद करता है, कोई हरा, कोई नीला। मनुष्यों की पसंद का सीधा संबंध ग्रहों और ब्रह्मांड से होता है।

वी	वायलेट	बैंगनी
आई	इंडिगो	नीला
बी	ब्लू	आसमानी
जी	ग्रीन	हरा
वाई	येलो	पीला
ओ	औरेंज	नारंगी
आर	रेड	लाल

प्रत्येक मनुष्य के शरीर से कुछ किरणें स्वतः ही निकलती रहती हैं और अपना प्रभाव वातावरण में छोड़ती हैं, जिनके संपर्क में अन्य प्राणी, पशु, पक्षी, वनस्पति एवं वस्तुओं के आने पर एक रासायनिक क्रिया मनुष्य के शरीर में उत्पन्न होती है। हम देखते हैं कि हरी वनस्पति, नीला आकाश एवं जल के दर्शन करने से आत्मा प्रसन्न होती है; खास कर जब वर्षा हो, तब मन भी प्रकृति के रंगों को देख कर प्रसन्न होता है।

मनुष्यों और वरस्पतियों का भी एक आभा मंडल होता है। विभिन्न वैज्ञानिक खोजों और अनुसंधानों से यह सिद्ध हो गया है कि जिस प्रकार हिंदू देवी–देवताओं के आभा मंडल (ओरा) युक्त चित्र दिखाये जाते हैं, उसी प्रकार का आभा मंडल प्रत्येक मनुष्य, वनस्पति, पशु, पक्षी में पाया जाता है। अमेरिका के नोबल पुरस्कार प्राप्त प्रो. डगलस डीन ने इस विषय पर लगभग 20 वर्षों तक अनुसंधान कर यह परिणाम निकाला है कि अलग–अलग व्यक्तियों के अलग–अलग आभा मंडल होते हैं तथा 'फिरेलियन फोटोग्राफी' के द्वारा आभा मंडल का चित्र खींचा जा सकता है। इस आभा मंडल में कमी या बढ़ोतरी मनुष्य के शरीर की ऊर्जा के अनुसार होती रहती है।

अक्सर हम देखते हैं कि किसी व्यक्ति की बात हम तत्काल मानते हैं और किसी की गूढ़ गंभीर बात को भी कोई महत्व नहीं देते। कभी–कभी हम किसी संत, महात्मा अथवा किसी व्यक्ति के संपर्क में आ कर तत्काल प्रभावित होते हैं और उनके व्यक्तित्व से बहुत कुछ प्राप्त करने की भावना ले कर उन्हें श्रद्धा से देखते हैं। ऐसा उन व्यक्तियों के आभा मंडल के प्रभाव के कारण होता है। ऐसे व्यक्तियों का आभा मंडल इतना सशक्त होता है कि हम तत्काल उस आभा मंडल के संपर्क में आते ही उसकी तरंगें हमारे शरीर, मन एवं मस्तिष्क को प्रभावित करती हैं। इन सात रंगों के समन्वय को विबज्योर कहते हैं।

इस प्रकार शरीर में स्थित सौर मंडल, आभा मंडल शरीर को प्रभावित करते हैं और ब्रह्मांड में स्थित ग्रह इनमें कमी–बढ़ोतरी करते रहने से मनुष्यों में कई बीमारियां हो जाती हैं, जो काफी उपचार के उपरांत भी समाप्त नहीं होतीं ; बल्कि मनुष्य को प्रभावित करती हैं। अगर हम इन बीमारियों में यहां दिये गये उपाय करें, तो हमें चमत्कारिक लाभ मिल सकता है। आज हमारे समाज और देश को हमारे इस प्राचीन ज्ञान के पुनरुत्थान की अत्यंत आवश्यकता है।

इस प्रकार अगर ग्रह तथा रंगों में संतुलन पैदा कर उसे हमारे व्यवहार में लाएं, तो लोग कई विकारों से बच कर निरोग रहेंगे तथा अपने व्यक्तित्व का विकास भी कर सकेंगे। प्राचीन समय में ही हमारे ऋषि–मुनियों को रंगों के समन्वय का काफी गंभीर ज्ञान था तथा सूर्य को संसार का पालक पिता मान कर वह पूजा जाता था। वेदों में

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

सूर्य की बड़ी महिमा कही गयी है। ''रतन्नादित्यः किमीन्ध्न्तु विग्रचहन्तु रशिममिः''

अर्थात, सूर्य देव उदय होने से अस्त होने तक अपनी किरणों से रोगोत्पादक कृमियों का नाश करते हैं। प्रश्नोपनिषद में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सूर्य सारे जगत का प्राण है। सूर्य सब प्रकार के वीर्यों से युक्त है। पाश्चात्य देशों में सूर्य के सातों रंगों से विभिन्न ग्रहों की ऊर्जा प्राप्त कर ''हीलियोथेरेपी'' के माध्यम से चिकित्सा की जा रही है।

रत्न के रंगों से चिकित्सा

मानव जीवन में रत्नों के उपयोग से, ग्रहों की शांति के अलावा, स्वास्थ्य की दृष्टि से भी लाभ उठाया जा सकता है। कोई एक विशेष रंग नगीने की सतह पर पक्का हो कर परावर्तित रूप दिखाता है। अनुपात में ये सातों रंग सातों जातियों की तरह होते हैं, जो क्रमशः बैंगनी, आसमानी, नारंगी, नीला, हरा, पीला और लाल हैं। नव ग्रहों के प्रमुख नगीनों के रंग इस प्रकार हैं :

सौर वर्ण क्रमानुसार :

माणिक्य	लाल
मोती	नारंगी
मूंगा	पीला
पन्ना	हरा
पुखराज	आसमानी
हीरा	नीला
नीलम	बैंगनी

शेष राहु–केतु का विशेष मिश्रण है।

वास्तु को अत्यधिक प्रभावी बनाते हैं रंग

सौभाग्य और प्रसन्नता प्राप्ति हेतु रंग योजना गृहस्वामी की राशि के अनुसार होनी चाहिए, जो हैं :

राशि	प्रस्तावित रंग
मेष	मूंगिया लाल
वृष	दूधिया, लाल
मिथुन	हरा
कर्क	गुलाबी, मोतिया, सफेद
सिंह	हल्का सफेद, मणि लाल
कन्या	विभिन्न हरे रंग
तुला	सीमेंट रंग, दूधिया सफेद
वृश्चिक	मूंगिया लाल, गुलाबी
धनु	सुनहरा पीला
मकर	हल्का लाल, सीमेंट रंग
कुंभ	नीला, गुलाबी या सीमेंट रंग
मीन	पीला, चमकीला सफेद

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

भवन की दिशा के अनुसार विभिन्न रंग हैं। वास्तव में ग्रहों के रंग इन दिशाओं को नियंत्रित करते हैं।

दिशा	**प्रस्तावित रंग**
पूर्व (सूर्य)	चमकीला सफेद
पश्चिम (शनि)	नीला
उत्तर (बुध)	सभी प्रकार के हरे
दक्षिण (मंगल)	मूंगिया लाल, गुलाबी
उत्तर–पूर्व (बृहस्पति)	सुनहरा पीला
दक्षिण–पश्चिम (बुध का प्रतिनिधि राहु)	सभी प्रकार के हरे
दक्षिण–पूर्व (शुक्र)	चांदी जैसा सफेद
उत्तर–पश्चिम(चंद्रमा)	मोतिया सफेद, हल्का पीला

आदि मानव रंगों के उपयोग से बुरी आत्माओं को भगाते थे और सौभाग्य को बढ़ाते भी थे। प्राचीन युग में विभिन्न मौसमों के प्रतीक के रूप में वे रंगों का उपयोग करते थे। तब हरा रंग काष्ठ का प्रतीक माना जाता था तथा बसंत ऋतु का प्रतिनिधित्व करता था, जबकि लाल रंग अग्नि और ग्रीष्म का प्रतीक था। इसी प्रकार पीला और नारंगी रंग सूर्य और पृथ्वी पर उसकी चमकीली धूप के प्रतीक माने जाते थे। वैसे एक प्रकार से वे ग्रीष्म ऋतु का अंतिम काल दर्शाते थे। श्वेत रंग धातु और शरद ऋतु का प्रतिनिधि माना जाता था एवं नीला रंग जल और शीत ऋतु को दर्शाता था।

रंगों के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रभाव पड़ते हैं। रंगों के मनोचिकित्सक फेबेर बिरेन का मानना था कि सामान्य इंसान विभिन्न रंगों में लाभकारी गुणों को तलाशता है, जबकि असामान्य इंसान या मनोरोगी उनमें नुकसानदेह तत्व ढूंढता है।

इंसान को चाहे किसी रंग की जानकारी हो या न हो, पर वह उसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया जरूर व्यक्त करता है। जरा कल्पना कीजिए कि आप भड़कीले लाल रंग के शयन कक्ष में सो रहे हैं, या कोयले जैसी काली रसोई में खाना बना रहें हैं। रंगों से कमरों को भावनात्मक वातावरण मिलता है। कुछ रंग उत्तेजित करते हैं, तो कुछ अन्य क्रोध से भर देते हैं, जबकि कुछ रंग हमारे भावावेगों को शांत करते हैं। आज से कुछ वर्ष पूर्व एक रोचक परीक्षण किया गया था, जिसके अंतर्गत उग्र कैदियों को गुलाबी रंग से पुती कोठरियों में रखा गया था और विचित्र बात यह थी कि गुलाबी रंग ने कैदियों की आक्रामकता को सोख लिया और वे आदर्श कैदी बन गये थे। इस परीक्षण से ज्ञात होता है कि रंगों का नाटकीय प्रभाव पड़ता है। इसलिए रंगों के चुनाव तथा उपयोग में सावधानी से काम लेना चाहिए।

रंग परावर्तित प्रकाश का नियंत्रण और उनकी सहायता करते हैं तथा रंगों और प्रकाश का रूप समन्वित रखने के लिए यथासंभव अच्छी परिस्थितियां प्रदान करते हैं। वैसे कमरों की रंग संयोजना का चुनाव उन कमरों के अंदर ही किया जाना चाहिए, क्योंकि रंग की यह विशेषता होती है कि वे विभिन्न प्रकार की प्रकाश व्यवस्था में अपनी आभा परिवर्तित कर लेते हैं। गर्म या तीव्र प्रकाश गर्म रंगों को और भी भड़कीला बना देता है, जबकि ठंडा या हल्का प्रकाश ठीक इसके विपरीत कार्य करता है।

रंग जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। रंग का उपयोग ऊर्जा को समन्वित एवं संतुलित कर अंततः भाग्य को सुधारता है। रंग जीवन के हर पहलू में वृद्धि और स्वभाव को प्रभावित कर सकता है; मस्तिष्क को प्रेरणा प्रदान कर सकता है; कार्यक्षमता में वृद्धि कर सकता है एवं शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बना सकता है। कपड़ों, आसपास के वातावरण, भोजन के रंग मानव की ऊर्जा एवं जीवन को प्रभावित करते हैं। रंगों का उचित उपयोग करने से व्यवसाय में सफलता प्राप्त की जा सकती है। रंग से भूमि, मकान या कक्ष में सुधार किये जा सकते हैं।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

कुछ रंग उत्तेजना पैदा करते हैं, तो कुछ रंग उम्मीद जागृत करते हैं तथा कुछ रंग व्यापक रूप से आकर्षित करते हैं। चमकीले रंग आनंदमय होते हैं एवं गहरे रंग सौम्य प्रभाव प्रदान करते हैं। रुचि के प्रतिकूल रंगों का उपयोग उत्तेजित करता है। रंग कार्य एवं व्यवसाय पर भी प्रभाव डालते हैं। हल्का रंग मानसिक एवं शारीरिक शक्ति में वृद्धि करता है, जबकि गहरा रंग उत्तरदायित्व एवं स्थिरता की भावना जागृत करता है।

प्रत्येक रंग प्रत्येक तत्व से संबंधित है। अपने व्यक्तिगत तत्वों के अनुसार उपयुक्त रंगों का चयन किया जा सकता है। किस कार्यक्षेत्र में कौन–सा रंग प्रभावशाली है, यह पांच तत्वों के विश्लेषण से ज्ञात किया जा सकता है। पांच तत्वों से संबंधित रंगों की विशेषताओं का वर्णन निम्नानुसार हैः

लाल : लाल रंग अग्नि तत्व का प्रतीक है। यह भाग्यशाली रंग माना जाता है एवं प्रसिद्धि, सौभाग्य, उन्नति तथा अधिक कार्यक्षमता का सूचक है। लाल रंग के सकारात्मक एवं हानिकारक दोनों ही तरह के प्रभाव होते हैं। लाल रंग का सही उपयोग ऊर्जा को प्रेरित करता है, किंतु अत्यधिक उपयोग घर के निवासी के लिए बहुत बड़ी कठिनाई उत्पन्न कर सकता है। बच्चों के कमरे में लाल रंग का अत्यधिक उपयोग उन्हें उद्वेलित कर सकता है। लाल रंग पाचन तंत्र को सक्रिय एवं पाचन प्रणाली की प्रक्रिया में सहायक होता है।

पीला : अग्नि, भस्म में परिवर्तित हो, पृथ्वी की ऊर्जा को पोषण प्रदान करता है। पीला रंग सम्राट का रंग था एवं साधारण नागरिक को पीले रंग के वस्त्र पहनने की इजाजत नहीं थी। पीले रंग का उपयोग भवन में रहने वालों की शक्ति एकत्रित करने में सहायक है तथा सामाजिक प्रवृत्ति के प्रति प्रोत्साहित करता है। यह रंग व्यक्ति को समाज के साथ संबंध के लिए भी प्रेरित करता है।

सफेद : समय बीतने के साथ भूमि कठोर हो कर धातु में परिवर्तित हो जाती है। सफेद रंग धातु का प्रतिनिधित्व करता है। सफेद रंग शुद्धता का प्रतीक है। शोक के अवसरों पर सफेद रंग का उपयोग होने के कारण लोग इस रंग से बचते हैं।

काला : काला रंग सम्मान का प्रतीक है। काला रंग गहरा होने के कारण गहराई का अहसास कराता है। यदि काले रंग का अत्यधिक उपयोग किया जाए, तो इससे निराशावादी वातावरण निर्मित होगा। इसका सर्वोत्तम उपयोग चित्रकारी में होता है।

हरा : जल काष्ठ को पोषण प्रदान करता है। हरा रंग काष्ठ तत्व का प्रतीक है एवं यह शांत और प्रफुल्लित वातावरण निर्मित करता है। यह बसंत ऋतु का रंग है एवं स्वस्थ ऊर्जा का सूचक है। हरा रंग विकास का भी सूचक है। हरा रंग यकृत तथा पित्ताशय को स्वस्थ रखने में बहुत प्रभाव रखता है। कमरे में अत्यधिक हरे रंग का उपयोग करने से कमरे में वास करने वाला, वास्तविकता से दूर, कल्पना जगत में विचरण करने लगता है। लाल एवं हरे रंग का संयोजन सर्वाधिक सौभाग्यशाली माना जाता है।

संवेदनशील रंग : काले और लाल रंग को अत्यंत संवेदनशील रंग माना जाता है। पारंपरिक तौर पर उत्तर या दक्षिण की ओर की दीवारों, दरवाजों तथा प्रवेश द्वारों पर काले रंग का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए तथा इसी प्रकार पूर्व या पश्चिम की ओर की दीवारों, दरवाजों और प्रवेश द्वारों पर लाल रंग नहीं किया जाना चाहिए। यह माना जाता है कि इन नियमों को तोड़ने पर उस घर के निवासियों पर दुर्भाग्य छा जाता है तथा इन दोनों रंगों का उपयोग सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।

घर के लिए रंगों का चयन

कक्ष	अनुकूल रंग
प्रवेश कक्ष	सफेद या हल्का हरा, गुलाबी, या नीला
बैठक	पीला, मटमैला, भूरा, हरा, या काला

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

भोजन कक्ष	हल्का गुलाबी , हल्का नीला, या हल्का हरा
मुख्य शयन कक्ष	गुलाबी, हल्का हरा, या हल्का नीला
बच्चों का शयन कक्ष	काला, नीला, या हरा
रसोई	सफेद
पूजा का कमरा	काला, हरा, लाल, या गुलाबी
अध्ययन कक्ष	भूरा, हल्का नीला, हल्का हरा, लाल, या गुलाबी
स्नान गृह	काला, सलेटी, सफेद, या गुलाबी

दुकान के लिए रंगों का चयन

दुकान	अनुकूल रंग
1. टेलीविजन एव टेपरिकॉर्डर	सफेद, गुलाबी, हल्का नीला, हल्का हरा
2. किताब	हल्का पीला, लाल
3. ग्रिटिंग कार्ड	हरा, नीला, पीला
4. बच्चों के खिलौने	हल्का हरा, हल्का नीला, मटमैला, गुलाबी, या सफेद
5. बिजली का सामान	गुलाबी, हल्का हरा, हल्का पीला, सफेद, या बहुरंगी
6. सामान्य वस्तुएं	हल्का हरा, गुलाबी, या सफेद
7. आभूषण	पीले के अतिरिक्त कोई भी रंग
8. दवाई की दुकान	हल्का नीला, गुलाबी
9. सिले–सिलाये वस्त्र	नीला, हरा, कोई भी चमकीला रंग
10. जूते की दुकान	काला,भूरा, लाल, या सफेद

कार्यालय के लिए रंगों का चयन

कार्यालय	अनुकूल रंग
1. एजेंट	सलेटी, काला, या गहरा रंग
2. वास्तुविद	हरा, या नीला
3. बैंक एवं शेयर नियोजन	सफेद नीला, हरा, या पीला
4. ब्यूटी पार्लर	काला, सफेद, या बहुरंगी
5. भवन निर्माता	काला, हरा, या सफेद
6. चार्टर्ड एकाउंटेंट	सफेद, या पीला
7. कंप्यूटर	हल्का नीला, हरा
8. चिकित्सक	सफेद, या हल्का हरा, नीला, हल्का पीला, या गुलाबी,
9. वकील	काला, सफेद
10.व्यापारिक संस्थाएं	हरा

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

अध्याय–16

लाल किताब

किंवदंती है कि लंकाधिपति रावण ने सूर्य के सारथि अरुण से इस इल्म का सामुद्रिक ज्ञान संस्कृत में ग्रंथ के रूप में ग्रहण किया था। रावण की तिलिस्मी दुनिया समाप्त होने के पश्चात् यह ग्रंथ किसी प्रकार आद नामक एक स्थान पर पहुंच गया जहां इसका अनुवाद अरबी और फारसी भाषा में किया गया। आज भी कुछ लोग मानते हैं कि यह पुस्तक फारसी में उपलब्ध है जबकि सच्चाई कुछ और है। यह ग्रंथ उर्दू अनुवाद में पाकिस्तान के पुस्तकालय में सुरक्षित है। लेकिन काल वश इस ग्रंथ अरुण संहिता बनाम लाल किताब का कुछ हिस्सा लुप्त हो चुका है। इसका तात्पर्य यह है कि लाल किताब कोई जादू नहीं है अपितु बचाव व रूह शांति के उपायों का एक माध्यम है।

लाल किताब के आधार पर विशेष नियम

- टेवे में जो ग्रह उच्च का या अपने घर का हो, उस ग्रह की वस्तुएं कभी दान नहीं करनी चाहिए।
- चंद्रमा यदि खाना नं. 2 या 4 में हो तो चंद्रमा की वस्तुएं दूध, चावल, मोती का दान कभी नहीं करना चाहिए।
- मंगल टेवे में श्रेष्ठ हो या उच्च हो तो व्यक्ति को मिठाई का दान कभी नहीं करना चाहिए।
- सूर्य यदि टेवे में उत्तम हो तो गुड़ या गेहुं का दान करना टेवे वाले के लिए वर्जित है।
- बुध यदि टेवे में श्रेष्ठ हो तो मूंग साबुत, हरा कपड़ा, कलम, खुंब तथा घड़ा आदि दान नहीं करना चाहिए।
- बृहस्पति शुभ व उच्च हो तो सोना, पीली वस्तुएं, केसर आदि का दान नहीं करना चाहिए।
- शुक्र यदि टेवे में उच्च का हो या शुभ हो तो सिले हुए कपड़े कभी दान नहीं करने चाहिए।
- शनि यदि टेवे में उच्च हो तो शराब, मांस, अंडा तेल या लोहे आदि का दान नहीं करना चाहिए।

इसी प्रकार उपर लिखे ग्रह यदि टेवे में नीच हो या अशुभ हों तो उपरोक्त वस्तुएं ग्रहानुसार दान में या मुफ्त नहीं लेनी चाहिए।

मंदिर या धर्म स्थान से संबंधित नियम

जब किसी जातक के टेवे में खाना नं. 2 खाली हो और खाना नं. 8 में पापी ग्रह हों खासकर शनि तो इस टेवे वाले जातक को धर्म स्थान या मंदिर नहीं जाना चाहिए। मंदिर के बाहर से अपने इष्टदेव को नमस्कार करना चाहिए। टेवे के खाना नं. 6,8,12 में शत्रु ग्रह हों और खाना नं. 2 खाली हो तब भी मंदिर जाना वर्जित है।

धर्मार्थ कार्य करने से संबंधित नियम

1. यदि चंद्रमा खाना नं. 6 में हो व्यक्ति धर्मार्थ पानी का पम्प लगवाएं, कुंआ खुदवाए या उसकी मरम्मत करवाए तो दिन प्रतिदिन परिवार घटे।
2. यदि शनि खाना नं. 8 में हो और व्यक्ति सराय, धर्मशाला या बेसहारों के लिए निवास स्थान बनाए तो खुद बेघर हो जाएगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

3. यदि टेवे में शनि खाना नं. 1 में और बृहस्पति खाना नं. 5 में हो और टेवे वाला तांबे के पैसे या बर्तन दान करे तो संतान नष्ट होगी।
4. यदि टेवे में बृहस्पति खाना नं. 10 में और चंद्रमा 4 में हो और व्यक्ति पूजा स्थान का निर्माण करावे तो झूठे आरोपों में जेल यात्रा करेगा।
5. यदि टेवे में शुक्र खाना नं. 9 में हो और टेवे वाला अनाथ बच्चा गोद ले लेवे तो खुद की मिट्टी खराब।
6. यदि चंद्रमा खाना नं. 12 वाला जातक साधु को प्रतिदिन रोटी खिलाए, धर्मार्थ पाठशाला खोले तो अंतिम समय में कोई पानी देने वाला न होगा।
7. यदि बृहस्पति खाना नं. 7 वाला व्यक्ति किसी को नये वस्त्र दान लेकर देगा तो खुद निर्वस्त्र हो जाएगा।
8. यदि सूर्य खाना नं. 7 या 8 में हो तो सुबह के समय और शाम के समय दिया दान जहर के सामान होगा।

औलाद संबंधी सावधानियां व उपाय

1. यदि बच्चे मरते हों या गर्भपात होते हों तो स्त्री के गर्भवती होते ही उसके बाजू पर लाल धागा बांध दे (स्त्री के कद से 1" ज्यादा) यही धागा संतान होने के पश्चात बच्चे को बांधे और माता को नया धागा बांध दें जौ 11 महीने तक बांध कर रखें।
2. गणेश जी की अराधना करें।
3. गाय ग्रास मदद करेगा।
4. बच्चे के जनम से पहले एक बर्तन में दूध और दूसरे में खांड डालकर स्त्री का हाथ लगवा कर कायम करें तथा बच्चे के जन्म के बाद दोनों वस्तुएं धर्म स्थान में पहुंचा दें । जिस बर्तन में दोनों चीज़ें रखें उनहें वापिस मत लाएं।
5. यदि वर्षफल में राहु मंदा हो तो जौ का पानी बोतल में भरकर औरत के सिरहाने रखें, पैदाइश आराम से होगी।
6. यदि 100 दिन से अधिक समय के लिए घर से बाहर जाना हो तो नदी पार करते समय तांबे के सिक्के पानी में फेंके।
7. दिन के समय मीठी तंदूरी रोटियां, जिन्हें लोहा न लगे, कुत्ते, दरवेश को खिलाएं।
8. यदि बच्चे पैदा होते ही मरते हों तो मीठी रोटीयों की जगह नमकीन रोटियां खिलाएं
9. धर्मस्थान में जन्में बालक की आयु लंबी होगी।
10. कुतिया का नर बच्चा जो अपने समय अकेला पैदा हुआ हो, रखने से (पालने से) परिवार में बरकत।

शादी से संबंधित लाल किताब के नियम

लाल किताब के नियमानुसार शुक्र खाना नं. 9 में शादी के सुख के लिए अच्छा नहीं माना जाता बल्कि हलचल भरी शादी का कारण बनता है। या स्थिति और भी खराब हो जाती जब शुक्र खाना नं. 9 वाले जातक के घर में आने का द्वार दक्षिण की ओर होता है। उदाहरण के लिए भगवान राम के टेवे में शुक्र खाना नं. 9 में उच्च का होकर पड़ा है। जिस कुटिया से सीता का अपहरण हुआ उसका द्वार दक्षिण दिशा की ओर था।

1. अगर टेवे में सूर्य व शुक्र इकट्ठे हो तो व्यक्ति की शादी सूर्य की आयू (22 साल) या फिर शुक्र की आयु (25वें साल) में होती हैं तो तलाक या अलग होने का योग बनता है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

2. अगर टेवे में चंद्रमा खाना नं. 1 में हो तो चंद्रमा की आयु (25वें वर्ष) में शादी नहीं करनी चाहिए, क्यों चंद्रमा खाना नं. 7 को देखता जो कि शुक्र है और शुक्र व चंद्रमा में शत्रुता है।
3. अगर राहु टेवे के खाना नं. 7 में हो तो 21वें साल में की गई शादी दुर्भाग्यपूर्ण साबित होगी।
4. शनि टेवे के खाना नं. 6 में हो तथा शुक्र खाना नं. 2 या 12 में हों तो पत्नी/पति की आयु को खतरा बना रहे।
5. शुक्र टेवे में जिस खाने में हो, उससे अगले (दूसरे) या पिछले (बारहवे) खाने में अशुभ ग्रह हों तो तलाक की संभवना रहती है। बुध को लाल किताब में अशुभ ग्रह माना गया हैं
6. जिस व्यक्ति के टेवे में बुध खाना न 6 में हो उसे अपनी कन्या उत्तर दिशा में रहने वाले व्यक्ति को नहीं ब्याहनी चाहिए, वर्ना लड़की शादी के बाद दुःखी रहेगी।
7. जिस व्यक्ति के टेवे में चंद्रमा खाना नं. 11 में हो उसे अपनी लड़की का कन्यादान सूर्योदय के समय नहीं करना चाहिए वर्ना बाप बेटी दोनों दुःखी में रहे क्योंकि यह समय केतु से प्रभावित होता है।
8. सूर्य, राहु व बुध की युति टेवे में हो तो जातक की एक से अधिक शादियां होगी और सभी दुःखपूर्ण रहेंगी।
9. अगर सूर्य खाना नं. 6 में और शनि खाना नं. 12 में हो तब भी एक से अधिक शादियों की संभावना रहती है।

उपाय

ग्रहों की शांति व खुशहाल शादी के लिए नीचे लिखे उपाय, ग्रहों के अनुसार है। उपाय कन्या द्वारा किये जाने चाहिए।

1. यदि टेवे में बृहस्पति खराब हो तो शादी के वक्त कन्या को अपने माता पिता से सोने के दो चौकोर टुकड़े लेने चाहिए। एक अपने पास रखें और दूसरा पानी में बहाएं। वजन कितना भी हो सकता है। किसी कारण पास रखा टुकड़ा यदि खो जाए तो एक और टुकड़ा अपने मां–बाप से लेना चाहिए परंतु दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं।
2. यदि टेवे में सूर्य खराब हो तो सूर्य की धातू यानी तांबे के दो टुकड़ें उपरोक्त विधि से इस्तेमाल करने चाहिए।
3. यदि टेवे में चंद्रमा खराब हो तो उपरोक्त विधि द्वारा सुच्चे (2) मोतियों का इस्तेमाल करना चाहिए। किसी कारणवश मोती का मिल सकें तो ससुराल से लड़की के वजन के बराबर चावल या फिर चांदी के बर्तन में गंगाजल लेकर ससुराल में रखना चाहिए।
4. शुक्र के टेवे में खराब होने की अवस्था में सफेद रंग के दो मोतियों का उपरोक्त विधि से इस्तेमाल करें।
5. खराब मंगल के लिए लाल रंग के दो पत्थर के टुकड़ों का इस्तेमाल करना चाहिए लेकिन उन पत्थरों में चमक नहीं होनी चाहिए।
6. यदि टेवे में बुध खराब हो तो दो सीपीयों का उपरोक्त ढंग से इस्तेमाल करें।
7. खराब शनि के लिए स्टेनलैस स्टील के दो चौकोर टुकड़ों का या फिर सुरमें की डालियों का उपयोग करें।
8. यदि टेवे में राहु खराब हो तो चंद्रमा की मदद लें या फिर चांदी के दो टुकड़ों वाला उपाय करें। दुल्हे को अपने ससुराल वालों में नीलम किसी भी शक्ल में लेना मना है।
9. केतु के खराब होने पर बृहस्पति की वस्तु यानि सोने के टुकड़ों का उपाय किया जाए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

इसके अलावा निम्नलिखित उपाय भी करें :

1. जिस पुरूष की कुंडली में शुक्र खाना नं. 6 में हो उसके ससुराल वालों को चाहिए कि सोने का क्लिप अपनी लड़की को देवें।
2. यदि शुक्र खाना नं. 4 में हो या सूर्य, राहु चंद्र खाना नं. 2 में या फिर राहु खाना नं. 1,5 या 7 में हो (पुरुष के टेवे में) ऐसे में जातक का चांदी का चौकोर टुकड़ा ससुराल वाले से लेकर हमेशा अपने पास रखना चाहिए।
3. यदि टेवे में केतु खाना नं. 8 में हो तो शादी के तुरंत बाद व्यक्ति को काला सफेद कंबल धर्म स्थान में रखना चाहिए।
4. यदि चंद्रमा खाना नं. 6 में हो तो कुंडली में पितृदोष बनता है,, ऐसे में व्यक्ति को दिन के समय 100 कुत्तों को मीठी रोटी, शादी के तुरंत बाद डालनी चाहिए।
5. यदि बुध टेवे के खाना नं. 12 में हो तो स्टेनलेस स्टील के बिना जोड़ दो छल्ले बनवाने चाहिए, जिनमें से एक शादी के समय धारण करना चाहिए और दूसरा पानी में बहाना चाहिए (ढंग सहित)

कुछ विशेष उपाय

1. खाना नं. 6 व खाना नं. 10 के कुप्रभाव को बचाने के लिए टेवे का खाना नं. 5 देखें वहां बैठे ग्रह के शत्रु ग्रह की चीज़े ज़मीन के नीचे दबाएं।
2. बृहस्पति खाना नं. 10 में, शुक्र खाना नं. 11 में, केतु खाना नं. 8 में और शनि खाना नं. 5 में हो बेटे के वजन के बराबर आटे की रोटियां 25 से 48 दिन तक कुत्तों को खिलाएं।
3. खाना नं. 2 और खाना नं. 12 में लाभदायक ग्रह हों तो षठस्थ ग्रह को जगाएं इसके लिए अपने मामा या अपनी बेटीयों की सहायता और सेवा करें।
4. वर्षफल में जो ग्रह षष्ठ में आए वह जातक के स्वास्थ्य को हानि पहुंचाता है उस ग्रह से संबंधित वस्तुएं दान में देनी चाहिए।
5. जन्म कुंडली के खाना नं. 11 में जो ग्रह हो और वर्षफल में खाना नं. 11 या 8 में आए तो उस ग्रह की कारक वस्तुएं मत खरीदें।
6. यदि खाना नं. 3 और 5 खाली हों तो खाना नं. 2 के माध्यम से खाना नं. 9 को जगाना चाहिए।
7. यदि खाना नं. 10 खाली हो तो खाना नं. 4 के ग्रह चाहे अच्छे भी जो फल नहीं देते, इसके लिए 10 अंधों को भोजन खिलाएं पर भोजन के लिए पैसे न दें।
8. खाना नं. 11 में स्थित सूर्य तब तक शुभ फल देता है जब तक व्यक्ति शाकाहारी रहे। यदि मांस, मदिरा का सेवन करे तो संतान के लिए अशुभ।
9. यदि टेवे में बृहस्पति और केतु शुभ हो तो खाना नं. 11 का चंद्रमा अति शुभ फल देता, कम से कम उस उम्र तक जब तक व्यक्ति की माता जीवित हैं।
10. यदि टेवे में बृहस्पति अशुभ फल दे रहा हो तो बेटी की शादी के समय सोने के 2 टुकड़े बराबर वजन के बनवा कर एक पानी में बहा दें और एक दुल्हन को दे। दुल्हन उसे बेचे नहीं, सदा के लिए अपने पास रखे।
    - यदि सूर्य अशुभ फल दे तो तांबे के टुकड़ों का उपरोक्त ढंग से इस्तेमाल करें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

- यदि चंद्रमा अशुभ फल दे तो मोती उपरोक्त ढंग से इस्तेमाल करें।
- यदि मंगल अशुभ फल दे तो चमकीला लाल पत्थर इस्तेमाल करें।
- यदि शनि अशुभ फल दे तो हीरे के टुकड़ों का उपरोक्त इस्तेमाल करें।
- यदि राहु अशुभ फल दे तो लोहा या स्टील उपरोक्त ढंग से इस्तेमाल करें।
- यदि केतु अशुभ फल दे तो 2 रंग का पत्थर लेकर उपरोक्त ढंग से इस्तेमाल करें।

11. खाना नं. 6 का शनि खुद चाहे अच्छे फल दे किंतु बृहस्पति के फल को खराब करता है इसलिए नारियल, अखरोट आदि पानी में बहाने चाहिए।
12. बृहस्पति खाना नं. 1 में हो और शनि खाना नं. 11 में हो तो गायों की सेवा करने से शुभ फल मिलता है।
13. बृहस्पति खाना नं. 3 में हो तो दुर्गापाठ शुभ फल देता है।
14. बृहस्पति खाना नं. 4 के समय खाना नं. 10 खाली हो तो गुरु सुप्त होता है ऐसे में व्यक्ति को दूसरों के सामने नंगे बदन नहीं घूमना चाहिए।
15. बृहस्पति खाना नं. 8 के समय दुर्भाग्यपूर्ण समय आए तो गुरु व शुक्र संबंधित वस्तुएं पूजालय में दान दें।
16. बृहस्पति खाना नं. 10 और मंगल खाना नं. 4 में होने पर व्यक्ति मंगल से संबंधित रिश्तेदारों की सेवा व सहायता करें।
17. खाना नं. 2 का सूर्य घर की स्त्रियों के लिए अशुभ होता है ऐसे में शनि की वस्तुएं नारियल, नारियल का तेल या अखरोट धर्म स्थान में दें।
18. सूर्य खाना नं. 4 में और उसके मित्र ग्रह खाना नं. 10 में हो तो खाना नं. 5 में स्थित ग्रह अशुभ फल देंगे ऐसे में मंगल की वस्तुएं दान करें।
19. खाना नं. 6 का सूर्य यदि बच्चे या मामा आदि को हानि करे तो बंदर को गुड़, दीमक को गेहुं बाजरा डालें। खुद सूर्य के कुप्रभाव को दूर करने के लिए घर में नदी का जल रखें।
20. सूर्य खाना नं. 6 के समय यदि खाना नं. 3 खाली हो तो नौकरी या व्यापार में बाधाएं आती है ऐसे में कुत्तों को खाना खिलाना चाहिए।
21. सूर्य खाना नं. 6 के समय यदि मंगल खाना नं. 10 में हो तो बच्चों की सेहत के लिए अशुभ। ऐसे में चंद्र संबंधित वस्तुएं रात को तकिए के नीचे रखें और सुबह गरीबों में बांट देवें।
22. सूर्य टेवे के खाना नं. 7 में हो तो इन बातों का ध्यान रखें किसी के प्रति दुर्व्यवहार न करें, गोचर का शनि लग्न में हो तो चंद्रमा निःस्सहाय हो जाता है, ऐसे में रात के खाने के बाद चूल्हे की आग दूध से बुझाएं और फिर उस चूल्हे का इस्तेमाल अगले दिन सूर्योदय के बाद करें। अगर बच्चों पर या आर्थिक स्थिति पर दुश्प्रभाव पड़ रहा हो तो ताम्बे के चौरस टुकड़े जमीन में दबाए या गुड़ खाकर बाद में पानी पीकर काम पर जाएं। भोजन करने से पहले भोजन का कुछ अंश आग में डालें लगातार करना चाहिए।
23. सूर्य पर शनि की दृष्टि के कारण अशुभ फल महसूस हो तो व्यक्ति अपने घर की दक्षिणी दीवार की ओर जाए, पूर्व की ओर मुंह करके सीधा खड़ा होकर पानी से भरा घड़ा अपनी दाहिनी ओर गाड़ दें। घड़े का पानी 43 दिन तक सूखने न पाए।
24. बड़ों के पांव छूकर आर्शीवाद लेना हमेशा शुभ होता है। चंद्रमा की वस्तुएं दूध, दही बेचना परिवार के लिए हानिकारक। चांदी, चावल, चश्मे का पानी घर में रखना शुभ रहे।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

25. यदि टेवे में खाना नं. 7 खाली हो तो 24 वर्ष की आयु से पहले घर में गाय या नौकरानी रखना खाना नं. 7 को जगाना चाहिए वर्ना 25वें साल में चंद्रमा बुरा प्रभाव देगा।

26. यदि खाना नं. 4 का चंद्रमा बुरा प्रभाव देने लगे तथा टेवे में बुध खाना नं. 3 तथा बृहस्पति खाना नं. 9 में हो तो 43 दिन तक कन्याओं को हरे वस्त्र देने चाहिए।

27. यदि खाना नं. 4 का चंद्रमा के समय खाना नं. 9 खाली हो तो चंद्रमा सुप्त माना जाएगा। ऐसे व्यक्ति को उत्तम भोजन खाकर यात्रा पर चले जाना चाहिए। कुछ खाना साथ ले जाना चाहिए।

28. खाना नं. 6 को चंद्रमा के बुरे फल से बचने के लिए, मंगल, बृहस्पति व सूर्य की वस्तुएं दान करें। कभी–2 मंदिर जाए। सूर्यास्त के बाद दूध मत पीएं।

29. खाना नं. 8 का चंद्रमा कष्ट देने लगे तो शमशान के पंप/कुंए का पानी घर में स्थापित करें। दुध का दान करें। बड़ों के पांव छुकर आशीर्वाद लें।

30 चंद्रमा खाना नं. 11 के समय यदि व्यक्ति की पत्नी बच्चों को जन्म देने वाली हो तो व्यक्ति की मां को कहीं बाहर चले जाना चहिए और 43 दिन पोते/पोती को ने देखे।

31. खाना नं. 11 का चंद्रमा यदि मां का अनिष्ट कर रहा हो तो 121 पेड़े बच्चों में बांटने चाहिए। बच्चे न मिल सके तो पानी में बहा दें।

32. शुक्र खाना नं. 4 में हो तो दो विवाह होने की संभावना होती है, इसलिए व्यक्ति के अपनी पत्नी के साथ रस्मों रिवाज से दूसरी शादी कर लेनी चहिए।

33. खाना नं. 4 का शुक्र व्यक्ति के परस्त्रीयों से कामुक संबंध बनवाता है जो कि परिवार के लिए कष्टकारी है। बृहस्पति की वस्तुएं पानी में बहाएं।

34. जिस व्यक्ति के टेवे में शुक्र खाना नं. 6 में हो उसे मां–बाप की इकलौती संतान से शादी करनी चाहिए।

35. शुक्र खाना नं. 6 के समय यदि बृहस्पति और मंगल के सिवा कोई और ग्रह शुक्र के साथ हो, इसी समय खाना नं. 2 खाली हो तो अनिष्टकारी होता है। घर में कोई चांदी रखें, व्यक्ति की पत्नी फर्श पर नंगे पांव न चले, गुप्तांगों को दही से धोना चाहिए।

36. शुक्र खाना नं. 7 के समय यदि राहु खाना नं. 8 में हो तो अशुभ हेता है। ऐसे व्यक्ति की पत्नी काले नीले रंग के कपड़े मत पहने।

37. शुक्र खाना नं. 9 में हो तो धार्मिक स्थानों की यात्रा शुभ फल देती है। नीम के तने में छेद करके उसमें चांदी के चौकर टुकड़े दबाएं।

38. शुक्र खाना नं. 10 के समय संतानोत्पति के लिए अशुभ है। व्यक्ति की पत्नी ज्यादा कामुक होती है पत्नी गुप्तांग दही से धोएं। यदि जातक खुद बिमार हो तो गोदान करे यदि रोग साध्य होगा तो ठीक हो जाए वर्ना मृत्यु शान्तीपूर्ण।

39. शुक्र खाना नं. 12 में पत्नी के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है। ऐसे में स्त्री को संध्या के समय विरान जगह नीले फूल दबाने चाहिए।

40. जब टेवे में मंगल बद हो तो हाथी दांत या हाथी के दांत से बनी चीज़ें घर में रखना शुभ फल देता है।

41. यदि खाना नं. 1 में मंगल नं. 3 में बुध व खाना नं. 7, 9, 11 खाली हों तो बृहस्पति की वस्तुएं घर में स्थापित करें, शुक्र के व्यवसाय करने से खाना नं. 7 जाग्रत होना, 39 वर्ष की आयु तक साधूओं की संगति न करें।

42. खाना नं. 4 का मंगल अशुभ फल देने लगे तो चंद्रमा की वस्तुएं अपनाएं। यदि बच्चे न होते हों तो शहद से

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

भरा घड़ा शमशान में दबाएं। लंबी बिमारी से बचने के लिए मृगछाला प्रयोग करें। घर के दक्षिणी द्वार पर एक लोहे की कील गाड़ दें जो दिखाई न दे।

43. खाना नं. 5 का मंगल अशुभ फल दे जैसे बुरे सपने या नींद में विघ्न तो रात को सिरहाने पानी रखें और सुबह किसी पेड़ की जड़ में डाल दें (43) दिन लगातार।

44. खाना नं. 6 का मंगल अशुभ फल दे तो या तो बच्चे का जन्म दिन मनाएं मत या फिर नमकीन भोजन खिलाएं जिनमें मीठाई शामिल न हो।

45. खाना नं. 7 का मंगल बुरे प्रभाव दे तो बचने के लिए कच्चे गोरे से दिवार बनाए और शाम को गिरादें (शनि का उपचार), जब बहन बेटी घर आए तो मीठाई खिलाएं बिना मत जाने दें।

46. खाना नं. 12 का मंगल अशुभ फल दे तो खाली कपड़े या टोपी का इस्तेमाल करें। सुबह के समय चीनी घुला हुआ पानी सूर्य को अर्पित करें, मंगल, बुध व शनि की वस्तुएं मंदिर में दान करें।

47. बुध के बुरे प्रभाव को रोकने के लिए बिना जोड़ स्टील का छल्ला धारण करें। बुध + केतु का संबंध हो तो फिटकरी से दांत साफ करें। बकरी दान उत्तम उपाय है।

48. शनि खाना नं. 5 में अशुभ फल दे तो पैतृक धन में सूर्य की वस्तुएं (गुड़, पालतु बंदर चंद्रमा की वस्तु (चांदी, चावल) व मंगल की वस्तु (शहद, मूंग) स्थापित करें।

49. खाना नं. 6 का शनि अशुभ फल दें तो पानी में नारियल, अखरोट बहाएं। बच्चों की समृद्धि के लिए सांप को दुध पिलाएं। हर प्रकार के कष्ट के निवारण के लिए मिट्टी के बर्तन में सरसों का तेल भरकर पानी के नीचे दबाएं।

50. खाना नं. 7 में शनि के दुष्प्रभावों से बचने के लिए अगर शनि सोया न हो तो काली बांसुरी में चीनी/शक्कर भर कर विरान जगह दबाएं, अगर शनि सोया हो तो मिट्टी के घड़े में शहद भरकर जमीन में दबाएं।

51. राहु का कुप्रभाव को रोकने के लिए

- मानसिक शक्ति के लिए चंद्रमा का उपाय यानि चांदी धारण करें।
- सुबह सवेरे मसूर की लाल दाल किसी सफाई करने वाले को दान करें।
- बिमार आदमी के वजन के बराबर जौ बहते पानी में बहाएं।
- रात को सोते समय जौ किसी बर्तन में डालकर सिरहाने रखे और सुबह गरीबों में बांट दें।

लाल किताब और संतान सुख

लाल किताब के अनुसार संतान सुख दिलाने वाला ग्रह केतु माना जाता है।

संतान एवं परिवार के सुख के लिए निम्न उपाय करने चाहिएं :

- प्रत्येक माह परिवार के सभी सदस्यों की संख्या और घर में आने वाले मेहमानों की संख्या से अधिक रोटियां बना कर पशुओं को खिला दें।
- प्रतिदिन अपने भोजन में से तीन निवाले कुत्ते के लिए अवश्य निकाल देवें। जहां भोजन बने वहीं बैठ कर खाएं।
- संतान के जन्म से पहले किसी पात्र में दूध तथा शक्कर भर कर, गर्भवती स्त्री का हाथ लगवा कर, रख लें। संतान के जन्म के बाद इन पात्रों को धर्म स्थान में चढ़ा दें।
- गणेश जी की आराधना करनी चाहिए। गर्भवती स्त्री की दायीं भुजा में लाल धागा बांध देवें। यह धागा डेढ़ वर्ष तक बंधा रहने देवें। साथ ही गाय को प्रतिदिन रोटी खिलावें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

- रात को सोते समय सिरहाने जल से भरा पात्र रखें तथा प्रातः काल उसे पेड़–पौधों में डाल देवें।
- संतान की रक्षा के लिए सौ दिन, या अधिक समय तक घर से बाहर जाना हो, तो नदी पार करते समय जल में तांबे का पैसा डालना चाहिए।
- मीठी रोटियां बना कर कुत्तों को खिलाना चाहिए।
- कुतिया का जन्मा मात्र एक नर बच्चा घर में रखने से कुल की वृद्धि होती है।
- संतान न होने पर अपने भोजन का आधा भाग गाय को खिलावें और गाय की सेवा करें।
- संतान के उत्तम स्वास्थ्य के लिए गाय को भोजन खिलावें।

लाल किताब आधारित दोष एवं उसके उपाय

भारतीय ज्योतिष में फलकथन की अनेक पद्धतियां हैं जिनमें लाल किताब पद्धति सर्वाधिक प्रचलित है। उत्तर भारत में विशेषकर पंजाब प्रांत में लाल किताब अधिक लोकप्रिय हुई। इसमें वर्णित सहज सरल उपाय इसकी लोकप्रियता के मुख्य कारण हैं। आज की जीवन शैली में ये उपाय कुछ अजीब तो लगते हैं परंतु उपयोगी व फलदायक हैं।

वर्तमान समय में प्रचलित लाल किताब के रचयिता श्री रूपचंद जोशी हैं, जिन्होंने 1939 में फारसी में लिखी गई ज्योतिष फलकथन की एक किताब का उर्दू में अनुवाद किया और लाल किताब के नाम से छपवाया। सन् 1952 तक इसके अनेक संस्करण छपे जिनमें से कुछ मुख्य हैं– लाल किताब गुटका, लाल किताब फरमान, लाल किताब अरमान, लाल किताब लग्न कुंडली व लाल किताब वर्ष फल कुंडली। मूल उर्दू की लाल किताब में 1172 पृष्ठ हैं जिसके विभिन्न अंशों को लेकर विभिन्न लेखकों ने विभिन्न रूपों में 'लाल किताब' की रचना की है जो बाजार में उपलब्ध हैं।

लाल किताब के अनुसार सूर्य देव ही ज्योतिष के आचार्य हैं, उन्हीं से सारा ब्रह्मांड प्रकाशमय है। उनके बिना जीवन असंभव है। जीवन में आए या आने वाले कष्टों से मुक्ति के उपायों से युक्त तथा ताम्र वर्ण (लाल रंग) वाले सूर्य देव द्वारा रचित ग्रंथ को लाल किताब नाम दिया गया। इसके अनुसार ज्योतिष कोई जादू टोना नहीं है बल्कि अपने पूर्वजन्म या इस जन्म के बुरे कर्मों से मिल रहे कष्टों से मुक्ति दिलाने का माध्यम है।

लाल किताब में ग्रहों को विभिन्न संज्ञाएं दी गई हैं जैसे सोया ग्रह, जागा ग्रह, धर्मी ग्रह, अधर्मी ग्रह, अंधा ग्रह, मंदा ग्रह, नेक ग्रह, किस्मत जगाने वाला ग्रह, पक्के भाव का ग्रह, कायम ग्रह, नपुंसक ग्रह आदि। अनुवादित लाल किताब में भी अधिक शब्द उर्दू व फारसी के हैं। इनके साथ–साथ अंग्रेजी, पंजाबी व संस्कृत के शब्दों का भी उपयोग किया गया है। हिंदू देवी देवताओं व वृक्षों के नाम भी लाल किताब में मिल जाते हैं। लाल किताब में वर्ष कुंडली को विशेष महत्व दिया गया है। इसके अतिरिक्त पूर्व जन्म के ऋण व उनके उपाय भी बताए गए हैं। वहीं विभिन्न ग्रहों व राशियों की स्थितियों के अनुसार शरीर व आत्मा को मिलने वाले कष्टों को विभिन्न उपायों से दूर करने की विधि भी दी गई है।

विभिन्न ऋण व उनके उपाय

लाल किताब में वर्णित, पूर्व जन्मानुसार जातक के ऊपर विभिन्न ऋण व उनके उपाय इस प्रकार हैं।

स्वऋण– जन्मकुंडली के पंचम भाव में पापी ग्रहों के होने से स्वऋण होता है। इसके प्रभाववश जातक निर्दोष होते हुए भी दोषी माना जाता है। उसे शारीरिक कष्ट मिलता है, मुकदमे में हार होती है और कार्यों में संघर्ष करना

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

पड़ता है। इससे मुक्ति के लिए जातक को अपने सगे संबंधियों से बराबर धन लेकर उस राशि से यज्ञ करना चाहिए।

मातृ ऋण– चतुर्थ भाव में केतु होने से मातृ ऋण होता है। इस ऋण से ग्रस्त जातक को धन हानि होती है, रोग लग जाते हैं, ऋण लेना पड़ता है। प्रत्येक कार्य में असफलता मिलती है। इससे मुक्ति के लिए जातक को खून के संबंधियों से बराबर चांदी लेकर बहते पानी में बहानी चाहिए।

सगे संबंधियों का ऋण– प्रथम व अष्टम भाव में बुध व केतु हों, तो यह ऋण होता है। जातक को हानि होती है, संकट आते रहते हैं और कहीं सफलता नहीं मिलती। इससे मुक्ति के लिए परिवार के सदस्यों से बराबर धन लेकर किसी शुभ कार्य हेतु दान देना चाहिए।

बहन ऋण– तृतीय या षष्ठ भाव में चंद्र हो तो बहन ऋण होता है जिससे जातक के जीवन में आर्थिक परेशानी आती है, संघर्ष बना रहता है व सगे संबंधियों से सहायता नहीं मिलती। इससे मुक्ति के लिए जातक को परिवार के सदस्यों से बराबर पीले रंग की कौडियां लेकर उन्हें जलाकर उनकी राख को पानी में प्रवाहित करना चाहिए।

पितृ ऋण– द्वितीय, पंचम, नवम या द्वादश भाव में शुक्र, बुध या राहु हो तो पितृ ऋण होता है इस ऋण से ग्रस्त व्यक्ति को वृद्धावस्था में कष्ट मिलते हैं, धन हानि होती है और आदर सम्मान नहीं मिलता। इससे मुक्ति के लिए परिवार के सदस्यों से बराबर धन लेकर किसी शुभ कार्य के लिए दान देना चाहिए।

स्त्री ऋण– द्वितीय या सप्तम भाव में सूर्य, चंद्र या राहु हो तो स्त्री ऋण होता है। इस ऋण के फलस्वरूप जातक को अनेक दुख मिलते हैं और उसके शुभ कार्यों में विघ्न आता है। इससे मुक्ति के लिए परिवार के सदस्यों से बराबर धन लेकर गायों को भोजन कराना चाहिए।

असहाय का ऋण– दशम व एकादश भाव में सूर्य, चंद्र या मंगल हो तो यह ऋण होता है। इस ऋण से ग्रस्त जातक को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उसकी उन्नति में बाधाएं आती हैं और हर काम में असफलता मिलती है। इससे मुक्ति के लिए परिवार के सभी सदस्यों से बराबर धन लेकर मजदूरों को भोजन कराना चाहिए।

अजन्मे का ऋण– द्वादश भाव में सूर्य, शुक्र या मंगल हो तो अजन्मे का ऋण होता है जो जातक इस ऋण से ग्रस्त होता है उसे जेल जाना पड़ता है, चारों तरफ से हार मिलती है और शारीरिक चोट पहुंचती है। इससे मुक्ति के लिए परिवार के सदस्यों से एक–एक नारियल लेकर जल में बहाना चाहिए।

ईश्वरीय ऋण– षष्ठ भाव में चंद्र या मंगल हो तो ईश्वरीय ऋण होता है। इस ऋण के फलस्वरूप जातक का परिवार नष्ट होता है, धन हानि होती है और बंधु बांधव विश्वासघात करते मिलते हैं इसके लिए परिवार के सदस्यों से बराबर धन लेकर कुत्तों को भोजन कराना चाहिए।

रिश्तेदारों से ग्रहों के उपाय

लाल किताब में किसी खराब ग्रह को शुभ करने के लिए उस ग्रह से संबंधित रिश्तेदार की सेवा करना व उसका आशीर्वाद लेना ऐसा करने से वह खराब ग्रह अपने आप ठीक होने लगता है। उदाहरणस्वरूप खराब सूर्य को ठीक करने के लिए जातक स्वयं राजा, पिता या सरकारी कर्मचारी की सेवा करे और उनका आर्शीवाद ले। ग्रहों से संबंधित रिश्तेदार इस प्रकार हैं–

सूर्य– राजा, पिता या सरकारी कर्मचारी।

चंद्र– माता, सास या बुजुर्ग स्त्री।

मंगल– भाई, साले या मित्र।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

बुध– बहन, बेटी या नौ वर्ष से कम आयु की कन्याएं।
गुरु– कुल पुरोहित, पिता या बुजुर्ग व्यक्ति।
शुक्र– पत्नी या कोई अन्य स्त्री।
शनि– नौकर, मजदूर या ताया।
राहु– ससुर या नाना।
केतु– लड़का, भतीजा या नौ वर्ष से कम आयु के लड़के।

पूजा द्वारा ग्रहों के उपाय

विभिन्न ग्रहों के दुष्प्रभाव से बचने के लिए लाल किताब के अनुसार निम्नलिखित क्रिया करनी चाहिए।

सूर्य– हरिवंश पुराण का पाठ व सूर्य देव की उपासना।
चंद्र– शिव चालीसा व सुंदर कांड का पाठ।
बुध– दुर्गा चालीसा, दुर्गा सप्तशती का पाठ।
गुरु– श्री ब्रह्मा जी की उपासना व भागवत पुराण का पाठ।
शुक्र– लक्ष्मी जी की उपासना व शराब से श्री सूक्त का पाठ।
शनि – श्री भैरव जी की उपासना व शराब से परहेज
राहु– सरस्वती जी की उपासना।
केतु– श्री गणेश जी की उपासना।

दान द्वारा ग्रहों के उपाय

लाल किताब के अनुसार खराब ग्रहों के दुष्प्रभावों से मुक्ति के लिए निम्न वस्तुओं का दान करना चाहिए।

सूर्य– तांबा, गेहूं व गुड़।
चंद्र– चावल, दूध, चांदी या मोती।
मंगल– मूंगा, मसूर दाल, खांड, सौंफ।
बुध– हरी घास, साबुत मूंग, पालक।
गुरु– केसर, हल्दी, सोना, चने की दाल का दान।
शुक्र– दही, खीर, ज्वार या सुंगधित वस्तु।
शनि– साबुत उड़द, लोहा, तेल या तिल ।
राहु– सिक्का, जौ या सरसों।
केतु– केला, तिल या काला कंबल।

ग्रहों के अन्य उपाय

उपरोक्त उपायों के अतिरिक्त ग्रहों के दुष्प्रभावों के और भी अनेक सामान्य उपाय जिनका विवरण यहां प्रस्तुत है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

सूर्य– बहते पानी में गुड़ बहाएं, प्रत्येक कार्य मीठा खा कर व जल पी कर करें, सूर्यकाल में संभोग न करें, कुल रीति रिवाजों को मानें, सूर्य की वस्तुएं बाजरा आदि मुफ्त में न लें, अंधों को भिक्षा दें, पीतल के बर्तनों का उपयोग करें और सफेद टोपी पहनें।

चंद्र– चांदी के बर्तन में दूध या पानी पीएं, सोने को आग में लाल कर दूध से बुझाएं व दूध पीएं, चारपाई के पायों पर तांबे की कील गाड़ें, समुद्र में तांबे का पैसा डालें, शिवजी को आक के फूल चढ़ाएं, सफेद कपड़े में मिश्री व चावल बांधकर बहाएं, वटवृक्ष में पानी डालें, दूध का व्यापार न करें, श्मशान का पानी घर लाकर रखें और रात को दूध न पीएं।

मंगल– बुआ या बहन को लाल कपड़े दें, भाई की सहायता करें, रेवड़ियां बताशे पानी में बहाएं, आग से संबंधित काम करें, मीठी तंदूरी रोटी कुत्ते को डालें, तीन धातुओं की अंगूठी पहनें, चांदी गले में पहनें, मसूर की दाल पानी में बहाएं, नीम का पेड़ लगाएं, रोटी पकाने से पहले तवे पर पानी के छींटे दें, जंग लगा हथियार घर में न रखें, काने, गंजे या काले व्यक्ति से दूर रहें, और दूध वाला हलवा खाएं।

बुध– नाक छेदन न करें, तांबे का पैसा गले में डालें, कच्चा घड़ा जल में बहाएं, चांदी व सोने की जंजीर पहनें, किसी साधु से ताबीज न लें, मिट्टी के बर्तन को शहद से भर कर वीराने में दबाएं, पक्षियों की सेवा करें, गाय को हरी घास दें, बार–बार न थूकें, वर्षा का पानी छत पर रखें, साली को साथ न रखें, साझा काम न करें और ढाक के पत्तों को दूध से धोकर वीराने में दबाएं।

गुरु– मंदिर में 43 दिनों तक बादाम अर्पित करें, गंधक जल में बहायें, केसर पानी में बहाएं, नीले कपड़े में चना बांध कर मंदिर में दें, वायदा निभाएं, ईर्ष्या से बचें, पीपल न काटें, हल्दी व केसर का तिलक करें, पत्नी से गुरु का व्रत रखवाएं, परस्त्री गमन न करें।

शुक्र– गंदे नाले में 43 दिनों तक नीला फूल डालें, स्त्री का सम्मान करें, प्रेम व ऐयाशी से दूर रहें, किसी की जमानत न दें और कांसे के बर्तन का दान दें।

शनि– तेल या शराब 43 दिनों तक प्रातःकाल धरती पर गिराएं, कौओं को रोटी डालें, शराब व मांस का सेवन न करें, लोहे का दान दें, सुनसान जगह पर सुरमा दबाएं, वे चिमटे या अंगीठी का दान दें।

राहु– बहते पानी में नारियल बहाएं, हाथी के पांव की मिट्टी कुएं में डालें, संयुक्त परिवार में रहें, पत्नी के साथ फिर फेरे लें, रसोई में बैठकर खाना खाएं, ससुराल से संबंध न बिगाड़ें, भाई बहन का बुरा न करें, सिर पर चोटी रखें और रात को तकिये के नीचे सौंफ व चीनी रखें।

केतु– केसर का तिलक लगाएं, कुत्ता पालें, तिल का दान करें, परस्त्री गमन न करें, मकान की नींव में शहद दबाएं, काला व सफेद कंबल मंदिर में दान दें, पैरों के अंगूठों में चांदी पहनें, चाल–चलन ठीक रखें, गले में सोना पहनें, बायें हाथ में सोने की अंगूठी पहनें।

उपायों से पूर्व उपाय

विभिन्न ग्रहों के विभिन्न उपाय करने से पहले निम्नलिखित उपाय अवश्य करें। शाकाहारी भोजन करें, विधवाओं और अतिथियों की सेवा करें, माता पिता का आदर करें, किसी को अपशब्द न कहें, दिन में संभोग न करें, देवी देवताओं की पूजा करें, ससुराल के सदस्यों का सम्मान करें, शराब न पीएं, टूटे बर्तन घर में न रखें, घर में एक कच्ची जगह अवश्य रखें, प्रतिदिन बड़ों से आर्शीर्वाद लें और परस्त्री गमन न करें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

कुछ विशेष उपाय

- बच्चे के सुरक्षित पैदाइश के लिए जौ का पानी बोतल में भरकर पास रख लें।
- सुखी प्रसव हेतु व गर्भपात से बचने के लिए अपने भोजन का एक हिस्सा निकालकर कुत्ते को दें।
- बार–बार गर्भपात होता हो, तो गर्भवती स्त्री के बाजू पर लाल धागा बांध दें।
- बेटे से संबंध सुधारने के लिए काले सफेद कंबल मंदिर में दें।

कुछ विशेष सावधानियां

- सूर्य भाव 7 या भाव 8 का हो तो सुबह व शाम को दान न करें।
- चंद्र यदि भाव 6 का हो तो दूध या पानी दान न करें और यदि भाव 12 का हो तो साधु या महात्मा को खाना न दें और बच्चों को निःशुल्क शिक्षा न दिलाएं।
- गुरु यदि भाव 7 का हो तो मंदिर के पुजारी को वस्त्र दान न करें और यदि 10 का हो तो मंदिर न बनवाएं।
- शुक्र यदि भाव 9 का हो तो भिखारी को पैसा न दें और यदि 8 का हो तो सराय या धर्मशाला न बनवाएं।

ग्रहों के शुभ प्रभावों को बढ़ाने के उपाय

- इसके लिए संबद्ध ग्रह की वस्तु स्वयं किसी अन्य को न देनी चाहिए, वरन् उस वस्तु को उसके कारक से लेकर अपने पास रखना चाहिए। जैसे शुभ चंद्र को बलवान करने के लिए माता (चंद्र) के हाथ से चांदी की वस्तु (चंद्र की वस्तु) को लेकर अपने पास रखना चाहिए।

ग्रहों के अशुभ प्रभावों को दूर करने के उपाय

- किसी कष्टकारी ग्रह की वस्तु को पृथ्वी में गाड़ कर उस ग्रह के दोष को दूर करना।

  जैसे यदि अशुभ शनि षष्ठ भाव (पाताल) में स्थिति होकर अत्यंत कष्टकारी हो तो शनि की वस्तु सरसों के तेल को मिट्टी के बर्तन (बुध–षष्ठ राशीश) में भरकर और उसका ढक्कन अच्छी तरह बंद कर, किसी तालाब के किनारे (शुक्र स्थान, जो शनि का मित्र है) गाड़ देने से शनि शांत हो जाता है और इस तरह कष्टों का निवारण हो जाता है।
- थोड़े अशुभ प्रभावों को दूर करने के लिए संबद्ध ग्रह से संबंधित वस्तु को चलते पानी में बहाना, अर्थात् कष्टों को दूर करना।

  जैसे यदि राहु अष्टम भाव (शमशान) में अचानक बाधाएं दे रहा हो तो सीसा धातु (राहु) के 100 ग्राम वजन के आठ टुकड़े (शनि अष्टम भाव का कारक ग्रह) – प्रतिदिन एक टुकड़ा बहते पानी में प्रवाहित करने से राहु जनित पीड़ा की शांति होती है।
- थोड़ा शुभ और थोड़ा अशुभकारी ग्रह को पूर्ण शुभकारी बनाने के लिए उसके मित्र ग्रह को प्रसन्न कर उसकी सहायता लेना

  जैसे यदि षष्ठ भाव (पाताल) में केतु बुरा फल दे रहा हो तो जातक को छोटी उंगली (बुध) में सोने (बृहस्पति)

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

की अंगूठी (बुध) पहनने से षष्ठ राशीश बुध और बृहस्पति (केतु के गुरु) प्रसन्न होकर केतु पर अंकुश रखते हैं।

- थोड़े अशुभ ग्रह के प्रभाव को खत्म करने के लिए उस ग्रह के परम शत्रु की वस्तु अपने पास रखना।

  जैसे अष्टम भाव स्थित मंगल के थोड़े अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए हाथी दांत (राहु–मंगल का शत्रु) की कोई वस्तु अपने पास रखनी चाहिए।
- किसी शुभ ग्रह की अशुभता दूर करने के लिए संबंधित वस्तु को उसके दूसरे कारक को अर्पित करना।

  जैसे बृहस्पति की अशुभता दूर करने के लिए चने की कच्ची दाल (बृहस्पति की वस्तु) मंदिर (धर्म स्थान–बृहस्पति) में चढ़ानी चाहिए। परंतु मंदिर में कोई वस्तु चढ़ाने से पहले यह देख लेना आवश्यक है कि कुंडली के दूसरे भाव (धर्म स्थान) में उस ग्रह का शत्रु स्थित न हो, अन्यथा नुकसान होगा।
- ग्रह के इष्ट देव की आराधना करना। जैसे यदि षष्ठ भाव (पाताल) स्थित राहु समझ न आने वाला रोग दे रहा हो तो नीले फूलों (राहु की वस्तु) से देवी सरस्वती (राहु की इष्ट देवी) की पूजा आराधना करनी चाहिए, इससे रोग से छुटकारा मिलता है।
- दो अशुभ ग्रहों का झगड़ा मिटाने के लिए उनके मित्र ग्रह को उनके बीच में स्थापित करना।

  जैसे शनि और सूर्य (विपरीत स्वभावी ग्रह) षष्ठ भाव (पाताल) में स्थित होकर अशुभ प्रभाव डालते हों, तो उनके साथ में बुध को (जो सूर्य और शनि दोनों का मित्र है) स्थापित करने के लिए घर में फूलों वाले पौधे (बुध की वस्तु) लगाने चाहिए।

उपाय के लिए विशेष नियम

- ग्रहों के दुष्प्रभाव शीघ्र दूर करने के लिए 43 दिन तक प्रतिदिन उपाय करने चाहिए। यदि बीच में प्रयोग खंडित हो जाए तो फिर से शुरू करें।
- ये उपाय दिन के समय करने चाहिए।
- एक दिन में केवल एक ही उपाय करना चाहिए।
- जातक के असमर्थ होने पर खून के रिश्ते वाला कोई व्यक्ति उसके नाम से यह उपाय कर सकता है।

क्या नहीं करें

- सूर्य ग्रह कुंडली में बलवान होने पर– जातक को सूर्य की वस्तुएं सोना, गेहूं, गुड़ व तांबे का दान नहीं करना चाहिए अन्यथा सूर्य निर्बल हो जायेगा।
- चंद्र बलवान होने पर– चांदी, मोती, चावल आदि (चंद्र की वस्तुएं) उपहार या दान में नहीं देने चाहिए।
- मंगल बलवान होने पर– मिठाई, गुड़, शहद आदि मंगल की वस्तुएं दूसरों को न तो देने चाहिए न ही खिलाने चाहिए।
- बुध बलवान होने पर– कलम का उपहार नहीं देना चाहिए।
- बृहस्पति बलवान होन पर– पुस्तकों का उपहार नहीं देना चाहिए।
- शुक्र बलवान होने पर– सिले हुए सुंदर वस्त्र, सेंट (परफ्यूम) और आभूषण उपहार में नहीं देने चाहिए।
- शनि बलवान होने पर– शनि की वस्तु शराब दूसरों को नहीं पिलानी चाहिए।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

- राहु को बलवान करने के लिए जातक को सीसे (राहु की वस्तु) की गोली अपने पास रखनी चाहिए।
- केतु को बलवान करने के लिए कुत्ता (केतु का कारक) पालना चाहिए।

ऊपर वर्णित सरल और सुलभ उपायों का आवश्यकतानुसार श्रद्धापूर्वक पालन करने से जातक को ग्रह जनित पीड़ा से मुक्ति मिलती है और जीवन सुखमय होता है।

बृहस्पति के द्वादश भावों में शुभ–अशुभ के आम उपाय

1. बृहस्पति वार का व्रत रखना।
2. हरि पूजन करना या पीपल की पालन करना।
3. श्री विष्णु भगवान् को नमस्कार करना।
4. पुखराज पहनना, पुखराज के अभाव में हल्दी की गट्ठी पीले रंग के धागे में बांध कर दायीं भुजा पर बांधना।
5. चांदी की कटोरी में केस–/हल्दी का तिलक करना।
6. शुद्ध सोना धारण करना (बृहस्पति षष्ठ भाव को छोड़कर)।
7. नाभि (धुनी) पर केसर लगाना या केसर खाना।
8. ब्राह्मण, कुल पुरोहित या साधू की सेवा करना।
9. गरुड़ पूजा (गरुड़ पुराण) करना।
10. घर की दीवारों पर पीला रंग करना।
11. पीले फूल (गेंदा या सूरजमुखी) लगाना।
12. बृहस्पति उच्च हो तो बृहस्पति की चीज़ों का दान न देना।
13. बृहस्पति नीच हो तो बृहस्पति की चीज़ों का दान न लेना।

नोट – उपरोक्त उपाय 43 दिन या सप्ताह या माह लगातार करने चाहिए।

सूर्य के द्वादश भावों में शुभ–अशुभ के आम उपाय

1. रविवार का व्रत रखना।
2. हरिवंश पुराण की कथा करना या सुनना, सूर्य को मीठा डाल कर अर्घ्य देना।
3. गेहूं, गुड़, तांबा आदि का दान करना।
4. चाल–चलन ठीक रखना।
5. माणिक्य (लाल) धारण करना, माणिक्य के अभाव में तांबा धारण करें।
6. तांबे का पैसा चलते पानी में बहाना।
7. घर का मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर रखना।
8. घर का आंगन खुला रखना।
9. बन्दर को गुड़ और गन्दम देना या बन्दर की पालन करना।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

10. भूरी चीटिंयों को तिरचौली सांयकाल डालना (सूर्यास्त से पहले)।
11. राजकर्मियों की सेवा करना।
12. चारपाई के पायों में तांबे के कील गाड़ना।
13. ब्लैक मार्किटिंग करने वाला–स्मगलर–स्टोरियां न बनना।
14. सूर्य उच्च हो तो सूर्य की चीज़ों का दान न देना।
15. सूर्य नीच हो तो सूर्य की चीज़ों का दान न लेना।

नोट – उपरोक्त उपाय 43 दिन या सप्ताह या मास लगातार करने चाहिए।

चन्द्र के द्वादश भावों में शुभ–अशुभ के आम उपाय

1. सोमवार का व्रत रखना।
2. शिवजी की पूजन करना, अमरनाथ जी की यात्रा या पूजन करना।
3. चावल, चान्दी, दूघ आदि का दान करना।
4. सुच्चा मोती (दूध रंग) धारण करना, मोती के अभाव में चांदी धारण करना।
5. दूध का बर्तन रात को सिरहाने रख कर सुबह कीकर के वृक्ष पर डालना।
6. माता (दादी–सास–मौसी–मामी–नानी) का आशीर्वाद लेना।
7. चारपाई के पायों में चांदी के कील गाड़ना।
8. आसमानी बर्फ (ओले) शीशी में रखना या गंगा जल का प्रयोग करना।
9. श्मशान भूमि में स्थित कुएं पर कभी–कभी स्नान करना या चावल या चांदी शमशान की चारदीवारी के अंदर गिराना।
10. चलते पानी में (गंगा) स्नान करना।
11. छत पर पानी की टैंकी गोल न बनवाना या न लगाना (चौरस का वहम नहीं)।
12. घर की पानी की टैंकी को 3–6 महीने में सफाई करवाते रहना।
13. सीढ़ियों के ऊपर/सामने हैण्डपम्प न रखना।
14. घर की छत के नीचे कुआं या हैण्डपम्प न लगाना।
15. चन्द्र उच्च हो तो चन्द्र की चीज़ों का दान न देना।
16. चन्द्र नीच हो तो चन्द्र की चीज़ों का दान न लेना।

नोट– उपरोक्त उपाय 43 दिन या सप्ताह या मास लगातार करने चाहिए।

शुक्र के द्वादश भावों में शुभ–अशुभ के आम उपाय

1. शुक्रवार का व्रत करना।
2. आम लोगों की पालन करना या घर में मेहमानों को भोजन कराना।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

3. घी, दही, कर्पूर, अभ्रक, दही, आदि का धर्म मन्दिर में दान करना या जल प्रवाह करना।
4. बछड़े खाली गाय या कपिला गाय का दान करें या सेवा करना।
5. हीरा पहनना, हीरे के अभाव में सुच्चा मोती पहनना।
6. गाय का दान, चरी का दान करना।
7. स्त्री का कहना मानना, स्त्री की सेवा करना या स्त्री से झगड़ा न करना।
8. इत्र या सैंट कपड़ों पर लगाना, क्रीम–पाऊडर शरीर पर लगाना।
9. पोशाक ठीक रखना और दिन में एक–दो बार बदलना।
10 अपनी स्त्री से दो बार विवाह करना।
11. पोशाक फटी हुई या जली हुई धारण न करना।
12. शुक्र उच्च हो तो शुक्र की चीजों का दान न देना।
13. शुक्र नीच हो तो शुक्र की चीज़ों का दान न लेना।

नोट– उपरोक्त उपाय 43 दिन या सप्ताह या माह लगातार करने चाहिये।

मंगल के द्वादश भावों में शुभ–अशुभ के आम उपाय

1. मंगलवार का व्रत रखना।
2. महागायत्री का पाठ करना, हनुमान जी को सिन्दूर लगाना।
3. दाल मसूर, मूंगा, शहद या सिंदूर आदि का दान देना या जल में प्रवाह करना।
4. खाने के बाद मेहमानों को मीठा (सौंफ–चीनी या मिश्री) खिलाना।
5. मंगल अशुभ हो तो रेवड़ियां (गुड़+ तिल) जल प्रवाह करना।
6. मंगल (शुभ हो तो) मिठाई–मीठा भोजन का दान या पताशे चलते पानी में बहाना।
7. मूंगा (लाल) धारण करना, मूंगे के अभाव में तांबा धारण करें।
8. भाई की सेवा करना।
9. मृगछाला (हिरण की खाल) पर सोना।
10. जौ (अनाज) गऊ के पेशाब से धोकर लाल रुमाल (कपड़े) में बांध कर रखना।
11. वस्त्र लाल निशान लगा कर धारण करना या लाल रुमाल पास रखना।
12. चांदी शुद्ध धारण करना।
13. धरेक (ढेक) के वृक्ष, काना, काला, गंजा, निःसंतान व्यक्ति से दूर रहना।
14. मंगल उच्च की हो तो उसकी चीज़ों का दान न देना।
15. मंगल नीच या अशुभ हो तो उसकी चीज़ों का दान न लेना, निःसंतान व्यक्ति से धन–जायदाद न खरीदना या मुफ्त न लेना।

नोट– उपरोक्त उपाय 43 दिन या सप्ताह या माह लगातार करने चाहिए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

बुध के द्वादश भावों में शुभ–अशुभ के आम उपाय

1. बुधवार का व्रत करना।
2. दुर्गा पाठ करना, कन्याओं का आशीर्वाद लेना या दुर्गा तीर्थों की यात्रा करना।
3. मूंग साबुत, हरी चीज़ें दान देना या जल प्रवाह करना।
4. रेडियों, टेलीविजन, घड़ियां, मीटर, टाईप राइटर, कैलकुलेटर, गाने–बजाने के यन्त्र आदि ठीक रखना।
5. तांबे के पैसे में सुराख करके चलते पानी में बहाना।
6. पन्ना धारण करना, पन्ने के अभाव में कलाई (धातु) धारण करें।
7. बकरी, तोते की सेवा करना।
8. हरा रंग निषेध और नाक 96 घण्टा छेदन करना।
9. लड़की–बहन–बुआ–मौसी–साली की सेवा करें या उनका आशीर्वाद लेना।
10. तड़ागी या बैल्ट बांधना।
11. पीली कौडियों को जला कर चलते पानी में बहाना।
12. हिजड़ों को हरी चूड़ियां, हरे रंग के कपड़े आदि देना।
13. घर में जल–भभूती, धागे–ताबीज न रखना, दुनियाबी साधू–महात्मा की तस्वीर घर में न लगाना, धार्मिक गन्थ बन्द करके न रखना।
14. बुध उच्च हो तो बुध की चीज़ों का दान न देना।
15. बुध नीच हो तो बुध की चीज़ों का दान न लेना।

नोट– उपरोक्त उपाय 43 दिन या सप्ताह या माह लगातार करने चाहिए।

शनि के द्वादश भावों में शुभ–अशुभ के आम उपाय

1. शनिवार का व्रत करना।
2. राजा की सेवा करना या उसका हुक्म मानना, भैरों की स्तुति या भैरों के मन्दिर में शराब देना।
3. मांह (उड़द) चमड़े (वैल्ट, पर्स, जूता आदि), लोहे का सामान (तवा, चिमटा आदि) दान देना या जल प्रवाह करना।
4. काली भैंस की पालन करें या सांप को दूध पिलाना।
5. तेल शराब का दान करना या झूठ न बोलना।
6. शराब न पीना, मांस और मछली न खाना।
7. नीलम धारण करना। नीलम के अभाव में किश्ती के कील की अंगूठी या काले घोड़े की नाल की अंगूठी ध ारण करना।
8. ताया–चाचा की सेवा करना और उनका आशीर्वाद लेना।
9. काले कीड़ों को तिरचौली सांय काल डालना।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

10. रोटी पर सरसों का तेल लगा कर कुत्ते और कौवे को देना।
11. मज़दूर व्यक्ति की मेहनत न रखना।
12. शनि नीच हो तो शनि की चीज़ों का दान न लेना।
13. शनि उच्च हो तो शनि की चीज़ों का दान न देना।

नोट– उपरोक्त उपाय 43 दिन या सप्ताह या माह लगातार करने चाहिए।

राहु के द्वादश भावों में शुभ–अशुभ के आम उपाय

1. सरस्वती वंदना या आराधना करें।
2. दहेज में बिजली का सामान, नीले रंग के कपड़े, स्टील के बर्तन न लेना।
3. कन्यादान करना (बहन–लड़की के विवाह में या वैसे ही किसी लड़की के विवाह में)
4. सरसों, नीलम, तम्बाकू दान देना।
5. स्टील के बर्तन (बिना इस्तेमाल किए) बन्द न रखना, नीला कपड़ा या नीलम न पहनना।
6. मूली का दान करना, कच्चे कोयले जल प्रवाह करना या जौ का तुला दान करना।
7. गोमेदक धारण करना। गोमेदक के अभाव में सिक्का धारण करना।
8. झूठी गवाही न देना, गवन न करना, ससुराल से अच्छे संबंध रखना।
9. परिवार से अलग न रहना या परिवार में मुखिया न बनना।
10. पक्षियों को सतानाज सूर्योदय के बाद डालना।
11. तम्बाकू का इस्तेमाल न करना।
12. घर में या आंगन में धुआं (गोबर, लकड़ी आदि न जलाना) न करना।
13. रसोई में (चिमनी) धुंआदानी न रखना।
14. झूठी गवाही न देना या झूठ न बोलना।
15. राहु उच्च हो तो राहु की चीज़ों का दान न देना।
16. राहु नीच हो तो राहु की चीज़ों का दान न लेना।

नोट– उपरोक्त उपाय 43 दिन या सप्ताह या माह लगातार करने चाहिए।

केतु के द्वादश भावों में शुभ–अशुभ के आम उपाय

1. गणेश पुजा या गणेश चतुर्थी का व्रत करना, दहेज़ में दो चारपाईयां (पलंग) और सोने की अंगूठी जरूर लेना।
2. कपिला गाय का दान देना या सेवा करना, गौशाला में चारा आदि देना।
3. तिल, नींबू, केला आदि दान देना या जल प्रवाह करना।
4. नवार–सुतड़ी (चारपाई बुनाने के लिए) पड़ी हो तो उसकी चारपाई बुनवा लें या खोलकर जल प्रवाह कर दे।
5. कुत्ते (काले–सफेद) को भोजन का हिस्सा देना या कुत्ता (काला–सफेद) पालना।
6. दोरंगा पत्थर या होलदरी पहनना।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

7. चाल–चलन ठीक रखना।
8. लड़कों (9 वर्ष से छोटे) की सेवा करना।
9. खटाई वाली चीज़ें (नींबू, इमली या गोल गप्पे) कन्याओं (9 वर्ष से छोटी) को खिलाना।
10. काला–सफेद कम्बल का धर्म स्थान में संकल्प दान देना या काले–सफेद कम्बल का टुकड़ा शमशान में दबाना।
11. काले और सफेद तिल जल प्रवाह करना।
12. नपुंसकता के समय सोने का कुश्ता, चांदी का कुश्ता, फौलाद का कुश्ता, वंग भस्म, मछली का तेल या तिला आदि बाजीकरण औषधियों का प्रयोग करना किसी वैद्य की सलाह से।
13. केतु उच्च हो तो राहु की चीज़ों का दान न देना।
14. केतु नीच हो तो राहु की चीज़ों का दान न लेना।

नोट– उपरोक्त उपाय 43 दिन या सप्ताह या माह लगातार करने चाहिए।

कालसर्पदोष से मुक्ति के लिए लाल किताब के अचूक उपाय

कालसर्प का संबंध पितृ दोष से है। इस योग से प्रभावित व्यक्ति का जीवन तनावपूर्ण और संघर्षमय रहता है। उसके कार्यों में बाधाएं आती रहती हैं। उसके विवाह और विवाहित होने की स्थिति में संतानोत्पत्ति में विलंब होता है। इसके अतिरिक्त शिक्षा में बाधा, दाम्पत्य जीवन कलह, मानसिक अशांति, रोग, धनाभाव, प्रगति में रुकावट आदि की संभावना रहती है।

कुंडली के जिस भाव से कालसर्प की सृष्टि होती है, उस भाव से संबंधित कष्टों की प्रबल संभावना रहती है। ज्योतिष की अन्य विधाओं की भांति लाल किताब में भी कालसर्प दोष के शमन के कुछ उपाय बताए गए हैं जिनका भावानुसार संक्षिप्त विवरण यहां प्रस्तुत है।

प्रथम भाव में राहु और सप्तम भाव में केतु हो तो

- अपने वजन के बराबर जौ या गेहूं अथवा कोई अन्य खाद्यान्न बहते जल में प्रवाहित करें।
- किसी भी प्रकार का राजकीय कोप होने पर अपने वजन के बराबर कोयला बहते जल में में प्रवाहित करें।
- बीमार होने की स्थिति में मसूर की दाल और एक सिक्का 3 दिन तक प्रतिदिन भंगी को दें।
- धन की प्राप्ति के लिए बिल्ली की जेर कपड़े में बांधकर घर में रखें।
- चांदी की चेन धारण करें।
- बहते पानी में नारियल प्रवाहित करें।

द्वितीय में राहु और अष्टम में केतु हो तो

- चांदी की डिबिया में सोने या चांदी की ठोस गोली केसर के साथ सदैव अपने पास रखें।
- हाथी के पैरों की मिट्टी कुएं में गिराएं।
- धार्मिक स्थान में केसर और चंदन दान करें। साथ ही प्रत्येक धर्म स्थल में यथासमय यथा योग्य सेवा अर्चना करते रहें।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

- कानों में सोना पहनें।

तृतीय भाव में राहु और नवम भाव में केतु हो तो–

- घर में हाथी का दांत और सोने का टुकड़ा रखें।
- बुद्धिजीवी वर्ग का सदैव आदर करें।
- कुत्ता पालें। यदि वह मर जाए या भाग जाए तो दूसरा ले आएं।

चतुर्थ भाव में राहु और दशम भाव में कितु हो तो–

- घर में चांदी की डिबिया में शहद भरकर रखना चाहिए।
- चांदी धारण करें।
- कोई नया कार्य या रुका पड़ा कार्य संपन्न करने से पहले 400 ग्राम साबुत धनिया एवं 400 ग्राम बादाम बहते जल में प्रवाहित करें।
- मकान की केवल छत कभी न बदलें। बदलना हो, तो पूरा घर पुनः बनवाएं।

पंचम में राहु और एकादश में केतु हो तो–

- चांदी का हाथी बनाकर घर में रखें।
- शराब और मांस से दूर रहें।
- रात के समय पत्नी के सिराहने में पांच मूलियां रखें और प्रातः उठकर उन्हें मंदिर में दान करें।
- किसी कार्य हेतु घर से निकलने से पूर्व सोने को गर्म कर दूध में बुझाएं और उसमें केसर मिलाकर पीएं।
- केसर का तिलक करें।

षष्ठ में राहु और द्वादश भाव में केतु हो तो–

- मां सरस्वती की मूर्ति घर में रखें और उस पर नित्य नीले रंग के फूल चढ़ाएं (कम से कम छः दिन नियमित)।
- हमेशा कुत्ता पालें। यदि मर जाए या भाग जाए, तो दूसरा पालें।
- बहते पानी में मूंग प्रवाहित करें।

सप्तम में राहु और लग्न में केतु हो तो–

- चांदी की ईंट बनवाकर घर में रखें।
- शनिवार को 105 बादाम या 7 नारियल बहते जल में प्रवाहित करें।
- संयम बरतें, विवाहेतर संबंध से बचें।

अष्टम में राहु और द्वितीय में केतु हो तो–

- चांदी का चौकोर टुकड़ा हमेशा अपनी जेब में रखें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

- व्यापार ठप होने की स्थिति में 43 दिन तक खोटे सिक्के बहते पानी में बहाएं ।
- प्रतिदिन घर से निकलते समय केसर या हल्दी का तिलक करें।

नवम में राहु और तृतीय में केतु हो तो–

- कुत्ता पालें।
- घर का मुखिया न बनें।
- सिर पर चोटी रखें और तिलक लगाएं।
- बहते पानी में चावल एवं गुड़ प्रवाहित किया करें।
- भाइयों से विवाद न करें।

दशम में राहु और चतुर्थ में केतु हो तो–

- नीले, काले रंग की टोपी या पगड़ी पहनें।
- मसूर की दाल या गुड़ बहते जल में प्रवाहित करें।
- प्रतिकूल घटनाओं से बचने के लिए बहते पानी में नींबू प्रवाहित करें।
- दूध में गर्म सोना बुझाकर पीने से लाभ होगा।
- कानों में सोना धारण करें।

एकादश में राहु और पंचम में केतु हो तो–

- ब्राह्मणों को सोना व पीले वस्त्र दान करें और स्वयं तिलक करें।
- गुड़, चावल, दूध आदि बहते पानी में प्रवाहित करें।
- चांदी के गिलास में पानी पीया करें।
- गुरुवार को पीले कपड़े में चने या चने की दाल बांधकर दान करें तथा उस दिन लहसुन और प्याज का सेवन न करें।

द्वादश में राहु और षष्ठ में केतु हो तो–

- योगासन करते रहें।
- रात को सोते समय लाल कपड़े में सौंफ और मिश्री बांधकर सिरहाने में रखें।
- भोजन रसोई घर में बैठकर करें।
- सोने की अंगूठी धारण करें।
- दूध में केसर मिलाकर या सोना बुझाकर पीएं।

कुंडली में जिस भाव से पूर्ण या आंशिक कालसर्प योग बन रहा हो उसी के अनुरूप उक्त उपाय करने चाहिए।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

अध्याय–17

व्रत के नियम, विधान एवं महत्व

व्रत शब्द के विविध अर्थ होते हैं जैसे – आज्ञापालन, धार्मिक कर्तव्य, देवता की उपासना, नैतिक आचरण, विधियुक्त प्रतिज्ञा, अंगीकृत कार्य इत्यादि। ऋग्वेद में व्रत शब्द का अर्थ है – ईश्वरीय आज्ञा।

''व्रतं हि कर्तृसंतापातय इत्यभिधीयते इन्द्रिय ग्राम नियमन्नियक्षाभिधीयते''

वस्तुतः व्रत, पर्व, उत्सव आदि प्रभु की समीपता प्राप्त करने के साधन हैं। लोग समय–समय पर ऐसे अनुष्ठान आदि करते हैं, जिनसे सबल आत्मविश्वास एवं दिशा प्राप्त होती है।

व्रत शब्द की उत्पत्ति वृ (वृत्त वरणे अर्थात वरण करना या चुनना) से मानी गई है, जिसका अर्थ है– 'संकल्प, आदेश, विधि, निर्दिष्ट, व्यवस्था, वशता, आज्ञाकारिता, सेवा, स्वामित्व, व्यवस्था, निर्धारित उत्तराधिकार, वृत्ति, आचारिक कर्म, प्रवृत्ति में संलग्नता रीति, धार्मिक कार्य, उपासना, कर्तव्य, अनुष्ठान, धार्मिक तपस्या, उत्तम कार्य आदि। वृत से ही व्रत की उत्पत्ति मानी गई है। ऋग्वेद में 'वृत' शब्द का प्रयोग इस प्रकार हुआ है–

'सर्वभानोरध यदिन्द्र माया अवो दिवो वर्तमाना अवाहन। रथं वामनुगायसं य दूषा वर्तते सह। न चक्रमभि बाधते नीचा वर्तन्त उपरि स्फुरन्त्यहस्तासो हस्तवंते सहन्ते।'

भक्तजनों की मान्यता है कि देवों ने कुछ अनुशासन अथवा आदेश निर्धारित किए हैं, जिनका वे स्वयं तथा अन्य जीवगण अनुसरण करते हैं। इससे विधि–विधान या कानून का भाव स्पष्ट हो जाता है। जब लोग ऐसा विश्वास करते हैं या अनुभव करते हैं कि उन्हें कुछ कर्म देवों द्वारा निर्धारित समझकर करने चाहिए, तब वे उपासना करते हैं जिससे पुनीत संकल्प या धार्मिक आचार एवं कर्तव्य के भाव की सृष्टि होती है। इसीलिए लोग देवों के अनुग्रह की प्राप्ति के लिए अपने आचरण या भोजन को नियंत्रित करके उपवास करते हैं। व्रत को दैवी आदेश या आचरण संबंधी नैतिक विधियों के अर्थ में लिया गया है। ऋग्वेद में कहा गया है कि 'इंद्र के सहायक मित्र विष्णु के कर्मों को देखो जिनके द्वारा वह अपने व्रतों अर्थात् आदेशों की रक्षा करता है–

'विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे इंद्रस्य युज्यः सखा।।'

यह उदाहरण अथर्ववेद और वाजसनेयी संहिता में भी आया है– **व्रतमुपैष्यन् ब्रूयादग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामीति।।**

शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है– ''व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो विश्वाहा सुमना दीदिहीह।''

वैदिक संहिताओं में कहीं–कहीं व्रत को किसी धार्मिक कृत्य या संकल्प संलग्न व्यक्ति के लिए व्यवस्थित किया गया है। ब्राह्मण उपनिषदों में बहुधा अधिक स्थलों पर व्रत का दो अर्थों में प्रयोग हुआ है– एक धार्मिक कृत्य या संकल्प तथा आचरण एवं भोजन संबंधी रोक और दूसरा उपवास करते समय भक्ष्य अभक्ष्य भोजन के संदर्भ में। प्राचीन काल में लोगों में एक मान्यता थी कि देवतागण वैसे किसी व्यक्ति की हवि नहीं ग्रहण करते जो व्रत का पालन नही करता है। अतः वह उपवास करता है ताकि देवतागण प्रसन्न रहें और उसके यज्ञ कर्म में भाग लें।

यदि देखा जाए तो सभी धर्मों में संकल्पों एवं व्रतों की व्यवस्था है। जैमिनी ने व्रत को एक मानस क्रिया बताया है, जो प्रतिज्ञा के रूप में होती है। अग्नि पुराण ने व्यवस्था दी है कि शास्त्र द्वारा घोषित नियम ही व्रत है। इसी को तप भी कहा गया है, क्योंकि इसमें कठिनाई सहते हुए नियम का पालन करना पड़ता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

शास्त्रोदिति हि नियमो व्रतं तच्च तपो मतम्/नियमस्तु विशेषास्तु व्रतस्यैव दमादयः/व्रतं हि कर्तृसन्तापात्तम इत्याभिधीयते/ इंद्रियग्रम निमन्नियश्चाभिधीयते।

धर्मसिंधु ने व्रत को पूजा आदि से संबंधित धार्मिक कृत्य माना है। अग्निपुराण में कहा गया है कि व्रत करने वालों को प्रतिदिन स्नान करना चाहिए, अल्पाहार करना चाहिए और देवों का सम्मान करना चाहिए। इसमें होम एवं पूजा में अंतर माना गया है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में व्यवस्था है कि जो व्रत–उपवास करता है, उसे इष्टदेव के मंत्रों का मौन जप करना चाहिए, उनका ध्यान करना चाहिए, उनकी कथाएं सुननी चाहिए और उनकी पूजा करनी चाहिए। इसमें होम, योग एवं दान के महत्व को समझाया गया है। व्रतों में कम प्रयास से अधिक फलों की प्राप्ति होती है। व्रतों में इसी लोक में रहते हुए पुण्य फल प्राप्त हो जाते हैं। व्रत कोई भी कर सकता है। व्रती में व्रत करते समय निम्नोक्त 10 गुणों का होना आवश्यक है– क्षमा, सत्य, दया, दान, शौच, इन्द्रियनिग्रह, देवपूजा, अग्निहवन, संतोष एवं अस्तेय। देवल के अनुसार ब्रह्मचर्य, शौच, सत्य एवं अमिषमर्दन नामक चार गुण होने चाहिए। व्रत के दिन मधुर वाणी का प्रयोग करना चाहिए। पतित, पाखंडी तथा नास्तिकों से दूर रहना चाहिए और असत्य भाषण नहीं करना चाहिए। उसे सात्विक जीवन का पालन और प्रभु का स्मरण करना चाहिए। साथ ही कल्याणकारी भावना का पालन करना चाहिए।

निष्कर्षतः सत्कर्म व्रत है। अभीष्ट कर्म करने का संकल्प व्रत है। धर्माचरण व्रत है। शास्त्रविहित नियमों का पालन करना व्रत है। इसलिए कहा गया है –'प्रियते इति व्रतम' अर्थात् जिसका वरण, ग्रहण, अनुपालन, आचरण किया जाए वही व्रत है। आर्य संस्कृति में, श्रीराम की परंपरा में व्रत का संबंध आचरण से है। बुराई को छोड़ने और सच्चाई एवं भलाई को दृढ़तापूर्वक अपनाने का नाम व्रत है।

मुख्य रूप से हमारे समाज में तीन प्रकार के व्रत प्रचलित हैं – 1. नित्य 2. नैमित्तिक और 3. काम्य।

नित्यव्रत भगवान की प्रसन्नता के लिए निरंतर कर्तव्य भाव से किए जाते हैं। किसी निमित्त से किए जाने वाले नैमित्तिक व्रत कहलाते हैं और किसी विशेष कामना हेतु किए जाने वाले काम्य व्रत कहे जाते हैं। सभी प्रकार के व्रतों में मानस व्रत अहिंसा, सत्य, अस्तेय तथा ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है।

व्रत की सफलता के सूत्र

व्रतों को नियमपूर्वक करने से व्यक्ति को जीवन में लौकिक और पारलौकिक लाभ व अनुभव प्राप्त होते हैं। वस्तुतः व्रत के प्रभाव से मनुष्य की आत्मा, बुद्धि व विचार शुद्ध होते हैं, संकल्प शक्ति बढ़ती है। शरीर के अंतःस्थल में परमात्मा के प्रति भक्ति, श्रद्धा और तल्लीनता का संचार होता है। पारिवारिक कार्यों के साथ–साथ नौकरी, व्यापार, कला–कौशल आदि का सफलतापूर्वक संपादन किया जा सकता है, इसलिए व्रत नियमपूर्वक करना चाहिए।

ध्यान रखें–

- संकल्प के बिना व्रत अधूरा है। अतः किसी कार्य विशेष के लिए, कितनी संख्या में और कब तक व्रत करना है, इसका संकल्प व्रत प्रारंभ करने के पूर्व कर लेना चाहिए।
- व्रत शुभ मुहूर्त में आरंभ करें ताकि यह निर्विघ्नतापूर्वक पूर्ण हो सके।
- व्रत के दिन क्रोध, निंदा आदि न करें। ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य रूप से करें।
- बड़े बुजुर्ग, माता–पिता व गुरुजनों के चरण छूकर उनका आशीर्वाद लें।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

- शास्त्र व पुराणोक्त विधि के अनुसार ही व्रत करें। उसमें अपनी सुख–सुविधा के लिए परिवर्तन न करें।
- व्रत के बीच में मृत्यु या जन्म का सूतक आने पर व्रत पुनः शुरू से प्रारंभ करना चाहिए।
- यदि स्त्री व्रत के बीच में रजस्वला हो जाए तो उस दिन के व्रत की संख्या न ले। ऐसे में पूजन न करें।
- व्रत पूर्ण होने पर उसका शास्त्रानुसार हवनादि के द्वारा उद्यापन किए बिना व्रत का फल नहीं मिलता।
- क्षमा, सत्य, दया, दान, शौच, इंद्रिय–निग्रह, देव पूजा, अग्नि हवन, संतोष, अस्तेय आदि का पालन करना किसी भी व्रत के लिए अनिवार्य है, ऐसा शास्त्रकारों ने कहा है।
- यदि किसी व्रत में किसी भी देवता की पूजा न हो तो अपने इष्ट देव का स्मरण करें।
- व्रत के दिन देवताओं के साथ अपने पूर्वजों व पितृगणों का स्मरण अवश्य करना चाहिए। इससे देवाशीर्वाद के साथ–साथ पूर्वजों का आशीष भी मिल जाता है और जिस कार्य के निमित्त व्रत किया जाता है, वह शीघ्रता से पूर्ण होता है।
- यदि किसी कारण व्रत बिगड़ जाए, छूट जाए या व्रत के दिन कोई शास्त्र विरुद्ध कर्म हो जाए तो पहले व्रत के लिए प्रायश्चित करें, फिर व्रतारंभ करें।
- व्रत के दिन उपवास अवश्य करें। व्रत और उपवास का वही संबंध है जो शरीर और आत्मा का है। अतः पुराणों में बताई गई विधि के अनुसार उपवास करना चाहिए।
- व्रत के दिन सात्विक आहार ही लें ताकि शरीर हल्का रहे। बासी, गरिष्ठ कब्ज बढ़ाने वाले, तले हुए, प्याज युक्त भोजन, मांस–मदिरा, अंडे, लहसुन आदि का सेवन बिल्कुल न करें।

उपवास

जब हम सोते हैं तब हृदय के अतिरिक्त शरीर के सभी अंग विश्राम करते हैं। लेकिन हमारा पेट ही विश्राम नहीं करता। विश्राम के पश्चात् स्फूर्ति प्राप्त होती है जिससे हमें अधिक काम करने का प्रोत्साहन मिलता है।

यदि हम अपने पेट को भी आराम देना शुरू कर दें तो हम हमेशा निरोग रहेंगे। इस छोटे से गुरु मंत्र से हम कितने निरोगी होंगे इसका अनुमान वही लगा सकता है जो पहले रोगी रहा हो।

वैसे तो यदि हम विभिन्न पुस्तकें पढ़ें तो देखेंगे कि हर व्रत की अपनी महिमा है। वास्तव में हमारा निजी अनुभव यह है कि व्रत का लाभ ऐसे ही सुनिश्चित है जैसे सूर्य का निकलना। लेकिन हम इसे व्रत का नाम न देकर उपवास का नाम दे रहे हैं। हमारा उद्देश्य पाचन प्रणाली को विश्राम करवाना है। यदि हमने इसको भी विश्राम देने की अच्छी आदत डाल ली तो औषधि की आवश्यकता शायद ही कभी पड़ें। उपवास करने की परंपरा भारत में इतनी ही प्राचीन है जितना भारतीयों का इतिहास। हमारे वैज्ञानिकों ने सभी प्रयोगों के पश्चात विभिन्न औषधियों का निर्माण किया था। सभी वैद्यों या डॉक्टरों को ज्योतिष की शिक्षा अनिवार्य थी। थोड़े समय पश्चात भारत में ही नहीं पूरे विश्व में ज्योतिष के वैज्ञानिक आधार पर चिकित्सा प्रारंभ हो जायेगी। हमारे शास्त्रों में विभिन्न समय पर इतने व्रत बता दिये हैं कि यदि हम उसकी सूची देखें तो व्रतों की संख्या वर्ष के दिनों की संख्या से अधिक हो जायेगी।

यहां हम उपवास की बात कर रहे हैं हमारा आधार स्वास्थ्य लाभ और व्यक्ति को निरोग करना है। अतएव व्यक्ति को प्रति सप्ताह एक दिन का उपवास अवश्य करना चाहिए। वह यदि इस उपवास को किसी देवी या देवता के नाम पर व्रत की तरह करे तो सोने पर सुहागा वाली बात चरितार्थ होगी। भारत के विभिन्न भागों में नवरात्र जो अप्रैल तथा सितंबर में आते हैं तब बहुत ही लोग व्रत करते हैं। मुसलमान रोजा रखते हैं। ये व्रत की श्रृंखला में

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

आते हैं। इसका उद्देश्य धर्म होता है। हमारा उद्देश्य निरोगता है। भोजन प्राणिमात्र के अस्तित्व के लिए आवश्यक है इसलिए उपवास प्रकृति के विपरीत प्रतीत होते हैं, परंतु वास्तव में ऐसा नहीं है। मानव शरीर पर उपवास की क्या प्रतिक्रिया होगी इसका वैज्ञानिकों ने पहले भी अनुभव किया था और अब और प्रयोगों के पश्चात उन्होंने पाया कि इसके लाभ ही लाभ हैं।

उपवास का शब्दिक अर्थ भोजन का पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से त्याग। कुछ लोग व्रत में जल भी ग्रहण नहीं करते तथा एक समय भोजन करते हैं। कितु वैज्ञानिक दृष्टि से जल का ग्रहण करना उपवास में अति आवश्यक है। पातंजलि के योग सिद्धांतों में भी उपवास की महत्ता को स्वीकारा गया है। विनोबाजी भी उपवास किया करते थे।

जो भोजन हम ग्रहण करते हैं वह सीधे हमारे शरीर का भाग नहीं बन पाते। शरीर में मुंह से लेकर मल द्वार तक एक लम्बी नली पाई जाती है। जब भोजन आहार नाल में धीरे–धीरे आगे बढ़ता है तो इसमें पाचक एंजाइम मिलते हैं। पाचक रसों के प्रभाव से भोजन के प्रमुख अंश विलेय अवस्था में आ जाते हैं। जब भोजन आहार नाल के छोटी आंत वाले भाग में पहुंचता है तो भोजन के विलेय अंश अवशोषित कर रक्त में मिला दिये जाते हैं। शेष भाग, मलाशय में मल के रूप में एकत्रित हो जाता है।

छोटी आंत की भीतरी भित्ती में विशिष्ट प्रकार की रचनाएं पाई जाती हैं जिनहें सूक्ष्मांकुर कहते हैं। भोजन के पचे हुए भाग को अवशोषित कर उसे रुधिर में मिलाने का कार्य ये ही सूक्ष्मांकुर करते हैं। जब ये वृद्ध हो जाते हैं तो कार्य क्षमता में क्षीणता आ जाती है। अंत में ये कोशिकाएं मर जाती है ं और उनके स्थान पर नई कोशिकाएं बन जाती हैं। प्रतिस्थापन की इस प्रक्रिया में शरीर को बहुत अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। उपवास के कारण जीर्ण कोशिकाओं को ही पुनः प्रभावकारी बना दिया जाता है तथा आराम मिलने के कारण आहार नाल की अवशोषण प्रक्रिया ठीक रहती है।

उपवास हमारे शरीर की एंजाइम प्रणाली को सक्रिय बनाता है। पाचन क्रिया के फलस्वरूप भोजन की अतिरिक्त मात्रा को ग्लाइकोडीन व वसा में बदल कर शरीर में एकत्रित किया जाता है। जब शरीर को भोजन नहीं मिलता तो यकृत में संग्रहीत ग्लाइकोडीन व वसा को ग्लूकोज में बदल कर शरीर की ऊर्जा आपूर्ति को बनाए रखा जा सकता है। ग्लाइकोडीन व वसा को ग्लूकोज में बदलने की क्रिया एक विशिष्ट एंजाइम तंत्र द्वारा संपन्न होती है। उपवास करते रहने पर यह सक्रिय बना रहता ळै। उपवास न करने की स्थिति में यह तंत्र धीरे–धीरे निष्क्रिय हो जाता है। उपवास के बाद प्रीनि ओप्लास्टिक कोशिकाएं नष्ट हो जाती हैं। इन कोशिकाओं को ही कैंसर कोशिकाओं में बदलने की संभावना होती है।

उपवास के समय प्रातः दूध ले सकते हैं और दिन भर पानी पीते रहें। उपवास में पानी पीना अति आवश्यक है। पानी के पीने से शरीर के अंदर के विजजातीय द्रव्य मूत्र की सहायता से बाहर निकलते रहते हैं और जिससे निरोग रहता है। इससे पाचन प्रणाली को भी आराम मिलता है।

सांयकाल फलाहार किया जा सकता है और दो या तीन फल मिलाकर लिए जा सकते हैं लेकिन फलों की मात्रा भी अधिक न हो जैसे दो केले एक संतरा या आधा सेब। इससे विजातीय द्रव्य भी बाहर निकल जाते हैं। और जो अतिरिक्त वसा हमारे शरीर में एकत्रित होती है वह भी उपवास के कारण आहिस्ता–आहिस्ता समाप्त होने लगती है जिससे शरीर धीरे–धीरे निरोग होने लगता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

व्रत एक नजर में

1.	रविवार का व्रत	स्वास्थ्य सत्ता और यश
2.	सोमवार का व्रत	सौभाग्य, मनोकामना पूर्ति
3.	सोलह सोमवार का व्रत	सौभाग्य, मनोकामना पूर्ति
4.	मंगलवार का व्रत	शक्ति, ऊर्जा व शत्रु नाश
5.	बुधवार का व्रत	शिक्षा, बुद्धि व ऐश्वर्य
6.	गुरुवार का व्रत	सम्मान, सुख समृद्धि
7.	शुक्रवार का व्रत	मनोकामना, पुत्र की दीर्घायु
8.	शनिवार का व्रत	शनि शमन
9.	प्रदोष व्रत	धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हेतु
10.	श्री सत्यनारायण व्रत कथा	मानसिक शांति, धन–वैभव, धार्मिक आस्था
11.	महाशिवरात्रि	शिव भक्ति, मन की शुद्धि व पाप नाश
12.	गरुड़ व्रत	विष्णु कृपा
13.	नव संवत्सर : प्रतिपदा	नववर्ष शुभ हो
14.	भैया दूज/यम द्वितीया	भाई के सुखी जीवन और लंबी आयु के लिऐ
15.	अक्षय तृतीया	पितरों की शांति, यश एवं कीर्ति
16.	कजली तीज	धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष
17.	गौरी तृतीया	स्त्रियों का व्रत : अखंड सौभाग्य प्राप्ति
18.	गणेश चतुर्थी	बाधा मुक्ति
19.	मनोरथ चतुर्थी	मनोकामना
20.	करवा चौथ	अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति
21.	नाग पंचमी	नाग दंश से बचाव
22.	बसंत पंचमी	उत्तम विद्या, बुद्धि व सुखी गृहस्थ जीवन
23.	ऋषि पंचमी	कायिक, वाचिक, मानसिक पापों से मुक्ति
24.	स्कंद षष्ठी	शत्रु नाश
25.	सूर्य उपासना का महापर्व छठ	संतान प्राप्ति
26.	गंगा सप्तमी	पितरों की शांति
27.	अचला सप्तमी	पाप नाश
28.	कृष्णजन्माष्टमी	कृष्ण भक्ति
29.	अहोई अष्टमी	पुत्र की दीर्घायु
30.	श्रीराधाष्टमी	सुख, समृद्धि
31.	शीतलाष्टमी	शीतला रोग के प्रकोप से मुक्ति
32.	भैरव अष्टमी	सौभाग्य प्राप्ति एवं पितरों के तर्पण के लिए
33.	महानवमी	मनोकामना
34.	श्री सीता नवमी	तप शक्ति की प्राप्ति
35.	रामनवमी	मर्यादा

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

36. दशहरा/ विजयादशमी	राम भक्ति, सर्वकार्य सिद्धि
37. पापांकुशा एकादशी	पापों पर अंकुश
38. मोक्षदा एकादशी	पाप शमन, भगवत भक्ति
39. सफला एकादशी	कार्यों की पूर्णता, मनोरथ सिद्धि
40. विजया एकादशी	मानसिक ताप शमन
41. प्रबोधिनी एकादशी	पाप नाश
42. पुत्रदा एकादशी	पुत्र प्राप्ति
43. देवशयनी एकादशी	मनोकामना, सुख समृद्धि
44. निर्जला एकादशी	आयुष्य, आरोग्य
45. मोहिनी एकादशी	शुभ, सौभाग्य प्राप्ति
46. पापमोचनी एकादशी	ब्रह्महत्या जैसे दोषों का शमन
47. षटतिला एकादशी	दारिद्रय, दुर्भाग्य नाश
48. कामदा एकादशी	पाप क्षय
49. वरुथिनी एकादशी	इहलोक व परलोक सुधारने हेतु
50. अपरा एकादशी	कायरता व पाप कर्म से मुक्ति
51. योगिनी एकादशी	गोहत्या/कुष्ठ रोग से मुक्ति
52. कामिका/पवित्र एकादशी	ब्रह्म हत्या, भ्रूण हत्या व महापापों से मुक्ति
53. ऊजा एकादशी	दैहिक कष्टों से मुक्ति/मोक्ष प्राप्ति
54. परिवर्तिनी/पद्मा एकादशी	भगवत भक्ति, मनोरथ सिद्धि
55. इंदिरा एकादशी	पितरों की शांति
56. रमा एकादशी	पाप निवारण और सौभाग्य प्राप्ति
57. दवोत्थानी एकादशी	मांगलिक कार्यों की पूर्णता व वीर पुत्रों की प्राप्ति
58. उत्पन्ना एकादशी	सात्विक भाव व कल्याण
59. जया एकादशी	दुख, दरिद्रता दूर
60. आंवल/आमलकी एकादशी	शत्रुओं पर विजय
61. परमा एकादशी	पितरों की शांति
62. पद्मिनी एकादशी	समस्त पापों का नाश
63. अनंत चतुर्दशी	कष्टों का निवारण
64. बैकुंठ चतुर्दशी	स्वर्ग प्राप्ति
65. नरक चतुर्दशी	यमराज को प्रसन्न करने हेतु
66. रूप चौदस	पापों का प्रायश्चित
67. मार्गशीर्ष पूर्णिमा	घर में सुख शांति
68. शरद पूर्णिमा	मनोकामना सिद्धि, संतान की मंगलकामना
69. गुरु पूर्णिमा	गुरु कृपा
70. वैशाख पूर्णिमा	पुण्यफल, सुख समृद्धि
71. माघ पूर्णिमा	पुण्यफल
72. फाल्गुन पूर्णिमा	पुण्य प्राप्ति

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

73.	कार्तिक पूर्णिमा	मनोवांछित फल
74.	कोकिला व्रत	स्त्रियों का व्रत : सुख, समृद्धि व श्रेष्ठ संतान
75.	शनिवासरी पौष अमावस्या	तंत्र, मंत्र, पूजा पाठ आदि के लिए उत्तम
76.	हरियाली अमावस्या	पितरों की शांति
77.	मौनी अमावस्या	पाप नाश
78.	मकर संक्रांति	कष्टों से मुक्ति/मोक्ष प्राप्ति
79.	वैशाख संक्रांति	महापुण्य फल
80.	जीवत्पुत्रिका का व्रत	पुत्र की रक्षा एवं लंबी आयु के लिए
81.	शत अपराध शमन व्रत	पाप नाश
82.	अरुन्धती व्रत	बाल वैधव्य दूर करने के लिए
83.	धनतेरस	दीर्घायु, स्वस्थ जीवन व बरकत के लिए
84.	दीपावली/लक्ष्मी पूजन	ऋद्धि–सिद्धि/धन वृद्धि
85.	गोवर्धन/अन्नकूट	कृष्ण भक्ति/गो रक्षा
86.	शारदीय नवरात्र/दुर्गा पूजन	दुर्गा आराधना/दुःख, दुर्गति, दारिद्रय व दूर्भाग्य नाश
87.	आरोग्य व्रत	आरोग्य प्राप्ति
88.	गंगा दशहरा	पाप नाश
89.	वट सावित्री व्रत	पति की मंगल कामना/अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति
90.	हरितालिका व्रत	सुयोग्य वर प्राप्ति/अखण्ड सौभाग्य
91.	कपर्दि विनायक व्रत	मनोकामना पूर्ति
92.	भीष्म पंचक	पाप नाश/पुत्र पौत्रादि की वृद्धि

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

1. रविवार व्रत

(सूर्य के समान तेज, बल एवं मान सम्मन की प्राप्ति के लिए)

यह व्रत सूर्य देव की कृपा प्राप्ति हेतु किया जाता है। सूर्य प्रकाश, आरोग्य, प्रतिष्ठादि देते हैं तथा अरिष्टों का निवारण करते हैं। नवग्रह शांति विधान में केवल सूर्योपासना से सभी ग्रह की शांति हो जाती है, क्योंकि ये नवग्रहों के राजा हैं। इस हेतु माह वैशाख, मार्गशीर्ष और माघ श्रेष्ठ हैं। इनमें से किसी भी माह के प्रथम रविवार से इस व्रत को संकल्प लेकर प्रारंभ करना चाहिए। शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से व्रत प्रारंभ किया जा सकता है। प्रत्येक माह में सूर्य के अलग–अलग नामों से व्रत–पूजन करने का विधान है।

चैत्र : इस माह के व्रत में भानु नाम से सूर्यपूजा होती है व घी, पूड़ी, मिष्टान्न, दूध आदि के भोग लगते हैं।

वैशाख : इस माह तपन नाम से सूर्यपूजा में उड़द, घी, गोबर के प्राशन व दाख का अर्घ्य दिया जाता है।

ज्येष्ठ : इसमें सूर्य की पूजा इंद्र के नाम से करते हैं। इसमें दही, सत्तू और आम का अर्घ्य देकर चावल आदि के दान का विधान है।

आषाढ़ : इस माह में सूर्य की सूर्य नाम से पूजा कर जायफल, चिउड़ा आदि का अर्घ्य देते हैं।

श्रावण : इस माह में 'गभस्ति' नाम से सत्तू, पूड़ी, फल आदि से पूजा की जाती है।

भाद्रपद : इस माह में यंत्र नाम से पूजा करते हैं तथा घी, भात, कूष्मांड़ आदि का अर्घ्य देते हैं।

अश्विन : हिरण्यरेता नाम से सूर्य की आराधना की जाती है। इसमें शर्करा, दाड़िम आदि का अर्घ्य देते हुए चावल और चीनी से पूजा करते हैं।

कार्तिक : दिवाकर नाम से सूर्य की पूजा करते हैं और खीर और केले का अर्घ्य देकर खीर का भोजन अर्पित करते हैं।

मार्गशीर्ष : इस माह में 'मित्र' नाम से सूर्य पूजा का विधान है। इसमें चावल, घी, गुड़ और नारियल का अर्घ्य दिया जाता है।

पौष : विष्णु नाम से सूर्य की उपासना करते हुए चावल, मूंग, तिल खिचड़ी, और बिजौरी का अर्घ्य देते हैं।

माघ : वरुण नाम से सूर्य की पूजा का विधान है। इसमें तिलों का अर्घ्य तथा तिल और गुड़ का प्रसाद अर्पित किया जाता है। साथ ही गुड़ के दान का भी विधान है।

फाल्गुन : पुनः भानु नाम से सूर्य की पूजा करते हुए दही और घी का नैवेद्य और जंभीरी का अर्घ्य देते हैं।

प्रातः काल स्नानोपरांत रोली या लाल चंदन, लाल पुष्प, अक्षत, दूर्वा मिश्रित जल आदि से सूर्य को अर्घ्य देना चाहिए। भोजन के पूर्व स्नान आदि से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण कर निम्न मंत्र बोलते हुए पुनः अर्घ्य दें– **नमः सहस्रांशु सर्वव्याधि विनाशन/गृहाणार्घ्यमया दत्तं संज्ञा सहितो रवि।।**

अर्घ्य देने के पूर्व 'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः' मंत्र का कम से कम पांच माला जप करना चाहिए।

2. सोमवार व्रत

(स्त्रियों का व्रत : अखंड सौभाग्य, संतान प्राप्ति एवं निर्धनता दूर करने के लिए)

चंद्रमा की शांति के लिए चंद्रमौलीश्वर भगवान शिव की पूजा का विधान सोमवार व्रत हेतु प्रशस्त माना गया है। यह व्रत सभी सोमवारों या सोलह सोमवारों अथवा श्रावण के सोमवारों को किया जा सकता है। इसे धारण करने से चंद्र की पीड़ा के साथ–साथ अन्य सभी कष्टों का भी शमन होता है। यह व्रत चैत्र, वैशाख, श्रावण, कार्तिक या मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से आरंभ करना चाहिए। जो जातक केवल श्रावण मास में पड़ने

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

वाले चार या पांच व्रत करने का संकल्प लेते हैं, उनके लिए शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार वाली शर्त लागू नहीं होती। यही तथ्य पुरुषोत्तम मास के श्रावण सोमवार व्रत में भी लागू समझना चाहिए, जिसमें 8 या 9 सोमवार उपलब्ध हो जाते हैं। चंद्र पीड़ा शमनार्थ न्यूनतम दस सोमवार व्रत करना चाहिए। इस व्रत में सूर्यास्त के बाद मीठे दही–चावल, खीर आदि का भोजन करना चाहिए। व्रत पूरे हो जाने पर पलाश की समिधा से अंतिम सोमवार को हवन करना चाहिए। व्रत वाले दिन भगवान शिव के मंदिर में सांयकाल दीप जलाना चाहिए। भोजन के पूर्व व्रत कथा करके चंद्र के बीज मंत्र 'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः' का कम से कम 3 माला जप करना चाहिए। सोमवार व्रत आरंभ करने वाले श्रद्धालुओं को व्रत वाले दिन प्रातः काल तिल मिश्रित जल से स्नान कर श्वेत चंदन का तिलक लगाना चाहिए और 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र जपते हुए नर्मदा जल, गंगाजल, बिल्व पत्र, अक्षत, कपूर, श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, पंचामृत आदि से श्री शिव–गौरी का पूजन करना चाहिए। इस व्रत से मानसिक संताप का शमन होता है, शांति मिलती है और पुत्र, धन आदि की प्राप्ति होती है। सोमवार का व्रत सभी व्रतों में श्रेष्ठ माना जाता है, क्योंकि यह महेश्वर का व्रत है।

3. सोलह सोमवार व्रत

(अखंड सौभाग्य तथा मनोवांछित फल पाने के लिए)

इस व्रत को किसी भी शुक्लपक्ष मास के सोमवार से आरंभ किया जा सकता है। उपवास आरंभ करने से पहले शिव पार्वती का स्मरण करें और संकल्प करें कि मैं सच्चे मन से विधिपूर्वक भगवान शिव और पार्वती के इस व्रत को करूंगा। शिवमहापुराण के अनुसार सोलह सोमवारों का व्रत रखने वाले भक्त को भगवान शिव और माता पार्वती की कृपा प्राप्त होती है। यह व्रत सर्वमनोकामना की प्राप्ति के निमित्त किया जाता है। इस व्रत को विधि विधान पूर्वक करने से व्रती को भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती है। हृदय में सात्विक भाव जागते हैं, बुद्धि निर्मल होती है। मनोवांछित फल प्राप्त होता है। भगवान शंकर की उपासना से व्रती की भक्ति भावना बढ़ती है। मन के कुविचारों का शमन होता है, सांसारिक आधि –व्याधियों से छुटकारा मिलता है।

4. मंगलवार व्रत

(शौर्य, साहस प्राप्ति, शत्रुओं के दमन एवं अनिष्ट निवारण हेतु)

धरणीसुत मंगलकृत अनिष्ट फलों के शमन और उन्हें प्रसन्न करने के लिए शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से शुरू किए जाने वाले व्रतानुष्ठान में अंजनी सुत हनुमान की पूजा का विशेष महत्व है। इस अनुष्ठान में कम से कम 21 मंगल व्रत रखकर अंतिम मंगलवार को खैर की लकड़ी से हवन करने का विधान है। इस दिन स्नान से पूर्व अपामार्ग के दातुन से मुंह धोएं। अनंत मूल या नागफनी मिश्रित जल से स्नान करें। भोजन में नमक न लें। गेहूं और गुड़ मिश्रित भोजन करें। मंगलवार व्रत कथा पढ़ें। हनुमान जी को लाल रंग के फल–फूल, मिष्टान्न आदि अर्पित करें और धूप, दीप, नैवेद्य, नारियल आदि चढ़ाते हुए हनुमान चालीसा या श्री हनुमानाष्टक का पाठ करें। 'ॐ अं अंगारकाय नमः,' 'श्रीरामदूताय नमः' अथवा 'ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः' मंत्र का 108 बार अथवा 540 बार जप करने से मंगल ग्रह की पीड़ा, रक्त दोष आदि दूर होते हैं, आरोग्य की प्राप्ति होती है, पुत्र सुख मिलता है, शत्रु दमन होता है, ओज की वृद्धि होती है और बुद्धि–बल बढ़ता है। मंगलवार के व्रत से केतु ग्रह जनित दोषों का शमन भी होता है। इस हेतु केतु के बीज मंत्र 'ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः' का 5 माला जप करना चाहिए। व्रत विधि पूर्ववत् ही है। व्रत वाले दिन संध्या काल या मध्य रात्रि में किसी सुपात्र को केतु से संबंधित पदार्थों का दान करना चाहिए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

5. बुधवार व्रत

(विद्या, बुद्धि, आरोग्यता, सुख–समृद्धि एवं शांति के लिए)

बुध ग्रह की शांति के लिए 7 या 17 बुधवार व्रत करना चाहिए। यह व्रत अपनी सुविधानुसार हर बुधवार को भी कर सकते हैं। इसे शुक्ल पक्षीय प्रथम बुधवार से अथवा विशाखा नक्षत्र वाले बुधवार से आरंभ कर सकते हैं। बिधारा की टहनियों या पत्तों को जल में रखकर इस दिन स्नान करना चाहिए। इस व्रत में नमक विहीन भोजन लेना चाहिए। चावल और मूंग की बनी खिचड़ी या मूंग के बने मिष्टान्न, घृत आदि का दान करना चाहिए और इन्हीं पदार्थों को भोजन के रूप में ग्रहण करना चाहिए। भोजन से पहले भगवान के चरणामृत अथवा नर्मदा या गंगाजल के साथ तीन तुलसी पत्र ग्रहण करें। मूंगिया रंग का वस्त्र धारण कर श्री लक्ष्मी–नारायण की मूर्ति या चित्र के समक्ष बैठकर गणेश जी की सामान्य पूजा करके श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। बुधवार को अपामार्ग की समिधा या लकड़ी से दधि–घृतादि के साथ हवन करना चाहिए। इस व्रत के प्रभाव से व्यापार की वृद्धि, धनैश्वर्य की प्राप्ति, सुखमय दाम्पत्य सामंजस्य, प्रगाढ़ प्रेम और विद्या–बुद्धि की प्राप्ति होती है। बुध के अशुभत्व का निवारण होता है। इस दिन तोते को पिस्ता अथवा गाय को हरी घास खिलाने से लाभ होता है। व्रत के समापन पर ब्राह्मण को हरा वस्त्र, दो हरे फल और मूंग का दान करना चाहिए। मिष्टान्न में मूंग की बर्फी, मूंग के लड्डू अथवा बादाम–पिस्ता युक्त कोई भी मिठाई ब्राह्मण को भेंट कर अथवा खिला कर आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए।

6. बृहस्पतिवार/गुरुवार व्रत

(मान–सम्मान, धन–दौलत और वैभव प्राप्ति के लिए)

कन्याओं के विवाह में आने वाली बाधाएं गुरुवार के व्रतानुष्ठान करने से दूर हो जाती हैं। इस व्रत में केले के वृक्ष को जल चढ़ाने, उसके दर्शन करने और उसकी पूजा करने का विशिष्ट महत्व है। इस व्रत से बृहस्पति ग्रह का अशुभत्व दूर होता है। इस दिन 'ॐ बृं बृहस्पतये नमः' अथवा 'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः' मंत्र का पांच माला जप करने से शुभ फल मिलता है। गुरुवार का व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार को आरंभ करना चाहिए। व्रत सोलह गुरुवार या तेरह मास तक करना चाहिए। इस दिन सूर्यास्त के पश्चात् नमकरहित पीले चने की दाल के व्यंजन या भोज्य पदार्थ ग्रहण करना चाहिए। प्रातः हल्दी मिले जल से स्नान करना चाहिए। पुनः पीला वस्त्र पहनकर बृहस्पति देवता की पूजा कर उन्हें पीत वस्त्र, पीत पुष्प–फल, पीत पकवान, मिष्टान्न आदि अर्पित करने चाहिए। अंतिम व्रत के दिन पीपल की लकड़ी से हवन करना चाहिए। सांयकाल सूर्यास्त के पश्चात् पीले चने के नमक रहित व्यंजन या भोज्य पदार्थ ग्रहण करना चाहिए। गुरुवार का व्रत करने से विवाह में आने वाली बाधा दूर होती है, दाम्पत्य सुख की अभिवृद्धि, संतान, संपत्ति, आरोग्य और ज्ञान की प्राप्ति होती है।

7. शुक्रवार व्रत

(ग्रह शांति, मनोकामना सिद्धि एवं पुत्र की दीर्घायु के लिए)

शुक्र ग्रह जनित पीड़ा से निवृत्ति हेतु शुक्रवार का व्रत किसी शुक्लपक्ष के प्रथम शुक्रवार से आरंभ कर 21 या 31 व्रत करना चाहिए। व्रत वाले दिन 'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः' मंत्र का 3 माला जप करना चाहिए। कहा जाता है कि इस दिन अजीठचूर्ण मिले जल से स्नान कर यथासंभव श्वेत वस्त्र धारण करें। फिर 'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः' मंत्र का 3 माला जप करें और शुक्रवार व्रत कथा पढ़ें। श्रीलक्ष्मी को खीर का भोग लगाएं और खीर ही खाएं। इस दिन सफेद गाय की सेवा करें और उसे भी खीर खिलाएं। अंतिम व्रत के दिन गूलर की समिधा से हवन करें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

इसके अतिरिक्त श्री लक्ष्मी जी की पूजा शक्कर, सुपारी, सफेद फूल, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, श्वेत नैवेद्य, चावल, दूध, खीर से श्री लक्ष्मी जी की पूजा करें और इन पदार्थों का कुछ अंश ब्राह्मण के लड़कों में बांट दें। साथ ही सफेद सिक्के, चांदी, श्वेत–वस्त्र, फल, खंड आदि का दान करें। सफेद गाय की सेवा करें। स्वयं भी खीर खाएं और उस गाय को भी खिलाएं। यह व्रत भौतिक सुख संपत्ति, काव्य, गायन, नृत्य आदि कलाओं में रुचि, सुखमय वैवाहिक जीवन, संतान सुखादि प्रदान करता है। इस व्रत से यश और ख्याति की प्राप्ति भी होती है। अधिकांश स्त्रियां मनोकामनापूर्ति हेतु शुक्रवार के दिन संतोषी माता और वैभव लक्ष्मी का व्रत करती हैं।

8. शनिवार का व्रत

(शनि को मनोनुकूल बनाने, बाधाएं दूर करने एवं ग्रह दशा शमन के लिए)

शनि और राहु की शांति हेतु शनिवार का व्रत सर्वमान्य है। शनि हेतु कम से कम 19 व्रत एवं राहु के लिए 18 व्रत किए जा सकते हैं। यह व्रत मनस्ताप, रोग, शोक, भय, बाधा आदि से मुक्ति एवं शनि जन्य पीड़ा के निवारण के लिए विशेष रूप से फलदायक माना जाता है। इस दिन प्रातः स्नानोपरांत कृष्ण तिल और लौंग मिश्रित जल पश्चिम की ओर मुख करके पीपल वृक्ष पर चढ़ाकर शिवोपासना या हनुमत आराधना करनी चाहिए। साथ ही शनि की लौह प्रतिमा की पूजा करनी चाहिए। फिर शनिवार व्रत कथा का पाठ करना चाहिए। उड़द के बने पदार्थ वृद्ध विप्र को भेंट करने चाहिए और स्वयं सूर्यास्त के पश्चात् भोजन ग्रहण करना चाहिए। भोजन के पूर्व शनि की शांति हेतु 'ॐ शं शनैश्चराय नमः' मंत्र का और राहु की शांति 'हेतु ॐ रां राहवे नमः' मंत्र का तीन–तीन माला जप करना चाहिए। शनि के व्रत की पूर्णाहुति हेतु शमीकाष्ठ से हवन करें। राहु के व्रत की पूर्णाहुति हेतु हवन में दूर्वा करना चाहिए।

9. प्रदोष व्रत

(धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष प्राप्ति हेतु)

सूर्यास्त और रात्रि के संधिकाल को प्रदोष काल माना जाता है। वस्तुतः इस काल में शिव–पार्वती की पूजा की जाती है, इसलिए इसे प्रदोष व्रत कहा जाता है। विभिन्न वारों के प्रदोष व्रत के फलों का विवरण इस प्रकार है।

रवि प्रदोष – सर्व प्रकार के सुख–समृद्धि, आजीवन आरोग्यता और दीर्घायु के लिए।

सोम प्रदोष – सभी मनोकामनाओं एवं अभीष्ट फलों की सिद्धि के लिए।

मंगल प्रदोष – पाप मुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य व रोगों को कम करने के लिए।

बुध प्रदोष – सभी प्रकार की कामना सिद्धि और भारी कष्ट दूर करने के लिए।

गुरु प्रदोष – शत्रु शमन एवं कार्य सिद्धि के लिए।

शुक्र प्रदोष – स्त्री को सौभाग्य, समृद्धि व कल्याण के लिए।

शनि प्रदोष – निर्धनता दूर कर समृद्धि एवं पुत्र की प्राप्ति के लिए।

यह व्रत प्रत्येक मास की कृष्ण व शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को रखा जाता है। लेकिन इसमें वार का अधिक महत्व है, इसीलिए वार के अनुसार ही पूजन करने का विधान है। प्रदोष के व्रत धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष प्राप्ति के परम साधन माने गए हैं। प्रदोष के व्रत में शिव की आराधना करके अपने मनोवांछित कामों को पाकर व्रती अंत में परमपद को पाते हैं। जो मनुष्य प्रदोष व्रत के आख्यान को प्रतिदिन सुनता है और शिव भगवान का अर्चन एकाग्रचित्त होकर करता है, वह ज्ञान और ऐश्वर्य से युक्त होकर अंत में शिव लोक चला जाता है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

10. श्री सत्यनारायण व्रत कथा

(मानसिक शांति, धन–वैभव की प्राप्ति एवं धर्म आस्था बढ़ाने के लिए)

श्री सत्यनारायण व्रत कथा का आयोजन प्रत्येक मास की पूर्णिमा तिथि को किया जाता है। यह व्रत सत्य को अपने जीवन और आचरण में उतारने के लिए किया जाता है। 'नारायण' शब्द का व्युत्पत्तिक अर्थ भी इसी रहस्य की ओर संकेत करता है– नार अर्थात् पंचमहाभूतों में अयन अर्थात् सत्यरूप से अवस्थित रहने वाले भगवान नारायण। अतएव सत्य और नारायण परस्पर अभिन्न हैं। व्यावहारिक जगत में भी मनुष्य चाहे सत्य से ही दूर क्यों न हो, दूर नहीं हो सकता, क्योंकि सत्य ही जीवन है, सत्य ही जीवन का आधार है, सत्य के बिना कोई भी एक क्षण भी नहीं रह सकता।

इस सत्यव्रत को कोई मानव यदि अपने जीवन और आचरण में सुप्रतिष्ठित करता है तो वह अपने भीतर भगवद्गुणों का आधान करता है एवम् संमूर्ण सुख समृद्धि व ऐश्वर्यों को प्राप्त होता हुआ जीवन के चार पुरुषार्थ धर्म–अर्थ काम–मोक्ष को सिद्ध कर लेता है। क्लेशों से मुक्ति प्राप्ति का अद्वितीय व्रत है। इसके विपरीत सत्य से दूर रहने वाला व्यक्ति भगवद् गुणों से हीन होने के कारण तामस स्वभाव वाला हो जाता है और पापकर्मों में उसकी प्रवृत्ति बढ़ जाती है फलतः वह जीवनपर्यंत नानाप्रकार के क्लेशों से पीड़ित रहता है। यह व्रत क्लेशो से मुक्ति का एक अद्वितीय मार्ग है। नारायण जैसे बिना किसी भेद–भाव के प्राणिमात्र पर समान रूप से अपनी करुणा की वृष्टि किया करते हैं, उसी प्रकार सत्य भी तद्रूप होने के कारण सभी को अभावों–संतापों से मुक्त कर उन्हें शाश्वत सुख प्रदान करता है। सत्यव्रत एक तरह से सत्याग्रह है। श्री भगवान् को धार्मिक सत्याग्रह अत्यंत प्रिय है। अनीति और अत्याचार के विरुद्ध कोई सत्यनिष्ठ व्यक्ति यदि सत्याग्रह करता है तो भगवान् उसकी रक्षा करते हैं।

वस्तुतः मनसा, वाचा, कर्मणा सत्य को अपने विचार एवं आचरण में धारण करना पूर्ण सत्यव्रत है।

भगवान के सत्यस्वरूप को जनमानस में प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से 'श्री सत्यनारायण व्रत कथा' का उल्लेख पुराणों में वर्णित है। यह कथा यद्यपि पूजापरक है, किंतु कथा के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि सत्य ही नारायण का रूप है और सत्यव्रत का पालन करने से हम नारायण को प्राप्त कर सकते हैं। यह सभी प्रकार के दुःखों और कष्टों का नाश करने वाला है। इस व्रत से धन–धान्य, समृद्धि, ऐश्वर्य ,सौभाग्य तथा संतान सुख की प्राप्ति होती है। जिस किसी भी दिन मनुष्य के हृदय, मन तथा बुद्धि में पवित्रता–निर्मलता का समावेश हो जाए, उसी दिन यह व्रत आरंभ करना चाहिए। इसमें संक्रांति, एकादशी, पूर्णमासी आदि की वर्जना नहीं है। परंतु सांयकाल की बेला इसके लिए सर्वोत्तम बेला है।

11. महा शिवरात्रि व्रत

(शिव के प्रति समर्पण भाव, करने के लिए, मन की शुद्धि और पापों के विनाश हेतु)

महाशिवरात्रि का व्रत फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी को किया जाता है। कुछ लोग चतुर्दशी को भी यह व्रत करते हैं। यह भगवान शिव का अत्यंत महत्वपूर्ण व्रत है, इसलिए इसे महाशिवरात्रि व्रत कहते हैं। महाशिवरात्रि का व्रत भगवान शिव की पूजा आराधना के निमित्त ही बनाया गया है। इस व्रत को भगवान श्रीराम, राक्षसराज रावण, दक्ष कन्या सती, हिमालय कन्या पार्वती और विष्णु पत्नी लक्ष्मी ने भी किया है। जो मनुष्य शास्त्रानुसार इस व्रत में उपवास रखकर जागरण करते हैं, उनको अवश्य ही मोक्ष प्राप्त होता है। इस दिन पारद शिव लिंग का विधि विध ाान से अभिषेक किया जाए तो सैकड़ों गुना अधिक पुण्य प्राप्त होता है। महाशिवरात्रि के दिन गंगा स्नान का बड़ा माहात्म्य बताया गया है। शिवजी की पूजा में बेल पत्र को चढ़ाना विशेष महत्व रखता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

12. गरुड़ व्रत

(श्री विष्णु की कृपा हेतु)

गरुड़ व्रत करने से श्री विष्णु की कृपा भी सहज ही प्राप्त हो जाती है। कोई भी व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इस व्रत को करे तो धन–सुख समृद्धि, ऐश्वर्य एवं सफलता निश्चय ही प्राप्त कर सकता है।

गरुड़ व्रत एक दिव्य व्रत है। यह किसी भी पूर्णमासी से प्रारंभ किया जा सकता है, किंतु मार्गशीर्ष की पूर्णिमा से शुरू कर इसे एक वर्ष तक करने की विशेष महिमा है। एक वर्ष पूरा हो जाने पर पुनः मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा को ही इसका उद्यापन करना चाहिए। व्रत एवं उद्यापन में गणेश तथा नवग्रहादि पूजनोपरांत गरुड़ व गरुड़ पर विराजमान भगवान लक्ष्मीनारायण का पूजन करना चाहिए। पूजन पुरुषसूक्त व श्रीसूक्त से ही षोडशोपचार विधि से संपन्न करें। बारह ब्राह्मणों व एक ब्राह्मणी को मिष्टान्नादि से तृप्त कर वस्त्राभूषणादि एवं द्रव्य–दक्षिणा देकर स्वयं भी महाप्रसाद ग्रहण करें। संभव हो तो स्वर्ण निर्मित गरुड़ पर विराजित लक्ष्मीनारायण भगवान का विग्रह ब्राह्मण को दान करें। गरुड़ व्रत का पालन करने वाला कालसर्प दोष से तो मुक्ति प्राप्त करता ही है, उसके लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति का मार्ग भी सुलभ हो जाता है। व्रत वाले दिन व्रती को भगवान विष्णु के चरित्र, गरुड़ पुराण आदि का श्रवण तथा हरि संकीर्तन और गरुड़ चरित्रों का पाठ करना चाहिए। जो व्रती नियमपूर्वक संकल्प सहित पूर्ण विधि से यह व्रत करते हैं, निश्चय ही उन्हें सुख–शांति, समृद्धि और कृष्ण–नारायण की कृपा प्राप्त होती ही है, काल सर्प दोष से मुक्ति भी मिलती है। साथ ही देवों की कृपा, मातृ–पितृ भक्ति और समाज में मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होती है और अंततः वे भगवान विष्णु के परम धाम को भी प्राप्त कर लेते हैं।

13. नव संवत्सर : प्रतिपदा

(नया वर्ष शुभ बीते, इस उद्देश्य के लिए)

नया विक्रमी संवत् प्रारंभिक दिवस यानी पहला दिन। इसे चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा 'वर्ष प्रतिपदा' भी कहते हैं, अर्थात् इस दिन से नववर्ष का आरंभ होता है। हमारे समस्त धार्मिक संस्कारों एवं त्योहारों में सर्वमान्य संवत् विक्रमी संवत है। नव संवत्सर प्रतिपदा के दिन प्रातःकाल स्नान करके हाथ में गंध, अक्षत, पुष्प और जल लेकर संकल्प इस प्रकार करना चाहिए –

मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य स्वजन परिजनसहितस्य वा आयुरारोग्यैश्वर्या –
दिसकलशुभफलोत्तरोत्तरावृद्ध्यर्थ ब्रह्मादिसंवत्सरदेवानां पूजनमहं करिष्ये।

फिर नई बनी हुई चौकी अथवा बालू की वेदी पर स्वच्छ श्वेत वस्त्र बिछाकर उस पर हल्दी अथवा केसर में रंगे हुए अक्षत का अष्टदल कमल बनाना चाहिए। अष्टदल कमल पर सोने की मूर्ति स्थापित कर गौरी गणेश के पूजनोपरांत ॐ ब्रह्मणे नमः से ब्रह्मा का आह्वान कर पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य से षोडशोपचार से उनका पूजन करना चाहिए। पूजा के अंत में ब्रह्मा से अपने लिए संपूर्ण वर्ष कल्याणकारी होने की प्रार्थना करनी चाहिए। इस दिन नए वस्त्र धारण करने, घर को ध्वजा, पताका और तोरण से सजाने, नीम के कोमल पत्तों को खाने, प्याऊ की स्थापना करने तथा ब्राह्मणों को भोजन कराने का भी विधान है। इस दिन योग्य ब्राह्मण के यहां जाकर या अपने यहां बुलाकर पंचांग से वर्षफल तथा अपनी राशिफल सुननी चाहिए। चाहें तो इस दिन ब्राह्मण को पंचांग दान में दे सकते हैं। इसका अपार पुण्यफल प्राप्त होता है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

14. भैया दूज/यम द्वितीया

(स्त्रियों का व्रतः बहन द्वारा भाई के सुखी जीवन और लंबी आयु के लिए)

कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया को भ्रातृ द्वितीया या यमद्वितीया के रूप में मनाने का रिवाज है। इस त्योहार पर यमुना ने यम को अपने घर बुलाकर सत्कार करके उसे भोजन कराया था, इसलिए इस त्योहार को यम द्वितीया के नाम से जाना जाता है। भाई–बहन के प्रेम का प्रतीक होने से इसे भैया दूज के नाम से भी जाना जाता है। शास्त्रों में ऐसा लिखा है कि इस दिन यमुना अपने भाई यम से मिलने गई थी और उसने उनहें स्वादिष्ट भोजन कराया। यमराज ने प्रसन्न होकर उसे यह वर दिया था कि जो व्यक्ति इस दिन यमुना में स्नान करके यम का पूजन करेगा, मृत्यु के श्चात उसे यमलोक में नहीं जाना पड़ेगा। इस दिन यमुना में स्नान, दीपदान आदि का महत्व है। इस दिन बहनें भाइयों के दीर्घजीवन के लिए यम की पूजा करती हैं और व्रत रखती हैं। जो भाई इस दिन अपनी बहन से स्नेह और प्रसन्नता से मिलता है, उसके घर भोजन करता है, उसे यम के भय से मुक्ति मिलती है। भाइयों का बहन के घर भोजन करने का बहुत माहात्म्य है।

15. अक्षय तृतीया

(पितरों की आत्मशांति, अक्षय यश एवं कीर्ति हेतु)

वैशाख शुक्ल तृतीया को अक्षय तृतीया कहते हैं। इस दिन किए हुए दान, होम, स्नान, जप आदि पुण्य कर्मों का अक्षय फल होता है। दिन दिन उपवास करके भगवान विष्णु, लक्ष्मी, श्रीकृष्ण का पूजन किया जाता है। इस दिन जौ के दान का विशेष माहात्म्य बताया गया है, क्योंकि सभी धान्यों का राजा जौ को माना जाता है। इस दिन नर–नारायण, परशुराम तथा हयग्रीव अवतरित हुए थे। इसलिए इस दिन इनकी जयंती भी मनाई जाती है। इस दिन विवाह आदि शुभ कार्य करने की भी परंपरा है। भगवान बदरीनारायण के कपाट भी इसी दिन खुलते हैं। पुराणों के अनुसार इसी दिन से सतयुग और त्रेतायुग का आरंभ हुआ था। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति एक भी अक्षय तृतीया का व्रत कर लेता है, वह सब तीर्थों का फल पा जाता है।

16. कजली तीज

(धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति हेतु)

श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को हरियाली तीज या कजली तीज के नाम से जाना जाता है। यह व्रत व पर्व दोनों ही रूपों में प्रसिद्ध है। इसमें परविद्धा तृतीया ग्राह्य है। यदि इस तिथि को श्रवण नक्षत्र हो तो इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। श्रवण नक्षत्र न भी हो तो भी भगवान विष्णु का पूजन करके व्रत करना श्रेयस्कर है। भगवान विष्णु की षोडशोपचार पूजा करें, उनकी दिव्य कथाओं एवं चरित्रों का श्रवण करते हुए विष्णु सहस्रनाम तथा ॐ नमो नारायणाय, **ॐ विष्णवे नमः** आदि मंत्रों का जप करें। व्रत में व्रतदेवता के मंत्र का उच्चारण करते हुए विशिष्ट हविद्रव्य से हवन करना चाहिए। विद्वान सदाचारी ब्राह्मण को ब्राह्मणी सहित भोजन करा कर दक्षिणा, द्रव्य एवं वस्त्राभूषणादि के साथ विदा करें। इस व्रत के प्रभाव से मानव के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की सहज प्राप्ति होती है। भगवान विष्णु की कृपा से असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतगमय के मार्ग का साधन सुलभ हो जाता है। इस पावन दिन में गोदान, अन्नदान, वस्त्रदान, धनदान, विद्यादान इत्यादि करने से कल्याण होता है। सुख–संपत्ति, आयुष्य एवं सौभाग्य आदि की प्राप्ति होती है। इस तिथि को स्त्रियां भवानी पार्वती का भी पूजन करती हैं। भक्तजन संपूर्ण शिव परिवार का पूजन करके आनंदमग्न होते हैं। इस व्रत में तीन बातें त्याज्य हैं – पति से छल कपट, मिथ्याचार एवं दुर्व्यवहार तथा परनिंदा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

17. गणगौर/गौरी तृतीया व्रत

(स्त्रियों का व्रत : अखंड सौभाग्य पाने के लिए)

महिलाएं इस व्रत को एक पर्व के रूप में मनाती हैं, क्योंकि इसके करने से सुहागिनों का सुहाग अखंड रहता है। यह गौरपूजा सौभाग्यवती स्त्रियों और कन्याओं का विशेष त्यौहार है। इस दिन भगवान शिव ने पार्वतीजी को और पार्वतीजी ने समस्त स्त्रियों को सौभाग्य का वरदान दिया था। गणगौर का व्रत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होकर तृतीया तक मनाया जाता है। अनेक स्थानों पर तीन दिन के बजाय अंतिम तिथि तृतीया को ही मनाने का रिवाज बन गया है। इस दिन सौभाग्यवती महिलाएं दोपहर तक व्रत रखती हैं। व्रत धारण कर पूजन के पहले रेणुका गौर की स्थापना की जाती है। फिर उस पर सौभाग्य संबंधी चीजें, जैसे– सिंदूर, कांच की चूड़ियां, मेहंदी, महावर, काजल, बिंदी, टीका, शीशा, कंघी आदि से श्रृंगार किया जाता है। इसके पश्चात चंदन, अक्षत, धूप, दीप, पुष्प, नैवेद्यादि से विधिवत पूजन करके भोग लगाया जाता है, फिर गौरीजी की कथा का वाचन किया जाता है। कथा की समाप्ति के बाद व्रत रखने वाली सौभाग्यवती स्त्रियां गौरीजी पर चढ़ाए हुए सिंदूर से अपनी–अपनी मांग भरती हैं। शाम को एक बार भोजन कर व्रत तोड़ा जाता है।

18. संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत

(विघ्न बाधाओं से मुक्ति हेतु)

श्री गणेश संकटों से उबारने वाले देवता हैं और संकष्टी चतुर्थी व्रत की महिमा सर्वविदित है। जब कोई भारी कष्ट, संकटों और मुसीबतों से घिरा हो या किसी अनिष्ट की आशंका हो, तो संकष्टी चतुर्थी का व्रत करने से लाभ होता है। कहा जाता है कि यह व्रत करके महाराज युधिष्ठिर ने अपना राज्य फिर पा लिया था और हनुमान जी ने सीता का पता लगाया था। त्रिपुर को मारने के लिए शिवजी ने भी यह व्रत किया था और यही व्रत करके पार्वती ने भगवान शिव को प्राप्त किया था। वैसे तो यह व्रत प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को किया जाता है, लेकिन माघ, श्रावण, मार्गशीर्ष और भाद्रपद में इसका विशेष माहात्म्य है। प्रातः काल स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करके दाहिने हाथ में पुष्प, अक्षत, गंध और जल लेकर संकल्प करें। फिर सामर्थ्यानुसार गणेशजी का पूजन–आवाहन कर धूप–दीप, गंध, पुष्प, अक्षत, रोली आदि अर्पित करें, लड्डुओं का भोग लगाएं, आरती करें। सायंकाल (भाद्रमास को छोड़कर) चंद्र का पूजन कर अर्घ्यदान करें। तत्पश्चात् गणपति को भी अर्घ्य दें और उनसे अपने कष्टों को दूर करने का निवेदन करें।

19. मनोरथ चतुर्थी

फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी के दिन यह व्रत किया जाता है। गणेश की प्रतिमा का पूजन करते हुए वर्षपर्यंत प्रत्येक मास शुक्ल चतुर्थी को व्रत किया जाता है। उसके बाद उस मूर्ति का दान करने से संपूर्ण मनोरथों की सिद्धि होती है।

20. करवा चौथ व्रत

(स्त्रियों का व्रत : पति की मंगलकामना और अखंड सौभाग्य प्राप्त करने के लिए)

यह व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष की चंद्रोदय व्यापिनी चतुर्थी को किया जाता है। इस दिन स्त्रियां पूरे दिन व्रत रखकर चंद्र के दर्शन करके अर्घ्य देकर व्रत पूर्ण करती हैं। हिंदू धर्म–संस्कृति में इस व्रत की सर्वत्र मान्यता है। सुहागिन एवं पतिव्रता स्त्रियां अपने मांगल्य, पति की लंबी आयु एवं समृद्धि के लिए यह कठिन व्रत रखती हैं। विवाहित स्त्रियों के लिए यह व्रत अखंड सौभाग्य का कारक होता है। इस व्रत में रात्रि बेला में शिव, पार्वती, स्वामी कार्तिकेय,

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

गणेश और चंद्रमा के चित्रों एवं सुहाग की वस्तुओं की पूजा का विधान है। इस दिन निर्जल व्रत रखकर चंद्र दर्शन और अर्घ्य अर्पण कर भोजन ग्रहण करना चाहिए। पीली मिट्टी की गौरी भी बनायी जाती है। स्त्रियां परस्पर चीनी या मिट्टी के करवा का आदान–प्रदान भी करती हैं।

21. नागपंचमी

(नाग दंश से बचने के लिए)

यह व्रत श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन किया जाता है। किंतु कहीं–कहीं यह व्रत श्रावण कृष्ण पंचमी के दिन भी किया जाता है। इस दिन सर्पों को दूध पिलाने तथा अपने घर के द्वार के दोनों तरफ गोबर के सर्प बना कर दही, दूब, गंध, अक्षत पुष्प, मिष्टान्न आदि से पूजन करने से वर्षभर घर सर्प भय मुक्त रहता है। नाग पंचमी के दिन नाग देवता के पूजन करने से वह प्रसन्न होते हैं और आशीर्वाद देकर भक्त की मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। इस कारण उनके कृपा पात्र बन जाने से हमारी सात पीढ़ी तक को सर्प दंश का भय नहीं रहता।

22. वसंत पंचमी

माघ शुक्ल पंचमी को वसंत पंचमी कहते हैं। वसंत पंचमी वसंत ऋतु का एक प्रमुख त्योहार है। होली का आरंभ भी वसंत पंचमी से ही होता है। वसंत पंचमी को श्री पंचमी के नाम से जाना जाता है। इस दिन विद्या और बुद्धि की दाती महासरस्वती की जयंती भी मनाई जाती है। उत्तम विद्या और बुद्धि की प्राप्ति के लिए मां सरस्वती का पूजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त इस दिन वसंत स्वरूप कामदेव एवं रति का पूजन करने से गृहस्थ जीवन में सुख शांति बनी रहती है। देव कार्य, मंगल कार्य आदि के लिए यह तिथि विशेष शुभ मानी जाती है।

23. ऋषि पंचमी

(कायिक, वाचिक, मानसिक पापों से छुटकारा पाने के लिए)

यह व्रत भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को रखा जाता है। इस व्रत को प्रायः स्त्रियां पति की मंगल कामना के लिए करती हैं। इस व्रत को करने से आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक इन तीनों प्रकार के दुखों एवं विपत्तियों की निवृत्ति होती है। कायिक, वाचिक और मानसिक जो–जो पाप हों, वे सब विलीन हो जाते हैं, यानी सभी पापों की निवृत्ति होती है, वे नष्ट हो जाते है। यह व्रत जाने–अनजाने में हुए पापों की निवृत्ति के लिए स्त्री तथा पुरुष को समान रूप से अवश्य ही करना चाहिए।

24. स्कंद षष्ठी

भविष्योत्तर पुराण के अनुसार मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी तिथि को भगवान शंकर के पुत्र स्कंद ने तारकासुर पर विजय प्राप्त की थी। यह महापुण्यदायी तिथि है। इस दिन किए गए व्रत, दान, स्नान आदि से विशेष फल की प्राप्ति होती है। विरोधियों एवं बाधाओं पर विजय है।

25. सूर्य उपासना का महापर्व : छठ

(संतान प्राप्ति के लिए)

छठ व्रत दीपावली के छह दिन बाद 'खरना' से आरंभ होता है। यह पर्व बहुत ही साफ–सफाई और निष्ठा के साथ मनाया जाता है। यह व्रत विधिपूर्वक करने से संतान की प्राप्ति होती है। यदि संतान को किसी प्रकार का कष्ट, रोग, पीड़ा संकट, घात, अरिष्ट या मनोरोग हो तो यह व्रत विधानपूर्वक करने से उससे बचाव होता है। संतान एवं

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

सुख–समृद्धि की प्राप्ति के लिए भगवान् सूर्य देव की आराधना की जाती है। खरना के बाद दूसरे दिन 24 घंटे का उपवास आरंभ होता है। अगले दिन शाम को नदी अथवा तालाब में खड़े होकर व्रतीगण डूबते सूर्य को अर्घ्य देते हैं। फिर अगली सुबह को इसी प्रकार उगते सूर्य को अर्घ्य आदि देकर मंत्र जप अथवा उनकी स्तुति, आरती आदि करते हैं। तत्पश्चात् प्रसाद बांटकर स्वयं भी ग्रहण करते हैं।

26. गंगा सप्तमी

इस वर्ष इस दिन रविपुष्य योग होने से इसका महत्व और अधिक बढ़ गया है। अतः इस दिन गंगा स्नान, अन्न, वस्त्र आदि का दान, जप, तप, उपासना और गंगापूजन, उपवास करने से ताप, शाप, पापों का शमन होता है। इस दिन अपने पितरों के निमित्त दान, तर्पण, श्राद्ध, पिंडदान आदि करने से पितरों की आत्मा को शांति प्राप्त होती है जिससे घर परिवार में सुख, सौहार्द, ऐश्वर्य, यश और कीर्ति में वृद्धि होती है।

27. अचला सप्तमी/सौर सप्तमी

(पाप एवं भूत–पिशाच योनि से मुक्ति के लिए)

यह व्रत माघ मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को रखा जाता है। ऐसा शास्त्र में वर्णित है कि सूर्य नारायण की प्रसन्नता के लिए अचला सप्तमी का व्रत करना चाहिए। इस दिन सूर्य भगवान को गंगा जल से अर्घ्य दान करने का बड़ा माहात्म्य माना गया है। प्राचीन ज्योतिष शास्त्र और आधुनिक विज्ञान ने भी सूर्य को बड़ा महत्व दिया है, क्योंकि प्राणियों व वनस्पतियों को सूर्य से पोषण तथा वृद्धि प्राप्त होती है। इसके अलावा सूर्य की किरणों में कीटाणुनाशक तत्व पर्याप्त मात्रा में मौजूद रहते हैं। सूर्य की ओर मुख करके जल का अर्घ्य दान करने से शारीरिक चर्म रोग आदि विकार नष्ट होते हैं।

28. श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत

(भगवान श्रीकृष्ण के प्रति श्रद्धा एवं सुख समृद्धि हेतु)

यह व्रत भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाया जाता है। श्रीब्रह्मवैवर्त पुराण में सावित्री द्वारा पूछने पर धर्मराज ने बताया कि जो भी प्राणी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत करता हे, वह सौ जन्मों के पापों से मुक्त हो जाता है। श्रीपद्म पुराण के अनुसार जो कोई इस व्रत को करता है, वह इस लोक में अतुल ऐश्वर्य की प्राप्ति करता है और इस जन्म में अपने अभीष्ट को प्राप्त कर लेता है। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि जो व्यक्ति जन्माष्टमी के व्रत को विधि–विधानानुसार करता है, उसके समस्त पाप स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं और उसे मृत्यु के उपरांत बैकुंठ लोक में स्थान मिलता है।

29. अहोई अष्टमी

(पुत्र की दीर्घायु के लिए)

भारतीय स्त्रियां पुत्र की दीर्घायु एवं सुख–समृद्धि के लिए कार्तिक कृष्णाष्टमी यह व्रत रखती हैं। व्रत के दिन शिव एवं पार्वती का षोडशोपचार विधि से पूजन किया जाता है।

30. श्री राधाष्टमी

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी श्री राधाष्टमी के नाम से प्रसिद्ध है। श्री राधाजी वृषभानु की यज्ञ भूमि से प्रकट हुई थीं। वेद तथा पुराणादि में जिनका 'कृष्ण वल्लभा' कहकर गुणगान किया गया है, वे श्री

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

वृन्दावनेश्वरी राधा सदा श्री कृष्ण को आनन्द प्रदान करने वाली साध्वी कृष्णप्रिया थीं। श्री राधाजी सर्वतीर्थमयी हैं तथा ऐश्वर्यमयी हैं। श्री राधा भक्त के घर से कभी लक्ष्मी विमुख नहीं होतीं। उसके घर श्री राधाजी के साथ श्री कृष्ण वास करते हैं। श्री राधाकृष्ण जिनके इष्ट देवता हैं, उनके लिए यह श्रेष्ठ व्रत है। उनके घर में श्रीहरि देह से, मन से कदापि पृथक् नहीं होते। जो मनुष्य इस लोक में राधा जन्माष्टमी –व्रत की यह कथा श्रवण करता है, वह सुखी, मानी, धनी और सर्वगुण संपन्न हो जाता है।

31. शीतलाष्टमी

यह व्रत चैत्र कृष्ण अष्टमी को किया जाता है। इस व्रत को करने से परिवार में शीतला रोग के प्रकोप का भय कम रहता है। इस दिन विशेष रूप से शीतलादेवी का विभिन्न पकवानों से पूजन किया जाता है। व्रत करने वाले के परिवार में शीतला देवी की कृपा से शीतला जनित सभी दोषों की शांति होती है।

32. भैरव अष्टमी व्रत

(सौभागय प्राप्ति एवं पितरों के तर्पण के लिए)

यह व्रत मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को रखा जाता है। पुराणों में ऐसा उल्लेख मिलता है कि भैरव भगवान् शिव के ही दूसरे रूप हैं। भैरव अष्टमी के व्रत को गणेश, विष्णु, यम, चंद्रमा, कुबेर आदि ने किया था। इसी व्रत के प्रभाव से भगवान विष्णु लक्ष्मी के पति बने। जो इस व्रत को निरंतर करता रहता है, वह महापापों से छूट जाता है। भैरवजी के उपवास के लिए रविवार और मंगलवार के दिन ग्राह्य माने गए हैं।

33. महानवमी व्रत

आश्विन शुक्ल नवमी को महानवमी कहते हैं। इस दिन नवरात्र व्रत की भी समाप्ति होती है। यह तिथि सिद्धिदात्री मानी जाती है। इस दिन मां भगवती दुर्गा की श्रद्धा एवं विश्वासपूर्वक विशेष पूजा, भक्ति, यज्ञ, आराधना, व्रत, आदि करने से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

34. श्री सीता नवमी

परम पवित्र वैशाख मास में शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि, पुष्य नक्षत्र, मंगलवार को मध्याह्न काल में शुभ मांगलिक बेला में संतान प्राप्ति की कामना से यज्ञ की भूमि तैयार करने के लिए राजा जनक हल से भूमि जोत रहे थे, उसी समय पृथ्वी से विदेहवंश वैजयंती जानकी जी का द्रव्य प्राकट्य हुआ। भूमि पर हल के चलने से जो रेखा बनती है उसे 'सीता' कहते हैं। अतः प्रादुर्भूता भगवती जानकी सीता के नाम से विख्यात हुईं। अतः योग में किया गया व्रत अत्यंत पुण्य प्रदान करने वाला होता है।

35. रामनवमी

यह व्रत चैत्र शुक्ल नवमी के दिन किया जाता है। यह तिथि भगवान पुरुषोत्तम राम की जन्मतिथि है।

प्रत्येक वर्ष सनातन धर्मावलंबी सभी लोग इसे बड़े श्रद्धा, भक्ति एवं विश्वासपूर्वक मनाते हैं। इस दिन उपवास रखा जाता है। इस दिन अखंड रामचरित मानस का पाठ करने से विशेष पुण्य फल की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार भजन, कीर्तन, स्तोत्र पाठ, दान, पुण्य, हवन आदि करने से इह लोक तथा परलोक में सुख शांति की प्राप्ति होती है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

36. दशहरा/ विजयादशमी

(भगवान् राम में आस्था, विश्वास बढ़ाने व उनके आदर्शों पर चलने के लिए)

यह पर्व आश्विन शुक्ल दशमी को होता है। दशमी तिथि के साथ जिस दिन श्रवण नक्षत्र का योग हो, उसी दिन विजयादशमी होती है। श्रवण नक्षत्र युक्त सूर्योदय व्यापिनी विजयादशमी सर्वश्रेष्ठ होती है। दशमी के दिन सांयकाल विजयपर्व होता है जो धर्म की अधर्म पर विजय का प्रतीक है। इस दिन अस्त्र–शस्त्रों की पूजा के अतिरिक्त शमी एवं अपराजिता की पूजा तथा नीलकंठ दर्शन करने का भी विधान है। विजयादशमी का त्योहार ज्ञान की अज्ञान पर, सत्य की असत्य, धर्म की अधर्म और देवत्व की दानवत्व पर विजय का प्रतीक है। कार्यों में सफलता के लिए दसों दिशाओं को पूजें।

37. पापांकुशा एकादशी

(पापों पर अंकुश लगाने के लिए)

यह व्रत आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी को किया जाता है। व्रती प्रातःकाल नित्य कर्मों, स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान् विष्णु का भक्ति भाव से पूजन आदि करके भोग लगाते हैं। फिर यथासंभव ब्राह्मण को भोजन करा कर दान व दक्षिणा देते हैं। इस दिन किसी भी एक समय फलाहार किया जाता है। इस एकादशी का व्रत बाल्य, यौवन या वृद्धावस्था किसी भी अवस्था में करने पर पापी भी अपने घोर पापों से मुक्त हो जाता है। क्योंकि इससे मनुष्य को उसके सब पापों के नष्ट होने के कारण मुक्ति मिल जाती है और नरक में जाने से वह बच जाता है।

38. मोक्षदा एकादशी

(पाप शमन एवं भगवत्भक्ति हेतु)

यह व्रत मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। शास्त्रों का मानना है जो मनुष्य इस एकादशी का व्रत करते हैं, उनके द्वारा जाने–अनजाने में किए गए समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। उन्हें पुनर्जन्म से मुक्ति मिलती है तथा अनेक पुण्यों की प्राप्ति होती है। जिसके माता–पिता, पुत्र की कुल में अधोगति हुई हो, वे सब इस व्रत के प्रभाव से स्वर्ग को प्राप्त हो जाते हैं।

39. सफला एकादशी

(कार्यों की पूर्णता एवं मनोरथ सिद्धि के लिए)

यह व्रत पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। यह व्रत स्मार्त (गृहस्थ) तथा वैष्णव दोनों के लिए है। सामान्यतया इस एकादशी के अधिष्ठाता देव भगवान रारायणजी की पूजा का विधान है, लेकिन भगवान अच्युत की पूजा का विशेष माहात्म्य है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इस एकादशी का व्रत उपवास करने से प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है और अधूरे पड़े हुए कार्य अवश्य ही पूरे होते हैं। व्रती के सारे मनोरथ सफल होते हैं, इसीलिए इसे सफला एकादशी कहते हैं।

40. विजया एकादशी

(मानसिक ताप दूर करने एवं सात्विकता बनाए रखने के लिए)

यह व्रत फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। जो मनुष्य इस व्रत का पूर्ण रद्धापूर्वक नियम

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

से पालन करता है, उसकी सर्वत्र सदा ही विजय होती है। उसके समस्त कष्ट दूर होते हैं। कार्य में सफलता प्रदान करने के कारण ही इसका नाम विजया एकादशी पड़ा है। इस व्रत का माहात्म्य सब पापों को दूर करता है। व्रती के सारे दुख, दारिद्रय दूर होते हैं। व्रत की महिमा से इस लोक में जय और परलोक में सद्गति होती है। इसी एकादशी का व्रत करके श्रीराम समुद्र पर सेतु निर्माण करा पाने तथा रावण को पराजित करने में सक्षम हुए।

41. प्रबोधिनी एकादशी

यह व्रत कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी को किया जाता है। इसे देवोत्थान एकादशी भी कहते हैं। भगवान विष्णु के क्षीर शयन के विषय में प्रसिद्ध है कि उन्होंने एकादशी के दिन ही महापराक्रमी शंखासुर नामक राक्षस को मारा था और उसके बाद थकावट दूर करने के लिए क्षीर सागर में जाकर सो गए। वे वहां चार माह तक शयन करते रहे और कार्तिक शुक्ल एकादशी को जगे। इसी से इसका नाम देवोत्थान या प्रबोधिनी एकादशी पड़ा । प्रबोधिनी एकादशी को भगवान विष्णु के निमित्त जो स्नान, दान, जप और होम किया जाता है, वह सब अक्षय होता है। इस तिथि को उपवास करके भगवान माधव की भक्तिपूर्वक पूजा करने से सौ जन्मों के पापों से मुक्ति मिलती है।

42. पुत्रदा एकादशी

(पुत्र प्राप्ति के लिए)

यह व्रत पौष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। पुराणों में ऐसा उल्लेख मिलता है कि पौष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत और अनुष्ठान करने से भद्रावती के राजा सुकेतु को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी। तभी से इसका नाम पुत्रदा अर्थात पुत्र देने वाली एकादशी पड़ा। यह व्रत संतानदायी है। पति और पत्नी दोनों ही इस व्रत का विधिपूर्वक पालन करें तो इसका फल अधिक पुण्यदायी होता है। जो मनुष्य इस पुत्रदा एकादशी के दिन निर्मल मन से उपवास रखने का संकल्प लेते हैं, उन्हें शांति और आत्मिक सुख मिलता है। विद्या, यश और लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

43. देवशयनी एकादशी

(मनचाहा फल एवं सुख समृद्धि पाने के लिए)

इस व्रत के करने से सारे पाप नष्ट होते हैं, भगवान प्रसन्न होते हैं, इच्छित वस्तुएं प्रदान करते हैं, यहां तक कि समस्त मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। आषाढ़ शुक्ल एकादशी देवशयनी एकादशी के नाम से विख्यात है। इस एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक भगवान विष्णु क्षीरसागर में शेष–शय्या पर शयन करते हैं। संन्यासी लोग इन चार महीनों में चातुर्मास व्रत करते हैं। इस दिन भगवान का पूजन करने से पुण्य फल की प्राप्ति होती है।

44. निर्जला एकादशी

यह व्रत ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी को किया जाता है। इसका नाम निर्जला है। यह व्रत नाम के अनुसार ही किया जाता है, अर्थात इस दिन पानी भी वर्जित है। महर्षि व्यास के अनुसार निर्जला एकादशी का व्रत विधिपूर्वक करने से वर्ष भर की सभी 14 एकादशियों का फल प्राप्त हो जाता है। इस दिन व्रत धारक को संध्या वंदनादि नित्य कर्म की पवित्रता के लिए आचमन के अलावा बिंदुमात्र भी जल नहीं पीना चाहिए अन्यथा व्रत भंग हो जाता है। निर्जला का उपवास करके द्वादशी के दिन स्नान कर सामर्थ्य के अनुसार स्वर्ण एवं जलयुक्त कलश का दान देकर भोजन करना चाहिए। यह व्रत करने से आयु आरोग्य की वृद्धि तथा विशेष पुण्य फल की प्राप्ति होती है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

45. मोहिनी एकादशी

(शुभ, सौभाग्य प्राप्ति, पापों के विनाश और दुखों के निवारण हेतु)

इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य मोहजाल और पापों के समुह से अवश्य मुक्त हो जाता है। इसलिए आप इस पापनाशिनी और दुखहारिणी एकादशी का व्रत अवश्य करें। मोहिनी एकादशी का व्रत वैशाख शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की पूजा अर्चना करने का विधान है। व्रती को स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान श्रीराम क प्रतिमा को दूध, जल से स्नान कराकर, श्वेत वस्त्र पहनाना चाहिए। फिर उच्चासन पर बैठाकर रोली व चंदन से तिलक लगाकर श्वेत पुष्पों की माला पहनाएं। धूप–दीप जलाकर आरती उतारें।

46. पाप मोचनी एकादशी

(ब्रह्महत्या जैसे दोषों के शमन के लिए)

जो मनुष्य इस व्रत को करते हैं, उसके सब पाप क्षीण होकर नष्ट हो जाते हैं। मन स्वच्छ भावनाओं से भर जाने के कारण आत्मशांति मिलती है। यह व्रत पिशाचगति को भी नष्ट करता है। चैत्र कृष्ण एकादशी को पाप मोचनी एकादशी कहते हैं। इस दिन व्रत करने से जाने–अनजाने में किए हुए पापों का क्षय होता है। समर्थजन इस दिन श्रद्धा भक्ति पूर्वक व्रत कर सकते हैं इस एकादशी के व्रत का फल नाम के अनुरूप होता है। इस दिन स्नानादि से निवृत्त होकर श्रीहरि विष्णुजी का पूजन विधि–विधानानुसार धूप, दीप, नैवेद्य से करके भोग चढ़ाएं।

47. षटतिला एकादशी

(दरिद्र विनाश, धन–वैभव एवं सौभाग्य प्राप्ति हेतु)

माघ कृष्ण एकादशी को षट्तिला एकादशी भी कहते हैं। इस एकादशी के दिन छह प्रकार के तिलों का प्रयोग किया जाता है, जिसके कारण इसका नामकरण षट्तिला एकादशी पड़ा। जो मनुष्य इस व्रत को पूर्ण विधि–विधानानुसार पालन करके पूरा करता है, उसे बुरे कर्मों और पापों से मुक्ति मिलती है तथा उसका जीवन सुखमय बनता है। व्रत के प्रभाव से धन, धान्य, वस्त्र एवं स्वर्ण आदि से घर संपन्न हो जाता है। हर जन्म में आरोग्य मिलता है। कभी धन का अभाव, कष्ट और दुख की पीड़ा नहीं होती।

48. कामदा एकादशी

(पापक्षय के लिए)

इसका व्रत रखने से भक्तों की समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं तथा बैकुण्ठ धाम की प्राप्ति होती है। सब तरह के पापों का नाश होता है। यहां तक कि ब्रह्म हत्या जैसे पापों से भी छुटकारा मिल जाता है, पिशाचत्व दूर होता है। यह व्रत चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। एकादशी के दिन प्रातः जल्दी उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र पहनें। दिन भर उपवास रखें। व्रत का संकल्प ममाखिल पापक्षयपूर्वक प्रीतिकामनया कामदैकादशी व्रतं करिष्ये कहकर रात्रि में भगवान को झूले में बैठाएं, फिर धूप–दीप, पुष्प, माला चढ़ाकर पूजन करें।

49. वरुथिनी एकादशी

(इहलोक तथा परलोक सुधारने के लिए)

इस व्रत का फल कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहण के समय सुवर्ण दान देने, कन्यादान करने, विद्यादान और हजारों वर्षों तक ध्यान मग्न तपस्या करने से मिलने वाले फल के बराबर होता है। यह व्रत इस लोक और परलोक में सुख–सौभाग्य

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

प्रदान कर इच्छाओं को पूर्ण करने वाला होता है। वरुथिनी एकादशी का व्रत वैशाख कृष्ण पक्ष की एकादशी के दिन रखा जाता है। उपवास में केवल फलाहार करना चाहिए। एकादशी व्रत के दिन क्रोध, निंदा, चुगली, चोरी, हिंसा, जुआ खेलना, देर तक सोना, झूठ बोलना, पान खाना, दंत मंजन आदि वर्जित कर्म न करें।

50. अपरा एकादशी

(पाप कर्म से मुक्ति और कायरता त्यागने के लिए)

जो मनुष्य अपरा एकादशी का व्रत करता है, वह भ्रूणहत्या, ब्रह्म हत्या, व्यभिचार, विभिन्न पाप कर्म जैसे झूठ बोलना, परनिंदा, धोखा देना, झूठी गवाही देना, वेदों की निंदा करना, ज्योतिष विद्या से लोगों को छलना, कम सामान तोलना, गुरु निंदा करना, क्षत्रिय होकर भी क्षात्र धर्म को छोड़कर युद्ध से भागना, पीपल के वृक्ष को काटना आदि दोषों से मुक्त हो जाता है। ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को अपरा एकादशी का व्रत रखा जाता है। दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर स्वच्छ जल से स्नान करें और उपवास रखकर भगवान विष्णु की प्रतिमा को शुद्ध जल से स्नान कराकर स्वच्छ वस्त्र अर्पण करें, फिर चंदन का तिलक लगाएं। ब्राह्मणों को भोजन कराकर यथाशक्ति दान, दक्षिणा दें और आशीर्वाद प्राप्त करें।

51. योगिनी एकादशी

(गोहत्या/कुष्ठ रोग से मुक्ति के लिए)

इस सनातनी एकादशी का व्रत सब प्रकार के पापों का नाश कर मुक्ति दिलाने वाला है। इसके प्रभाव से गोहत्या तथा पीपल के पवित्र वृक्ष को काटने जैसे महापाप भी नष्ट हो जाते हैं। यह व्रत आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस दिन प्रातः काल उठकर दैनिक कर्मों से निवृत्त होकर स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें। फिर भगवान विष्णु की प्रतिमा को गंगाजल से स्नान कराकर, चंदन, रोली, धूप, दीप, पुष्प से पूजन, आरती करें। इस व्रत में लाल चंदन और लाल गुलाब के फूलों की माला का उपयोग करने का अधिक महत्व माना गया है।

52. कामिका/पवित्र एकादशी

(ब्रह्महत्या, भ्रूणहत्या, पापों के निवारण एवं नरक की यातनाओं से बचने के लिए)

यह व्रत श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस व्रत के करने से प्राणी को ब्रह्म हत्या और भ्रूण हत्या जैसे पापों से छुटकारा मिलता है। समस्त दुखों का नाश होता है। पुत्र की प्राप्ति होती है एवं उसकी अन्य मनोकामनाएं पूर्ण होती है। इस व्रत के करने से महापुण्य फल प्राप्त होता है। व्रती को बैकुंठ में स्थान मिलता है, उस यमलोक की यातनाएं नहीं सहनी पड़तीं और न ही कभी वह किसी बुरी योनि में जन्म लेता है।

53. ऊजा एकादशी

(दैहिक कष्टों से मुक्ति एवं पुनर्जन्म से छुटकारा पाने के लिए)

यह व्रत भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस दिन भगवान विष्णु की पूजा करने का विधान है। इस एकादशी के व्रत को विधिपूर्वक करने से समस्त कष्ट समाप्त हो जाते हैं और इच्छित फल की प्राप्ति होती है। व्यक्ति को पुनर्जन्म के आवागमन से मुक्ति मिलती है, पूर्वजन्म की बाधाएं दूर होती है और अंत में परमधाम जाने का अवसर मिलता है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

54. परिवर्तिनी/पद्मा एकादशी

(भगवान् में आस्था, विश्वास जगाने एवं मनोरथ सिद्धि के लिए)

यह व्रत भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। यह श्रीलक्ष्मी जी व भगवान विष्णु का परम कल्याणकारी, आनंदकारी व्रत है। इसके करने से सभी प्रकार के अभीष्ट मनोरथ सिद्ध होते हैं। इस दिन लक्ष्मी पूजन करना श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि देवताओं ने अपने राज्य को पुनः पाने के लिए महालक्ष्मी का ही पूजन किया था। पापियों का नाश करने में इससे उत्तम कोई दूसरा व्रत नहीं है। भगवान विष्णु आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी से शेष शय्या पर विराजमान होकर निद्रमग्न रहते हैं तो वे भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को करवट बदलते हैं। इसलिए इसे परिवर्तिनी एकादशी कहते हैं।

55. इंदिरा एकादशी

(पितरों की शांति एवं उनके उद्धार के लिए)

यह व्रत आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस एकादशी का व्रत करने से अधोगति को प्राप्त पितृगण शुभ गति को प्राप्त करते हैं, यानी पितरों का उद्धार होता है। पुरुषों के लिए विशेष रूप से फलदायी यह एकादशी महापुण्य देने वाली एवं समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करने वाली है। व्रती इस लोक के सब भोगों को भागकर अंत में विष्णु लोक जाकर चिरकाल तक निवास करता है।

56. रमा एकादशी

(स्त्रियों का व्रतः पाप निवारण और सौभाग्य प्राप्ति के लिए)

यह व्रत कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस एकादशी के व्रत के प्रभाव से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, यहां तक कि ब्रह्म हत्या जैसे महापाप भी दूर होते हैं। सौभाग्यवती स्त्रियों के लिए यह व्रत सुख और सौभाग्यप्रद माना गया है। व्रती को ईश्वर के चरणों में स्थान मिलता है।

57. देवोत्थानी एकादशी

(मांगलिक कार्यों की पूर्णता एवं वीर पुत्रों की प्राप्ति के लिए)

यह व्रत कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस व्रत को प्रबोधिनी एकादशी भी कहते हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं कि आषाढ़ शुक्ल एकादशी को जब भगवान सो जाते हैं तो शुभ कार्यों की शुरुआत, विवाह, उपनयन, गृह प्रवेश आदि को करना वर्जित हो जाता है। जो पुनः कार्तिक शुक्ल एकादशी यानी देवतोत्थानी एकादशी के बाद भगवान के जागने से आरंभ हो जाते हैं। सारे मांगलिक कार्य इसी दिन से आरंभ किए जाते हैं। इस एक व्रत के करने से व्रती को सहस्रों अश्वमेघ और सौकड़ों राजसूय यज्ञों का फल प्राप्त हो जाता है। व्रत के प्रभाव से उसे वीर, पराक्रमी और यशस्वी पुत्र की प्राप्ति होती है। यह व्रत पापनाशक, पुण्यवर्धक तथा ज्ञानियों को मुक्तिदायक सिद्ध होता है।

58. उत्पन्ना एकादशी

(सात्विक भाव जगाने एवं प्राणिमात्र के कल्याण के लिए)

यह व्रत मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस एकादशी का माहात्म्य अनेक पुराणों में वर्णित किया गया है। इस दिन के उपवास से हजार एकादशी का फल प्राप्त होता है। उस दिन दिया गया

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

दान सहस्र गुणित होकर फलदायी होता है। इस एकादशी के माहात्म्य को सुनने से सहस्र गोदान का फल प्राप्त होता है। जो मनुष्य इस व्रत की कथा को भक्ति भाव से दिन या रात में सुनता है, वह कोटि कुलपर्यन्त विष्णु लोक में निवास करता है।

59. जया एकादशी

(दुख, दरिद्रता दूर करने एवं कष्ट मुक्ति के लिए)

यह व्रत माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। एक एकादशी को बड़ा पवित्र माना गया है। जो इस दिन श्रद्धा भाव से भगवान विष्णु का पूजन करते हैं, उनको सद्गति प्राप्त होती है। व्रत के प्रभाव से व्रती को कभी भी पिशाच (भूत, प्रेत) योनि प्राप्त नहीं होती। इसके अलावा उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि इससे अधिक उत्तम पापनाशिनी और मोक्षदायिनी कोई भी एकादशी नहीं है।

60. आंवल/आमलकी एकादशी

(शत्रुओं पर विजय एवं दुखों से मुक्ति के लिए)

यह व्रत फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। आंवले के वृक्ष में भगवान् विष्णु का निवास होता है। इसलिए एकादशी के दिन उसकी पूजा की जाती है, जिससे उसका नाम आमल एकादशी पड़ा। यह एकादशी समस्त व्रतों के फलों को देने वाली, महापापों का नाश करने वाली, सहस्र गोदान के समान पुण्यों को देने वाली और मोक्ष प्रदान करने वाली मानी गई है। इसके उपवास करने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है तथा दुखों से मुक्ति मिलती है।

61. परमा एकादशी

(पितरों की शांति एवं जन्म–मरण से मुक्ति के लिए)

इस व्रत को अधिक मास में करने का विधान है। अधिक मास को अधिमास, मलमास एवं पुरुषोत्तम मास भी कहा जाता है। इस मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को यह व्रत रखा जाता है। भगवान् श्रीकृष्ण के मतानुसार जिन्होंने मनुष्य जन्म लेकर भी एकादशी का व्रत नहीं किया, उनका जन्म व्यर्थ है। चौरासी लाख योनियों में भटकते–भटकते पूर्व के पुण्यों से बड़ी कठिनाई के साथ मनुष्य शरीर मिलता है। अतः प्रयत्न पूर्वक परमा एकादशी का पवित्र व्रत करना चाहिए। जिसने यह व्रत कर लिया तो समझो कि उसने सब पुण्यादि तीर्थ, गंगादि दिव्य नदियों में स्नान कर लिए। गो आदि को दान भी उसने कर दिए, गया में श्राद्ध करके अपने पितृगण की तृप्ति भी अच्छी तरह से कर ली। इस एकादशी का व्रत रखकर उपवास करने से मनुष्य धन–धान्य से संपन्न होता है और व्रती के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। इस दिन विष्णु पुराण का पाठ करने से समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

62. पद्मिनी एकादशी

(समस्त पापों के नाश के लिए)

यह व्रत मलमास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। शास्त्रों में लिखा है कि इस एकादशी का व्रत करने का माहात्म्य स्वयं चतुरानन ब्रह्माजी भी नहीं कह सकते, क्योंकि इस व्रत से बढ़कर पवित्र न कोई पुण्यानुष्ठान है, न यज्ञ है और न ही तप है। यह महान पुण्य को बढ़ाने वाली तथा पापों को नष्ट करने वाली एकादशी है। इसके करने से जन्म जन्मांतर के पाप नष्ट हो जाते हैं। इसका उपवास करने से मनुष्य की शत्रुओं पर विजय प्राप्त

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

होती है तथा भय से मुक्ति मिलती है। इसके प्रभाव से व्रती मनुष्य इस लोक में सुख–सौभाग्य प्राप्त करता है, उसके सारे मनोरथ पूर्ण होते हैं और वह धन–धान्य से परिपूर्ण हो जाता है।

63. अनंत चतुर्दशी व्रत

(अनंत फल प्राप्ति एवं कष्टों के निवारण के लिए)

यह व्रत भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी को किया जाता है। इस दिन अनंतस्वरूप भगवान विष्णु का पूजन करना चाहिए। इस दिन गोदान, शय्यादान, अन्नदान करें एवं ब्राह्मणों को भोजन कराकर फिर भोजन करें। इस व्रत को करने से अनंत पुण्यफल की प्राप्ति होती है। इस व्रत के करने और भगवान विष्णु के पूजन से वे प्रसन्न होकर व्रती की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं, अनंत कष्टों से मुक्ति दिलाते हैं, व्रती के सब पापों को नष्ट कर देते हैं।

64. बैकुंठ चतुर्दशी

(भव बंधन से छूटने एवं स्वर्ग प्राप्ति हेतु)

यह व्रत कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को किया जाता है। इस व्रत को करने से मनुष्य सभी बंधनों से मुक्त हो जाता है और उसे बैकुंठ धाम की प्राप्ति होती है। शास्त्रों में कहा गया है कि एक हजार कमलों से जो भगवान विष्णु का पूजन कर शिव अर्चन करते हैं, वे मनुष्य भव–बंधनों से मुक्त होकर बैकुंठ धाम को जाते हैं।

65. नरक चतुर्दशी

(यमराज को प्रसन्न करने के लिए)

कार्तिक कृष्णपक्ष चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी या नरक चौदस के रूप में मनाने की परंपरा है। जैसा कि इस व्रत के नाम से ही स्पष्ट है, नरक चतुर्दशी को किया गया पूजन और व्रत यमराज को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। जिसका उद्देश्य नरक से मुक्ति पाना है, क्योंकि यमराज के रुष्ट होने से प्राणी को नरक में दी जाने वाली यातनाओं का कष्ट भोगना पड़ता है। दैत्यराज बलि के वामन भगवान से मांगे वरदान के अनुसार उस दिन जो व्यक्ति यमराज को दीपदान करता है, उसको यम यातना नहीं होती और दीपावली मनाने वाले के घर को लक्ष्मीजी कभी छोड़कर अन्यत्र नहीं जाती।

66. रूप चौदस

(अनजाने में हुए पापों का प्रयश्चित करने हेतु)

यह दिन मन का मैल साफ करने अर्थात् जाने–अनजाने में हुए पापों का प्रायश्चित करने का दिन है। अपनों व परायों से माफी मांगने का यह सर्वश्रेष्ठ दिन है। मन स्वच्छ होगा तभी लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होगी। मन की स्वच्छता के लिए उस दिन जनकल्याण के कार्य करें। गरीबों को भोजन कराएं, उन्हें कंबल या वस्त्र दान करें। भंडारा करें। वर्षभर के दान से बड़ा है रूप चौदस का दान। ऐसे अवसरों को न जाने दें और यथासंभव दान दें। याद रखें आज का दान गरीबों के लिए है इसलिए किसी पंडित या पाखंडी को दान न करें। विद्यार्थियों को पुस्तकें दिलाएं, उन्हें वस्त्र भेंट करें। जरूरतमंदों की सेवा करें, मनोवांछित फल जरूर मिलेगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

67. मार्गशीर्ष पूर्णिमा

मार्गशीर्ष मास की महिमा का बखान भगवान श्री कृष्ण ने गीता के दसवें अध्याय में स्वयं अपने मुख से किया है– मासानांमार्गशीर्षोऽहं' अर्थात् बारह मासों में मार्गशीर्ष मास में ही है। इस मास की पूर्णिमा के दिन व्रत करके भगवान सत्यनारायण का यथाशक्ति पूजन, व्रत और कथा करने से वर्ष भर घर में सुख–शांति बनी रहती है।

68. शरद पूर्णिमा

(मनोकामना सिद्धि एवं संतान की मंगलकामना के लिए)

शद पूर्णिमा का पर्व आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाया जाता है। नवरात्रि और विजयादशमी के बाद आने वाला सबसे महत्वपूर्ण पर्व है– शरद पूर्णिमा। भगवान श्रीकृष्ण ने जगत की भलाई के लिए रासोत्सव का यह दिन निर्धारित किया है, क्योंकि रात्रि को ही सोलह कलाओं से पूर्ण चंद्रमा अपनी अमृतमयी चंद्रिका धरा पर बिखेरता है। शरद पूर्णिमा के दिन माताएं अपनी संतान की मंगलकामना के लिए व्रत रखती हैं और देवी, देवताओं की पूजा करती हैं। संपूर्ण वर्ष में केवल शरद पूर्णिमा की रात्रि को ही चंद्रमा अपनी षोडश कलाओं वाला होता है।

69. गुरु पूर्णिमा/व्यास पूर्णिमा

(गुरु के प्रति सम्मान, श्रद्धा एवं आस्था प्रकट करने के लिए)

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को व्यास पूजा गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाई जाती है। गुरु परंपरा की सिद्धि के लिए परब्रह्म, ब्रह्मा, शक्ति, व्यास, शुकदेव, गौढपाद, गोविंद स्वामी, शंकराचार्य का नाम मंत्र से अवाहनादि पूजन करके अंत में अपने दीक्षा गुरु का देव तुल्य पूजन करना चाहिए। गुरु कृपा से जीवन में ज्ञान–विज्ञान, सुख–आनंद की प्राप्ति होती है।

गुरु पूर्णिमा के दिन अपने गुरु की पूजा करने से दय का अंधकार मिटता है, जीवन कल्याणमय बनता है, क्योंकि गुरु का अभिप्राय ही है अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने वाला। 'गु' यानी अंधेरा, 'रु' का अर्थ है मिटा देने वाला भाव। जो अज्ञानता के अंधकार को मिटा दे, वही होता है सच्चा और पूर्ण गुरु।

70. वैशाखी पूर्णिमा

वैशाखी पूर्णिमा बड़ी पवित्र, पावन तिथि है। इस दिन दान, धर्म, जप, स्नानादि पुण्य कार्य करने से महान पुण्यफल की प्राप्ति होती है। यह तिथि उदय से अगले दिन सूर्योदय तक रहे, तो श्रेष्ठ मानी जाती है। इस दिन धर्मराज के निमित्त जलपूर्ण कलश और पकवान देने से गोदान के समान फल प्राप्त होता है। इस दिन पांच या सात ब्राह्मणों को शर्करा सहित तिल दान करने से पाप का क्षय होता है तथा एक समय भोजन करके श्री सत्यनारायण का व्रत करने से सुख, संपदा की प्राप्ति होती है।

71. माघ पूर्णिमा

माघ शुक्ल पूर्णिमा को माघ पूर्णिमा कहते हैं। चंद्रोदय काल में पूर्णिमा तिथि व्याप्त होने से सत्यनारायण व्रत, कथा आदि कार्य के लिए उक्त काल शुभ है। पुण्य स्नान, दान आदि के लिए भी यह दिन शुभ है। यह पूर्णिमा विशेष पुण्यफलदायी होती है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

72. फाल्गुन पूर्णिमा

फाल्गुन पूर्णिमा का विशेष महत्व है। इस दिन अदिति के गर्भ से आदित्य तथा अनुसूया के गर्भ से चंद्रमा उत्पन्न हुए थे। सूर्योदय के समय सूर्य का और चंद्रोदय के समय चंद्रमा का पूजन करें। इस दिन प्रदोषकाल में होलिका दहन और होलिका का व्रत भी किया जाता है। व्रती सांयकाल में होली की ज्वाला देखकर अपना व्रत पूर्ण करके भोजन करते हैं।

73. कार्तिक पूर्णिमा पर गंगा स्नान

(मनोवांछित फल प्राप्ति के लिए)

कार्तिक पूर्णिमा को प्रातःकाल गंगा स्नान करके विधि विधान पूर्वक श्री सत्यनारायण भगवान की कथा सुनी जाती है। श्रद्धालुओं के लिए कार्तिक पूर्णिमा बहुत महत्वपूर्ण दिवस है। इसी दिन भगवान विष्णु ने मत्स्यावतार ग्रहण किया था। इसी दिन शिव के प्रकाश स्तंभ के प्रसाद से दुर्गारूपिणी पार्वती महिषासुर का वध करने हेतु शक्ति अर्जित कर सकी थीं। इन्हीं कारणों से हिंदुओं के लिए सभी पूर्णिमाओं में कार्तिक पूर्णिमा विशेष रूप से पवित्र मानी जाती है। इसी दिन लोग गंगा स्नान करके अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करते हैं।

74. कोकिला व्रत

(स्त्रियों को व्रत : परिवार में सुख, समृद्धि, सुंदर रूप एवं अच्छी संतान पाने के लिए)

ऐसा विश्वास किया जाता है कि कोकिला व्रत के करने से स्त्रियों को सात जन्मों तक सुख, सौभाग्य और संपत्ति मिलती है। यह भी मान्यता है कि स्त्री सधवा हो या विधवा, जो भी इस व्रत को करे, तो वह सौ जन्मों तक सौभाग्य पाती है। यह व्रत आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा से प्रारंभ करके श्रावण मास की पूर्णिमा तक किया जाता है। व्रत के दिन सांयकाल स्नानादि करके यह संकल्प लें कि मैं पवित्र रहकर कोकिला व्रत करूंगी।

75. शनिवासरि पौष अमावस्या

अमावस्या के दिन शनिवार का योग होने से इस तिथि को तंत्र–मंत्र, पूजा–पाठ, स्नान–दान, पितृ श्राद्ध दर्पण आदि के लिए बहुत पुण्यदायी माना जाता है। इस दिन अपने पित्रों के निमित्त भोजन वस्त्र तर्पण श्राद्ध आदि करने से पित्रों का विशेष आशीर्वाद प्राप्त होता है एवं गंगा आदि पवित्र नदियों में स्नान करने से विशेष पुण्य फल की प्राप्ति होती है।

76. हरियाली अमावस्या

श्रावण कृष्ण अमावस्या को हरियाली अमावस कहते हैं। इस दिन किसी एकांत जलाशय अथवा तीर्थ में जाकर स्नान करके अन्न वस्त्र, धन का सात्विक भाव से दान करने से या यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन कराने से पितृगण प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं। जिससे जीवन हरा–भरा बनता है।

77. मौनी अमावस्या

यह तिथि श्राद्ध, तर्पण आदि सभी पितृ कार्यों के लिए शुभ है। अमावस्या सूर्योदय व्यापिनी हो तो देव कार्य, व्रत, जप, स्नान आदि के लिए विशेष शुभ है। इसके अतिरिक्त इस अमावस्या को मौन व्रत रखने से भी पापों का प्रायश्चित तथा पुण्य फल की प्राप्ति होती है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

78. मकर संक्रांति

(सूर्य देव का व्रत : कष्टों से मुक्ति एवं जन्म–मरण के चक्र से बचने के लिए)

मकर संक्रांति का पर्व माघ मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को जब सूर्य मकर राशि में प्रविष्ट होता है, उस दिन मनाया जाता है। सूर्य के उत्तरायण होने को मकर संक्रांति कहते हैं। पौराणिक कथा के मतानुसार यशोदा ने इस दिन श्रीकृष्ण के जन्म के लिए यह व्रत रखा थ। उसी दिन से मकर संक्रांति के व्रत की परिपाटी चली आ रही है। पुराणों में वर्णित है कि सूर्य के मकर राशि में होने से मृत्यु को प्राप्त व्यक्ति की आत्मा मोक्ष को प्राप्त करती है अर्थात आत्मा को जन्म–मरण के बंधनों से मुक्ति मिल जाती है। महाभारत काल में अर्जुन के बाणों से घयल भीष्म पितामह ने गंगा के तट पर सूर्य के मकर राशि में प्रवेश का छब्बीस दिनों तक इंतजार किया था। इच्छा मृत्यु का वरदान मिलने के कारण वह मोक्ष की प्राप्ति के लिए सूर्य के उत्तरायण होने तक जीवित रहे।

79. वैशाख संक्रांति

वैशाख संक्रांति परम पवित्र पर्व है। इस दिन भगवान सूर्य अपनी उच्च राशि मेष में प्रवेश करते हैं। इस दिन पवित्र तीर्थों में स्नान, दान, पूजा, पाठ आदि करने से महापुण्य फल की प्राप्ति होती है। इस दिन गंगा आदि पवित्र नदियों में स्नान तथा यथाशक्ति दान, पूजा, पाठ आदि अवश्य करने चाहिए।

80. जीवत्पुत्रिका का व्रत

(स्त्रियों का व्रत : पुत्र की रक्षा एवं लंबी आयु के लिए)

यह व्रत आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन रखा जाता है। जो स्त्रियां जीवत्पुत्रिका का व्रत करती हैं, उनका उद्देश्य पुत्र के जीवन की रक्षा करना यानी दीर्घायु की कामना करना प्रमुख होता है, ताकि उनको आजीवन पुत्र शोक न सताए। यदि पुत्र का अल्पायु योग हो, तो वह भी इस व्रत के प्रभाव से मिट जाता है और उसे पूर्ण आयु प्राप्त होती है। इसके अलावा जिनके पुत्र तो होते हो, लेकिन जीवित नहीं बचते, वे इस व्रत के करने स जीवित रहने लगते हैं। व्रती महिलाएं नित्य कर्म, स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान् सूर्य, राजा जीमूतवाहन आदि की पूजा करके प्रसाद चढ़ाती हैं।

81. शत अपराध शमन व्रत

चारों आश्रम में अनासक्त हो नास्तिक वृत्ति, होम आदि कर्मों का परित्याग, अशौच, निर्दयता, लोभवृत्ति, ब्रह्मचर्यहीनता, व्रतादि का पालन न करना, अन्न–धन या आशीष का कभी दान न करना, अमंगल, क्षमाहीनता, जनपीड़ा, प्रपंच, वेदनिंदा, नास्तिकता, कठोरता, हिंसा, चोरी, असत्यवादिता, इन्द्रियपरायणता, क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या, दंभ, प्रमाद, कटुभाषण, शठता, माता, पुत्र आदि के पालन में अनासक्ति, अपूज्य की पूजा, जप के प्रति अनासक्ति, पंचयज्ञ के प्रति विमुखता, संध्या–हवन–तर्पण आदि नित्य कर्मों में अनास्था, ऋतुहीन स्त्री से संसर्ग, पर्व आदि में स्त्री सहवास, पर स्त्री के प्रति आसक्ति, वेश्यागमन, पिशुनता, अंत्यजसंग, अपात्र को दान, माता–पिता की सेवा न करना, पुराणों–स्मृतियों का अनादर करना, सबसे झगड़ा करना, अभक्ष्य भक्षण करना, बिना विचारे कार्य करना, स्त्री द्रोह, भार्यासंग्रह, मन पर विजय न प्राप्त करना, शास्त्र का त्याग, विद्या की विस्मृति, ऋण वापस न देना, कामनासक्ति, भार्या, कन्या एवं पुत्र का विक्रय, बिलों में पानी डालना, ईंधनार्थ वृक्ष काटना, सरोवर–तालाब आदि के जल को दूषित करना, याचना, स्ववृत्ति का त्याग, विद्या का विक्रय, कुमैत्री, गो–वध, स्त्री–वध, मित्र–वध, भ्रूणहत्या, पराए अन्न एवं शूद्रान्न को ग्रहण करना, पौरोहित्य, शूद्र का अग्निकर्म कराना, विधिविहीन कर्म का निष्पादन, विद्वान होकर

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

भी याचना करना, वाचालता, प्रतिग्रह लेना, श्रोत्रियकर्म और संस्कार के प्रति अनासक्ति स्वर्ण चोरी, सुरापान, ब्रह्म हत्या, गुरुपत्नी से संसर्ग, पातकियों से संबंध, आर्त व्यक्ति का दुःख दूर न करना आदि अपराध की श्रेणी में आते हैं। तत्वज्ञ विद्वानों ने भी इन बातों को स्वीकार किया है। अतः इन पापों से मुक्त होने के लिए अनघ प्रभु भगवान सत्यदेव की व्रत पूजा करनी चाहिए। इनकी पूजा मार्गशीर्ष से प्रारंभ करके प्रत्येक पक्ष की द्वादशी को करनी चाहिए।

82. अरुन्धती व्रत

(सुहागिनों का व्रतः बाल वैधव्य दूर करने के लिए)

महर्षि कर्दम की पुत्री तथा ऋषि वसिष्ठ की पत्नी अरुंधती के नाम से इस व्रत का नामकरण हुआ। यह व्रत जन्म–जन्मांतरों के बाल–वैधव्य दोष को दूर करता है, अटल सौभाग्य प्रदान करता है, आदर्श प्रेरणाएं प्रदान कर स्त्रीचरित्र के उत्थान में सहायक होता है। स्कंद पुराणानुसार यह व्रत चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा से प्रारंभ होकर तृतीया तक यानि तीन दिन चलता है। व्रत की शुरुआत प्रतिपदा को करें व स्नान कर यह संकल्प करें – हे माता! मुझे इस जन्म में तथा दूसरे जन्म में बाल वैधव्य होने का दुख न हो, मेरा सौभाग्य अखंड बना रहे।

दूसरे दिन द्वितीया को ध्रुव वसिष्ठ और अरुन्धती की सोने से निर्मित मूर्तियों को स्थापित करने के लिए धान का ढ़ेर बनाएं और उस पर कलश रखकर उसके ऊपर ये तीनों मूर्तियां स्थापित करें। पहले अरुन्धती का आह्वान करके षोडशोपचार पूजन करें और प्रार्थना करें कि हे माता! वसिष्ठजी से प्रिय बोलने वाली देवी! आप मुझे अखंड सौभाग्य, धन–धान्य और पुत्र प्रदान करें। फिर वसिष्ठ और ध्रुव का पूजन विधि–विधान से करें। अगले दिन तृतीया को शिव–पार्वती को पूजन कर व्रत तोड़ें। ब्राह्मणों को भोजन कराकर सुयोग्य पुरोहित को मूर्तियों का दान कर दें।

83. धनतेरस

(दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन हेतु)

कार्तिक कृष्णपक्ष त्रयोदशी को धन्वंतरि जयंती और धनत्रयोदशी दोनों ही मनाने का विधान है। इस दिन घर में नई चीज खासकर बर्तन, सोना–चांदी खरीदने का विधान है। इस दिन धन का अपव्यय व किसी को उधार भी नहीं दिया जाता है। लोग व्यापार में लेन–देन करने से भी बचते हैं। मान्यता है कि धनतेरस के दिन धन का अपव्यय रोकने से अगले वर्ष धन का संचय होता है। इस दिन प्रदोषकाल में घर के बाहर यम के लिए दीपदान करने से घर के सदस्यों को अकालमृत्यु का भय नहीं रहता है।

यह यमराज का दिन भी कहलाता है। इस दिन यम को प्रसन्न करने से परिवार में वर्ष भर शांति व सुख कायम रहता है। यह दिन स्वास्थ्य के देवता धन्वन्तरि का जन्मदिन भी है, जो निरोग रहने का वरदान देते हैं। यम का वास जल के किनारे होता है और धनवंतरि समुद्र मंथन के समय जल से प्रकट हुए थे। अतः इस दिन जलपूजन और जल में दीपदान करना चाहिए। यदि घर में अशांति हो, सास–बहू, पिता–पुत्र, अथवा पति–पत्नी के मध्य कलह, संतान प्राप्ति में बाधा, संतान गलत मार्ग पर, बच्चों के विवाह में अड़चन, स्वयं कुयोग से परेशान, परिवार के सदस्यों को असाध्य रोग, व्यापार–व्यवसाय में बरकत नहीं हो रही हो, नौकरी में परेशानी, पदोन्नति में रुकावटें, स्वयं पितृ दोष अथवा ग्रहों की पीड़ा से ग्रस्त अथवा राहु व शनि ग्रह से परेशान हों तो धनतेरस के दिन यम देवता की निष्ठापूर्वक पूजा करें। जिन्हें कोई परेशानी नहीं है उन्हें जल का पूजन व दीप दान करना चाहिए। इससे प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

84. दीपावली / लक्ष्मी पूजन

(ऋद्धि–सिद्धि, धन, वैभव प्राप्ति के लिए)

दीपावली प्रतिवर्ष कार्तिक कृष्ण अमावस्या को हर्षोल्लास के साथ लक्ष्मी पूजन करके न केवल हमारे देश में, बल्कि विदेशों में भी मनाई जाती है। इस दिन भगवान राम चौदह वर्षों का वनवास पूरा करके और रावण का वध कर श्रीलंका विजय प्राप्त करके अयोध्या लौटे थे।

भगवान् विष्णु ने दैत्यराज बलि की कैद से लक्ष्मी सहित अन्य देवताओं को छुड़वाया तो उनका सारा धन–धान्य, राजपाट एवं वैभव लक्ष्मीजी की कृपा से ही पुनः परिपूर्ण हुआ था। लक्ष्मी की स्तुति में स्वयं देवराज इंद्र ने कहा है– सिद्धि, बुद्धि, प्रदात्री, भोग और मुक्ति दोनों को प्रदान करने वाली, मंत्रपूता आद्या शक्ति, सर्वशक्तियुक्ता, योग का आधार लक्ष्मी ही है, जिसके बिना कुछ भी नहीं चल सकता।

85. गोवर्धन / अन्नकूट पूजा

(भगवान् श्रीकृष्ण को प्रसन्न करने तथा गोवंश की रक्षा के लिए)

यह पर्व कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को मनाया जाता है। अन्नकूट और गोवर्धन उत्सव श्रीविष्णु भगवान् की प्रसन्नता के लिए मनाना चाहिए। इन पर्वों से गौओं का कल्याण होता है, पुत्र पौत्रादि संततियां प्राप्त होती हैं, ऐश्वर्य और सुख प्राप्त होता है। गोवर्धन पूजा से परिवार में धन–धान्य की वृद्धि होती है और शनि की पीड़ा से छुटकारा मिलता है। शनि ग्रह से पीड़ित व्यक्ति गोबर से बने गोवर्धन जी के बाएं भाग में तेल का दीपक जलाए, उन्हें नमस्कार करें और शनि की पीड़ा दूर करने की प्रार्थना करें। शनि ग्रह की शांति का यह अचूक उपाय है।

86. शारदीय नवरात्र

(दुर्गा आराधना, सुख–शांति, धन–वैभव और यश के लिए)

नवरात्र का पर्व वर्ष में दो बार मनाने का विधान है। पहला चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक मनाए जाने वाले नवरात्र को वासंतिक और आश्विन शुक्ल प्रतिपदा नवमी तक मनाए जाने वाले दूसरे नवरात्र को शारदीय नवरात्र कहा जाता है। शास्त्रों के अनुसार शारदीय नवरात्र का ज्यादा महत्व बताया गया है। नवरात्र के नौ दिनों में देवी भगवती के नौ रूप – शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री की पूजा आराधना करने का विधान है। पुराण में कहा गया है कि नवरात्रि के व्रत महासिद्धि देने वाले, सभी शत्रुओं का दमन करने वाले, सब कार्यों को पूरा करने वाले, यश, धन–धान्य, राज्य, पुत्र, संपत्ति सबकी प्राप्ति कराते हैं।

87. आरोग्य व्रत

आरोग्य व्रत को पौष शुक्ल द्वितीया से प्रारंभ कर प्रत्येक माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को करते हुए मार्गशीर्ष की शुक्ल पक्ष की द्वितीया को पूर्ण किया जाता है।

पौष शुक्ल द्वितीया को गोशृंगोदक (गायों के सींगों को धोकर लिए हुए जल) से स्नान करके सफेद वस्त्र धारण कर सूर्यास्त के बाद बालेंदु (द्वितीया का चंद्रमा) का गंधादि से षोडशोपचार पूजन करें। जब तक चंद्रमा अस्त न हो तब तक गुड़, दही, परमान्न (खीर) और लवण से ब्राह्मणों को तृप्त करके वस्त्राभूषणादि व द्रव्य दक्षिणा देकर उनका आशीर्वाद प्राप्त कर केवल गोरस (छाछ) पीकर जमीन पर शयन करें। प्रातः कालीन नित्य नैमित्तिक कर्मों को नियमानुसार ही संपन्न करें और स्नानोपरांत आरोग्य व्रत की पूर्णता का संकल्प लेकर संपूर्ण दिन निराहार रहते

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

हुए व्रत का पालन करें। इस प्रकार प्रत्येक मास की शुक्ल पक्ष द्वितीया को एक वर्ष तक चंद्र पूजन और भोजनादि करके बारहवें महीने मार्गशीर्ष की शुक्ल पक्ष द्वितीया को बालेंदु का यथापूर्वक पूजन करें और इक्षुरस (ईख के रस) का घड़ा, सोना, वस्त्र व अन्य उपयोगी सामग्री भोजनादि, पदार्थ तथा द्रव्य दक्षिणादि ब्राह्मणों को सम्मान पूर्वक देकर भोजन करें। इससे रोगों की निवृत्ति और आरोग्य की प्रवृत्ति होती है और सब प्रकार के सुख मिलते हैं। रोग ग्रस्त लोगों के लिए तो यह अति उत्तम व्रत है। स्वस्थ व सुखी जीवन के लिए यह व्रत सभी को करना चाहिए। चंद्र स्तुति, चंद्र कवच, चंद्र स्तोत्र का पाठ तथा चंद्र मंत्रों का जप भी अवश्य करें। चंद्र उत्पत्ति की कथा पढ़ें।

चंद्र मंत्र

- ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः।
- ॐ सोमाय नमः।
- क्षीरपुत्राय विद्महे अमृतत्वाय धीमहि। तन्न श्रन्द्रः प्रचोदयात्।
- क्षीरपुत्राय विद्महे अमृतत्वाय धीमहि। तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात्।
- अमृतांगाय विद्महे कलारूपाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्।
- अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि। तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात्।

88. गंगा दशहरा

भविष्य पुराण में लिखा है कि जो मनुष्य इस पर्व के दिन गंगा के पानी में खड़ा होकर दस बार 'गंगा स्तोत्र' पढ़ता है, वह चाहे गरीब हो या अमीर, सामर्थ्यवान हो या असमर्थ, वह गंगा को पूजकर उस फल को पाता है। वह शरीर, वाणी और चित्त से होने वाले दस तरह के पापों से मुक्त हो जाता है।

शास्त्रों के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को दशमी तिथि, हस्त नक्षत्र युक्त दशमी के दिन गंगा पूजन, स्नान, ध्यान, उपासना अन्न, वस्त्रादि का दान उपासना आदि करने से कायिक, वाचिक, मानसिक आदि दोषों का नाश होता है। इस दिन शिवलिंग का पूजन करने व रात्रि जागरण करने का भी विधान है, जिसका अनंत फल प्राप्त होता है।

89. वट सावित्री व्रत

(पति की मंगल कामना एवं अखंड सौभाग्य प्राप्ति हेतु)

यह व्रत स्त्रियों का एक महत्वपूर्ण पर्व है, क्योंकि इसके करने से उनका सुहाग अचल होता है। इसलिए सुहागिन स्त्रियां अखंड सौभाग्यवती बनी रहने की मंगल कामना से इसे करती है। सत्यवान और सावित्री की कथा का इस पर्व से गहरा संबंध है। इस व्रत को ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से अमावस्या अथवा पूर्णिमा तक करने का विधान है, लेकिन ज्यादातर लोग इसे अमावस्या को ही करते हैं। इस दिन वट वृक्ष का पूजन किया जाता है। साथ ही सत्यवान, वावित्री और यमराज की भी पूजा की जाती है।

90. हरितालिका व्रत

(स्त्रियों का व्रत : सुयोग्य पति पाने एवं पति की दीर्घायु हेतु)

यह व्रत भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को रखा जाता है। इस व्रत के द्वारा कुमारी कन्याएं अपने भावी

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

सुंदर पति के लिए भगवान से प्रार्थना करती हैं, ताकि उन्हें मनचाहा पति मिल जाए। सुहागिनें अपने स्वामी की लंबी आयु पाने और सौभाग्य की रक्षा हेतु इस व्रत का पालन बड़ी कठोरता से करती है। बहुत स्त्रियां तो निर्जला व्रत रहकर इसका पारण करती हैं। इस व्रत को करने वाली सौभाग्यवती स्त्रियां पार्वती के समान सारे सांसारिक सुख भोगकर अंत में शिवलोक को जाती हैं। व्रत के प्रभाव से स्त्री के सब पाप नष्ट हो जाते हैं और उसे करोड़ों यज्ञ का फल मिलता है।

91. कपर्दि विनायक व्रत

(मनोकामनाएं पूरी करने के लिए)

यह व्रत श्रावण मास के शुक्ल पक्ष के चतुर्थी से भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तक एक मास का कपर्दि विनायक (गणेश) का व्रत करता है और एक समय भोजन करता है, उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती है। व्रती को सभी सिद्धियां प्राप्त हो जाती है। उसका ऐसा कोई कार्य नहीं होता, जो सिद्ध न हो सके। व्रती व्रत धारण करने से पहले यह संकल्प करें कि मैं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारों पुरुषार्थों की सिद्धि के लिए कपर्दि विनायक व्रत को करता हूं।

92. भीष्म पंचक व्रत

(स्त्रियों का व्रत : पापों से मुक्ति एवं पुत्र पौत्रादि की वृद्धि के लिए)

यह व्रत कार्तिक शुक्ल एकादशी से आरंभ होकर पूर्णिमा को समाप्त होता है। यह व्रत धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का प्रदाता है। इस परम पुण्यदायक पवित्र व्रत को करने अक्षय फल की प्राप्ति होती है, समस्त पापों का नाश होता है। इस व्रत में व्रती को पांच दिन तक काम, क्रोध, पाप, भाषण, मांस, शराब, स्त्री सेवन का परित्याग कर सात्विक जीवन बिताना चाहिए।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अध्याय–18

मंत्र रहस्य

Future Point

ध्यान

अपनी मानसिक चेतना को सब ओर से हटाकर किसी एक वस्तु, चित्र अथवा मंत्र पर केंद्रित करने की प्रक्रिया को ध्यान कहते हैं। जब ध्यान केंद्रित करते समय हमारा ध्यान तेल की धारा के समान खंडित हुए बिना लगा रहता है उसे ध्यान की श्रेष्ठ अवस्था कह सकते हैं।

ध्यान केंद्रित करते हुए हमारे मस्तिष्क में बहुत से विचार व सुझाव हमें ध्यान पथ से भटका सकते हैं। इस प्रकार के विचारों और सुझावों को लगातार हटाते रहना होगा और इस बात के लिए सतर्क रहना होगा कि हमारा ध्यान हमारे ध्यान बिंदु से न भटके। पंतजलि योग सूत्र में समाधि की स्थिति को प्राप्त करने के लिए ऋषि पंतजलि ने अष्टांग योग का (जो राजयोग के नाम से विख्यात है) सूत्र दिया इस अष्टांग योग अथवा राजयोग के 8 अंग इस प्रकार हैं :

1. यम, 2. नियम, 3. आसन, 4. प्रत्याहार, 5. प्रणायाम, 6. धारणा, 7. ध्यान व 8. समाधि।

इस अष्टांग योग की साधना से कोई भी व्यक्ति शीघ्र ही ध्यान लगाने की प्रक्रिया में निष्णात् हो सकता है। ध्यान योग के विभिन्न साधनों में मंत्र योग सभी के लिए सुगम व सहज है।

मंत्र

मंत्र का शाब्दिक अर्थ ''म'' से मन ''त्र'' से प्राण अर्थात् प्राणों की रक्षा करने वाला। भारतीय हिंदू शास्त्रों, वेदों व पुराणों में मंत्रों का बहुत महत्व बताया गया है। व्यक्ति की प्रसुप्त या विलुप्त शक्ति को जगाकर उसका दैवी शक्ति से सामंजस्य कराने वाला गूढ़ ज्ञान मंत्र कहलाता है। सदगुरु की कृपा एवं मन को एकाग्र कर जब इसको जान लिया जाता है, तब यह साधक की सभी मनोकामनाओं को पूरा करता है।

मंत्रों को दो भागों में विभाजित किया जाता है– वैदिक मंत्र एवं तांत्रिक मंत्र। इन्हीं का ही एक रूप होता है बीज मंत्र इसकी शक्ति व रूप अनंत है। शैव, शाक्त, वैष्णव एवं बौद्ध धर्मों के सभी संप्रदायों में बीज मंत्रों का मंत्र साधना में समान रूप से प्रयुक्त होना इसका साक्ष्य है। बीज तीन प्रकार के होते हैं– मौलिक, यौगिक व कूट, इनको एकाक्षर, बीजाक्षर एवं घनाक्षर भी कहते हैं। बीज मंत्र समस्त अर्थों का वाचक एवं बोधक होता है तथा अपने आराध्य देव का समस्त रूप इसके बीज मंत्र में निहित होता है। इन मंत्रों में समग्र शक्ति विद्यमान होते हुए भी गुप्त रहती है। इसी तरह नाम मंत्र भी होते हैं। जो बीज रहित होते हैं। इन मंत्रों के शब्द, देवता, रूप एवं शक्ति को अभिव्यक्ति देने में समर्थ होते हैं। शायद यही कारण है कि इन मंत्रों को भक्ति भाव से कभी भी जपा जा सकता है।

मंत्र साधना में विशेष ध्यान देने वाली बात है– मंत्र का सही उच्चारण जब तक मंत्र का सही एवं शुद्ध उच्चारण नहीं होगा तब तक अभीष्ट परिणाम की आशा करना व्यर्थ है। इस पुस्तक के माध्यम से यह जानकारी देने का प्रयास किया गया है कि किस तरह साधकगण सरल और निरापद विधियों द्वारा विधान कर अभीष्ट प्राप्त करें।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आने वाली आधिभौतिक, आधि दैविक, आध्यात्मिक समस्याओं के निवारण हेतु कुछ

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

मंत्र दिये जा रहे हैं जिनका जप करने से समस्याओं का निदान व लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

मंत्र तंत्र यंत्र

मंत्र के अर्थ की व्याख्या के विस्तार को जो मनुष्य की हर प्रकार के भय से रक्षा करता है तंत्र के नाम से जाना जाता है। तंत्र में ईश्वर के रूप, गुण व प्रभाव का समावेश होता है इसके पांच अंग है :

1. पटल, 2. पद्धति, 3. कवच, 4. सहस्र नाम, 5. स्तोत्र

यंत्र साधना इस प्रवाह का तृतीय अंग है संभवतः यंत्र साधना की परंपरा मूर्ति पूजा से पुरातन है।

जब किसी देवता की आराधना के लिए यंत्र, मंत्र और तंत्र इन तीनों विधियों को एक साथ प्रयोग किया जाता है तो यह उस देवता की आराधना की पूरी प्रक्रिया कहलाती है और इस पूरी प्रक्रिया को तंत्र के नाम से जाना जाता है। आधुनिक समय में बहुत से लोगों को तंत्र का शाब्दिक अर्थ मालूम न होने की वजह से वह इसे जादू–टोना से ज्यादा कुछ नहीं समझते लेकिन वास्तव में तंत्र का अर्थ है उपासना का संपूर्ण विधान व प्रक्रिया। अलग–अलग देवताओं की उपासनाओं का विधान अलग–अलग प्रकार से होता है। उसे तत् देवता का तंत्र माना जाता है। जैसे गणपति तंत्र, सूर्य तंत्र, शिव तंत्र, काली या श्री विद्या तंत्र। श्री विद्या के यंत्र, मंत्र व तंत्र को बिना गुरु दीक्षा के प्रयोग नहीं करना चाहिए। वास्तव में तंत्र का बहुत प्रभावशाली परिणाम होता है। मंत्रों का जप करने से ईश्वर का साक्षात्कार होता है और मंत्र जप करने वाला स्वयं को तथा दूसरों को आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक व शारीरिक उन्नति प्रदान करने में सक्षम होता है। मंत्रों का जप करने से समस्याओं का निदान होता है तथा इच्छाओं की पूर्ति होती है।

मंत्र योग और कुंडलिनी

वह साधक जो मंत्र जप कर रहा हो उसे अपने आपको योग और कुंडलिनी विज्ञान से भी परिचित करवाना चाहिए। योग साधना में ऋषि पतंजलि का अष्टसूत्रीय अष्टांग योग अति प्रसिद्ध है इसे राजयोग के नाम से भी जाना जाता है। अष्टांग योग के आठ अंग इस प्रकार हैं :

1. यम, 2. नियम, 3. आसन, 4. प्रणायाम, 5. प्रत्याहार, 6. धारणा, 7 ध्यान व 8. समाधि।

1. यम और 2. नियम के माध्यम से साधक अपनी अनावश्यक इच्छाओं पर नियंत्रण प्राप्त करके अध्यात्म पथ की प्रगति पर अग्रसर होता है।

3. आसन से शरीर को बल प्राप्त होता है जिससे ध्यान साधना के लिए यह शक्तिशाली माध्यम बन जाता है। पद्मासन को सर्वश्रेष्ठ आसन माना जाता है।

4. प्राणायाम साधक की मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक उन्नति के लिए सर्वश्रेष्ठ है। इसके अतिरिक्त प्रणायाम के नियमित अभ्यास से मन को एकाग्र करने की शक्ति प्राप्त होती है। वस्तुतः प्रणायाम योग साधना की आत्मा है। प्रणायाम करने से पापों का नाश होता है और ईश्वर की प्राप्ति होती है।

5. प्रत्याहार का अभिप्राय आहार में अनुशासन अर्थात् साधक का आहार सात्विक होना चाहिए।

6. धारणा का अर्थ है किसी वस्तु विशेष पर मन को केंद्रित करने से है। किसी वस्तु विशेष, चित्र, ॐ या मंत्र पर मन को निरंतर एकाग्र करने की प्रक्रिया को ध्यान कहते हैं। ध्यान की परिपक्व अवस्था समाधिस्थ होने के द्वार

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

खोल देती है।

उपरोक्त प्रक्रिया का अभ्यास कुंडलिनी जागरण में सहायक होता है। यहां पर हम कुंडलिनी जागरण की प्रक्रिया का संक्षेप में वर्णन करेंगे।

मंत्र योग का मुख्य उद्देश्य कुंडलिनी शक्ति को जाग्रत करना है। इस शक्ति को जाग्रत करने के विभिन्न प्रणालियां है। अष्टांग योग का निरंतर अभ्यास कुंडलिनी जागरण में सहायक होता है। जिसके परिणामस्वरूप योगी योग सिद्धियों को प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है। यह कुंडलिनी जिसमें असीमित ऊर्जा निहित होती है सुप्तावस्था में प्रत्येक जातक में विद्यमान होती है व जाग्रत होने को सदा सर्वदा तैयार रहती है। यह सर्पाकार अवस्था में कुंडली मारकर मेरूदंड (रीढ़ की हड्डी) के ठीक नीचे अपना सर नीचे की ओर किए हुए रहती है। योग का संपूर्ण अनुशासन कुंडलिनी जागरण को नियमित अभ्यास के इर्द गिर्द घूमता है। योग के द्वारा साधक उर्ध्वरेता बनता है। अर्थात् वह अपनी कुंडलिनी शक्ति को उर्ध्वमुखी कर देता है। ऐसा करने से हमारे षट् चक्र क्रियात्मक होने लगते हैं और योगी को विशेष शक्तियां प्राप्त होने लगती है। जब एक–एक करके कुंडलिनी शक्ति योगी के षट् चक्रों पर प्रहार करते हुए उनको क्रियान्वित करने लगती है तो योग का अभ्यास करने वाले साधक को मानसिक व आध्यात्मिक ऊर्जाएं प्राप्त होने लगती है। अर्थात् ऐसे में उसे कुछ भी प्राप्त करना असंभव नहीं रह जाता है। कुंडलिनी को विभिन्न प्रकार के आसनों से जाग्रत किया जा सकता है।

1. पद्मासन, 2. सिद्धासन 3. स्वस्तिक आसन 4. सुखासन 5. शीर्षासन 6. सर्वांगासन 7. मत्स्यासन 8 पश्चिमोत्तआसन 9. मयूरासन 10. अर्धमत्स्येन्द्रासन 11. व्रजासन 12. उर्ध्वपद्मासन

मुद्राओं और बंधों का अभ्यास करने से कुंडलिनी शक्ति शीघ्र जाग्रत हो जाती है। 1. मूल बंद्ध 2. जालंधर बंध 3. उड्डीयान बंध 4. महामुद्रा 5. महाबंध 6. महावेध 7. योग मुद्रा 8. विपरीत करणी मुद्रा 9. खेचरी मुद्रा 10. वज्रोली मुद्रा, 11. शक्ति चालन मुद्रा, 12. योनि मुद्रा

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य प्रक्रियाओं जैसे लय योग, नाद सिद्धि, भक्ति योग, मंत्र जप, ज्ञान योग, हठ योग, तपस्या, प्रणायाम, क्रिया योग, तंत्र और शक्ति पात के द्वारा भी जाग्रत किया जा सकता है मंत्रों में बाला, पंचदशी और षोडशी इत्यादि मंत्रों के नियमित जप से कुंडलिनी शक्ति को शीघ्र जाग्रत किया जा सकता है। इसलिए शास्त्रों में इन मंत्रों का अत्यंत गौरवपूर्ण वर्णन मिलता है। कुंडलिनी जागरण के द्वारा साधक किसी भी समस्या के लिए उपाय कर सकता है। अन्यों के भाग्य के द्वार भी खोल सकता है।

चक्रों के स्थान

चक्र	स्थान	ग्रह	देवता
मूलाधार	मेरूदंड के नीचे गुदा के पास	बुध	गणेश
स्वाधिष्ठान	गुप्तांगों के पास	शुक्र	
मणिपुर	नाभि	मंगल	ब्रह्म
अनाहत	हृदय	चंद्र	विष्णु
विशुद्धि	ग्रीवा	शनि	शक्ति
आज्ञा	भ्रूमध्य	गुरु	
सहस्रसार	(ब्रह्मरंध्र) शीर्ष	सूर्य	

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

मंत्र योग

मंत्र योग कुंडलिनी जागरण के लिए सर्वाधिक सहज व पक्का माध्यम है। यदि मंत्रों का उच्चारण शुद्ध हो तो इन मंत्रों में विशेष चक्रों को जाग्रत करने की विशेष शक्तियां होती है। कुंडलिनी जागरण के लिए श्रीविद्या सर्वश्रेष्ठ मंत्र माना गया है लेकिन श्रीविद्या, बाला, पंचदशी, षोडशी या महाषोडशी का जप बिना गुरु दीक्षा के नहीं किया जाना चाहिए। मंत्र योग में समय, धैर्य और आध्यात्मिक गुरु का परामर्श विशेष आवश्यक होता है। मंत्र शास्त्र में ऐसे बहुत से मंत्र हैं जो हमें ईश्वर से जोड़ सकते हैं और ध्यान की उच्चतम् अवस्थाओं तक पहुंचा सकते हैं। कुंडलिनी शक्ति को सुव्यवस्थित व शास्त्र सम्मत विधि से जगाया जा सकता है प्रत्येक मंत्र का विभिन्न चक्रों पर विभिन्न प्रभाव होता है। हिंदू ऋषियों द्वारा प्रणीत 'नम' शब्द का मौन होकर जप करने से इसके ध्वनि कंपन हमारे बांये मस्तिष्क, आंखों और पिटुटरी ग्लैंडस को क्रियाशील करने लगते हैं। "म" शब्द आज्ञा चक्र का बीज मंत्र होता है जो हमारे ऊपरी दांये मस्तिष्क और पिनियल ग्लैंड को मजबूती देता है, जिससे हमारे बाएं मस्तिष्क की आवश्यकता पड़ने पर सुरक्षा होती है और ऐसा करने के लिए यह मेलाटॉनिन नामक हारमोनाइन को रिलीज करके मस्तिष्क को शांत करता है। इस तरह नम शब्द हमारे पूरे मस्तिष्क को प्रेरित व सक्रिय करता है। इसके अतिरिक्त नम शब्द हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

इसके अलावा वैदिक मंत्र भी बहुत शक्तिशाली होते हैं। इसी प्रकार से प्रत्येक चक्र का एक बीज मंत्र होता है जिससे ऊर्जा की प्राप्ति होती है जो चक्र को पूर्णतया सक्रिय कर देता है।

आज्ञा चक्र	ॐ
ग्रीवा चक्र	हं
हृदय चक्र	यं
सोलर प्लैक्स	रं
हर	वं
आधार चक्र	लं

मंत्र जप ध्यान का सर्वाधिक सुरक्षित व सहज प्रकार है और इसका अभ्यास किसी भी समय/स्थिति में कोई भी साधक कर सकता है। मंत्र साधना का सर्वाधिक व्यवहारिक रूप जप होता है। जप शब्द का अर्थ होता है घुमाना और इस प्रकार से किसी भी मंत्र का जप माला के मनको को घूमाकर किया जाता है। जप माला 108 मनकों की बनी होती है। मंत्र जप के लिए जप माला का उपयोग विशेष प्रभावशाली होता है। क्योंकि ऐसा करते हुए मन व्यर्थ के विचारों में नहीं भटकता और जब भटकता है तो मनके का घूमना बंद हो जाता है। लेकिन जब मंत्र जप निर्बाध रूप से चलता रहता है तो माला का मनका घूमता रहता है और ऐसा न होने की स्थिति में मनका नहीं घूमता और गिनती रूक जाती है। यही कारण है ध्यान के क्षेत्र में नौसिखिए के लिए जप योग सर्वोत्तम है।

जप विधि

जप विधियां तीन प्रकार की होती है।

1. **वाचिक** : मंत्र का उच्च स्वर से उच्चारण करना वाचिक जप कहलाता है।

2. **उपांशु** : बिना आवाज किए होठों को हिलाते हुए जप करना।

3. **मानसिक** : होठों को हिलाए बिना मन ही मन मंत्र जप करना मानसिक जप कहलाता है। इसे मंत्र सिद्धि के

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

लिए सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

मंत्र का जप जपमाला के अतिरिक्त उंगलियों पर भी किया जाता है। इसे करमाला प्रयोग भी कहते हैं।

मंत्र सिद्धि

शास्त्रों में मंत्र सिद्धि के उद्देश्य से किया जाने वाला पुरश्चरण सर्वविदित है। मंत्र में जितने अक्षर हो उतना लक्ष जप किया जाना चाहिए। जेसे पांच अक्षर वाले मंत्र का पांच लाख जप होना चाहिए। किसी भी मंत्र का सवा लक्ष जप करने पर उस मंत्र के देवता का आशीर्वाद प्राप्त हो जाता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि मंत्र का कम से कम सवा लक्ष जप मंत्र सिद्धि के लिए आवश्यक है।

महामृत्युंजय मंत्र की महिमा और उपासना का महत्व

परिचय

मंत्रों में श्रेष्ठ महामृत्युंजय मंत्र से भगवान शिव की पूजा अत्यंत फलदायी सिद्ध होती है, क्योंकि इसका संबंध भगवान शिव से है और यह अपने आप में सिद्ध है। यह मंत्र अत्यंत प्रभावशाली है। महामृत्युंजय मंत्रों में त्र्यंबक मंत्र, महामृत्युंजय त्र्यंबक, मृत्युंजय मंत्र तथा महामृत्युंजय मंत्र शीघ्रातिशीघ्र सिद्ध होने वाले तथा श्रेष्ठ फलप्रदाता हैं। नारायणोपनिषद् में मृत्युंजय शिव के शास्त्रोक्त स्वरूप का उल्लेख है जिसका अर्थ है– 'एक ही अन्यात्मा महादेव की जिसमें आनंद, विज्ञान, मन, प्राण और वाक्' रूप पांच कलाएं हैं। इनमें मृत्युंजय शिव आनंद कलामयरूप हैं। विज्ञान दक्षिणामूर्ति, मन कामेश्वर, प्राण पशुपति (नील लोहितरूप) वाक् भूतेशरूप है। उपर्युक्त उपनिषत् प्रदर्शित तत्व के आधार पर ही मृत्युंजय भगवान के आनंद की प्राप्ति के लिए चिरकाल से साधना पूजा स्मरण होते आए हैं।

महामृत्युंजय मंत्र महिमा

भगवान शिव के परम भक्त और दैत्य गुरु शुक्राचार्य जी ने महामृत्युंजय के वेदोक्त मंत्र की महिमा महर्षि दधीचि को बताई थी जिसका उल्लेख हमारे धार्मिक ग्रंथों एवं वेदों में इस प्रकार है।

त्र्यम्बकं यजामहे च, त्रैलोकापितरं प्रभुम्। त्रिमण्डलस्य पितरं, त्रिगुणस्य महेश्वरम्।।
त्रितत्वास्य त्रिवह्नेश्च, त्रिधाभूतस्य सर्वतः। त्रिदेवस्य त्रिबाहोश्च, त्रिधा भूतस्य सर्वतः।।
त्रिदेवस्य महादेव :, सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। सर्वभूतेषु सर्वत्र, त्रिगुणेषु कृतोयथा।।
इन्द्रियेषु तथान्यत्र, देवेषु च गणेषु च। पुष्पे सुगन्धि वत्सूर :, सुगन्धिरमरेश्वरः।।
पुष्टिश्च प्रकृतेर्यस्मात्, पुरुषाद् वैद्विजोत्तम। महदादिविशेषाणां विकल्पश्चापि सुव्रत।।
विष्णो : पितामहस्यापि, मुनीनां च महामुने। इन्द्रियश्चैव देवानां, तस्माद् वै पुष्टिवर्धनः।।

तं देवममृतं रुपं, कर्मणा तपसाऽपि वा। स्वाध्यायेन च योगेन, ध्यानेन च प्रजायते।।
सत्येनान्येन सूक्ष्मायान्मृत्युपाशद् भव स्वयम्। बंधमोक्ष करो यस्मादुर्वारुकमिव प्रभुः।।
मृत संजीवनी मंत्रो, मम सर्वोत्तमः स्मृत। एवं जप परंः प्रीत्या नियमेन शिवं स्मरन्।।
जपत्वा हुत्वाऽभिमन्त्रयैवं, जलं पिब दिवानिशम्। शिवस्य सन्निधौध्यात्वा नास्ति मृत्युभयंक्वचित्।।

(शिव महापुराण)

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अर्थात् वह त्र्यंबक भगवान तीन लोक के स्वामी, तीन तत्व अग्नि, भूत, स्वर्ग तथा देवों में महान हैं। वह सुगंधि रूप में सर्वत्र व्याप्त हैं। प्रकृति और पुरुष से महदादि तत्वों के समान ही वह पुष्टि वर्धक हैं। वह विष्णु, ब्रह्मा, मुनि आदि के पुष्टि कारक हैं, अमृतमय हैं। स्वाध्याय योग, ध्यान, सत्य एवं अन्य उपासनाओं से प्रसन्न होकर वह जातक को मृत्युभय से मुक्त करते हैं।

इसी प्रकार महर्षि वशिष्ठ जी ने त्र्यंबक मंत्र के 33 अक्षरों को 33 दिव्य शक्तियों का द्योतक माना है। इन देवताओं की गणना इस प्रकार है–

8 वसु, 11 रुद्र, 12 आदित्य, 1 प्रजा एवं 1 वषट्कार। ये तैंतीस देवता प्राणियों के भिन्न–भिन्न शरीर के अंगों में स्थित हैं। सबल तथा जाग्रत अवस्था में ये शक्तियां प्राणियों के शरीर की रक्षा और संहारक शक्तियों का शमन करती हैं। शरीर गत शक्तियों का सबल एवं जाग्रत रहना जीवन और उनका निर्बल तथा लुप्त हो जाना मृत्यु है। इसीलिए महामृत्युंजय मंत्र को शास्त्रों में मृत संजीवनी के नाम से भी जाना जाता है।

महामृत्युंजय मंत्र का अर्थ

वेद शास्त्रों में महामृत्युंजय मंत्र का अर्थ हमारे ज्ञानी ऋषि मुनियों ने बताया है। प्रकारांतर से वाक्यों के अर्थ, मंत्र गत 4 चरणों के अर्थ आदि मुख्य अर्थ इस प्रकार हैं।

वाक्यों के अर्थ

- 'त्र्यम्बक' सर्वज्ञता शक्ति का बोधक है।
- 'यजामहे' नित्य तृप्ति का बोधक है।
- 'सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्' स्वतंत्रता शक्ति का बोधक है।
- 'उर्वारुकमिव बंधनान्' स्वतंत्रता शक्ति का बोधक है।
- 'मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्' नित्यम लुप्ता तथा अचिन्त्यानन्त शक्ति का बोधक है।

मंत्र गत चार चरणों के अर्थ :

- 'त्र्यम्बकं' अंबिका शक्ति सहित त्र्यंबकेश का बोधक है, जो पूर्व दिशा में प्रवाहित शक्ति में स्थित है।
- 'सुगंधिं पुष्टि वर्धनम्' वामा शक्ति सहित मृत्युंजयेश का बोधक है, जो दक्षिण दिशा में प्रवाहित शक्ति में स्थित है।
- 'उर्वारुकमिव बंधनात्' भीमा शक्ति सहित महादेवेश का बोधक है, जो पश्चिम दिशा में प्रवाहित शक्ति में स्थित है।
- 'मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्' द्रोपदी शक्ति सहित संजीवनी का बोधक है, जो उत्तरदिशा में प्रवाहित शक्ति में स्थित है।

मंत्रगत पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध खंडों के अर्थ :

- 'त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्'– यह आधी ऋचा गौरी शक्ति सहित महेश की परिचायिका है, जो दक्षिण पाद में स्थित है।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

- 'उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्'– वामपाद में स्थित यह आधी ऋचा व्यापिनी शक्ति सहित शाम्भवेश की परिचायिका है।

इस प्रकार वेदों तथा शास्त्रों में महामृत्युंजय मंत्र के विभिन्न अर्थ हैं।

जप योग्य मंत्र :

कलिकाल में लोगों को भगवान शिव के महा मृत्युंजय मंत्र का जप अवश्य करना चाहिए ताकि उनके जीवन में सुख–समृद्धि, शांति व आरोग्य बना रहे। जप के पहले भगवान शिव का ध्यान करें, उन्हें स्नान कराकर चंदन तथा भस्म का तिलक लगाएं। फिर बिल्वपत्र, धतूरे, आक के फूल, एकाक्षी नारियल, फल आदि भगवान शिव को अर्पित कर महामृत्युंजय मंत्र का जप यथासंभव रुद्राक्ष की माला पर करें। निम्नलिखित मंत्रों का जप अवश्य करें।

त्रयाक्षर मृत्युंजय मंत्र : ॐ हौं जूं सः

फल

इस मंत्र का नियमित रूप से निरंतर जप करने से यह शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है जिसके फलस्वरूप साधक वाक्पटु, दीर्घायु, रोगमुक्त और यशस्वी होता है और उसे वांछित संपत्ति तथा संतान सुख की प्राप्ति होती है।

त्र्यंबक मंत्र (मृत्युंजय मंत्र) : ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

फल

इस मंत्र के जप के फलस्वरूप साधक अपनी सभी इंद्रियों को वश में कर लेता है। इसके अतिरिक्त उसे अपने शत्रुओं को परास्त करने में सफलता मिलती है।

महामृत्युंजय मंत्र

ॐ हौं जूँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ भूर्भुवः स्वरों ॐ जूँ सः हौं ॐ

फल

यह मंत्र भगवान शिव को सर्वाधिक प्रिय है। यह सर्वश्रेष्ठ मंत्र है। शास्त्रों में कहा गया है कि जिसके घर में इस मंत्र का एक माला जप नित्य किया जाता है, उसे किसी प्रकार का रोग नहीं होता तथा अकाल मृत्यु और मृत्युभय से उसकी रक्षा होती है। इस मंत्र के प्रभाव से व्यक्ति जीवन में पुत्रवान, पौत्रवान, समृद्ध तथा यशस्वी होता है। उसके कुटुंब की बुरी आत्माओं, शत्रुओं आदि से रक्षा होती है। अकाल मृत्यु तथा बलाघात जैसे अशुभ योगों से रक्षा के लिए यह मंत्र अमोघ है।

मंत्र जप करने के सामान्य नियम

- शौच, स्नानादि से निवृत्त होकर धुले वस्त्र पहनें तथा आसन बिछा लें। सामने शिव जी का चित्र हो, तो उत्तम

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

है।

- जप के प्रारंभ में गणपति की पूजा, ध्यान और मानसिक प्रार्थना कर लेनी चाहिए।
- जप के लिए प्रातः काल ब्राह्म मुहूर्त में 4 से 6 बजे तक का समय उत्तम है। समय की नियमितता भी आवश्यक है।
- जप की संख्या निर्धारित कर लें उतनी ही संख्या में प्रतिदिन जप करें। अर्थात पहले दिन जितनी संख्या में जप किया जाए उससे कम संख्या में कदापि नहीं करना चाहिए।
- जप के लिए रुद्राक्ष माला तथा निश्चित मंत्र का प्रयोग करें।
- जप के लिए एक निश्चित स्थान बना लें तथा उसी पर नित्य एकाग्रचित्त होकर जप करें।
- जप पूरा होने के पश्चात् पुनः प्रभु का ध्यान करके 'श्री महामृत्युंजय देवतार्पणस्तु' कहकर जल छोड़ दें।
- आसन के नीचे भूमि वंदना करके वहां की मिट्टी को मस्तक पर लगाने का भी विधान है।

उपासना का महत्व

सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास से युक्त उपासना करने से शांति तथा आनंद की अनुभूति होती है, साधक की सभी मानवोचित कामनाएं शीघ्र पूर्ण हो जाती हैं। अंतःकरण को मलिन बनाने वाली तथा काम, क्रोध, मोह, लोभ, ईर्ष्या, राग, द्वेष जैसी कुटिल वृत्तियों से मुक्ति मिलती है। मन में क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहंकार शून्यता आदि शुभ भावनाएं विकसित होती हैं। शरीर स्वस्थ और परिपुष्ट तथा आत्मा पवित्र और निर्मल हो जाती है। जीवन आनंदमय हो जाता है और साधक को सुख समृद्धि और परमात्मा के वरदान की प्राप्ति होती है।

मृत्युंजय जपं नित्यं यः करोति दिने दिने। तस्य रोगाः प्रणश्यंति दीर्घायुश्च प्रजायते।।

अर्थात जो व्यक्ति नित्य नियमपूर्वक महामृत्युंजय मंत्र का जप करता है, वह दीर्घायु होता है और उसे कोई रोग नहीं होता।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

सर्वोपयोगी मंत्र

श्री गणेश बीज मंत्र

ॐ गं गणपतये नमः।।

श्री गणेश मंत्र

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

गणेश गायत्री मंत्र

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।

श्री महालक्ष्मी बीज मंत्र

ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।।

श्री ललिता त्रिपुर सुंदरी बीज मंत्र

ॐ श्री श्री ललिता महात्रिपुरसुन्दर्यै श्री महालक्ष्म्यै नमः।।

श्री महालक्ष्मी महामंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद।
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

श्री महालक्ष्मी गायत्री मंत्र

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।।

श्री महालक्ष्मी पुराणोक्त मंत्र

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरुपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।

शिव गायत्री मंत्र

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो
रुद्रः प्रचोदयात्।

शनि वैदिक मंत्र

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्रवन्तु नः।

पौराणिक शनि मंत्र

नीलाञ्जन समाभासं रविपुत्रं ययाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

पुत्र प्राप्ति हेतु संतान गोपाल मंत्र

ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं जीं ओं भूर्भुवः स्वः ॐ
देवकीसुतगोविंद वासुदेवजगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः
ॐ ॐ स्वः भुवः भूः जीं ह्रीं श्रीं त्वीं ओं।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

सुलक्षणा पत्नी प्राप्ति के लिए मंत्र

पत्नी मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्

वर प्राप्ति के लिए मंत्र

कात्यायनि महाभाये महायोगिन्य धीश्वरि!
नन्दगोपसुतं देवं पतिं मे कुरु ते नमः

बाधाओं से मुक्ति पाने के लिए मंत्र

सर्वाबाधा–विनिर्मुक्तो, धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो त्वत्प्रसादेन् भविष्यति न संशयः।।

रोग नाश के लिए महामृत्युंजय बीज मंत्र

ॐ हौं जूं सः ॐ

रोग नाश के लिए महामृत्युंजय मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्,
उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

विशेष प्रभावशाली षडप्रणवयुक्त महामृत्युंजय मंत्र

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्,
उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।
ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ

बगलामुखी मंत्र

ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय ।
जिह्वाम् कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा।।

आकर्षण मंत्र

आकर्षय महादेवि रं मम् प्रियम् हे त्रिपुरे देवदेवेशि
तुभ्यम् दश्यामि याचितम्।

नवग्रह प्रार्थना मंत्र

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।।

कालसर्प मंत्र

ॐ क्रौं नमो अस्तु सर्पेभ्यो कालसर्प शांति कुरु–कुरु स्वाहा।

अथवा

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नम्।। ॐ सर्पेभ्यो नमः।।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

मंत्र एक नजर में

1. गुरु मंत्र
2. गायत्री मंत्र
3. गणपति मंत्र
4. हनुमान मंत्र
5. भैरव मंत्र
6. दुर्गा मंत्र
7. गौरी मंत्र
8. श्री दुर्गासप्तसती के सिद्ध सम्पुट मंत्र
9. ललिता महात्रिपुर सुंदरी मंत्र
10. महालक्ष्मी मंत्र
11. सरस्वती मंत्र
12. दशमहाविद्या मंत्र
13. शिव मंत्र
14. सूर्य मंत्र
15. लक्ष्मी नारायण मंत्र
16. विष्णु मंत्र
17. विष्णु दशावतार मंत्र
18. कामदेव मंत्र
19. वरूण मंत्र
20. कुबेर मंत्र
21. पुत्र प्राप्ति मंत्र
22. वार्ताली मंत्र
23. पंचांगुली मंत्र
24. स्वप्न सिद्धि मंत्र
25. स्वप्न मातंगी मंत्र
26. सर्व सिद्धि मंत्र
27. पुत्र संपदा प्राप्ति मंत्र
28. सर्व रोग नाश मंत्र
29. मोहन मंत्र
30. बुद्धि और ज्ञान विकास हेतु मंत्र
31. भूत, वर्तमान और भविष्य को जानने का मंत्र
32. बौद्ध मंत्र
33. नवग्रह मंत्र

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

मुख्य मंत्र

1. गुरु मंत्र

(गुरु की कृपा और आत्मानुभूति हेतु)

सुबह नित्य क्रिया से निवृत होने के पश्चात प्रत्येक दिन गुरु मंत्र का जप करना चाहिए।

ॐ गुरवे नमः

जगदगुरु मंत्र

ॐ वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्। देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगदगुरूम्।।

बृहस्पति मंत्र

बृं बृहस्पतये नमः।

शुक्राचार्य मंत्र (दैत्यों का गुरु)

ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा।

दत्तात्रेय मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं ब्रह्महरिहराय दत्तात्रेयाय नमः।

सर्वोपरि मान्त्रिक सिद्धि मंत्र

ॐ परंब्रह्म परमात्मने नमः उत्पत्तिस्थितिप्रलयकराय ब्रह्म हरिहराय त्रिगुणात्मने सर्वकौतुकानि दर्शय दर्शय दत्तात्रेयाय नमः मन्त्र सिद्धिं कुरू कुरू स्वाहा।।

2. गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम। भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

1. हंस गायत्री (अध्यात्म वृद्धि)

   ॐ परमहंसाय विद्महे महातत्वाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात्।

2. ब्रह्म गायत्री (ज्ञान के लिए)

   ॐ वेदात्मने च विद्महे हिरण्य गर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्।

3. सरस्वती गायत्री (बुद्धि के लिए)

   ॐ ऐं बाग्देण्यै च विद्महे कामराजाय धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात्।

4. विष्णु गायत्री (बचाव के लिए)

   ॐ श्री विष्णवे च विद्महे वासुदेवाय धीमहि, तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

5. त्रैलोक्य मोहन गायत्री (आकर्षण के लिए)

ॐ त्रैलोक्य मोहनाय विद्महे आत्मारामाय धीमहि, तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

6. लक्ष्मी गायत्री (समृद्धि हेतु)

ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णु पत्न्यै च धीमहि, तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

7. नरायण गायत्री (कार्य में प्रवीणता)

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि, तन्नो नारायणः प्रचोदयात्।

8. राम गायत्री (प्रतिष्ठा)

ॐ दाशरथये विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि, तन्नो रामः प्रचोदयात्।

9. जानकी गायत्री (तप शक्ति)

ॐ जनकजायै विद्महे राम प्रियायै धीमहि, तन्नो सीता प्रचोदयात्।

10. लक्ष्मी गायत्री (वीरता)

ॐ दाशरथये विद्महे अलबेलाय धीमहि, तन्नो लक्ष्मण प्रचोदयात्।

11. हनुमान गायत्री (शक्ति)

ॐ अंजनीजाय विद्महे वायु पुत्राय धीमहि, तन्नो हनुमान् प्रचोदयात्।

12. गरुर गायत्री

ॐ तत्पुरूषाय विद्महे सुवर्ण वरणाय धीमहि, तन्नो गरुड़ः प्रचोदयात्।

13. कृष्ण गायत्री (आकर्षण)

ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि, तन्नो कृष्णः प्रचोदयात्।

14. गोपाल गायत्री (सुरक्षा)

ॐ गोपालाय विद्महे गोपीजन वल्लभाय धीमहि, तन्नो गोपालः प्रचोदयात्।

15. राधिका गायत्री (प्रेम)

ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णप्रियायै धीमहि, तन्नो राधिका प्रचोदयात्।

16. परशुराम गायत्री (वीरता)

ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि, तन्नो परशुरामः प्रचोदयात्।

17. नृसिंह गायत्री (सुरक्षा)

ॐ उग्र नृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि, तन्नो नृसिंह प्रचोदयात्।

18. शिव गायत्री (दीर्घायु)

ॐ महादेवाय विद्महे रुद्र मूर्तये धीमहि, तन्नो शिवः प्रचोदयात्।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

17. रूद्र गायत्री (सुरक्षा)

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि, तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

20. गौरी गायत्री (सौभाग्य प्राप्ति हेतु)

ॐ सुभगाय च विद्महे काममालायै धीमहि, तन्नो गौरी प्रचोदयात्।

21. गणेश गायत्री (विघ्न बाधाओं से सुरक्षा हेतु)

ॐ तत्पुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दन्ति प्रचोदयात्।

22. षण्मुख गायत्री (वीरता के लिए)

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि, तन्नो षण्मुखः प्रचोदयात्।

23. नन्दी गायत्री (विघ्न बाधाओं से सुरक्षा हेतु)

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्र तुण्डाय धीमहि, तन्नो नन्दीः प्रचोदयात्।

24. सूर्य गायत्री (सफलता हेतु)

ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि, तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्।

25. चंद्र गायत्री (चंद्र ग्रह की शुभता हेतु)

ॐ क्षीर पुत्राय विद्महे अमृत तत्वाय धीमहि, तन्नो चन्द्रः प्रचोदयात्।

26. भौम गायत्री (वीरता हेतु)

ॐ अंगारकाय विद्महे शक्तिः हस्तात धीमहि, तन्नो भौमः प्रचोदयात्।

27. पृथ्वी गायत्री (सहनशीलता हेतु)

ॐ पृथ्वी देव्यै च विद्महे सहस्त्र मूर्त्यै च धीमहि, तन्नो मही प्रचोदयात्।

28. अग्नि गायत्री (शक्ति हेतु)

ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्नि मध्याय धीमहि, तन्नो अग्नि प्रचोदयात्।

29. जल गायत्री (शांति हेतु)

ॐ जलबिंबाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि, तन्नो अम्बुः प्रचोदयात्।

30. आकाश गायत्री (पेट संबंधी विकार ठीक करने हेतु)

ॐ आकाशाय च विद्महे नभो देवाय धीमहि, तन्नो गगनम् प्रचोदयात्।

31. वायु गायत्री (सक्रियता हेतु)

ॐ पवन पुरुषाय विद्महे सहस्र मूर्त्यै च धीमहि, तन्नो वायुः प्रचोदयात्।

32. इन्द्र गायत्री (शक्ति हेतु)

ॐ तत्पुरूषाय विद्महे सहस्त्राक्षाय धीमहि, तन्नो इन्द्रः प्रचोदयात्।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

33. काम गायत्री (काम शक्ति की पूर्ती हेतु)

ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय च धीमहि, तन्नो अनंगः प्रचोदयात्।

34. गुरु गायत्री (ज्ञान हेतु)

ॐ गुरुदेवाय विद्महे परं ब्रह्मय धीमहि, तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।

35. तुलसी गायत्री (प्रेम प्रसंग में स्थायित्व हेतु)

ॐ त्रिपुराय विद्महे तुलसीपत्राय धीमहि, तन्नो तुलसी प्रचोदयात्।

36. देवी गायत्री (देवी की कृपा हेतु)

ॐ देव्यै ब्रह्मण्यै विद्महे महाशक्त्यै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात्।

37. शक्ति गायत्री (शक्ति हेतु)

ॐ सर्व सम्मोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि, तन्नो शक्ति प्रचोदयात्।

38. अन्नपूर्णा गायत्री (समृद्धि हेतु)

ॐ भगवत्यै च विद्महे माहेश्वर्यै च धीमहि, तन्नो अन्नपूर्णा प्रचोदयात्।

39. काली गायत्री (रक्षा हेतु)

ॐ कालिकायै च विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि, तन्नो अधोरा प्रचोदयात्।

40. तारा गायत्री (वाकपटुता हेतु)

ॐ तारायै च विद्महे महोग्रायै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात्।

41. त्रिपुरसुंदरी गायत्री (कला हेतु)

ॐ त्रिपुरादेव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि, सौस्तन्नः क्लिन्नै प्रचोदयात्।

42. भुवनेश्वरी गायत्री (शक्ति हेतु)

ॐ नारायण्यै च विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात्।

43. भैरवी गायत्री (आत्म संयम हेतु)

ॐ त्रिपुरायै च विद्महे भैरव्यै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात्।

44. छिन्नमस्ता गायत्री (शत्रुओं पर विजय हेतु)

ॐ वैरोचन्यै च विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात्।

45. धूमावती गायत्री (शत्रुओं का शमन व सुरक्षा)

ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि, तन्नो धूमा प्रचोदयात्।

46. बगलामुखी गायत्री (शत्रुओं पर विजय हेतु)

ॐ बगलामुख्यै च विद्महे स्तंभिन्यै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात्।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

47. मातंगी गायत्री (शादी हेतु)

ॐ मातंग्यै च विद्महे उच्छिष्टचाण्डाल्यै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात्।

48. महिषमदिनी गायत्री (शत्रुओं पर विजय हेतु)

ॐ महिषमर्दिन्यै च विद्महे दुर्गायै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात्।

49. त्वरित गायत्री (वाकपटुता और सुरक्षा हेतु)

ॐ त्वरिता देव्यै च विद्महे महानित्यायै धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात्।

3. गणपति मंत्र

(विघ्न बाधाओं से सुरक्षा, सफलता, बुद्धि और धन की प्राप्ति क्योंकि भगवान गणेश रिद्धि, सिद्धि और बुद्धि के देवता हैं)

1. श्रीगणेशाय नमः।
2. ॐ गणेशाय नमः।
3. ॐ गं गणाधिराजाय नमः।
4. ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः।
5. वक्रतुण्डाय हुं।

यह गणेश जी का लोकप्रिय मंत्र है। मंत्र सिद्धि के लिए 1 लाख 25 हजार बार जप करना चाहिए। मंत्र जप के समय ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक है। यह रिद्धि, सिद्धि, बुद्धि और पूर्ण वित्तीय समृद्धि प्रदान करता है।

6. ॐ ह्रीं ग्रीं ह्रीं।

यह शक्ति विनायक मंत्र है। यह मंत्र वित्तीय समृद्धि, रुपये की वृद्धि, जमीन जायदाद, घर, कीर्ति, मान, वाहन आदि लाता है। मंत्र सिद्धि के लिए 5 लाख बार जप करना चाहिए। यह मंत्र काफी लोकप्रिय है क्योंकि यह बहुत जल्द परिणाम देता है।

7. हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा।

यह मंत्र अतिमहत्वपूर्ण है। यह वित्तीय समृद्धि और सांसारिक वस्तुओं में सफलता प्रदान करता है। यह तांत्रिक मंत्र है।

8. ॐ गणेश ऋणम् छिंधि वरेण्यं हुं नमः फट्।।

यह ऋणहर्ता गणेश मंत्र है। इस मंत्र से दरिद्रता दूर होती है और कर्ज से मुक्ति मिलती है। अगर इस मंत्र का जप करें तो उस व्यक्ति के घर दरिद्रता कभी नहीं आ सकती।

9. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनम्मे वशमानय ठः ठः।

किसी भी शुभ समारोह या कार्य के आरंभ करने से पहले गणेश जी की पूजा की जाती है। यह गणेश जी का काफी प्रभावशाली मंत्र है। गणपति सभी प्रकार की बाधाओं को दूर करते हैं। भगवान गणपति की कृपा से व्यक्ति अपने जीवन में सब कुछ पा सकता है। वह संसार में सब कुछ प्राप्त कर, आध्यात्मिक विकास पाता है। क्योंकि वही एक ऐसे देवता हैं जो सभी प्रकार के सुख एक साथ प्रदान करते हैं। इस मंत्र का जप सभी प्रकार की सिद्धि, समृद्धि और बुद्धि प्रदान करता है क्योंकि वह रिद्धि (समृद्धि), सिद्धि (सफलता) और बुद्धि के देवता हैं।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

जो व्यक्ति किसी भी प्रकार की व्याधि और रोग से ग्रस्त हैं इस मंत्र के जप से रोगमुक्त हो सकते हैं। मंत्र सिद्धि के लिए 1 लाख बार इस मंत्र का जप करें। यह मंत्र बुध और राहु के दुष्प्रभाव से मुक्ति हेतु काफी प्रभावशाली है।

10. रायस्पौषस्य ददिता निधिदो रत्न धातुमान, रक्षोहणोवलगहनोवक्रतुंडाय हुं।

यह भगवान गणपति का बहुत महत्वपूर्ण मंत्र है।

11. ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर वरद सर्वजनम्मे वशमानय स्वाहा।

यह लक्ष्मी विनायक मंत्र देवी लक्ष्मी और भगवान गणेश का संयुक्त मंत्र है। इस मंत्र की सिद्धि के लिए 5 लाख बार जप करना चाहिए। मंत्र जप की अवधि के समय काम वासना से दूर रहना चाहिए। यह अध्यात्मिक साधना अधिकतम 24 दिन में पूर्ण हो जानी चाहिए।

12. वक्रतुण्डैकदंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर वरद सर्वजनम्मे वशमानय स्वाहा।

यह त्रैलोक्यमोहन कर गणेश मंत्र है। यह कुष्ठ रोगियों के लिए उपयोगी है। जो व्यक्ति इस मंत्र का जप करता है उसके चेहरे पर तुरंत ही उसका प्रभाव देखने को मिलता है। जो व्यक्ति कुष्ठ रोग से ग्रसित है उसे अवश्य ही इस मंत्र का जप करना चाहिए। मंत्र जप के समय व्यक्ति को भगवाण गणेश का स्मरण के समय आंख में प्रतिम्बित होना आवश्यक है। मंत्र सिद्धि के लिए ब्रह्चर्य का पालन करना चाहिए और 1 लाख बार मंत्र जप करना चाहिए।

13. ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रा गणपतये वरवरद सर्वजन हृदयम् स्तंभय स्तंभय स्वाहा।

यह हरिद्रा गणेश मंत्र है। दाम्पत्य जीवन सुखी बनाने हेतु यह वरदान साबित होता है। काम इच्छा की पूर्ति, नई ऊंचाईयों को पाता है और वैवाहिक जीवन सुखमय हो जाता है। नपुंसक को भी वीर्य स्खलन होने लगता है। हल्दी की माला से इस मंत्र का स्मरण करना चाहिए। पीले वस्त्र और पीले आसन का प्रयोग करना चाहिए। मंत्र जप के समय ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है।

14. ॐ नमो सिद्धिविनायकाय सर्वकार्यकर्त्रे सर्वविघ्नप्रशमनाय सर्वराज्य वश्यकरणाय सर्वजन सर्वस्त्री पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा।

यह सिद्धि विनायक मंत्र है। इस मंत्र का जप अत्यंत ही शुभ, शक्तिशाली और आवश्यक है। प्रत्येक मनुष्य को इस मंत्र का जप कम से कम 108 बार प्रत्येक दिन करना चाहिए। सभी जगह पूजा पाठ में इस मंत्र का जप किया जाता है। किसी भी मंत्र साधना से पूर्व साधक इस मंत्र की सिद्धि करता है क्योंकि यह साधना मार्ग को आसान बना देता है।

4. हनुमान मंत्र

(शक्ति, साहस और शारीरिक क्षमता के लिए)

1. ॐ हनुमते नमः।
2. हं पवन नंदनाय स्वाहा।
3. हं हनुमते रूद्रात्मकाय हुं फट्।

इस मंत्र में असीमित शक्तियां निहित हैं। यह तुरंत परिणाम देता है। जो व्यक्ति इस मंत्र का जप करता है निश्चय ही शक्तिशाली हो जाता है। भगवान शिव ने इस मंत्र को भगवान कृष्ण को बतलाया और भगवान कृष्ण ने अर्जुन को बतलाया। अर्जुन ने इस मंत्र को सिद्ध किया था। इस मंत्र का जप अलग–अलग स्थान पर और कहीं भी किया जा सकता है। इस मंत्र का जप कम से कम 1 लाख बार करना चाहिए। मंत्र जप के समय ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

4. ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा।

रोगों से मुक्ति, भूत–प्रेत को भगाने और व्यक्ति के जीवन में अन्य किसी भी तरह की कठिनाइयों में 21000 बार इस मंत्र का जप करें।

5. ह्रौं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्सौं ह् स्ख्फ्रें ह्सों हनुमते नमः।

इस मंत्र का जप 12000 बार करें। यह शारीरिक बल, कार्य क्षमता और बल प्रदान करता है। किसी भी प्रकार की बीमारी, भय, बुरा चाहने वाले, जादू, भूत–प्रेत को भगाने, हथियार का भय और अचानक मृत्यु इत्यादि इस मंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

5. भैरव मंत्र

(सिद्धि के लिए)

1. वं वटुकभैरवाय नमः।

सभी मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु इस मंत्र का जप करना चाहिए। देवी दुर्गा की पूजा से पहले भैरव की पूजा आवश्यक है क्योंकि भैरव, हनुमान और भगवान गणपति देवी के मुख्य गण हैं।

2. ॐ ह्रीं बं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।

3. ॐ ह्रीं बटुकाय क्ष्रौं आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं बटुकाय स्वाहा।

4. ॐ हं षं नं गं कं सं खं महाकालभैरवाय नमः।

5. ॐ क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

6. ॐ ह्रां ह्रौं नमः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ ह्रीं बटुकाय विद्महे आपदुद्धारणाय धीमहि तन्नो बटुकः प्रचोदयात् ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ नमः ह्रौं ह्रां ॐ।

6. दुर्गा मंत्र

(शक्ति, रक्षा, रोगों से मुक्ति, दुःख, शत्रु, दरिद्रता, चारों तरफ खुशहाली हेतु)

1. ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।

इस मंत्र से मुक्ति की प्राप्ति और प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त की जा सकती है। सभी प्रकार की सिद्धि हेतु इस मंत्र का जप करना चाहिए।

इस मंत्र के जप से व्यक्ति शक्तिशाली और धनी हो सकता है। इसके अतिरिक्त यह पुत्र, संतान, शत्रु पर विजय, बीमारी से छुटकारा और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता के लिए उत्तम है।

2. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै।

यह नर्वाण मंत्र है और देवी का अति महत्वपूर्ण मंत्र है। इस मंत्र का जप देवीपूजन/यज्ञ के समय अवश्य करना चाहिए। दुर्गासप्तचंडी महायज्ञ के पहले इस मंत्र का जप अवश्य करना चाहिए।

इस मंत्र का जप करने से व्यक्ति बुद्धिमान, सुंदर और समृद्धिशाली होता है। यह मंत्र आत्मनिर्भर होने में सहायक है।

3. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादुर्गे नवाक्षरी नवदुर्गे नवात्मिके नवचंडी महामाये महामोहे महायोग निद्रेजये मधुकैटभ विद्राविणि महिषासुर मर्दिनि धूम्रलोचन संहंत्री चंडमुंड विनाशिनी रक्त बीजांतके निशुंभ ध्वंसिनि शुंभदर्पघ्नि देवि

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

अष्टादश बाहुके कपाल खट्वांग शूल खड्ग खेटक धारिणि छिन्न मस्तक धारिणि रूधिर मांस भोजिनि समस्त भूत प्रेतादि योग ध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादि स्तुते देवि माम् रक्षरक्ष मम शत्रून् नाशय ह्रीं फट् हूं फट् ॐ ऐं ह्री क्लीं चामुण्डायै विच्चे।।

यह पूर्ण नर्वाण महा मंत्र है। इस मंत्र के उच्चारण मात्र से ही देवी की कृपा प्राप्त होती है।

4. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॐ ह्रीं श्रीं कांसोस्मिताम् हिरण्य प्राकारां मार्द्राज्वलंतीं तृप्तां तर्पयंतीं, पद्मेस्थिताम् पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृतामति मतीव शुभाम् ददासि, यदंति यच्च दूरके भयं विंदति मामिह, पवमान वितज्जहि, दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कासोस्मितां हिरण्य प्राकारा मार्द्राज्वलंतीम् तृप्तां तर्पयन्तीं, पद्मेस्थितां पदमवर्णा तामिहोपह्वये श्रियम्, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

यह मंत्र भक्तों के लिए लोकप्रिय है। देवी दर्शन और अपार संपत्ति की प्राप्ति हेतु यह मंत्र सर्वश्रेष्ठ है।

मंत्र सिद्धि के लिए 1 लाख बार मंत्र का जप और होम करना चाहिए। मंत्र सिद्धि के बाद परिणाम शीघ्र और कीर्ति अक्षय होती है।

7. गौरी मंत्र (मनोवांछित पति प्राप्ति हेतु)

हे गौरि शंकराधांगि! यथा त्वं शंकरप्रिया। तथा मां कुरु कल्याणि! कान्तकांतां सुदुर्लभाम्।।

8. श्री दुर्गासप्तसती के सिद्ध सम्पुट मंत्र

1. आकर्षण के लिए मंत्र

ॐ क्लीं ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा। बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।।

2. संपत्ति के लिए मंत्र

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जंतोः स्वस्थैः स्मृतामति मतीव शुभां ददासि।
दारिद्रय दुःख भयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

3. कल्याण के लिए मंत्र

'सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके शरण्ये त्र्यम्बके गौरि ! नारायणि नमोस्तुते'

4. शक्ति प्राप्ति हेतु मंत्र

सृष्टिस्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि। गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।।

5. समस्या निदान हेतु मंत्र

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि, नारायणि नमोऽस्तु ते।।

6. भय निवारण हेतु मंत्र

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि ! दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।

7. सुरक्षा प्राप्ति हेतु मंत्र

शूलेन पाहि नो देवि! पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन नः पाहि, चापज्यानिःस्वनेन च।।

8. स्वास्थ्य और भाग्य हेतु मंत्र

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्। रूपं देहि जयं देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

9. महामारी से बचाव हेतु मंत्र

जयन्ती मंगला काली, भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।

10. मनोवांछित पत्नी हेतु मंत्र

पत्नीं मनोरमां देहि, मनोवृत्तानुसारिणीम्। तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।।

11. पाप से मुक्ति हेतु मंत्र

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि ! पापेभ्यो नः सुतानिव।।

12. मुक्ति हेतु मंत्र

विधेहि देवि कल्याणं, विधेहि परमां श्रियम्। रूपं देहि जयं देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।

Or

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते। स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

9. ललिता महात्रिपुर सुंदरी मंत्र

श्री ललिता महात्रिपुर सुंदरी श्रीविद्या, राजराजेश्वरी, बाला, पंचदशी और षोडशी के नाम से भी जानी जाती है। वह देवी महालक्ष्मी का सर्वोत्तम रूप है। इनके मंत्र के द्वारा व्यक्ति आकर्षक बन जाता है। मंत्र सिद्धि के लिए 1 लाख जप करना चाहिए।

1. ॐ ललिता देव्यै नमः।
2. ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै नमः।
3. ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं त्रिपुरसुन्दर्यै नमः।
4. श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।।

बिना गुरु दीक्षा के इस मंत्र का जप नहीं करनी चाहिए। यह कुंडलिनी को जागृत करने हेतु बहुत ही प्रभावशाली मंत्र है। यह सुंदरता, संपत्ति और ज्ञान प्राप्ति हेतु श्रेष्ठतम है।

10. महालक्ष्मी मंत्र (अपार संपत्ति की प्राप्ति हेतु)

1. श्रीं।
2. ॐ श्रीं मियै नमः।
3. ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
4. ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।
5. ॐ नमो धनदायै स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं श्रीं स्वर्णलक्ष्मी श्रीं ह्रीं फट्।
6. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह् सौः ज ग त्प्र सू त्यै नमः।
7. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मिस्वयम्भुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः।
8. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णायै स्वाहा।
9. ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

यह मंत्र महालक्ष्मी की कृपा प्राप्ति व संपत्ति प्राप्ति हेतु बहुत प्रभावशाली है।

10. ॐ ह्रीं श्रीं महालक्ष्मि सर्वकामप्रदे सर्वसौभाग्यदायिनि

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अभिमतं प्रयच्छ सर्वसर्वगते सुरूपे सर्वदुर्जयविमोचिनि ह्रीं सः स्वाहा।

11. सरस्वती मंत्र

(बुद्धि, कला, अर्न्तज्ञान, ज्ञान हेतु)

1. ऐँ।।
2. ॐ ऐँ नमः।।
3. ॐ ऐँ क्लीं सौः।।
5. ॐ ऐँ महासरस्वत्यै नमः।।
6. वद वद वाग्वादिनि स्वाहा।।
मंत्र साधना में ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। 1 लाख बार जप करें। इस मंत्र के जप से व्यक्ति अपने ज्ञान से प्रसिद्धि पाता है।

7. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वाग्देव्यै सरस्वत्यै नमः।।
मंत्र सिद्धि के लिए 1 लाख बार जप करें। यह बुद्धि कला और ज्ञान प्रदान करती है। मंत्र साधना में ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। 1 लाख बार जप करें। इस मंत्र के जप से व्यक्ति अपने ज्ञान से प्रसिद्धि पाती है।

8. ॐ अर्हं मुख कमल वासिनी पापात्म क्षयम् कारी वद वद वाग्वादिनी सरस्वती ऐं ह्रीं नमः स्वाहा।।
मंत्र सिद्धि के लिए 1 लाख बार जप करें। आपके स्वप्न में भगवान आकर आपको वरदान देंगे व आप संसार में प्रसिद्धि होंगे। आपके ज्ञान के द्वारा आपका धनागमन होगा।

12. दशमहाविद्या मंत्र

काली मंत्र

1. ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।।
काली सभी देवियों में सबसे विभत्स लगती हैं। इस संसार में नकारात्मक मूल्यों का उन्मूलन करने के लिए भगवति काली उत्तरदायी हैं।

किसी भी प्रकार की सिद्धि और सफलता हेतु काली मंत्र बहुत उपयोगी और प्रभावशाली हैं। मंत्र सिद्धि के लिए 1 लाख बार मंत्र का जप करें। यह मंत्र शनि के दुष्प्रभाव से मुक्ति हेतु श्रेष्ठ है। स्वामी विवेकानंद जी के गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस देवी काली के परम भक्त थे। जो व्यक्ति काली की नित्य पूजा करते हैं वह निश्चय ही शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं। कलियुग में काली मंत्र पूर्ण फलदायी है। ऐसा माना जाता है कि कलियुग में काली की सिद्धि सरल है।

2. क्रीं।।
3. ॐ महाकालिकायै नमः।।
4. ॐ क्रीं महाकालिकायै नमः।।
5. ॐ ह्रौ कालि महाकालि किले किले फट् स्वाहा।।

6. ॐ नगरी वाला बलवन्त की सिमरूं पवन कुमार रोज्जी देवें चौगुनी दूने देवे महन्त आर्द्र धाटि विष भरे भैरों बसे ललाट, तीन खुंटकी मोहिनी पिण्डी बसे ललाट हंकी काली रूप किया विकराल आधि रैण फिरै मतवाली भजदी आवै रिद्धि सिद्धि सब ल्यावै दर मोहूं दरम्यान मोहूं पीड़े बैठी पटरानी मोहूं घी सिन्दूर मस्तक चढ़ै, राजा

Future Point

प्रजा सब नाथ जी के चरणों में पड़े नाथ जी का आदेश।।

इस मंत्र की सिद्धि हेतु 21 हजार बार जप करें। यह भविष्यज्ञान मंत्र के नाम से भी जाना जाता है। मंत्र सिद्धि के पश्चात् देवी की कृपा से भविष्य में होने वाली घटनाओं का ज्ञान हो जाता है

तारा मंत्र

स्त्रीं
ॐ तारिण्यै नमः।।
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट्।।
शत्रुओं का संहार करने के लिए तथा जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्ति के उद्देश्य से शास्त्रों में तारा मंत्र का विधान है। इस मंत्र के जप से वाकपटुता तथा धाराप्रवाह भाषण सिद्धि प्राप्त होती है। इस मंत्र को ज्ञान बढ़ाने के लिए बहुत शुभ माना जाता है। महर्षि वशिष्ठ ने तारा देवी की आराधना की थी इसलिए इन्हें वशिष्ठाराधिता तारा के नाम से भी जाना जाता है। मंत्र सिद्धि के लिए 1 लाख 25 हजार बार जप करें। इस मंत्र के जप से जन्म कुंडली में निर्बल गुरु का दोष समाप्त हो जाता है।

षोडशी मंत्र

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्ति तथा उच्च कोटि की आर्थिक सफलता के लिए इस मंत्र का जप सर्वश्रेष्ठ है। इससे सौंदर्य, ज्ञान तथा धन की वृद्धि होती है। इस मंत्र को कुंडलिनी जागरण के लिए सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इसे गुप्त गायत्री भी कहते हैं। यह सब मंत्रों का मुकुट मणि है।

ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं
इस मंत्र की सिद्धि हेतु 1 लाख 25 हजार बार जप करें। बुध और शुक्र ग्रह को बल प्रदान करने हेतु इस मंत्र का जप करें।

भुवनेश्वरी मंत्र

ह्रीं
सभी इच्छाओं की पूर्ति हेतु और चंद्र ग्रह की शांति हेतु यह मंत्र लाभकारी है।

छिन्नमस्ता मंत्र

शिक्षा, आर्थिक समृद्धि, शत्रु संहार, मुकद्मों में विजय और सब प्रकार की सिद्धियों के लिए इस मंत्र का जप करना चाहिए।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्र वै रो च नी ये हूं हुं फट् स्वाहा।।
इस मंत्र की सिद्धि हेतु 1 लाख 25 हजार बार जप करें। इस मंत्र को जपने से राहु ग्रह के दुष्प्रभाव से मुक्ति मिलती है।

त्रिपुर भैरवी मंत्र

हसें हसकरीं हसें।
यह मंत्र वित्तीय समृद्धि, रोगों से मुक्ति और विश्व बंधुत्व की जीत हेतु काफी प्रभावशाली है। इस मंत्र को शुद्ध मन से जपना अति आवश्यक है। मंत्र सिद्धि से असीमित कीर्ति की प्राप्ति होती है। इस मंत्र को बुध ग्रह की शुभता

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

हेतु जपना चाहिए।

धूमावती मंत्र

धूं धूं धूमावती ठः ठः।
पुत्र प्राप्ति, आर्थिक सुरक्षा और शत्रुओं पर विजय प्राप्ति हेतु यह मंत्र विशेष प्रभावशाली है। यह मंत्र तुरंत ही परिणाम देता है। केतु ग्रह की शुभता हेतु इस मंत्र का जप करना चाहिए।

बगलामुखी मंत्र

ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वाम् कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा।।
बगलामुखी मंत्र विश्व प्रसिद्ध है। किंतु इसे बहुत सावधानी के साथ जप करना चाहिए क्योंकि गलत मंत्र जप से विपरीत प्रभाव देती है। बगलामुखी गुप्त मंत्र है। इस मंत्र का जप करने से सारी विघ्न व बाधाएं दूर हो जाते हैं। सभी मनोकामनाओं की पूर्ति भी होती है।

इस मंत्र के जप द्वारा निश्चय ही शत्रुओं पर विजय और पूर्ण सफलता बहुत ही आसानी से प्राप्त की जा सकती है।

यह शिक्षा के क्षेत्र में स्मृति विकास व वित्तीय समृद्धि के लिए भी काफी प्रभावशाली है। मंत्र सिद्धि के लिए 1 लाख बार जप करें। मंगल की शुभता हेतु इस मंत्र का जप करना चाहिए।

मातंगी मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।।
सुंदरता, शीघ्र विवाह और दाम्पत्य जीवन की खुशहाली हेतु यह मंत्र बहुत ही प्रभावशाली है। अगर किसी लड़की के विवाह में कोई बाधा आ रही हो तो इस मंत्र के जप से अवश्य ही पूर्ण सफलता मिलेगी। यह मंत्र पुत्र प्राप्ति और मनोकामना पूर्ति हेतु भी लाभदायक है। सूर्य ग्रह की शुभता बढ़ाने हेतु इस मंत्र का जप करना चाहिए।

कमला मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्प्रसूत्यै नमः।।

कमला लक्ष्मी का रूप है। देवी कमला का मंत्र जपने से सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है। व्यवसाय में शुभता, आर्थिक समृद्धि और संसार में सभी सुखों की प्राप्ति हेतु लाभदायक है।

शास्त्रों के अनुसार वित्तीय समृद्धि में कमला मंत्र के समान और कोई दूसरा मंत्र नहीं है। यह लक्ष्मी मंत्र और कनकध ाारा मंत्र से भी अधिक प्रभावशाली है। गरीबी से मुक्ति, वित्तीय समृद्धि और व्यवसाय में उन्नति हेतु यह मंत्र सर्वश्रेष्ठ है।

व्यक्ति अपने जीवन में विकास की ऊँचाई और वित्तीय समृद्धि में सफलता हेतु इस मंत्र का जप अवश्य करें। मंत्र सिद्धि हेतु 1 लाख 25000 बार जप करें। शुक्र ग्रह की शुभता बढ़ाने हेतु इस मंत्र का जप श्रेष्ठ है।

13. शिव मंत्र (दीर्घायु, सुरक्षा, मन की शांति और मोक्ष प्राप्ति हेतु)

1. ॐ नमः शिवाय।
मोक्ष की प्राप्ति और मृत्यु भय से मुक्ति हेतु यह सर्वश्रेष्ठ मंत्र है। शुद्ध मन से इस मंत्र का जप करने से रोगों से

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

मुक्ति, दुःखों और भय का नाश होता है। इस मंत्र के जप से सफलता और सिद्धि मिलती है।

2. ॐ ह्रौं जूं सः।

यह त्रयक्षर मृत्युंजय मंत्र के नाम से जाना जाता है। रोगों से मुक्ति और मृत्यु भय से मुक्ति हेतु यह उपयोगी मंत्र है। मंत्र सिद्धि हेतु हवन और 3 लाख बार जप करें।

3. ''ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिर्धनम्, उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।''

यह मृत्युंजय मंत्र के नाम से जाना जाता है। रोगों से मुक्ति और मृत्यु भय से मुक्ति हेतु यह उपयोगी मंत्र है। यह दीर्घायु जीवन प्रदान करता है।

4. ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ।।

यह महामृत्युंजय मंत्र के नाम से जाना जाता है। यह दीर्घायु जीवन, रोगों से मुक्ति और मृत्यु भय से मुक्ति हेतु बहुत प्रसिद्ध मंत्र है।

5. ॐ नमो भगवते रूद्राय।

यह रुद्र मंत्र के नाम से जाना जाता है। इस मंत्र के जपने से भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती है तथा सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती है।

14. सूर्य मंत्र (आंख की रोशनी, चेहरे की रौनक, वित्तीय समृद्धि, सफलता और कीर्ति हेतु)

1. ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः।

इस मंत्र के प्रभाव से जादु का कोई असर नहीं होता है। इस मंत्र के उच्चारण से भूत–प्रेत भाग जाते हैं और विश्व में प्रसिद्धि मिलती है। समृद्धि, पुत्र संतान, कीर्ति और विद्या प्राप्ति में सफलता की प्राप्ति होती है। स्वास्थ्य, दीर्घायु, सांसारिक सफलता और स्मरण शक्ति बढ़ाने हेतु यह मंत्र तुरंत परिणाम देता है।

2. ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं।

सूर्य की शुभता हेतु इस मंत्र का जप लाभकारी है। यह कीर्ति और सभी कार्यों में पूर्ण सफलता प्रदान करता है। मंत्र सिद्धि हेतु इस मंत्र का 10,000 बार जप करें। इस मंत्र के जप से पुत्र संतान की अवश्य प्राप्ति होती है। इससे सबकुछ प्राप्त होता है जैसे कि आंख की रौशनी, आकर्षक चेहरा, रुपया, धन, पशु, जमीन, लड़का, मित्र, पत्नी, शक्ति, वीर्य, शिक्षा आदि। प्रत्येक मनुष्य को इस मंत्र का जप सुबह के समय करना चाहिए और इसके साथ सूर्य भगवान को अर्घ्य देना चाहिए इससे व्यक्ति का पूरा दिन सभी दृष्टियों से शुभ और उपयोगी रहेगा।

15. लक्ष्मी नारायण मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः।

वित्तीय समृद्धि और सांसारिक सफलता हेतु यह मंत्र काफी लाभदायक है। इसकी सिद्धि हेतु 10 लाख बार मंत्र जप करना चाहिए।

16. विष्णु मंत्र

1. ॐ नमो नारायणाय।

वित्तीय समृद्धि, सार्थक जीवन और सांसारिक सफलता हेतु यह मंत्र काफी लाभदायक है। परिवार में सुख समृद्धि,

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

एकता, समृद्धि और साधु संग के लिए उपयोगी है। यह सभी प्रकार की सिद्धि और कीर्ति प्रदान करता है।

2. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

इस मंत्र की सिद्धि हेतु 12 लाख बार मंत्र जप करें। इस मंत्र से संसार की सभी आरामदायक वस्तुएं प्राप्ति हो सकती है। यह विशेष रूप से महिलाओं के कल्याण हेतु उपयोगी है और दाम्पत्य जीवन को खुशहाल बनाता है।

17. विष्णु दशावतार मंत्र

1. श्री मत्स्य (मछली का रूप–केतु)

ॐ मत्स्यरूपाय नमः।।

2. श्री कूर्म (कछुआ का रूप–शनि)

ॐ कूर्म रूपाय नमः।।

3. श्री वराह मंत्र (सुअर का रूप–राहु)

ॐ नमो भगवते वाराह रूपाय भूर्भुवः स्वः स्यात्पते भूपतित्वम् देह्यते ददापय स्वाहा।।

यह मंत्र मृत्यु भय और लड़ाई में जीत के लिए विशेष रूप से लाभदायक है। इस मंत्र की सिद्धि हेतु 1 लाख 25 हजार बार जप करें। इस मंत्र को जपने से दुष्मनों का दुष्प्रभाव, चोर और भूत–प्रेत का भय दूर हो जाता है।

4. श्री नरसिंह (मनुष्य–सिंह का रूप–मंगल)

ॐ नमो भगवते नरसिंहाय।

ॐ उग्रवीरं महा विष्णुं ज्वलंतम् सर्वतोमुखम्। नृसिंह भीषणं भद्रं मृत्यु मृत्युम् नमाम्यहम।।

यह मंत्र कुदृष्टि, जादु, भय, शत्रु, रोग और दुःख से मुक्ति हेतु काफी प्रभावशाली है। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति हेतु यह काफी प्रभावशाली है।

5. श्री वामन (पूजारी या ब्राह्मण–गुरु)

ॐ वामन रूपाय नमः।।

6. श्री परशुराम (योद्धा पुजारी–शुक्र)

ॐ परशुरामाय नमः।।

7. बुद्ध (विद्यार्थी का रूप–बुध)

ॐ गौतमबुद्धाय नमः।।

8. श्री राम (पूर्ण मनुष्य का रूप–सूर्य)

ॐ रं रामाय नमः।।

इस मंत्र का जप अधिकांशतः राम के भक्त करते हैं। यह भगवान श्री राम के श्रीचरणों में भक्ति–भावना बढ़ाने हेतु अच्छा है। यह पारिवारिक जीवन के लिए शुभ है। मंत्र सिद्धि के लिए इस मंत्र का 6 लाख बार जप करें।

9. श्री कृष्ण (अनुभवातीत मनुष्य का रूप–चंद्र)

ॐ क्लीं कृष्णाय नमः।।

यह मंत्र कृष्ण के भक्त के लिए शुभ है। 6 लाख बार जपें। पारिवारिक जीवन को खुशहाल हेतु और कृष्ण की भक्तिहेतु इस मंत्र का जप करें।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

10. श्री कल्कीन (दैवी रक्षक–लग्न)

ॐ कल्किने जय जय शालग्रामनीवासिने दिव्यसिंहाय स्वयंभूवे पुरूषाय नमः ॐ।।

18. कामदेव मंत्र

क्लीं कामदेवाय नमः।।

शारीरिक सौंदर्य और आकर्षण हेतु यह मंत्र काफी प्रभावशाली है। यह वीर्य वृद्धि कर यौन शक्ति में सहायक है। मंत्र सिद्धि के द्वारा व्यक्ति आकर्षक बन सकता है।

19. वरूण मंत्र

ॐ ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु क्षियंतोव्य अस्मत्पाशम् वरूणो मुमोचत, अवो वन्वाना अदिते रूपस्था द्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वः।।

मंत्र सिद्धि के लिए 1 लाख बार जप करें। इस मंत्र की शक्ति से वर्षा कराई जा सकता है।

20. कुबेर मंत्र

ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः।।

यह वित्तीय समृद्धि के लिए प्रभावशाली मंत्र है।

21. पुत्र प्राप्ति मंत्र

यह संतान गोपाल मंत्र के नाम से भी जाना जाता है। मंत्र सिद्धि हेतु इस मंत्र का 1 लाख बार जप करें। इस मंत्र के जपने से अवश्य ही पुत्र संतान की प्राप्ति होती है।

ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं जीं ओं भूर्भुवः स्वः ॐ देवकीसुतगोविंद वासुदेवजगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॐ ॐ स्वः भुवः भूः जीं ह्रीं श्रीं त्वीं ओं।

22. वार्ताली मंत्र

ॐ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वाराहि वाराहमुखि ऐं ग्लौं ऐं अंधे अंधिनि नमो रूंधे रूंधिनि नमो जंभे जंभिनि नमो मोहे मोहिनि नमो स्तंभे स्तंभिनि नमो ऐं ग्लौ ऐं सर्वदुष्टप्रदुष्टानाम् सर्वेषाम् सर्ववाक्पदचित्त चक्षुर्मुखगति जिह्वा स्तंभम् कुरु कुरु शीघ्रवशम् कुरु कुरु ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।।

यह तंत्र सिद्धि के लिए बहुत प्रभावशाली मंत्र है। मंत्र सिद्धि हेतु 17000 बार जप करें। जो व्यक्ति इस मंत्र का जप करता है वह शत्रु भय से मुक्त हो जाता है। देवी वार्ताली सभी गुप्त बातें बतलाती हैं और जो घटनाएं आने वाली होती है उसे भी वह अपने भक्त को बतला देती हैं।

23. पंचांगुली मंत्र

पंचांगुली मंत्र का 108 बार जप प्रत्येक दिन करनी चाहिए।

ॐ नमो पंचांगुलीपंचांगुली परशरीपरशरी मातामयंगल वशीकरणी लोहमयदंडमणिनि चौंसठ काम विहंडनी

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीवानमध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोंटिगमध्ये डाकिनीमध्ये शंखिनी मध्ये यक्षिणीमध्ये दोषेणीमध्ये शेकनीमध्ये गुणीमध्ये गारुड़ीमध्ये विनारीमध्ये दोषमध्ये दोषाशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोर कष्ट मुझ उपरे बुरो जो कोई करे करावे जड़े जड़ावे तत् चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्री माता श्री पंचांगुली देवी तणो वज्र निर्धार पड़े ॐ ठं ठं ठं स्वाहा।।

इस मंत्र के जप के पश्चात, पंचमेवा का हवन नित्य करें। यह मंत्र सिद्धि का नियम है। देवी दुर्गा की मूर्ति सामने रखें। स्वरूप देवी का तस्वीर बनाएं जो उंगली के समान दिखती हैं।

जो व्यक्ति सिद्धि प्राप्त कर लेता है वह आसानी से हाथ देखकर भविष्यवाणी कर सकता है। वह दूसरे व्यक्तियों की सभी गुप्त बातें भी जान सकता है।

पश्चिमी क्षेत्रीय ज्योतिषी कीरो ने पंचांगुली साधना में प्रवीणता पाकर हाथ देख कर सही भविष्यवाणियां कीं। वह भारत में आने के बाद देवी पंचांगुली की प्रार्थना स्तुति का सारा ज्ञान अर्जित करके सही फलादेश द्वारा नाम और प्रसिद्धि प्राप्त की।

24. स्वप्न सिद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं नमो वाराहि अधोरे स्वप्नम् दर्शय ठः ठः स्वाहा।।

इस मंत्र का जप 1100 बार रात को सोते समय करना चाहिए। रात में आपको 11 दिन के अंदर स्वप्न में आपके प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा।

25. स्वप्न मातंगी मंत्र

ॐ नमः स्वप्न मातंगिनि सत्यभाषिणि स्वप्नम् दर्शय दर्शय स्वाहा।।

भोजन और पानी का त्याग करना चाहिए। इस मंत्र का जप 108 बार करना चाहिए और उसी स्थान पर सोना चाहिए। आपके प्रश्न का उत्तर आपको स्वप्न के माध्यम से मिल जाएगा।

26. सर्व सिद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

सभी प्रकार की सिद्धि और सभी इच्छाओं की पूर्ति हेतु इस मंत्र का 1.25 लाख जप करनी चाहिए।

27. पुत्र संपदा प्राप्ति मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं असि आउसा चुलु चुलु हुलु हुलु मुलु मुलु इच्छियम मे कुरू कुरू स्वाहा। त्रिभुवन स्वामिनो विद्या।

इस मंत्र का 24000 बार जप करना चाहिए और अपने इष्ट देवता को प्रत्येक मंत्रोच्चारण के पश्चात 1 पुष्प अर्पित करना चाहिए, इस प्रकार कुल 24000 पुष्प अर्पित करने चाहिए। इस प्रकार इस मंत्र के प्रभाव से पुत्र संतान, स्वास्थ्य, धन समृद्धि और प्रसिद्ध प्राप्त होती है।

28. सर्व रोग नाश मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लौं क्लौं अर्हं नमः।।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

इस मंत्र का प्रातः, दोपहर और सायंकाल एक माला जप करने से सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है।

29. मोहन मंत्र

ॐ नमो भगवऊ अरहऊ चंदप्पहस्स सिज्झाष्यऊ में भगवइ महइ महाविद्या चंद चंदप्प में अइप्पभे महाप्पभे ठः ठः ठः स्वाहा।।

एक कटोरे में पानी भरकर और उसे हाथ में रखकर इस मंत्र का 800 बार जप करना चाहिए उसके उपरांत पुनः 7 बार इस मंत्र को पढ़कर अपने चेहरे को पानी से धो लेना चाहिए। इस पानी को दूसरे व्यक्ति को भी देना चाहिए। अर्थात् साधना के द्वारा मंत्रोच्चारण कर दूसरे व्यक्ति को भी लाभान्वित किया जा सकता है। अगर इस मंत्र को 21 बार जप करें और दूसरे व्यक्ति को भी जप करवाएं तो वह व्यक्ति चंद्र के समान संसार में शोभनीय होगा।

30. बुद्धि और ज्ञान विकास हेतु मंत्र

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं णमो आयरियाणम् णमो उवझायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं। ॐ नमो भगवइएसुयदेवयाए सव्व सुयमयाए सरस्सईए सव्व वाणि सुवन्न वन्ने ॐ अरदेवीं मम शरीरं पविस्स पुछंतयस्स मुहं पविस्स सव्वं गमण हरिए अरहंत सिरीए स्वाहा।।

इस मंत्र का 108 बार जप करने से व्यक्ति अवश्य ही बुद्धिमान बन सकता है।

31. भूत, वर्तमान और भविष्य को जानने का मंत्र

1. 'ॐ कृष्ण विलेपनाय स्वाहा'

इस मंत्र का जप 108 बार प्रत्येक दिन करें।

2. 'ॐ धेंठ स्वाहा'

इस मंत्र का जप 1 लाख बार लाल पूष्प के साथ करना चाहिए। इस मंत्र के द्वारा सिद्धि की प्राप्ति होती है और व्यक्ति भूत, वर्तमान और भविष्य के बारे में भविष्यवाणी कर सकता है।

32. बौद्ध मंत्र

'नम म्योहो रेंगे क्यो'

ऐसा माना जाता है कि भगवान बुद्ध भगवान विष्णु का अवतार थे जिन्होंने ज्ञान प्राप्त किया और बुद्ध बन गए। 'नम' का मतलब है भक्ति भावना का प्रदर्शन, 'म्योहो' ईश्वरीय सत्ता और नियम का प्रतिपादक है। रेंगे भगवान बुद्ध द्वारा लिखा गया कमल सूत्र है। 'क्यो' हमारे जीवन के कमल सूत्र में ईश्वरीय सत्ता का प्रकटीकरण है। इस मंत्र के उच्चारण करने से हम अपने जीवन स्तर को ऊंचा उठा सकते हैं और बुद्धमय बन सकते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि बुद्ध के अनुसार ईश्वर हमारे अंदर ही विराजमान है। हमें अपनी शक्तियों को जाग्रत करके ज्ञान प्राप्त करना है।

उन्होंने यह समझाया कि अच्छाई और बुराई दोनों ही इन्सान के अंदर है। बौद्ध लोग ऐसा मानते हैं कि हमारे भीतर बुराई और अच्छाई का निरंतर युद्ध होता रहता है। अगर हम शुभ कर्म करें तो हमें शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। इसलिए हम ही 'कारण और परिणाम' के कर्ता हैं। हम दूसरों की भलाई के लिए बुद्ध धर्म के प्रचार करने हेतु अपने लिए

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

सौभाग्य के द्वार खोल देते हैं और ऐसा करके हम अपने पापों को जला देते हैं जिससे हमारा जीवन उन्नत होता है।

इस मंत्र का जप करने से हमारी सभी इच्छाएं पूर्ण होती है और ज्ञान चक्षु खुल जाते हैं। मंत्र जप से हमारा विवेक जागृत हो जाता है।

33. नवग्रह मंत्र

1. सूर्य के लिए मंत्र

i. तांत्रिक मंत्र

'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः'

इस मंत्र का जप 7000 बार करें। प्रातःकाल सूर्य नमस्कार और सूर्य की पूजा लाल फूल और लाल चंदन से अवश्य करें।

ii. वेदिक मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्तमृतं मृर्त्यंच। हिरण्येन् सविता रथेना देवी याति भुवनानी पश्यन्।। ॐ सः स्वः भुवः भूः ॐ सः ह्रौं ह्रीं ह्रां ॐ सूर्याय नमः।।

ii. पौराणिक मंत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोडरिं सर्वपापध्नं प्रणतोडमि दिवाकरे।।

2. चंद्र के लिए मंत्र

i. तांत्रिक मंत्र

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।

इस मंत्र का जप 11000 बार करें। सांयकाल चंद्र नमस्कार और चंद्र की पूजा उजले फूल और श्वेत चंदन से करें।

ii. वैदिक मंत्र

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ इमन्देवा असपत्न सुबध्वम्महने क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानाराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विवऽएषवोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा।। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः श्रौं श्रीं श्रां ॐ चन्द्रमसे नमः।

iii. पौराणिक मंत्र

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसीम्भम्। नमामि शशिनं सोम शम्भोर्मुकुटभूषणाम।

3. बुध के लिए मंत्र

i. तांत्रिक मंत्र

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

इस मंत्र का जप 9000 बार करें। बुध की पूजा अलग– अलग फूलों से करनी चाहिए।

ii. वैदिक मंत्र

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः भूर्भवः स्वः ॐ उद्बुद्धयस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वामिष्टापूत सह गुं सृजेथामयंच। अस्मिन्त्संध

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

स्थेऽर्द्धयुत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ ब्रौं ब्रीं ब्रां ॐ बुधाय नमः।

iii. पौराणिक मंत्र

प्रियंग गुकलिकाश्यामं रूपेणप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

4. मंगल के लिए मंत्र

i. तांत्रिक मंत्र

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

इस मंत्र का जप 10,000 बार करें। मंगल की पूजा लाल फूल और लाल चंदन से करें। अगर कनेर का फूल मिल जाए तो सर्वोत्तम है।

ii. वैदिक मंत्र

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः ॐ भूर्भवः स्वः ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिब्याऽअयम् अपा रेता सिजिन्वति। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः क्रौं क्रीं क्रां ॐ भौमाय नमः।

iii. पौराणिक मंत्र

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

5. गुरु के लिए मंत्र

i. तांत्रिक मंत्र

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।

इस मंत्र का जप 19,000 बार करें। गुरु की पूजा पीले फूल से करनी चाहिए।

ii. वैदिक मंत्र

ॐ ज्रां ज्रीं ज्रौं सः ॐ भूर्भवः स्वः ॐ बृहस्पतेऽअतिय दर्योऽअर्हाधुमद्धिभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतश्र जाततदस्मासुद्रविणं दोहि चित्रम्।। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः ज्रौं ज्रीं ज्रां ॐ बृहस्पतये नमः।

iii. पौराणिक मंत्र

देवानांच ऋषीणांच गुरुं कांचनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

6. शुक्र के लिए मंत्र

i. तांत्रिक मंत्र

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

इस मंत्र का जप 16,000 बार करें। शुक्र की पूजा श्वेत पुष्प और श्वेत चंदन से करनी चाहिए।

ii. वैदिक मंत्र

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः ॐ भूर्भवः स्वः ॐ अन्नात्परिस्र तो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियविपान शुक्रमन्धसऽन्द्रयमिदम्पयोमृतमाधु।। ॐ स्वः भूः ॐ सः द्रौं द्रीं द्रां ॐ शुक्राय नमः।

iii. पौराणिक मंत्र

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

7. शनि के लिए मंत्र : साढ़ेसाती के प्रभाव को दूर करने हेतु

i. तांत्रिक मंत्र

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।

ii. वैदिक मंत्र

ॐ खां खीं खौं सः शनये नमः।

इस मंत्र का जप 24,000 बार करें। शनि की पूजा नीले फूल और चंदन से करनी चाहिए। पूजा के समय दीप जलाएं। शनिवार का व्रत रखें। शनि स्तोत्र का पाठ करें। काली वस्तुओं, सरसों का तेल, लोहे की वस्तुएं, काला कपड़ा इत्यादि का दान करें। वृद्ध व्यक्ति को भोजन कराएं।

ॐ खां खीं खौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये। शंयोरिभिसृवन्तु नः।
ॐ स्वः भुयः भूः ॐ सः खों खीं खां ॐ शनैश्चराय नमः।

iii. पौराणिक मंत्र

ॐ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

8. राहु के लिए मंत्र

i. तांत्रिक मंत्र

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

इस मंत्र का जप 18,000 बार रात में करें। राहु की पूजा नीले फूल और चंदन से करनी चाहिए।

ii. वैदिक मंत्र

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः ॐ भूर्भुवः ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सभा। कयाशष्ठियावृता।
ॐ स्वः भुवः भः ॐ सः भ्रौं भ्रीं भ्रां ॐ राहवे नमः।

iii. पौराणिक मंत्र

ॐ श्रर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूत तं राहु प्रणमाम्यहम्।

9. केतु के लिए मंत्र

i. तांत्रिक मंत्र

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः केतवे नमः।

इस मंत्र का जप 18,00 बार करें। केतु की पूजा धूम्रवर्ण फूल`और चंदन से करनी चाहिए।

ii. वैदिक मंत्र

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः भूर्भुवः स्वः ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे येशोमर्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।
ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः प्रौं प्रीं प्रां केतवे नमः।

iii. पौराणिक मंत्र

ॐ पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अध्याय–19

स्तोत्र संग्रह

स्तोत्र सूची

1. अथ स्वस्तिवाचनम्
2. अथ नवग्रहस्तोत्रम्
3. अथ नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्
4. श्री सूक्त
5. लक्ष्मी – सूक्त
6. कनकधारा स्तोत्रम्
7. अथ महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रम्
8. लक्ष्मी स्तोत्र
9. अन्नपूर्णास्तोत्रम्
10. महामृत्युञ्जय कवच
11. अमोघ मृत्युञ्जय स्तोत्रम
12. अथ द्वादश ज्योर्तिलिंगाणि
13. अथ सूर्याष्टकम्
14. अथ सूर्यमङ्गलस्तोत्रम्
15. अथ सूर्यद्वादशनामस्तोत्रम्
16. अथ सूर्य अष्टोत्तरशतनामस्तवम्
17. अथ सूर्यकवचम्
18. सूर्य प्रार्थना
19. अथ चाक्षुषीविद्यास्तोत्रम्
20. श्री आदित्यहृदयस्तोत्रम्
21. अथ चन्द्रकवचम्
22. अथ चन्द्राऽष्टाविंशतिनामस्तोत्रम्
23. अथ चन्द्रमङ्गलस्तोत्रम्
24. चंद्र प्रार्थना
25. अथ मङ्गलकवचम्
26. अथ ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्रम्
27. अथ अङ्गारकस्तोत्रम्
28. अथ भौममङ्गलस्तोत्रम्
29. मंगल प्रार्थना
30. अथ बुधकवचम्

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

31. श्रीबुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्
32. अथ बुधमङ्गलस्तोत्रम्
33. बुध प्रार्थना
34. अथ बृहस्पतिकवचम्
35. अथ बृहस्पतिस्तोत्रम्
36. अथ बृहस्पतिमङ्गलस्तोत्रम्
37. बृहस्पति प्रार्थना
38. अथ शुक्रकवचम्
39. अथ शुक्रस्तवराजः
40. अथ शुक्रमङ्गलस्तोत्रम्
41. शुक्र प्रार्थना
42. अथ शनिवज्रपञ्जरकवचम्
43. अथ शनैश्चरस्तोत्रम्
44. अथ शनिमङ्गलस्तोत्रम्
45. शनि महात्म्य
46. शनि प्रार्थना
47. अथ राहुकवचम्
48. अथ राहुस्तोत्रम्
49. अथ राहुमङ्गलस्तोत्रम्
50. राहु प्रार्थना
51. अथ केतुकवचम्
52. अथ केतुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्
53. अथ केतुमङ्गलस्तोत्रम्
54. केतु प्रार्थना
55. पुरुष सूक्त
56. श्री हनुमान–स्तुति
57. आद्य शंकराचार्य कृत ललितापंचरत्नम्
58. सरस्वती स्तोत्रम्
59. बगलामुखी स्तोत्रम्
60. बगलामुखी माला मंत्र
61. श्री सप्तश्लोकी दुर्गा कवच
62. सप्तश्लोकी गीता
63. चतुःश्लोकी भागवतम्
64. एकश्लोकी रामायणम्

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com